JAINA INSCRIPTIONS.

(Containing Index of Places, Glossary of Names of Acharyas, &c.)

Collected & Compiled
BY

Puran Chand Nahar, M.A.,B.L., M.R.A.S.,
Vakil, High Court, Calcutta; Member, Asiatic Society of Bengal; Bihar & Orissa Research Society; Bhandarkar Institute, Poona; Jain Swetambar Education Board, Bombay; &c. &c.

PART II.
(With Plates.)

1927.

Price Rs. 5/-

PRINTED BY
Turantlal Mishra
at the
VISWAVINODE PRESS,
48, Indian Mirror Street,
Calcutta.

Pnblished by the Compiler
48, Indian Mirror Street,
CALCUTTA

जैन लेख संग्रह ।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकायों से युक्त

द्वितीय खंड ।

संग्रह कर्त्ता

पूरण चंद नाहर, एम० ए०, बी० एल०,

वकील हाईकोर्ट, रयाल एसिआटिक सोसाइटी, एसियाटिक सोसाइटी
बंगाल, रिसार्च सोसाइटी विहार – उड़ीसा आदिके मेम्बर,
विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

कलकत्ता ।

वीर सम्बत २४५३

मूल्य –)॥
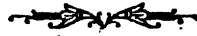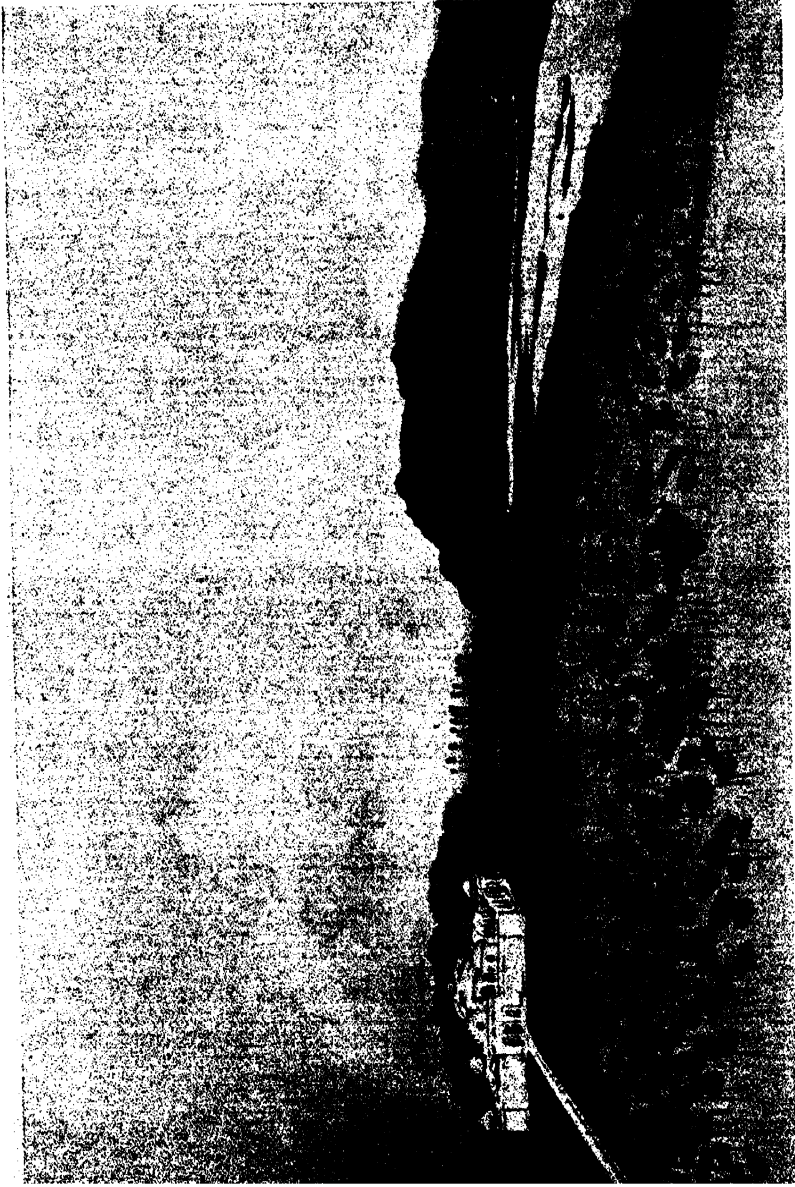
Jalmandira at Tirtha Pâwâpuri (North view).

आज बड़े हर्ष के साथ "जैनलेख संग्रह" का दूसरा खंड पाठकों के सन्मुख उपस्थित करता हूं। इसका प्रथम खंड प्रकाशित होने के पश्चात् द्वितीय खंड शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा रहते हुए भी कई अनिवार्य कारणों से विलम्ब हुआ है। न तो प्रथम खंड में कोई विस्तृत भूमिका दी गई थी और न यहां ही लिख सके।

जैनियों का खास करके हमारे मूर्त्तिपूजक श्वेताम्बर भाइयों का धर्मप्राण शताब्दियों तक बराबर आचार्यों के उपदेश से देवालय और मूर्त्तिप्रतिष्ठा की ओर कहां तक अग्रसर था और वर्त्तमान समय पर्य्यंत कहां तक है यह "लेख संग्रह" से अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है। ऐतिहासिक दृष्टि से जिस प्रकार उपयोगी समझ कर प्रथम खंड प्रकाशित किया था यह खंड भी उसी इच्छा से विद्वानों की सेवा में उपस्थित करता हूं।

सन् १९१८ में प्रथम खंड प्रकाशित होनेपर प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्रद्धेय श्रीमान् राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझा जी ने पुस्तक भेजने पर उस संग्रह के उपयोगिता के विषय में जो कुछ अपना वक्तव्य प्रकट किये थे उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाता है। उक्त महोदय अजमेर से ता० २६-१०-१९१८ के पत्र में लिखते हैं कि :—

"आपके जैनलेख संग्रह को आदि से अंत तक पढ गया हूं। आपका यह ग्रन्थ इतिहासवेत्ताओं तथा जैनसंसार के लिये रत्नाकर के समान है। अंत में दी हुई तालिकायें भी बड़े काम की बनी हैं उनसे भिन्न २ गच्छों के अनेक आचार्यों के निश्चित समय का पता लगता है, यदि इसके दूसरे भाग भी निकलेंगे तो जैन इतिहास के लिये बड़े ही काम के होंगे"।

प्रथम खंड में साधारण सूची के अतिरिक्त "प्रतिष्ठास्थान", "श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि" और "आचार्यों के गच्छ और सम्वत्" की सूची दी गई थी। इस बार इन सबोंके शिवाय राजा महाराजाओं के नाम, जो इन लेखों में पाये गये हैं, उनकी तालिका भी समय २ पर आवश्यक होती है समझ कर इस खंड में दी गई है।

मैं प्रथम खंड की भूमिका में कह चुका हूं कि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रह प्रकाशित हुआ है। जिस समय यह खंड छप रहा था उसी समय श्री राजगृह तीर्थ में श्वेताम्बर दिगम्बरों में मुकदमा छिड़ गया था पश्चात् केस आपस में तै हो चुका है अतएव इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि दिगम्बरी लोग मुझे ऐसे कार्यमें उत्साहित करने के बदले स्वार्थवश उक्त मुकदमे में इजहार के समय मेरे जैनलेख संग्रह पर हर तरह से हैरान किये थे।

हाल में वेलोग मुद्दई होकर श्री पावापुरी तीर्थ पर जो मुकदमा उपस्थित किये हैं उस में मेरा भी मुद्दालहों में नाम रख दिये हैं। मैं प्रथम से ही धार्मिक झगड़ों से अलग रहता था परन्तु जब सर पर बोझ पड़ा है तो उठाना ही पड़ेगा। दुःख इसी बात का है कि शासननायक वीर परमात्मा के परम शान्तिमय निर्वाणस्थान में मुकदमेबाजी से अशांति फैलाना अपने जैनधर्म पर धब्बा लगाना है। मैं इस समय इस संबंध में कुछ मतामत प्रकाश करना अनुचित समझता हूं। इसी वर्ष के अक्षयतृतीया के दिन मेवाड़ के अन्तर्गत श्री केशरियानाथजी तीर्थ में मंदिर के ध्वजादंड आरोपन के उपलक्ष में जो बीभत्स कांड हुआ है वह भी दूसरा दुःख का समाचार है। काल के प्रभाव से इस तरह प्रायः हमलोगों के सर्व धर्मस्थान और तीर्थों में अशांति देखने में आती है।

ई० सम्वत् १९९४।९५ से मुझे ऐतिहासिक दृष्टि से जैन लेखों के संग्रह करने की इच्छा हुई थी तबसे अद्यावधि संग्रह कर रहा हूं और उन सब लेखों को जैसे २ सुभीता समझता हूं प्रकाशित करता हूं। यद्यपि मैंने इस संग्रह-कार्य के लिये तन, मन और धन लगाने में त्रुटि नहीं रक्खी है फिर भी बहुत सी भूलें रह गई हैं। राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझाजी मुझे प्रथम खंड के त्रुटियों पर अपना मन्तव्य सूचित किये थे जिस कारण मैं अन्तःकरण से उनका आभारी हूं और उस पर मैंने विशेष ध्यान रखने की चेष्टा की है। यह लेख संग्रह का कार्य बहुत कठिन और समय सापेक्ष है, कई जगह समय की अल्पता हेतु और कई जगह मेरे ही भ्रम से जो कुछ पाठ में अशुद्धियां रह गई हैं उनके लिये मैं पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूं तथा ऐसी २ त्रुटियां रहने पर भी विद्वानों की तथा अनुसंधित्सूसज्जनों को उस ओर दृष्टि आकर्षित करने की इच्छा से इन लेखों को प्रकाशित करने का साहस किया हूं।

प्रथम खंड में १००० लेखों का संग्रह प्रकाशित हुआ था। उनमें जो कुछ नंबर छूट गये थे वे पुस्तक के अंत में दे दिया था। इस खंड में १००१ से २१११ तक याने ११११ लेख प्रकाशित किये जाते हैं। इस वार भी भ्रमवश २ नंबर छूट गये हैं। नं० ११८७ पुस्तक के अंत में छप गया है और नं० १६९० यहां दिया जाता है।

श्वेताम्बरों के प्रसिद्ध स्थान जेसलमेरु दुर्ग (जेसलमेर) के मंदिर के लेखों को संग्रह करने की अभिलाषा बहुत दिनों से थी। वहां भी क्षेत्रस्पर्शना हो गई है और निकटवर्त्ती "लोद्रपुर (लोद्रवा)" नामक प्राचीन स्थान भी दर्शन किया है। आगामी खंड में वहां के लेखों को प्रकाशित करने की इच्छा रही।

नं० ४८ इण्डियन मिरर ष्ट्रीट,
कलकत्ता।
सं० १९८४-ई० सं० १९२७

निवेदक
पूरण चंद नाहर।

[1690] *

संवत् १६७१ वर्षे आगरा वास्तव्य......कल्याण सागर सूरिः......।

---

* यह लेख पटने के पास 'फतुहा' के दिगम्बर जैन मंदिर में श्वेत पाषाण की खंडित श्वेताम्बर मूर्त्ति के चरण चौकी पर है।

सूचीपत्र।

स्थान	पत्रांक

पटना।

बनारस।

चंद्रावती।

अयोध्या।

नवराई।

फैजाबाद।

लखनऊ।

देहली।

मथुरा।

आगरा।

प्रतिष्ठा स्थान ।

राजाओं की सूची ।

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१६३३	अकबर, सुरत्राण		१७८२
१६५२	अकब्बर, पातिसाहि		१७६६
१६६१	,, ,,		१७६४
१६७०	अकबर, सुरत्राण		१६२८
१७१३	अकब्बर, पातिसाहि		१७६७
१४६१	कुंभकर्ण, राणा	मेवाड़	२००६
१४६४	कुंभकर्ण, भूपति	देवकुलपाटक	१६५८
१६६३	जगत्सिंह, राणा	उदयपुर	१०२८

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१८०१	जगतसिंह, महाराणा	उदयपुर	१११५
१५६६	जगमाल, महाराजाधिराज	अचलगढ	२०२७
१५४८	जशसिंह, राजा		२०३९
१६७८	जसवंतसिंहजी, जाम.	नवानगर	१७८१
१६७१	जहांगीर, पातिसाह	आगरा दुर्ग	१५८०-८१-८२
१६७१	,, ,,	आगरा	१५८३-८४
१६७१	जहांगीर, पातिसाह सवाइ सुरत्राण		१५७८-९९
१६७१	,, ,,	उग्रसेनपुर	१४५६
१६७४	जहांगीर साह.		१४६०
१४९७	डूंगरसिंह, महाराजाधिराज	गोपाचल	१३२७
१५१०	,, ,,	नागगिरि	१४२८
१५१०	डूंगरसिंहदेव, राजाधिराज	गोपाचल	१३३२
१५२५	डूंगरसिंह, रावश्रर सागर	अर्बुदगिरि	२०२५
१६६६	तेजसिंहजी, राउल	वारसपुर	१७१५
११५०	त्रैलोक्यमल	,,	१४२६
११५०	देवपाल	गोपाचल	१४२६
११५०	पद्मपाल	,,	१४२६
१३९२	पृथ्वीचंद्र, महाराजाधिराज	चित्रकूट	१९५१
१५४९	सोमसिंघ, रावल	मण्डासा	२०१५
११५०	भुवनपाल	,,	१४२६
१५५२	मल्लसिंहदेव, महाराजाधिराज.	गोपाचल	१४२९
११५०	महीपाल	,,	१४२६
११५०	मूलदेव	गोपाचल	१४२६
११५०	मंगलराज	,,	१४२६
१२७२	रणसिंह, महाराज	टिंवान	१७७३
१७९८	राघव, राजा	देवकुलपाटक	२००८
१६९७	लक्षराज, जाम	नवानगर	१७८१
१०३४	वज्रदाम, महाराजाधिराज		१४३१
११५०	वज्रदाम	,,	१४२६
१२२१	वस्तुपाल, महामात्य	अणहिल्लपुर	१७८८
१५६२	बीकाजी, महाराजा राई	बीकानेर	१३५०
१६३३	शत्रसल्ल, जाम	नवानगर	१७८२
१६७६	शत्रुसल्य, जाम.	नवानगर	१७८१
१६७१	शाहजहां		१५२०
१८६३	सहादतअलि, नवाब	लखनऊ	१५२५
१६८६	साहजांह, पादशाह		१७३५
१६८८	साहिजां पातिसाह, सवाइ	अमोलपुर	१४५५
१६९८	साहजाह, पातिसाह		१६९७
१८५९	सुरतसिंह, महाराज	बीकानेर	१३४९
११५०	सूर्यपाल	,,	१४२६
१५२९	सोमदास, राउल	डूंगरपुर नगर	२०२६
१६९९	हठीसिंहजी, महाराव	रामगढ दुर्ग	१८९९

METAL IMAGE OF SHRI ADINATH
Dated, V. S. 1077, (A. D. 1020.)

JAIN INSCRIPTIONS.
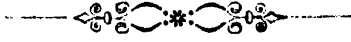
जैन लेख संग्रह।

दूसरा खण्ड।

कलकत्ता।

श्रीआदिनाथजी का देरासर।

कुमारसिंह हाल— नं० ४६, इण्डियन मिरर स्ट्रीट।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1001] *

(१) पजक सुत अंब

(२) देवेन ॥ सं १०७७

[386] ×

(१) ब्रह्माल सत्क सं

---

* चित्र देखो। लेख पश्चात् भागमें खुदा हुआ है। यह प्राचीन मूर्त्ति भारतके उत्तर पश्चिम प्रान्त से प्राप्त हुई है। दोनों तर्फ कायोत्सर्ग की खड़ी और मध्यमें पद्मासनकी बैठी मूर्त्तियें हैं। सिंहासनके नीचे नवग्रह और उसके नीचे बृषभ युगल है, इस कारण मूल मूर्त्ति श्रीआदिनाथजी की और यक्ष यक्षिणी आदियों के साथ बहुत मनोज्ञ और प्राचीन है।

× यह लेख प्रथम खण्डमें छपा था, पुनः जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी का यह संशोधित पाठ है। इसमें भी दोनों तर्फ कायोत्सर्गकी और मध्यमें पद्मासनकी मूर्त्ति है और गुजरात प्रान्तसे मिली है।

(२) पंकः श्रिया वे सुन

(३) स्तु पुन्नक श्राद्धः सी

(४) लगल सूरि जक्तश्चन्द्र कु

(५) ले कारयामासः ॥

(६) संवतु

(७) १०७२

[1002]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीअजित बिंबं का० सा० नानू जुदिज्ञाकेन प्र० श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[1003]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगछे संताने चाम्रदेव सूरीणां । महणं गणि नामाद्या चेल्ली सर्व देवा गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्य शुजवारया । चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं ॥

हीरालालजी गुलाबसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[1004]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञातीय दोसी डूंगर जार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन जार्या सोही सुत वीका युतेन आ० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगछे श्रीअमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुजं जवतु ॥श्रीः॥

लाजचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटैल रोड ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1005]

संवत् १६२३ ज्येष्ठ शुक्ल ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन····प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । ज श्रीजिनरंगसूरि राज्ये ।

[1006]

संवत् १७२७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ रवौ खरतरगच्छीय महोपाध्याय रामविनयगणिना प्र० पार्श्वबिम्बं ।

स्फटिक के बिम्ब पर ।

[1007]

संवत् १०७७ मा । सु० १३ प्र । ख । श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः ।

रौप्य के चरण पर ।

[1008]

जंगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिनदत्त सूरीश्वराणां पादुके । श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां पादुके । वीर संवत् २४४० वि० १९७० आषाढ शुक्ल १ चन्द्रे रांका गोत्रीय लाभचन्द्र शेठेन आत्मकल्याणार्थं इमे पादुके निर्मापिते, श्री बृ० ख० ग० ज० युग० भट्टारक श्रीजिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये श्रीमद्द्विङ्मण्डलाचार्य श्रीनेमिचन्द्रसूरि अन्तेवासि पं० श्रीहीराचन्द्रेण यतिना प्रतिष्ठापिते श्री शुभं भूयात् ।

इण्डियन म्युज़ियम—चौरङ्गी रोड ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1009] *

संवत् १४५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ श्रीमूलसंघे प्रतिष्ठाचार्य श्रीपद्मनन्दि देवोपदेशेन····श्रीभीमदेव । भार्या महदे । सुत गणपति भार्या करमू ॥···········प्रणमति ।

—•◎•—

अजिमगञ्ज–मुर्शिदाबाद ।

श्रीनेमनाथजीका मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1010]

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने सोमवारे उकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० वीशल भार्या

* यह चौविशी हाल में यहां पर दिल्ली से आई है ।

भावलदे तत्पुत्र सा० कर्म्मा तद्भार्यां कउतिगदे तत्पुत्र सा० सहसमल्ल श्रावकेण सपरिवारेण आत्मश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रभ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

[1011]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ४ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि विरूआ भार्या मुक्ति सुत हीरा भार्या हीरादे सुत भावड़ कमूआभ्यां स्वपित्रोः श्रेयोर्थं श्रीधर्म्मनाथ बिंबं पञ्चतीर्थी कारापितः प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरि पट्टे श्री विमल सूरिभिः ॥ सीतापुर वास्तव्यः ॥

[1012]

सवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे उ० ज्ञातीय विद्याधर गोत्रे । सा० सूंमण । भा० सूमलदे । पु० वेला भा० बगू नाम्ना पु० सोमा युतयां स्वभ्रातृ पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० वृहद्गच्छे घोकमीयावटंके (?) श्रीधर्म्मचन्द्रसूरि पट्टे श्रीमलयचन्द्र सूरिभिः । लोद्राद्र ग्राम ॥

[1013]

॥ ए० ॥ संवत् १५२२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ उकेशिज्ञातीय रूनेयता गोत्रे । सा० केसराज भार्या····रतनाकेन श्रेयसे श्रीसुमति बिंबं प्रतिष्ठितं धर्म्मघोषगच्छे श्रीसाधु···· ॥

[1014]

संवत् १७०६ व । ज्ये । शु० श्री राजनगरवास्तव्य । प्राग्वाटज्ञातीय वृहद्शाषायां सा० रूषभदास भा० रूक्कु नाम्न्या श्रीनमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे । भ० । श्री ५ श्रीविजयानन्दसूरिभिः ॥ आचार्य श्री ५ श्रीविजयराजसूरि परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु । भ ॥१॥

पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1015] *

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा सा०····राज पापड़ीवाल सप्रणमति का० श्रीभीमसिंघ रावल । सहर मण्डासा ।

* धरणेन्द्र पद्मावती सहित श्रीपाश्र्वनाथजीकी श्वेत पाषाणकी २ मूर्त्तियां पर एकही तरहके २ लेख हैं ।

सैंतीया (वीरभूम)

श्री आदिनाथजी का मन्दिर।

धातुकी पञ्चतीर्थी पर।

[1016]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्रीउएसवंशे दो० वकूआ भार्या मेघू पुत्र जईता सुश्रावकेण भा० जीवादे भ्रातृ जटा सहितेन स्वश्रेयसे॥ श्रीअंचलगछेश्वर। श्रीजयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन श्री पत्तने॥ ठः॥

रङ्गपुर (उत्तर वङ्ग)

श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का मन्दिर—माहीगञ्ज।

शिला लेख नं० १

[1017]*

(१) अत्यद्भुतं सज्ज्ञानसिद्धिदायकं भव्यांगिना मो
(२) क्षकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चन्द्रप्रभं
(३) नौमि जिनं सनातनं॥ १॥ संवत् १८९३ मि। माघ वदि १। र
(४) वौ श्रीरङ्गपुरे। भ। श्रीजिन सौभागा सूरिजी विजयी।
(५) राज्ये वा। आनन्दवल्लभगणेरुपदेशात् श्रीमक्सुदावा
(६) द बालूचर वास्तव्य दू। निहालचन्द तत्पुत्र बाबू इन्द्रच०
(७) न्द्रेण श्रीचन्द्रप्रभ जिनः प्रासादः कारापितः प्रतिष्ठापि
(८) तश्च। विधिना॥ सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम्॥
(९) श्रीरस्तुः॥ १॥

* यह शिलालेख श्याम वर्णके पत्थर पर लंबाई इञ्च-१४ चौड़ाई इञ्च-६ सभामण्डप के दक्षिण तर्फ की दीवार पर लगा हुआ है।

शिला लेख नं० २

[1018] *

(१) अत्यद्भुतं सज्ज्ञानसिद्धिदायकं जव्यांगिना
(२) मोक्षकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चं
(३) द्रप्रज्ञं नौमि जिनं सनातनं ॥ १ ॥ संवत् १ए
(४) ३२ शाके १७ए७ मिति आषाढ़ सुदि ए चन्द्रवासरे
(५) रङ्गपुरे । ज । श्रीजिनहंस सूरीजी विजे राज्ये ॥ श्री
(६) हंसविलास गणि तत्शिष्य श्री कनकनिधान मुनि
(७) रुपदेशेन । श्रीमक्षुदावाद बालूचर वास्तव्य ॥
(८) डूगड़ इन्द्रचन्द्रजी जीर्णोद्धार कारापितं ॥ नाहटा मौ
(ए) जीरामजी तत्पुत्र नाहटा गुलाबचन्दजी तत्पुत्र इन्द्र
(१०) चन्द्रजी मारफत श्री चन्द्रप्रज्ञ जिन प्रासादस्य सिषरं
(११) नवीन रचिता वेदका नवीन निजद्रव्यै कारपितं ॥ प्रति
(१२) ष्ठितं विधिना सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम् ॥ १ ॥
(१३) ॥ मिस्तरी पोलाराम सिलावट लालू मक्सूदका

मूल नायक की पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1019]

संवत् १८७२ वर्षे····सुदि दिने····श्रीचन्द्रप्रज्ञ बिंबमिदं प्रतिष्ठितं ज० श्रीजिनहर्ष सूरि कारापितं····शीलचन्द्रेन । बालूचर मध्ये ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1020]

संवत् १ए३६ मिती आ०·········शुक्रवारे यु । प्र० श्री·········जी विजयराज्ये श्री शान्ति जिन कारापितं आणन्दवल्लजजी तत् शिष्य··········प्रतिष्ठितं ।

* यह मिर्जापुरी पत्थर पर खुदा हुआ नं० १ के समान साइज का बायें तर्फ दीवार पर लगा हुआ है ।

[1021]

सं० १९३६····सौभाग्यसूरिजी विजय राज्ये नाहटा मौजीरामजी तत्पुत्र गुलाबचन्दजी श्री आदिजिन कारापितं श्री आणन्द······ ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1022]

सं० १९२० मि० फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंहजी डुगड़ भार्या महताब कुँवर श्री श्रेयांस जिन बिंबं कारापितं ।

[1023]

सं० १९२० मिः फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंह भार्या महताब कुँवर श्री अग्निदत्त २२ जिन बिंबं का० ।

चौविशी पर ।

[1024]

संवत् १७०१ मिती आषाढ़ सुदि १३ कारितं चोरवेड़ीया सा० सांवल पतिना ॥ प्रतिष्ठितं उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1025]

सं० १५१३ व० ज्येष्ठ वदि ११ उके० ज्ञा० कोठारी गोत्रे सा० मफुणा भा० काउ पु० नेता डूंगर नेताकेन भा० नेतादे स० श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारि० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्री ईश्वर सूरिभिः

[1026]

संवत् १५५७ वर्षे पोष सुदि १५ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० सायर भा० रत्नादे पु० सा० मालाकेन भा० हांसू पुत्र गोइन्दादि कुटुम्बयुतेन निज श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

दादाजी का मन्दिर—माहीगञ्ज।

पाषाण के चरण पर।

[1027]

संवत् १८७७ रा वर्षे जेठ मासे शुक्ल पक्षे १० तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रकुलाधिप। वृहत् श्री खरतरगच्छे जंगम युगप्रधान भट्टारक। श्री १०८ श्री जिनदत्त सूरिजी श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरीणां चरण स्थापितं। उ। श्री रत्नसुन्दरजी गणि उपदेशात् साह श्री डूगड़ बुधसिंहजी तत्पुत्र। बाबू श्री प्रतापसिंहजी कारापितं॥ श्रीसङ्घ हितार्थम्। जङ्गमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजी विजय राज्ये श्रीरस्तु॥ श्रीकल्याणमस्तुः॥

उदयपुर (मेवाड़)

श्री शीतलनाथस्वामी का मन्दिर।

[1028] *

ॐ॥ संवत् १६७३ वर्षे कार्त्तिक वदि॥ सोमवासरे उदयपुर राणा श्री जगतसिंह राज्ये तपागच्छे श्री जिन मन्दिरे श्री शीतलजिन बिंबं पित्तलमय परिकर कारितः आसपुर वास्तव्य वृद्धशाखा प्राग्वाट ज्ञातीय पं० कान्हा सुत पं० केसर भार्या केसर दे तत्सुत पं० दामोदर स्वकुटुम्बयुतैः॥ भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वर तत्पट्टप्रभाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरीश्वर निदेशात् सकलसङ्घयुते पण्डित श्री मतिचन्द्र गणिभिः वासक्षेपः श्री सकलसङ्घस्य कल्याणं भूयात्॥

धातु की चौविशी पर।

[1029]

संवत् १४८९ वर्षे जे० व० ११ प्राग्वाट दो० सूरा भा० पोमी सुत दो० आसाकेन भा० रूपिणि सुत राउल माणिकलाल जोगादि कुटुम्बयुतेन स्वभ्रातृ गोला स्वसुत सारङ्ग श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागच्छनायक भट्टारक प्रभु श्री सोमसुन्दर सूरिभिः॥ श्रीरस्तु॥ वीसलनगर वास्तव्यः॥

* मूल बिंब श्वेत पाषाण का प्राचीन है, लेख मालूम नहीं होता; पश्चात् धातु की परकर बनी है उस पर यह लेख है।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1030]

सं० १५१७ वर्षे पोष वदि ८ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० डूंगर भा० सुहासिणि पुत्र लषम सिंहेन भा० सोनाई पुत्र नगराजादि कुटुब युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री रत्नशेखर सूरिभिः अहिमदाबाद वास्तव्यः ।

[1031]

सं० १५५७ वर्षे मार्गशिर सुदि ९ शुक्रे श्री नाणा वालगच्छे उस० कावू गोत्रे का० सोंगा भा० सोंगलदे पु० धूलाकेन भार्या पूजी सहितेन पूर्वज पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिम्बं का० श्री महेन्द्र सूरिभिः ॥

पञ्चतीर्थी और मूर्त्तियों पर । *

[1032] ×

१ सं० ७८ गे० पन्ना विनिगो बाज० लूगापति कारितं ।

[1033]

ॐ ॥ संवत् ११९६ माघ सुदि १२ गुरौ सहज मत्साम्बा श्री ऋषभनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रामदेव सूरिभिः ॥

[1034]

संवत् १२५८ जेष्ठ सुदि १० रवौ । श्रे० चाण्ड्सीहेन निज कुटुम्ब सहितेन पार्श्वनाथः कारितः प्रतिष्ठितः श्री देवचन्द्र सूरिभिः ।

[1035]

सं० १२६२ फागुण सुदि १० रवौ श्रे० प्रवदेव सुत वीराणसदेव श्रेयोर्थं का० प्र० श्री भावदेव सूरिभिः ।

---

* ये मूर्त्तियां श्री मन्दिर जी के प्राङ्गनके दाहिने कोठरी में रखी हुई हैं ।

× यह मूर्त्ति बहोत प्राचीन है परन्तु अक्षर घिस जाने के कारण स्पष्ट पढ़ा नहीं गया ।

[1036]

१२····आषाढ़ सुदि ८ उवएस वाधि सीहेण पु० गामा माल्हाभ्यां पितृ श्रेयोर्थं बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सर्वगुप्त सूरिभिः।

[1037]

सं० १३२३ ज्येष्ट सुदि १········श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उद्योतन सूरिभिः॥

[1038]

सं० १३२५ वर्षे फागुण सुदि ४ शुक्रे। श्रे० धामदेव पुत्र रणदेव धारण भा० आसलदे श्रे० राम श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री कक्क सूरिभिः।

[1039]

सं० १३२८ वर्षे वैशाष शु० ६ षण्डेरक गच्छे श्री यशोभद्र सूरि सन्ताने सा० सढ़ाणल भा० जल्हू पु० रूणरू श्री आस सिंह भा० मील्हा····काया बिम्बं कारितं प्र० श्री शान्ति सूरिभिः।

[1040]

सं० १३२९ वैशाख वदि ९ शुक्रे कबु ऊदा भार्या लखतू श्रेयसे कर्मणेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं ····।

[1041]

संवत् १३५२ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्री चैत्र गच्छिय धर्कट वंशे नाहर गोत्रे सा० हापु सुत सा० विजयसीहेन भातृ धारसीह श्रेयसे ····माग्यकेन श्री वासपूज्य बिम्बं कारितं प्र० श्री गुणचन्द्र ····।

[1042]

सं० १३७४ माघ व० १० गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० पुन पाल सुत सोमल पितृ पुन पाल श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री रामं (?) प्रायागच्छे प्रतिष्ठितं श्री शीलभद्र सूरिभिः॥

[1043]

सं० १३७५ वर्षे फागुण सुदि.......श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारिता प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1044]

सं० १३९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ बुधे श्री माल ज्ञातीय पितामह श्रे० वील्हण पितृ श्रे० सोमा पितृव्य साजण भ्रातृ माहा.......श्रेयोर्थं सुत राणा धरणिकाभ्यां श्री पार्श्वनाथ पञ्च तीर्थी का० ।

[1045]

संवत् १३७९ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ श्री....दाहड़ वीरम श्री चन्द्रप्रभ बिम्बं प्रतिष्ठितं ।

[1046]

सं० १३५१ मड्डाहडीय गच्छे श्रे० पादा भा० जाइल पु० कर्म सीहेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री महावीरं श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री सोमतिलक सूरिभिः ॥

[1047]

संवत् १३९९ वै० सुदि १ प्राग्वाड़ श्री अभाड़ा भार्या वाल्हु....बिम्बं प्र० श्री भावदेव सूरि ।

[1048]

सं० १४०५ वर्षे वैशाष सुदि ५ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ पेता मातृ जगतल देवि तयो श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रतनागर सूरिभिः ॥

[1049]

सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ९ रवौ सा०....कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं जीरापल्लीयैः श्री रामचन्द्र सूरिभिः ॥

[1050]

सं० १४०७ वैशाख वदि ४ रवौ श्री माल ज्ञातीय पितामह उदयसीह पितृ लषणसीह श्रेयसे सुत पोषाकेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री गुणसागर सूरि शिष्य श्री गुणप्रभ सूरिभिः ।

[1051]

सं० १४०९ वर्षे फागुण सुदि २ बुधे हुंबड़ ज्ञातीय भ्रातृ पातल श्रेयसे ठ० वीरमेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री सर्वानन्द सूरि सहितैः श्री सर्वदेव सूरिभिः ॥

[1052]

सं० १४२१ वर्षे माघ वदि ६ दिने नाहर गोत्रे सा० देवराज भा० रुपी पु० सा० लोला भार्या नाल्ही.........पौत्रादि सहितै आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं कारितं श्री रुद्रपल्लीय ग० भ० श्री जिनहंस सूरि पदे श्री जिनराज सूरिभिः ॥

[1053]

सं० १४२२ वर्षे वैशाष सु० ११ बुधे प्राग्वाट ज्ञा० कल्होली वास्तव्य श्रेष्ठि तिहुणा भा० वांहणि पितृ श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री रत्नप्रभ सूरिभिः ।

[1054]

सं० १४२३ फागु० सु० ८ सोमे प्रा० व्य० हरपाल भार्या आल्हण दे पु० विजयपालेन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री शालिभद्र सूरिभिः ॥

[1055]

सं० १४२३ फागुण सु० ९ सोमे श्रीमाल व्य० जोहण भा० माल्हण दे सुत आल्हा पाल्हाभ्यां पितृव्य आसपाल भातृह्माभ्यां श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिम्बं कारितं श्री अभय चन्द्र सुरिणामुपदेशेन ।

[1056]

सं० १४३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने मंत्रि दलीय गोत्रे सा० सारङ्ग भा० सारू पु० सीधरण भा० सुहवदे पुत्र सा० मांज मैस परवतादि युतेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1057]

संवत् १४३७ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे। श्री कारंटगच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उपकेश ज्ञा० श्रे० सोमा भा० सूमलदे पुत्र सोनाकेन पितृ मातृ श्रे० श्री आदिनाथ बिम्बं का० प्र० श्री सांवदेव सूरिभिः ।

[1058]

सं० १४५० वर्षे मगसिर बदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० षाषण जा० षीमसिरि तयो श्रियोर्थं सुत आल्हा ऊदा देवाकेन श्री वासुपूज्य बिम्बं पञ्चती० का० प्र० श्री नागेन्द्रगच्छे श्री रत्नसंघ सूरि पट्टे श्री देवगुप्त सूरिभिः । जारा सलषा श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

[1059]

सं० १४५३ वर्षे वैशाष सुदि २ हुंवड़ ज्ञा० श्रे० देवड़ जा० चामल देवि पुत्र हापाकेन हापा जा० हलू पु० सु० पातल सुत जीला हुंबड़गच्छी श्री सर्वानन्द सूरि प० श्री सिंहदत्त सूरिभिः ।

[1060]

सं० १४५५ विणचट गोत्रे सा० तीषण जा० तिहुणश्री पु० मोषाटन आत्मपूर्वजनिमित्तं चन्द्रप्रभ बिम्बं का० प्र० धर्मघोष गच्छे श्री सर्वाणन्द सूरिभिः ।

[1061]

सं० १४५७ आषाढ सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० व्यव० बाहड़ भार्या मोखलो पुत्र त्रिभुवणा केन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं साधु पू० प० श्री धर्मतिलक सूरि उपदे० ....

[1062]

सं० १४६० वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ रवौ ऊकेश वंशे गादहीया गोत्रे सा० देपाल पुत्र आना भार्या भीमिणि श्रेयोर्थं श्री शांन्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रति० उपकेश गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1063]

सं० १४७२ वर्षे फाल्गुन वदि २ शुक्रे श्रीमाल संघे श्री पद्मनन्दि गुरू हुंवड़ ज्ञातीय व्य० पेथड़ भार्या हीरादे सु० ठूय सारग सायर बध गोत्रे श्री आदिनाथ बिम्बं .... ।

[1064]

ॐ ॥ सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ शुक्रवारे बावेल गोत्रे नरवच पु० आल्हा पाल्हा मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिम्बं कारापितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मसिंह सूरिभिः ॥

[1065]

सं० १४७४ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे रनघणा गोत्रे हुंवड़ ज्ञातीय श्रे० वरजा जा० रूमी सु० सुप सूरा ॥ पितृश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिम्बं का० श्री सिंहदत्त (रत्न ?) सूरिभिः ॥

[1066]

संवत् १४७७ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरदेव जार्या गांगी पुत्र श्रे० जाबटेन जा० कडू पुत्र .... पितृव्य चांपा श्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रज बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1067]

सं० १४७९ प्राग्वाट व्य० कल्हा जमी सुत सूरीकेन जा० नीणू ज्रा० चांपा सुत सादा पेथा पदमादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थु बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

[1968]

सं० १४८० वर्षे फा० सु० १० बुधे उप० ज्ञा० श्रे० कपूयर जार्या कुसमीरदे सु० गेहा केन पित्रो श्रेय० श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० मड्डा० रत्नपुरीय ज० श्री धणचन्द्र सूरि प० श्री धर्म्मचन्द्र सूरिजिः ॥

[1069]

सवंत् १४८१ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० कान्ना जार्या कील्हणदे सुत सरवणेन पितृमातृ श्रेयसे श्री चन्द्रप्रज स्वामि पंचतीर्थी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मडाहड़ गच्छे श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1070]

सं० १४८२ वर्षे वैशाष वदि ५ उपकेश ज्ञा० राका गोत्रे सा० जूणा जा० तेजलदे पु० कानू रूल्हा जा० रयणीदे पु० केल्हा हापा शाल्हा तेजा सोजीकेन कारापितं नि० पुण्यार्थं आत्म श्रे० उपकेश गच्छे कुकदाचार्य सं० प्र० श्रीसिद्ध सूरिजिः ॥

[1071]

सं० १४७३ वर्षे द्वि वैशाख वदि ५ गुरौ श्री प्राग्वाट ज्ञा० व्य० खीमसी भा० सारू पुत्र व्य० जेसाकेन पुत्रं वीकन आसाभ्यां सहितेन श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं श्री अंचल गच्छनायक श्री जयकीर्त्ति सूरि गुरूणां उपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1072]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० कूंता भा० कुंवरदे पुत्र भमा भा० भावलदे पु० सायर सहितै श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छ सिद्धाचार्य सन्ताने मेदरथ श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1073]

सं० १४७४ वर्षे ज्ये० सु० ५ बुधे श्री नागेन्द्र गच्छे उपकेश ज्ञा० सा० साल्हा भा० माल्हा पु० धांगा भा० सागी पितृमातृ श्रे० श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० पद्माणंद सूरिभिः ॥

[1074]

सं० १४९१ वर्षे वैशाष सु० ६ गुरौ व० धरणा भा० पूनादे सुत हीराकेन भा० हीरादे पुत्र श्री सुमतिनाथ बिंबं श्री सोमसुन्दर सूरि प्र० .... ।

[1075]

सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे ओसवंशे पंचाणेचा सा० वस्ता भार्या लीलादे पुत्र ऊमाकेन सपरिवारेण स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० खरतर ग० श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[1076]

सं० १४९२ वर्षे ज्ये० व० ११ प्राग्वाट सा० अरसी भा० आल्हणदे सुत चाचाकेन भा० चाहणदे सुत तोला बाला सुहमा राणा षांचादि युतेन स्वसुत भोसा श्रेयसे श्री नमि-नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1077]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे सांषुला गोत्रे सा० डीहिल पु० चांपा भा० भापलदे पु० लाषाकेन भा० लषमादे पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1078]

सं० १४९६ वर्षे फागुण वदि २ शुक्रे हुंवड़ ज्ञातीय ठ० देपाल भा० सोहग पु० ठ० राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं निवृतिगच्छे श्री सूरिभिः ॥

[1079]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ गुरौ सुराणा गोत्रे सा० सोनपाल भा० तिहुणी पु० घिणराजेन गुणराज दशरथ सहसकिरण समन्वितेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोष गच्छे भ० श्री पद्मशेषर सूरि प० भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1080]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे दहदहड़ .... श्री अरुनाथ बिंबं का० प्र० राम सेनीया वरफे (?) श्री धर्म्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

[1081]

सं० १५०५ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे श्री संडेरगच्छे ऊ० ज्ञा० वासुत गोत्रे सा० गांगण पु० पैरु पु० बुलाकेन सा० गोगी पुत्र ढाड़ा कुंभा सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री .... ।

[1082]

सं० १५०६ मा० सु० ८ दिने श्री उपकेशज्ञातौ सिरहठ गोत्रे सा० सहदेव भा० सुहवदे पु० सालिगेन पित्रो निमित्तं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्री सर्व्व सूरिभिः ॥

[1083]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० उप० चिपड़ गोत्रे सा० रावा भा० जेठी पु० देपाकेन मातृपितृ पुण्या० आत्म श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० उपकेश गच्छे० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1084]

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमा भा० धरमिणि सुत मालाकेन लाला भा० गेलू राजू युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री वर्द्धमान बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥ कूंभिगिरि वास्तव्य ॥

[1085]

सं० १५०९ वै० शु० ३ प्राग्वाट व्य० मेघा भार्या हीरादे पुत्र व्य० आसा मोमा भा० कैलू आल्हा पुत्र शिखरादि कुटुम्ब युताभ्यां स्वश्रेयोर्थं श्री युगादि बि० का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥

[1086]

सं० १५१० वर्षे वैशाष वदि ५ सोमे गिरिपुर वास्तव्य हुंवड़ ज्ञाति डेकिकठ गोयद (?) भा० वारू सु० जाला भा० हीसू सु० आसाकेन भा० रूपी युतेन स्व० श्री सुविधिनाथ बि० का० श्री वृ० तपापक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1087]

सं० १५११ वर्षे माह वदि ६ गूर दिने उप० ज्ञा० चलद (?) गोत्रे सा० ठाड़ा भा० सहवादे सा० जाड़ा भा० जसमादे .... सहितया स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंब का० प्र० श्री भ० रामसेनीया अटकरा० श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1088]

॥ सं० १५१३ व० चै० सु० ६ गुरौ उपकेश वं० ताल गो० सा० महिराज पु० सा० काल्हा भा० कलसिरि सु० धना भा० धरण श्री पु० षोषा यु० श्री शितलनाथ बिंबं का० प्र० धर्म्मघोष ग० श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[1089]

॥ सं० १५१३ पौष शुदि ७ ऊकेश वंशे विमल गोत्रे सं० नरसिंहांगज सा० ऊाऊणेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० ब्रह्माणी उदयप्रभ सूरि तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे हेम हंस सूरिभिः ॥

[1090]

॥ सं० १५१५ वर्षे जे० सुदि ५ उपकेस ज्ञा० जोजा उरा सा० वीदा भा० वारू पुत्र गांगा हुदाकेन पूर्वज निमित्तं श्री कुंथनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगछे भ० श्री रामदेव सूरिभिः ॥

५

4192

[1091]

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ शनौ सीणुरावासि प्राग्वाट व्य० चूहा भा० गउरी पुत्र सा० देल्हाकेन भा० रूपिणि पुत्र गरु आदि कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री श्री विमलनाथ मूलनायक बिंबालंकृत चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागच्छे श्री रत्नशेषर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1092]

सं० १५२३ वर्षे माघ सु० ६ रवौ रेवती नक्षत्रे प्राग्वाट श्रे० घेघा भा० जमलू सुत श्रे० रीमी भार्या श्रे० सोमा भार्या बाछलदे पुत्री हुलू नाम्ना स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ आर्गीया ग्रामे ।

[1093]

सं० १५२५ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ भस वास्तव्य हूंबड़ ज्ञातीय ब्ररजा (?) गोत्रे पे० कर्मणजा भा० नांनू सुत (?) कान्हा श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं प्रति० श्री ज्ञान सागर सूरिभिः ॥

[1094]

सं० १५२७ वर्षे आषाढ़ सु० १३ रवौ ऊ० ज्ञातीय गूंदोचा गोत्रे सा० भांका भा० मापुरि पु० मांका भा० वाल्हणदे पु० मूना पाल्हा सहितेन सुता श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे श्री सोमकीर्त्ति सूरि पट्टे श्री श्री चारुचन्द्र सूरिभिः ॥

[1095]

॥ संवत् १५२९ वर्षे ज्येष्ठ सु० शुक्रे उशवाल ज्ञा० ताहि गोत्रो सा० मूलू भा० लूणादे द्वि० सुहागदे पु० सा० भापर भा० नीली पु० रणधीर जगा हडी रहा धापा श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनचन्द सूरिभिः ।

[1096]

संवत् १५३१ वर्षे फागुन सु० ८ शनौ उप० ज्ञा० ईटोड़का गो० सा० गपो भा० मानू पु० माका पेथा रतना भाला ऊबू पु० भादा सहितेन आत्म श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री सोमकीर्त्ति सुरि पट्टे आ० श्री नारचन्द्र सूरिभिः ॥

[1097]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय सा० नाकू भा० हांसी पुत्र सा० ठाकुरसी सा० वरसिंघ भ्रातृ सा० वीसकेन भा० सोनी पुत्र सा० जीणा सहितेन श्री अंचलगच्छेश श्री श्री श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री संघेन मांढ़ी ग्रामे ॥ श्री श्री ॥

[1098]

॥ सं० १५३५ वर्षे मार्ग वदि १२ साधुला गोत्रे साह पाल्हा भा० रहणादे पु० सा० तेजा भा० तेजलदे पु० बलिराज वीसल लोला। माणिकादि युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे श्री पद्माणंद सूरिभिः ॥

[1099]

सं० १५३६ वर्षे मार्गसिरि सुदि १० बुधवासरे श्री संडेर गच्छे ऊ० तेलहरा गो० सा० धना पु० काल्ह पूजा भा० खलतू पु० टोहा हीरा टोडा भा० वरजू पु० .... स्वश्रे० लाला निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं का० श्री जिण भद्र (?) सूरि सं० श्री सालि सूरिभिः ॥

[1100]

सं० १५४२ वर्षे फा० व० २ दिने जालउर महादुर्गे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० पोष भा० पोमादे पुत्र सा० जेसाकेन भा० जसमादे भ्रातृ लापादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० तप श्री सोमसुन्दर सन्ताने विजयमान श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रियोस्तु ॥

[1101]

सं० १५५९ वर्षे आषाढ़ सुदि २ उसवाल ज्ञाती कनोज गोत्रे सा० पेढा पु० सहसमल भा० सुहिलालदे पु० ठाकुरसि ठकुर युतेन आत्मश्रेयसे माल्हण पितृपुण्यार्थं शीतलनाथ बिंबं का० ॥ प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1102]

सं० १५६६ वर्षे वै० व० १३ र० पत्तनवासि प्रा० दो० माणिक भा० रखकू सुत पासाकेन भा० ईडू सु० नाथा सोनपालादि कुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1103]

सं० १५६६ वर्षे फ० व० ६ गुरौ प्रा० सा० तोला भा० रुषमिणि पु० गांगाकेन भा० पीबू पु० लाला लोला लाषादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री कमलकलस सूरि पट्टे श्री नन्दकल्याण सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्री चरणसुन्दर सूरिभिः ॥

[1104]

सं० १५९६ वर्षे ज्ये० शु० २ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय ज्यायपुर वा० सा० हापा भा० दानी पु० सुश्रावक सा० सरवण भा० मना भ्रा० सा० सामन्त भा० कम्म पु० सा० सूरा सा० सीमा षेता प्रमुख समस्त परिवार युतैः निज पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्र० श्रीमत्तपा गच्छे श्री पूज्य श्री आनन्दविमल सूरि पट्टे सम्प्रति विजयमान राजा श्री विजयदान सूरिभिः ॥

[1105]

सं० १६६७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ लोढा गोत्रे प। साता हर्षमदे सु० कण्ठराकेन सुत वार दास प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री विजयसेन सूरीणां निदेशात् उ० श्री सायविजय (?) गणिभिः ॥

[1106]

संवत् १६७६ वैशाष सुदि ७ उदयपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय वरडिया गोत्रे सा० पीथाकेन पुत्र पोषादि सहितेन विमलनाथ बिंबं का० प्र० त० भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः। स्वाचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1107]

सं० १६९० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे उकेस वंशे कांगरेचा गोत्रे सा० गोविन्द भार्या गारवदे पुत्र सा० समरथ श्री खरतरगच्छे श्री जिनकीर्त्ति सूरि श्री जिनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1108]

संवत् १६९४ वर्षे वैशाष .... श्री अनन्तनाथ बिंबं का० प्र० च तपगच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ॥ स्वोपाध्याय श्री लावण्यविजय गणि का० भ० ....

[1109]

सं० १७०३ सा० तेजसी कारिता श्री विमलनाथ बिंबं .... ।

[1110]

संवत् .... जीवा पु० सीहड़ भार्या श्रीया देवि पु० राजापाल प्रजापाल श्री श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० .... ० श्री वर्द्धमान सूरिभिः ॥

[1111]*

॥ सं० १४९३ श्री ज्ञानकीय गच्छे। सा० आहड़ भा० प्रमी पु० पाल्हा लोलाभ्यां श्रेद्धप्रा (?) कारिता ॥

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर ।

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1112]

संवत् १५०६ व० ऊकेश सा० बच्छराज सु० सा० हीरा भा० हेमादे हरसदे पु० सा० जगा भा० फडु .... श्रेयसे श्री शीतल बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरिभिः श्री देवकुलपाटक नगरे ।

[1113]

सं० १७४२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ गुरुवार सुराणा गोत्रे सा० चेतन पु० नारायण .... सु० सीला .... गोकलदास .... श्री चन्द्रप्रभ बिंबं कारितं ।

---

* यह मूर्त्ति देवी की है और वाहन मोड़ा है ।

श्री गौड़ीपार्श्वनाथजी का मन्दिर।

धातुकी मूर्त्तियों पर।

[1114]

सं० १७०५ माघ सु० १३ सोमे राणा श्री ....

[1115]

सं० १७०१ ज्ये० सु० ए उदेपुर महाराणा श्री जगतसिंहजी बापणा गोत्र साह श्री ..... ।

[1116]

सं० १७०७ वर्षे शाके १६७३ .... जेठ सु० ए बुधे तपा श्री विजयदेव सूरि श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य पोरवाड़ जण्डारी जीवनदास जार्या मटकू श्री पार्श्व बिंबं कारापितं।

धातु की चौवीशी पर।

[1117]

ॐ॥ सं० १५२२ वर्षे पो० व० १ गुरौ कक्कैरा वासि उकेश व्य० जेसा जा० जसमादे सुत व्य० वस्ता जार्या वीजलदे नाम्न्या पुत्र व्य० जीम गोपाल हरदास पौत्र कर्मसी नरसिंग श्रावर रूपा प्रमुख कुटुम्बयुतया निजश्रेयसे श्री शान्ति बिंबं का० प्र० तपागछ श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिजिः। श्रेयः॥

धातु की पञ्चतीर्थियों पर।

[1118]

ॐ सं० १५११ वर्षे वैशाष वदि ५ शनौ श्री मोढ़ ज्ञातीय मं० जीमा जार्या मञ्जु सुत मं० गोराकेन सुत जोला महिराज युतेन स्वपितुः श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विद्याधरगछे श्री विजयप्रज सूरिजिः॥

[1119]

सं० १५४७ वर्षे पोष वदि १० बुधे ऊ० ज्ञातीय सा० कोला जार्या षीमाई पु० दीना

जा० लाडिकि नाम्न्या देवर सा० हेमा जा० फटू पु० धरणादि युतया स्वश्रेयसे श्री शान्ति नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयचन्द्र सूरि शिष्याण आ० श्री जयरत्न सूरि उपदेशेन वरुली ग्रामे।

धातु के यंत्र पर।

[1120]

सं० १५३४ श्री मूलसंघे ज० श्री भूवनकीर्त्ति श्री ज० श्री ज्ञानजूषण हूं० दो० लाषा जा० अमरा जातृ दो० हीरा जा० अरघू सु० जूठा जगिणि सु० माणिक ....।

जणकार की धातु की पञ्चतीर्थियों पर।

[1121]

सं० १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शुक्रे महं० हीरा श्रेया महं० सुत देवसिंहेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः॥

[1122]

सं० १३६१ ज्येष्ठ सु० ए बुधे श्रे० आसपाल सुत अजयसिंह तद्भार्या श्री लहणदेवि तयोः सुत कान्हड़ पूनाज्यां पितृव्य लूणा श्रेयसे श्री शान्तिनाथ कारितः। प्र० श्री यशो जद्र सूरि शिष्यः श्री विबुधप्रज सूरिजिः॥

[1123]

सं० १४३७ वर्षे द्वि (?) वैशाष व० ११ सोमे ओश० व्य० नरा जा० मेघी पु० जीम सिंहेन पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री हेमतिलक सूरिजिः।

[1124]

सं० १४४ए वर्षे वैशाष शुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० पितृ षीमा मातृ पेतलदे श्रेयोर्थं सुत बाढाकेन श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री उदयदेव सूरिजिः।

[1125]

सं० १४७७ ज्येष्ठ व० १ प्राग्वाट ठ० ठजलसीकेन पित्रो ठ० पूनसीह जा० पूमलदे ....
श्री चन्द्रप्रज विंबं का० प्र० मलधारि श्री मुनिशेखर सूरिजिः ।

[1126]

सं० १५०१ माघ वदि ५ गुरौ प्राग्वाट व्य० धणसी जा० प्रीमलदे सुत व्य० लाषा
जा० लाषणदे सुत व्य० षीमाकेन निज श्रेयसे श्री सुमति बिंबं कारि० प्र० तपा श्री मुनि
सुन्दर सूरिजिः ।

[1127]

सं० १५१६ वर्षे वै० व० १२ शुक्रे उकेश ज्ञाती व्य० नारद जा० घरघति पुत्र बाघाकेन
जा० वल्हादे जा० पहिराजादि कुटुम्ब युतेन स्वपितु श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र०
श्री सूरिजिः ॥ महिसाणो वास्तव्य ॥

[1128]

सं० १५२० वर्षे वैशाष सु० ३ सोमे उपकेश ज्ञा० मह० काल्हू जा० आघू पुत्र ३ जावड़
रतना करमसी स्वमातृनिमित्तं श्री चन्द्र प्रज स्वामि बिंबं करापितं उपकेश गछे श्री कक्क
सूरिजिः सत्यपुर वास्तव्यः ॥

[1129]

सं० १५२४ वर्षे ज्ये० सु० ए श्री श्री वंशे स० समधर जार्या जीविणि सुता वाल्ही
पि० हेमा युतया पितृ मातृ श्रेयसे श्री अंचल गछ श्री जयकेशरी सूरिणामुपदेशेन श्री
सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री संघेन ।

[1130]

सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण जा० माल्हू पुत्र
डगाड़ा देवराज जा० देबलदे स्वपुण्यार्थं श्री श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० मडाहड़ गछ
रत्नपुरीय ज० गुणचन्द्र सूरिजिः । उ० आणंदनंद सूरि तेन उपरिकेन ।

[1131]

संवत् १५६ए वर्षे आषाढ़ शुदि २ मेडतवाल गोत्र सा० इला जा० मील्हा पुत्र ताल्हा जार्या तिलसिरि स्वपितृश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गछे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः।

[1132]

सं० १६५२ माह सुदि १० श्री मूलसंघे ज० श्री प्रजचन्द्र देवा तत्पट्टे ज० श्री चन्द्र कीर्त्ति तदाम्नाये चंदवाड़ गोत्रे सं० चाहा पुत्र तेजपाल पुत्र केसै। सुरताण श्रीवंत नित्य प्रणमंति मालपुर वास्तव्य ॥

जयपुर।

श्री सुपार्श्वनाथजी का पञ्चायती बड़ा मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1133]

सं० १३३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ गुरौ व्य० महीधर सुत कांऊणेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सूरिजिः।

[1134]

ॐ सं० १३४० वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ रवौ गूर्जर ज्ञातीय ठ० राजड़ सुत महं देल्हणेन पितृव्य वीरम श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चैत्रगछिय श्री देवप्रज सूरि सन्ताने श्री अमरजद्र सूरि शिष्यैः श्री अजितदेव सूरिजिः।

[1135]

सं० १३७० वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री काष्ठासंघे श्री लाडवा गण्णगणे श्रीमत्

आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंवड़ ज्ञातीय व्य० बाहड़ भार्या लाछी सु० व्य० षीमा भार्या राजूल देवि श्रेयोर्थं सु० का० देवा भार्या राजुल देवि नित्यं प्रणमन्ति ।

[1136]

सं० १४३७ वर्षे वैशाष वदि ११ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि गोहा भार्या ललतादि सुत मूजाकेन । पितृभ्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रभ सूरीणामुपदेशेन ।

[1137]

सं० १४३९ वर्षे पौष वदि ९ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्री मा० पितृ माषसी भा० मोषलदे प्र० सुत सोमलेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1138]

सं० १४६५ वर्षे ······· आत्मार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ······· ।

[1139]

सं० १४६९ वर्षे ऊकेशवंशे नवलषा गोत्रे सा० साघर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० खरतर ग० । जिनचन्द्रेण ··········· स्तव्य ।

[1140]

संवत् १४७९ वर्षे पोस सुदि १२ शुक्रे श्री हुंवड़ ज्ञातीय धावेका गलनयोः पुत्रेण धा० हापाकेन स्वभ्रातृ धावड़ा मुलासी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपागच्छे श्री रत्नसिंह सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥ छ ॥

[1141]

सं० १४७४ माह सु० ११ गुरौ श्री संडेरगच्छे ऊ० आ० संवाछि गौष्ठिक सा० सुरताण पु० धर्मा भा० धर्मसिरि पु० वासलेन भा० कानू पु० नापा नाल्हा स० पित्रोः श्रेयसे श्री श्रेयंस तु० का० प्र० श्री शान्ति सूरिभिः शुभं ।

[1142]

सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संडेरगच्छे उपकेश ज्ञा० साह कालू भार्या अल्ही पुत्र कान्हा भार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० प० श्री सांति सूरिभिः ।

[1143]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकापगच्छे उपकेश० छोलस गोत्रे साह कान्हा भार्या कर्म्म सिरि पुत्र आढा भार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना भार्या अरपू आत्म श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिभिः ।

[1144]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे षिरुत गोत्र सा० माल्हा पु० अरजुण भार्या साल्ह पुत्र कान्हाकेन भा० हूंदी .... पु० दफस्या श्री पद्मप्रभः का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः आ० विजयप्रभ सूरि सहितैः ॥

[1145]

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ ऊ० ज्ञा० जाजा भटाणा सा० कर्म्मा भा० सागू पु० षेना जइताषेण भा० राणी पु० पंचायण जयता भा० मूंती पित्रोः श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री चैत्रगच्छे प्र० श्री मुनितिलक सूरिभिः ।

[1146]

सं० १५०२ वै० व० ५ प्रा० व्य० लाषा लाषणदे पु० सामन्तेन सिंगारदे पु० पाल्हा रतना कौल्हादि युतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1147]

सं० १५०४ फागुण शुदि ११ फूंगटिया श्रीमाल सा० साधारण पुत्रेण सा० समुधरेण श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठितं श्री तपाभट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1148]

सं० १५०५ आषाढ सुदि ए श्री उप० सुचिंतित गोत्रे सा० सीहा ना० जावटही पु० सा० सोलाकेन पुत्र पौत्र युतेन आत्म पु० .... श्री चन्द्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्री उपकेशगछे श्री कक्क सूरिभिः।

[1149]

सं० १५०६ फा० ब० ए श्री उ० ग० श्री ककुदाचा० .... गो० सा० समधर सु० श्रीपाल ना० परवाई पु० मुद .... भव ससदा रंगाभ्यां पितु श्रे० श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः।

[1150]

ॐ सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि ३ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय जढक गोत्रे· संदणसीह नार्या दादाह वीसल नाती महिपाल पु० मगराज साधी आत्मपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहद्गछे श्री सागर सूरिभिः।

[1151]

सं० १५०७ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ लोढा गोत्रे। श्रे० गुणा नार्या गुणश्री पुत्र श्रे० पूजा कचरोभ्यां पितृव्य धन्ना पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिं० का० प्र० खरतर श्री जिनजद्र सूरि श्री जिनसागर सूरि।

[1152]

सं० १५१० वर्षे चैत्र वदि ४ तिथौ शनौ हिंगड़ गोत्रे गौरन्द पुत्रेण सा० सिंघकेन निज श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा० न० श्री हेमहंस सूरिभिः।

[1153]

सं० १५१२ माघ सुदि ७ बुधे श्री ओसवाल ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० सिंघा पु० ज्येल्हा ना० देवाही पु० दशरथेन भ्रातृपितृश्रेयसे श्री अनन्तनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गछे श्री कुकदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः॥

[1154]

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे ओसवाल ज्ञातीय बब्बश गोत्रे सा० धीना भा० फाई पु० देवा पद्मा मना बाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिं० का० प्र० श्री मलधार गच्छे ···· सूरिभिः।

[1155]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे श्री श्री मा० श्रे० जइता भा० लाबू तयो० पु० माधव निमित्तं लालू आत्मश्रेयोऽर्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० पिप्पल ग० भ० श्री विजयदेव सू० मु० प्र० श्री शालिभद्र सूरिभिः।

[1156]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि ४ बुधे भालह ज्ञा० मंचूणा भा० देऊ सुत पितृ पांचा मातृ तेजू श्रेयसे सुत गोयंदेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं पूनिम गच्छे श्री साधुसुन्दर सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं।

[1157]

। सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने मंत्रिदलीय ज्ञातीय मुंफगोत्रे सा० रतनसी भार्या बाकुं पुत्र सा० देवराज भार्या रामाति पुत्र सा० मेघराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगच्छ श्री जिनहर्ष सूरिभिः॥

[1158]

सं० १५२० वर्षे वैदि १ सोम दिन श्रीमाल वंशे जूनीवाल गोत्रे सा० दासा पुत्र सा० षिउराजकेन समस्तं परिवारेण आत्मश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री षरतर गच्छे श्री जिनप्रभ सूरि अभिप्रतिष्ठितं श्री जिनतिलक सूरिभिः। शुभं भवतु॥ छ॥

[1159]

सं० १५२९ वर्षे आषाढ सु० २ रवौ श्री ओसवाल ज्ञा० चांणाचाल गच्छे षांमलेचा गोत्रे सा० साडूब भार्या मेघादे पु० भाषर भार्या भावलदे पु० मोहण हरता युतेन मातृ मेघू निमित्तं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० भ० श्री वज्रेश्वर सूरिभिः।

[1160]

सं० १५३० वर्षे माघ वदि २ शु० पालणपुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरसिंग भा० नामलदे पु० कान्हा भा० सांवल पु० षीमा प्रषू माषी भा० सीचू श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1161]

सं० १५३० वर्षे मा० व० १० बुधे प्राग्वाट सा० सिवा भा० संपूरी पुत्र सा० पाल्हा भा० पाल्हणदे सुत सा० नाथाकेन भ्रातृ ठाकुरसी युतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिम्बं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः धार नगरे।

[1162]

सं० १५३३ वर्षे वै० सुदि ६ दिने श्रीमाल वंशे स० जईता पु० स० माऊण भा० लीलादे पु० षीमा जातड़ युतेन श्री सुपार्श्व बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः।

[1163]

सं० १५३४ वर्षे कार्त्तिक शुदि १३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० गोत्रजा अम्बिका श्रेष्ठि चांद्रसाव भा० ऊमकु सुत वानर भा० ताकू सुत जागा भा० नाथी सहितेन स्वपूर्वजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1164]

सं० १५३४ फा० शु० २ वासावासि प्राग्वाट व्य० आल्हा भा० देसू पुत्र परवतेन भा० भरमी प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री रत्नशेषर पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1165]

॥ सं० १५३७ फा० व० ८ बुधे ऊ० पांटड़ गो० म० पूना भा० अचू पु० राणाकेन भा० रयणादे पु० हरपति गुणवति तेज। हरपति भा० हमीरदे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन स्वश्रेयसे

श्री सुमति बिंबं का० प्रतिष्ठितं भावडहरा गच्छे श्री भावदेव सूरिभिः॥ खिरहालू वास्तव्येन ॥

[1166]

संवत् १५४५ वर्षे माघ शु० १३ बु० लघुशाखा श्रीमाली वंशे मं० घोघल भा० अकाई सुत मं० जीवा भा० रमाई पु० सहसकिरणेन भा० ललनादे वृद्ध भा० इसर काका सूरदास सहितेन मातु श्रेयसे श्री अंचलगच्छेश श्री सिद्धान्तसागर सूरीणामुपदेशेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री स्तम्भतीर्थे।

[1167]

सं० १५४९ वर्षे वैशाष सुदि ५ रवौ उपकेशज अचोवल० दढागोत्रे सा० साज भा० तेजसर पु० कुंप कोन्हा सहिसा सीधरा अरष युतेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिं० का० प्र० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री मणिचन्द्र सूरिभिः।

[1168]

संवत् १५५७ वर्षे शाके १४२२ वैशाष सुदि ५ गुरौ चण्डाल्या गोत्रे सा० तेजा भा० रूपी पु० अचला भा० देमी आत्मश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं श्री मलयधार गच्छपति श्री गुणवषान सूरिभिः।

[1169]

सं० १५६२ व० माघ सु० १५ गु० ऊ० वैंक० गोत्र० सा० जेसा भा० जिसमादे पुत्र राणा भा० पूणदे पु० अम्बाल तेजा आ० श्रे० श्रेयांस बिं० कारि० बोकड़ी० श्री मलयचन्द्र पट्टे मुणिचन्द्र सूरिभिः।

[1170]

संवत् १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे विश्वलनगरे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० जीवा भार्या रंगी पुत्र रत्न श्रे० काह्नीआ भ्रातृ श्रीवन्त। केन भार्या श्री रत्नादे द्वि० दाडिमदे सुत षीमा भामादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छ भट्टारक श्री हेमविमल सूरिभिः॥ कल्याणमस्तु॥

[1171]

संवत् १५३१ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० सा० धरमा भा० काउ सु० सोता मांडण सु० रूपा सोता भा० सुहड़ादे सु० नरसिंघ आल्हा नापा माला मारूष भार्या माणिकदे पु० गांगा मोका पदम रूपा भार्या हासू सु० सेटा नोमा सुकुटुम्बेन रूपा नापा निमित्तं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री देवरत्न सूरिभिः ॥

[1172]

सं० १५७३ वर्षे पोस वदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय प० काका भा० बाक सुत प० पहिराज भा० वरबागं आत्मश्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः श्रीरस्तुः ॥

[1173]

सं० १६७३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १ दिने सुजाउलपुर वास्तव्य श्री० तिम्नका श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदेव सूरिभिः ।

धातु की चौवीशी पर ।

[1174]

सं० १५०९ वर्षे आषाढ सुदि २ सोमे उसिवाल ज्ञातीय सूराणा गोत्रे सा० लषणा भा० सषण श्री पु० सा० सकर्म्मण सा० सिवराजेन श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री राजगच्छे भट्टारक श्री पद्माणंद सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1175]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणासण वासि श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्म्मा भा० धर्म्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ चतुर्विंशतिः पट्टः कारितः प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः । श्रीरस्तु ॥

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1176]

संवत् १६०१ वर्षे श्री आदिकरण बोटा बा० रंजा श्री श्रीमाली न्यात श्री धर्म्मनाथ श्री विजयदान सूरि ।

[1177]

संवत् १५४४ वर्षे फागुण सुदि १ तिथौ बुधवासरे तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय प्रभ सूरि निदेशात् श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं बा० मुक्तिचन्द्र गणिभिः कारितः ।

धातु के यंत्र पर ।

[1178]

सं० १८५२ पोस सुदि ४ वृहस्पतिवासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदम् प्रतिष्ठितं बा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जैनगर वास्तव्य से० वषतमल तत् पुत्र सुषलालेन श्रेयार्थं । ठ ।

[1179]

सं० १८५६ माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ ५ गुरौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० श्रीमद् वृहत् खरतरगच्छे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वय फोफलिया गोत्रीय अनन्दराम त० षूबचन्द तत् पुत्र बहादुरसिंघ सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1180]

ॐ संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ सोमवासरे जाईलवाल पवित्र गोत्रे संघवी ठीहल पुत्र सं० जेजा भि० जस .... पु० वाहड सहितेन आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः ॥

[1181]

सं० १४९१ आषा० वदि ७ श्री श्रीमालवंशे वडली वास्तव्य सं० सांका जा० कामलदे पुत्र स० मना जा० रशदे पुत्राभ्यां सं० समधर सं० सालिग अन्यो जा० राजू साधू सुत मिघा माणिक रत्ना प्रमुख कुकुम्ब सहिताभ्यां श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छाधिराजैः श्री सोमसुन्दर सूरिभिः शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

[1182]

सं० १४९३ वैशाष सुदि ५ उप ज्ञा० आदित्यनाग गोत्रे। सा० पदमा पु० षेढा भा० पूजी पुत्र षीमाकेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री उपकेशगच्छे कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः॥

[1183]

सं० १५०६ वर्षे माह वदि ए श्री कोरंटकीयगच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने। ऊ० ती० सुचन्ती गोत्रे भा० आभरमुणया पु० हाना भा० हुती पु० मांकण भा० माणिक पु० षेतादि श्री वासपूज्य बिंबं कारापितं प्र० श्री सांबदेव सूरिभिः।

[1184]

सं० १५१३ ओसवाल मं० भारमल्ल भावलदे पुत्र रत्नाकेन भा० अपू भ्रा० टील्हा शिवादि कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर सूरि श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः।

[1185]

संव० १५१७ वर्षे चैत्र शु० १३ गु० प्राग्वाट ज्ञा० सा० लषमण भा० साधू पुत्र साह गोवल्ले भा० राजू युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्व बिंबं का० प्र० तपागच्छेश श्री मुनिसुन्दर सूरि तत् पट्टे श्री रत्नशेषर सूरिभिः॥

[1186]

सं० १५४९ फा० सु० ११ जै० श्री मू० त्रिभुवनकीर्ति देवा० तत् पट्टान्व सा० पची। भा० वरम्हा पु० सा० जनु। भा० चादंगदे पु० वहू भा० नूपा। त्रि० पु० सा० नेदा भा० दानसिरि व० पु० अजितू भा० नैना ककै (?) विजसी ....।

[1188]

सं० १५५ए वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि मंईआ जार्या माणिक सुत सामल जार्या सारू सु० धर्मण धाराकेन स्वपित्र पूर्व्विज श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्री विमल सूरि पट्टे श्री बुद्धिसागर सूरिजिः वणड़ वास्तव्य ॥

[1189]

ॐ सं० १५५ए वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे ओसवाल ज्ञातौ तातहड़ गोत्रे सा० आढ जा० गोपाही पु० सुलखित । जा० सांगर दे स्वकुटुंबयुतेन श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ककुदाचार्य सन्ताने उपकेश गच्छे ज० श्री देवगुप्ति सूरिजिः ।

[1190]

सं० १५६३ माह सु० १५ गुरु श्री संडेर गच्छे उसवाल पूगलिया गोत्रे स० काजा जा० रानू पु० नरवद जा० राणी पु० तिहुण करमा कुवाला सहसा प्र० आतम पु० श्री मुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारापितं प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ॥

[1191]

सं० १५६ए वर्षे वैशाष सुदि ६ दिने सूराणा गोत्रे सं० चांपा सन्ताने । सं० सयारू सु० सं० गांडा जा० धणपालहे पु० सं० सहसमल्ल भ्रातृ आढा पु० सोमदम युतेन मातृ पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री धर्म्मघोष गच्छे प्र० ज० श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः ॥

[1192]

सं० १५७४ वैशाष वदि ५ ओसवंशे बरहड़िया गोत्रे सा० लाषा पुत्र सा० हर्षा जार्या हीरा दे पुत्र सा० टोडर श्रावकेण स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च अञ्च.. गच्छे श्रावकेण श्रेयोस्तु ॥

[1193]

संवत् १५०७ वर्षे पोस वदि ५ सकरे सहूआला वास्तव्य प्राग्वाट वृद्ध शाखायां दो० वीरा भा० भाणा भा० भरमा दे तेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन साधु सूरिभिः ॥

[1194]

सं० १६१२ वर्षे फागुण शुदि २ तिथौ श्री ओसवाल वंशे सा० आढत भा० रेणमा रूणां सा० चतुह धर्मते कारापितं श्री वहितेरा गछे भ० श्री भावसागर सूरि त० श्री धर्म्म-मूर्त्ति सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री अनन्तनाथ ।

[1195]

॥ संवत् १६२४ वर्षे माह्रा शुदि ६ सोमे ओसवाल ज्ञातीय दोसी भामा सत दोसी पू० । भ । भार्यां बाई मेलाई सुत वानरा श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं ॥ तपागछ श्री ७ श्री हीरा विजय सूरि प्रति० सावलटन नगरे ।

[1196]

सं० १६५३ वर्षे अलाई ४२ संवत् ॥ माघ सुदि १० दिने सोमवारे ऊकेश वंशे शंख-वाल गौत्रीय सा० रायपाल भार्यां रूपा दे पुत्र सा० पूना भार्यां पूना दे पुत्र मं० पाता मं० देहाभ्यां पुत्र जिणदास म० चांपा मूला दे मू । सामल सपरिकराभ्यां श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत् खरतर गछाधीश्वर श्री अकबरसाहिप्रतिबोधक श्री जिन-माणिक्य सूरि पट्टालङ्कार युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ।

[1197]

सं० १७०३ वर्षे मार्गशिर्षे सित १ दिने मेडता नगरे वास्तव्य शंखवालेचा गोत्रे सा० डूंगर पुत्र सा० माईदासकेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागछाधिराज सुवि-हित भट्टारक श्री विजयदेव सूरि पट्टे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥ कृष्णगढ नगरे मुदपद्म जगचन्द्र(?) प्रतिष्ठायां ॥

धातु की चौवीशी पर।

[1198]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख वदि २ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मामल जा० कांई सु० पाता जा० वाऊं सु० देवाकेन जा० देवलदे प्र० भ्रातृ सामंत जा० लाम्ही सु० समधर जा० अजी सु० मांमण जोजा राणा द्वि० भ्रा० ऊदा जा० बाई पु० साईआ जा० सहिज्यादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ चतुर्विंशति पट्टः जीवितस्वामी पूर्णिमापक्षे श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० सुविधिना साकरग्रामे।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1199]

सं० १६३२ श्री संभवनाथ बिंबं पास०।

[1200]

सं० १७७४ माघ तिन २३२ वासा गुलालचन्द श्री सुमति बिंबं कारितं।

[1201]

सं० १८३१ वर्षे मार्गशिर वदि १ शनौ रोहिणी नक्षत्रे भ० श्री विजयधर्म्म सूरीश्वरराज्ये मुनि श्री ऋद्धिविजय गणि प्रतिष्ठितं पं० विद्याविजय गणि श्री वृषभनाथ बिंबं कारापितं स्वश्रेयसे।

[1202]

श्री ऋषभदेवजी मीती माग श्री सु० ३ सं० १९०६।

[1203]

श्री हंसराज श्रेयोर्थं श्री अभिनन्दन बिंबं।

धातु के यंत्र पर।

[1204]

संवत् १७४७ आश्विन शुक्ल १५ दिने तपागच्छाधिराज श्री विजैजिनेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं सिद्धचक्र यंत्रमिदं कारापितं पटणी बाहादुरसिंहेन स्वश्रेयसे पं० पुन्यविजै गणीनामुपदेशात् ॥

[1205]

संवत् १७५२ पोस सुदि ४ दिने बृहस्पति वासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं जैनगरमध्ये वा० लालचन्द्र गणिना बृहत् खरतरगच्छे कारितं बीकानेर वास्तव्य जै० मथेन श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

श्री आदिनाथजी का (नया) मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1206]

संवत् १४७६ वर्षे माघ वदि ११ तिथौ श्री मालान्वये ढोर गोत्रे सा० तोल्हा तद्भार्या श्रा० माणी तत् पुत्र सा० महराज श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1207]

सं० १४९९ फागुण वदि २ गुरौ श्री उपकेश ज्ञातौ श्री धरकट गोत्रे सा० हरिराज प्रसिद्धनाम सा० वगुला पुत्रेण सा० लापा श्रावकेन भार्या गजसीही पुत्र बलिराज युतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री बृहद्गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरिभिः।

[1208]

॥ सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ ऊ० सा० लापा भा० लषमादे सा० गुणराज धर्म्म

पुत्री श्रा० धारू नाम्न्या श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छनायक श्री सोमसुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ सा० गुणराज सुत सा० कालू सुत सा० सदराज ॥

[1209]

सं० १५३१ वर्षे चैत्र वदि ७ बुधे चंदेरी वास्तव्य ओसवाल सा० दापा भा० हरषमदे सुत समराकेन भार्या शीतादे सु० वेला मेघराज हंसराज प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री अनंत बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे भ० श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1210]

सं० १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ रवौ उप० सीसोदिया गोत्रे सा० देवायत भार्या देवलदे पु० पेता भार्या पेतलदे पुत्र भापर युतेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० संडेर-वालगच्छे श्री सालि सूरिभिः ।

[1211]

॥ सं० १५४२ वर्षे वैशाख सुदि ए शुक्रे ऊकेश ज्ञा० सिंघाडिया गोत्रे सं० रेडा सं० सा० कदा भार्या जदतदे पु० सा० भारू श्रीमल जिणदत्त । पारस युतेन श्रा० पु० श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० श्री मेरुप्रभ सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1212]

संवत् १५५ए वर्षे माग्रस (मार्गशीर्ष) शु० १५ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० वरसिंग भा० देमी० सु० हेमा सु० हराज सु० जयता पोमा सु० पांचाकेन आत्मश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं मारवीया (ग्रामे ?) ।

[1213]

॥ संवत् १५७० वर्षे माघ सुदि १३ भूमे श्री प्राग्वाट० सा शेखा भा० सहजलदे पुत्र हरषा रूपा हरषा भा० लाछकि पुत्र मातृपितृभ्रातृ भृ० श्रेयोर्थं श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं । प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्रगच्छे भट्टा० श्री हेमसिंह सूरिभिः ।

[1214]

॥ संवत् १६५० वर्षे फाल्गुन शुदि ७ बुधे कुमरगिरि वासि प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध शाखायां अंबाई गोत्रे व्यवहा० खीमा जा० कनकादि पुत्र व्य० ठाकरसी जा० सोजागदे पुत्र देवर्ण परिवारयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपागच्छे श्री पूज्याराध्य श्री विजयदान सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री श्री श्री हीरविजय सूरिभिः आचंद्रार्कं नन्द्यात् श्रीः॥

[1215]

संवत् १६३० वर्षे माघ शुदि १३ सोमे श्रीस्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० वस्ता जा० विमलादे सुत सा० थावरवच्छी .... आ श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्रीमत्तपागच्छे भट्टारक श्री हीरविजय सुरिभिः प्रतिष्ठितं शुभं भवतु॥

धातु की चौवीशी पर।

[1216]

संवत् १५६ए वर्षे वैशाष शुदि ए शुक्रे श्री बायड़ा ज्ञातीय म० मांणक जा० गोमति स० वेलाकेन जा० वनादे सु० लहूंआ लाखण लहूंआ जा० लालू सकुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारापितं श्री आगमगच्छे श्री सोमरत्न सुरि प्रतिष्ठितं विधिना श्रीरस्तु।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1217]

सं० १७१० ज्येष्ठ सुदि ६ सा० कपूरचन्द। चन्द्रप्रभ भ। तपागच्छे प्रतिष्ठितं।

[1218]

सं० १७२७ वर्षे॥ घाइ। सावर। शेन। श्री ऋषभनाथ बिंबं श्री तपागच्छे।

धातु के यंत्र पर।

[1219]

संवत् १८५२ वर्षे ८ पोष सुदि ४ दिने सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जयनगरमध्ये समस्त श्रीसंघेन वृहत् षरतरगच्छे। शुभमस्तु॥

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर—श्रीमालोंका महल्ला।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1220]

सं० १४६५ वर्षे वैशाष सुदि ३ सापुला गोत्रे सा० वेला भार्या स० वील्हणदे पु० साधु खिमराज पेमाभ्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं॥ प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरि पट्टे श्रीमलचन्द्र सूरिभिः॥

[1221]

सं० १५११ वर्षे माघ शु० ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मकुणसी भार्या नाऊ सुत कीयाकेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनिचन्द्र सूरिभिः मेहूणा वास्तव्य। श्री।

[1222]

संवत् १५३० वर्षे पोष वदि ६ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मंत्रि समधर भा० श्रीयादे सुत बीकाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पिप्पलगच्छे श्री गुणदत्त सूरि पट्टे श्री चन्द्रप्रभ सूरिभिः रालजग्रामे।

[1223]

सं० १५३१ वर्षे वै० शु० १० सोमे ऊसवंशे लोढा गोत्रे सा० चाहड़ भा० देल्ह सु०

नीह्हा जा० सोनी करमी सु० सा० हासकेन ज्रातृ सा० नाऊ सा० षेत हासा जार्या रतनी सु० सा० ठाकुर सा० ईसरदास० ऊधादि प्रमुखयुतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्रति० श्री वृद्गच्छ श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1224]

॥ संवत् १५५५ वर्षे फागुण सुदि ए बुधे सीधुरू गोत्रे ठधरि गरूपाल जा० गोरादे सुत वस्तुपाल ज्रातृ पोमदत्त वस्तपाल जा० वल्हादे पुत्र त्रैलोक्यचंड श्रेयोर्थं श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगछे ज० श्री जिनसमुड सूरिजिः ॥

[1225]

संवत् १६२४ वर्षे वै० शुदि १ शुक्रवासरे तपगछे नायक ज० प्रज श्री हीरविजय सूरि मनराजो श्री पद्मप्रज बिंबं प्रतिष्ठितं प्रतिष्ठापितं नागपर गहिलड़ा गोत्र सा० अमीपाल जा० अमूलकदे पु० कूअरपाल जा० कुरादे प्रतिष्ठितं शुजं जवति ॥

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1226]

सं० १८७७ माघ शुक्ल १३ बुधे श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं कारितं । प्र० वृ० त ख० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

धातु के यंत्र पर ।

[1227]

संवत् १८५६ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्ष तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं ज० जिनअक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचन्द्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वये सींघरू गोत्रीय किसनचन्द्र तत्पुत्र उदयचंड सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं ॥

[1228]

सं० १९०२ वर्षे आश्विन मासे शुक्ले पक्षे पूर्णमासी तिथौ बुधे जयनगर वास्तव्य

श्रीमालवंशे फोफलिया गोत्रीय चुनीलाल तत् पुत्र हीरालालेन श्री सिद्धचक्र यंत्र कारितं चारित्रउदय उपदेशात् प्र० भ० खरतरगच्छीय श्री जिननन्दीवर्द्धन सूरिभिः पूजकानां .... ती भूयात्।

आम्बेर। *

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1229]

सं० १३९० वर्षे पोष सुदि १२ सोमे श्री काष्ठासंघे .... सुत ताल्हड़ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ प्रतिष्ठितं।

[1230]

सं० १५२५ वर्षे मार्गसिरि वदि १२ शुक्रे उपके० बावेल गोत्रे सा० अल्हा पुत्र लोला भार्या लाछिमदे .... स्वश्रेयसे पितृमातृपुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधार गच्छे श्री गुणसुन्दर सूरिभिः।

[1231]

॥ सं० १५४२ वर्षे फागु० व० २ दिने सीतोरेचा गो० ओस० सा० सूरा भा० सूरमादे पु० परवत भा० सहजादे तथा परवत देलू समधर वीजा सहस भा० पगमलदे सहित भा० सहजा पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री नाणकीयगच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥छ॥

* जयपुर शहरसे ५ मैल पर यह स्थान है और यहांका विशाल प्राचीन दुर्ग प्रसिद्ध है।

अलवर ।

पाषाण के मूर्त्ति पर ।

[1232] *

(१) ॥ सिद्धि ॥ संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ दिने शुक्रवासरे श्री गोपाचल नगरे राजाधिराज श्री डूंगर-सिंह-देवराज्ये ऊकेश विं (वं) शे ।

(२) [पं] चलउट गोत्रे भण्डारी देवराज भार्या देल्हणदे तत्पुत्र भं० नाथा भार्या रूपाई स्वश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रति-

(३) ष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री जिनसागर सूरिभिः ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ छ ॥

नागौर ।

श्री ऋषभदेवजी का बड़ा मंदिर—हीरावाडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1233]

१। ॐ संवत् सु० १०६६ फाल्गुन विदि २
२। मा मुलक व सतो पाहूरि सा-
३। वकेणं सन्तरसुतेन नित्य-
४। श्रेयोर्थं कारिताः ॥

[1234]

संवत् १३६१ वर्षे .... सुदि २ सोमे श्रेष्ठि धणपाल भार्या पाल्ह पुत्रेण कुमरसिंह श्रावकेण आत्मश्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री .... ।

* यह लेख राय गौरीशङ्करजी बहादुर से मिला है उनके विचार से इस लेख का राजाधिराज डूंगरसिंह देव ग्वालिअर का तंवर (तोमर) वंशी–राजा डूंगरसिंह ही हैं। इस मूर्त्ति की मूल प्रतिष्ठा ग्वालिअर में हुई थी, यहां से किसी प्रकार अलवर पहुंची है।

[1235]

संवत् १४३० वर्षे चैत्र सुदि १५ सोमे रावगणे वोवे (?) नेपाल भा० पूरी पु० सा० पेथा स्वपितृमातृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्री धर्म्मघोषगछे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेषर सूरिभिः ॥

[1236]

संवत् १४५० वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपकेश ज्ञातीय केकडिया गोत्र .... भा० रूदी ७ जेस भा० जसमादे पित्रोः श्रे० श्री चन्द्रप्रभस्वामि बिंबं का० रामसेनीय श्री धनदेव सूरि पट्टे श्री धर्म्मदेव सूरिभिः ॥

[1237]

संवत् १४५० वर्षे फाल्गुण वदि १ शुक्रे उपकेशीय हट्टचायि जोम्हा० सा० पानात्मज सा० सजना भा० श्रीयादे पुत्र मतूणवकेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्रति० श्री पल्लिगच्छे श्री शान्ति सूरिभिः ॥

[1238]

संवत् १४५३ वर्षे बैशाख वदि १ उपकेशवंशे श्रे० ठाडा पुत्र श्रे० केल्हाकेन कुमरपाल देपालादियुतेन श्री शान्तिनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगछे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1239]

संवत् १४३४ वर्षे फाल्गुन वदि २ सूराणा गोत्रे से० हेमराज भा० हीमादे पुत्र सं० पेल्हाकेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[1240]

संवत् १४७५ वर्षे मागसिर वदि ४ दिने वम्हाहम्हा गोत्रे सा० डुंगर पुत्रेण सा० शिखर केन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ प्रतिमा कारिता प्र० तपा श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1241]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ नौमे प्राग्वाट् ज्ञातीय व० साढा श्री जादी पु० सहसा जा० सीतादे पु० पाल्हा स० आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति० पूर्णिमा पक्षे श्री सर्वानन्द सूरिजिः ॥

[1242]

संवत् १४९० वर्षे माह सुदि ···· पक्षे श्री ओसवंशे कछग ज्ञातीय सा० अजीआ सुत सा० जेसा जार्या जासू पुत्र पोमासाणादिजिः अञ्चलगछेश श्री जयकीर्त्ति सूरीणामुपदेशेन श्री चन्द्रप्रज बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1243]

संवत् १४९३ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे उपकेश ज्ञातीय सा० टाहा जा० कर्म्मादे पुत्र मेघा जा० अणुपमदे सहितनात्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० श्री अमरचन्द्र सूरिजिः ॥

[1244]

सवत् १४९३ वर्षे फाल्गुन विदि १ दिने श्रीवीर बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनजद्र सूरिजिः उपकेशवंशे सा० वाहरू पुत्र पूजाकेन कारितम् ॥

[1245]

संवत् १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुध उपकेश वंशे लघुशाखा मएरूण सा० मन्दलिक जार्या फदकू सुत सा० डूंगरसी जार्या दल्हादे पुत्र सा० सोना जीवा थीनेन मातृपुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगछे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि तत् पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[1246]

संवत् १४९६ वर्षे फाल्गुण सुदि ए बुधे उपकेश ज्ञातीय व्यव० शाखा जा० चांपू पुत्र ऊधरणकेन जार्या देपू सहितेन आत्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० बोकड़ियागछे जट्टा० श्री धर्मतिलक सूरिजिः ॥

[1247]

संवत् १४९० वर्षे फाल्गुण विदि २ फांफटिया गोत्रे सा० मोहण भार्या कुमरी पुत्र सा० मेहाकाहाभ्यां स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1248]

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ए दिने उपकेशवंशे करमदिया गोत्रे सा० वील्हा तत् पुत्र सा० धना पुत्र भाषा वाल्हा बाठा प्रमुख परिवारेण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्रीमत् श्री जिनसागर सूरि शिरोमणिभिः ॥ शुभम् ॥

[1249]

संवत् १५०४ व्य० (वर्षे) गवल्हो रत्नदे पुत्र लक्ष्मण जाल्हणदे पुत्र नाथू भा० दोया भ्रातृ चीढा युतया सूल्ही नाम्ना कारितः श्री सुपार्श्वः । प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[1250]

संवत् १५०७ वर्षे कार्त्तिक सुदि ११ शुक्रे प्राग्वाट कोठा० लाषा भा० लाषणदे पुत्र को० धरवत .... भोला रूाहा नाना डुंगर युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं उएस गच्छे श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1251]

सं० १५०७ वर्षे माह सुदि १३ शुक्रे पटवड़ गोत्रे सा० साल्हा भार्या सोना पुत्र सा कुसमाकेन भा० कमलश्री पुत्र धानादियुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे पद्माणन्द सूरिभिः .... श्री हेमचन्द्र सूरीणामुपदेशेन ॥

[1252]

संवत् १५०९ वर्षे चैत्र सुदि १२ श्री काष्ठासंघे श्री मलयकीर्त्ति श्री राल्ह भार्या चील्ह

पुत्र राजा भार्या साल्ही द्वितीय पुत्र णहराणो राजा सुता हरूु पउमदरा रतल एतेषां प्रणमति ॥

[1253]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ उपकेश ज्ञातीय आईरी गोत्रे सा० लूणा पुत्र सा गिरिराज भा० सुगुणादे पु० सोनाकेन ठाकुर देवात् श्री चन्द्रप्रभस्वामि बिंबं का० उपकेश गच्छे ककुदा० प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1254]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ९ बुधे श्री ओसवंशे वृद्धशाखीय सा० हता भा० रंगादे पुत्र सा० माका श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं श्री साधु सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु श्री अमदाबाद वास्तव्य ॥

[1255]

संवत् १५०९ वर्षे मार्गशिर सुदि ७ दिने उपकेशवंशे साधुशाखायां सा० लखमण सुत सा० महिपाल सा० वील्हाख्यौ तत्र सा० महिपाल भार्या रूपी पुत्र ण० तेजा सा० वस्ताभ्यां पुत्रादि परिवारयुताभ्यां स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1256]

संवत् १५०९ वर्षे माह सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० कूरसी पु० पासड़ भा० जइनलदे पु० पारस भा० पाल्हणदे पु० पदा परवतयुतेन पितृश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं उ० श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ।

[1257]

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीमान् ज्ञा० मुठीया गोत्रे सा० पिउंपाल पु० सोनाकेन आत्मश्रेयसे आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनतिलक सूरिभिः ॥

[1258]

संवत् १५१० वर्षे चैत्र सुदि १३ गु० प्राग्वाट सा० गोगन भार्या सहू पुत्र सा० जेसाकेन भा० राणी ..... भ्रातृ जामा भा० हीरू प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं प्रति० तपागच्छेश श्री रत्नसागर सूरिभिः ॥

[1259]

संवत् १५११ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ रवौ उपकेश ज्ञातीय शाह आसा भा० अहविदे पु० शाह ठाकुरसी भा० जानू सहितन पितृ भ्रातृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं श्री कोरएटगच्छे प्रति० श्री सावदेव सूरिभिः ॥

[1260]

संवत् १५१२ मार्ग० शुदि १५ .... वारे प्राग्वाट श्रेष्ठि गोधा भा० फली सुत नरदे सहसा झाटा भा० धीराकेन भा० तारू सुत खीमादिकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1261]

सवत् १५१२ माघ विदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा पुत्र सुहड़ा भा० सोना पु० सादावच्छा हंसा पासादेवादिभिः पित्रोः श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सूरिभिः ।

[1262]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ए शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० तरसी सुत काला सुतवर्द्धमान सुत दो० बालाकेन भा० कूअरि सुत सा० अरण प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वभ्रातृ जयारामा तौ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1263]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि १२ श्री उपकेशगच्छे श्री कक्कुदाचार्य सन्ताने श्री उपकेश ज्ञातौ श्री आदित्यनाग गोत्रे सा० आसा भा० नीबू पुत्र गाजू भा० गाजलदे पितृ-मातृश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1264]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे गूंदोचा गोत्रे सा० धीरा भार्या धारलदे पु० देला भा० सहजलदे पाल्हा भा० पोमादे० स्वश्रेयोर्थं संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री चित्रा-वालगच्छे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री गुणाकर सूरिभिः ।

[1265]

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ सुदि २ गुरू दिने उपकेश ज्ञातीये मणफलेचा गोत्रे सा० वुहथ भा० वाहणदे पुत्र रणमल भार्या रतनादे पु० माहायुतेन श्री आत्मश्रेयसे श्री सुविधि-नाथ बिंबं कारापितं प्रति० श्री वृहद्गच्छे जानोरावटंके भट्टा० श्री हेमचन्द्र सूरि पट्टे श्री कमलप्रभ सूरिभिः ॥

[1266]

संवत् १५१३ पोस सुदि ७ उपकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० भूणा पुत्रेण सा० साल्हाकेन निज भार्या निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1267]

संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उपकेश ज्ञातौ डूगड गोत्रे सा० सुहड़ा भा० गुणपाल दे पु० नगराज भा० नावलदे पु० नानिगमूला सोढद वीरदे हमीरदे सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं श्री रुद्रपल्ली गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[1268]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख विदि ११ टौबानी वासि प्राग्वाट ज्ञातीय ग० केसव जा० नोली सुत सा० लाम्पणेन जा० सरगादे सुत जसवीर प्रमुखकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छाधिराज श्री श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1269]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्री ब्रह्माणगच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि देवा जा० हरषू सुत चाम्पाकेन जार्या जईती करणकुंजायुतेन पित्रो श्रेयसः श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरि पट्टे श्री विमल सूरिभिः ॥ सुडीयाणा वास्तव्य ।

[1270]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि १० उपकेशवंशे थुलगोत्रे सा० गूजरेण जा० गउटपे पुत्र पेदा अजाणडू जा० कुसलगदे पाटेवाट (?) सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1271]

संवत् १५२० वर्षे मार्गशीर्ष वदि १२ उपकेश० ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शा० सांगण पुत्र स० सोनाकेन जार्या लाछलदे पुत्र समस्त स० पूरूपुत्र संसारचन्द्रनिमित्तं श्री चन्द्रप्रज स्वामि बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक्क सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1272]

संवत् १५२१ माघ सुदि १३ गुरौ प्रा० ज्ञातीय व्यव० नींबा पुत्र खीमा जार्या फूली पुत्र जांघा हेमा पाल्हा सहितेन श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1273]

संवत् १५२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका भार्या ललतादे तयोः पुत्र धारा भार्या वीजलदे श्री अश्वलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री शीतलप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ जयतलकोट वास्तव्य; ॥

[1274]

संवत् १५२४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० सीधर पुत्र संसारचन्द्र भार्या सारही पुत्र श्रीवन्त शिवरताभ्यां मातृपुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सुरिभिः ॥ नागपुरे ॥ श्रीः ॥

[1275]

संवत् १५२५ वर्षे ज्येष्ठ विदि १ गुरौ उपकेश ज्ञातीय खावड़ी गोत्रे साह भूणी भा० लूणादे पुत्री बाई कर्पूरी आत्मपुण्यार्थं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कृष्णऋषि गछे तपा शाखायां भट्टारक श्री कमलचन्द्र सूरिभिः शुभम् श्रीरस्तु ॥

[1276]

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उप० ज्ञा० सा० आना भा० पूरी० पु० देपाकेन भा० देवलदे पु० वच्छा हर्षा नयणा युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं कारापितं प्रति० मलाह० भ० श्री नयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1277]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि १ सोमे इन्डीयवासि उपकेश मं० कान्हा भार्या उमी सुत मं० कुम्पाकेन भा० सावित्री सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1278]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ६ शुक्रे उप० गहिलमा गो० सा० षेढा भा० दाडिमदे प्रभृति पुत्रादियुतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणशेखर सूरिभिः ॥ खीमसा वास्तव्य ॥

[1279]

संवत् १५२७ वर्षे प्राग्वाट् सा० प्रथमा भा० पाल्हणदे सुत सं० परवत भा० चाम्पू सुत सा० नीसलेन भा० नांई श्रेयोर्थं सुत जगपालादि कुटुम्बयुतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1280]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख विदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातौ डूगड़ गोत्रे सा० सिखा भा० वली पुत्र धनपालेन भा० मारू पु० नागिन सोनपाल प्रमुख सहितेन स्वश्रेयसे श्री शीतल-नाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री वृहद्गच्छे श्री मेरुप्रभ सूरिभिः।

[1281]

संवत् १५२९ माघ सुदि ६ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय पिण्हवेलापट (?) नामलदे सु० ताजा भा० राजलदे सु० कर्म्मसी तेजा सा० श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षीय श्री साधुसुन्दर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं। जूहारुद्र वास्तव्यः ॥ श्री ॥

[1282]

संवत् १५३० वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश ज्ञातीय सा० रणसिंह भा० तेजलदे पुत्र सा० कीताकेन भा० कुनिगदे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ लूडामा वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

[1283]

संवत् १५३० वर्षे माघ सुदि ४ प्रा० ज्ञा० रादा भा० आघू पु० सिरोही वासी सा० मांफणेन भा० माणिकदे पु० लषमादियुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं तपा श्री सोमसुंदर सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1284]

सं० १५३० वर्षे फाल्गुण सुदि ७ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय सा० राना भा० राजलदे भागेयर स्वश्रेयोर्थं श्री अंचलगच्छे श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1285]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे श्री उएसवंशे चण्डालिया गोत्रे सा० नेमा भा० मींफी पुत्र सा० सोहिल भार्या माईठी पुत्र सा० पहिराज भार्या पाल्हणदे पुत्र सा० रत्नपाल सुश्रावकेण पितृव्य शाह भोपाल प्रमुख कुटुम्ब सहितेन पितुः श्रेयसे श्री सुविधि-नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री पुण्यनिधान सूरिभिः ॥ पहिराज पुण्यार्थं ॥

[1286]

संवत् १५३३ वर्षे चैत्र सुदि ४ शुक्रे ओसवंशे बाबेल गोत्रे सा घेल्हा पुत्र शा० खेता भा० खेतश्री पुत्र शा० देदाकेन स्वपिता श्रेयसे श्री अभिनन्दन नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे श्री गुणनिधान सूरिभिः ॥

[1287]

संवत् १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शित १० दिने सोमे उपकेशवंशे कटारीय गोत्रे भापचा भार्या पाल्हणदे पुत्र सामरसिंह श्रीरकेण श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रति० श्री षरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

[1288]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उप० कयणआ गोत्रे सा० लषमण भार्या लषमादे पु० टिता साभा भा० कीव्हणदे स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० जापड़ाण गछे श्री कमलचन्द्र सूरिभिः ॥

[1289]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ ऊकेश वंशे जहड गोत्रे सा० उगच पुत्र सा० खरहकेन भा० नीविणि पुत्र माला वला पासड सहितेन धर्म्मनाथ बिंबं निज श्रेयोर्थं कारापितं श्री खरतरगच्छे भट्टा० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1290]

संवत् १५३४ वर्षे माह वदि ५ तिथौ सोमे उपकेश ज्ञाती धरावही गोत्रे लखण वीर्पा स० कान्हा भार्या हीमादे पुत्र सतपाक तिहुअणाभ्यां पित्रोः पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं श्री कन्हरसा तपागच्छे श्री पुण्यरत्न सूरि पट्टे श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1291]

सं० १५३४ मा० शु० १० डा० व्य० नरसिंह भार्या नमलदे पुत्र मेलाकेन भा० वीराणि सुत रातादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पालणपुरे ॥

[1292]

संवत १५३५ वर्षे आषाढ द्वितीया दिने उपकेश ज्ञातीय आयार गोत्रे लूणाउत शाखायां सा० झांझा पु० चउत्थ० भा० मयलहदे पु० मूलाकेन आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1293]

संवत १५४६ वर्षे आषाढ विदि २ ओसवाल ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शाखायां सा०

सिंघा भा० सिंगारदे पु० वींजा भाजू ताभ्यां पुत्र पौत्र युताभ्यां श्री चन्द्रप्रभ बिंबं सा० सिंघा पुण्यार्थं कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1294]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ओसवाल ज्ञातीय म० साइजा भा० कल्हाई सु० ठाकुरसीकेन भार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री वृद्धतपापक्षे भ० श्री जिनसुन्दर सूरिभिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[1295]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे उपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण भा० साल्हिगसुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र० हर्षपुरीय गच्छे भट्टारक श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे ॥ श्री ॥

[1296]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सण्डेरगच्छे ऊ० बहाला गोत्रे सा० लूसा लीला पु० लाला हरा लोभा भार्या तारू पु० हरालजइ (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि .... ।

[1297]

संवत् १५५७ आषाढ सुदी १० बुधे श्री पल्हुवरू गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुँअरपाल पुत्र साधू .... वेन भा० देवल० पु० ७ए रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० वृहद्गच्छे भ० श्री मेरुप्रभ सूरि पट्टे श्री मुनिदेव सूरिभिः ॥

[1298]

संवत् १५५७ वर्षे माह सुदि १० दिने शनिवारे उपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त भार्या भंगादे पुत्र सा० धणदत्त भार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल

नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[1299]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ उ० उच्छितवालगोत्रे संघवी देवा भा० देवलदे सा० वील्हा भार्या वील्हणदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1300]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग भा० देऊ पु० करमा भा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थं नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० उपकेश गच्छे भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[1301]

संतुव १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा भा० रद्दा पु० मं० करण भा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण भा० आह्वदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थं नागेन्द्रगच्छे सुगुरूणामुपदेशेन श्री वासुपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[1302]

संवत् १५७६ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० राजा भा० रमादे पुत्र खीमाकेन भा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भ० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पट्टे श्री मुनिचन्द्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[1303]

ॐ संवत् १५७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ए उ० सुराणा गोत्रे शा० हेमराज भार्या स० हेमश्री

पुत्र शा० देवदत्तेन स्वपितृपुन्यार्थेन कारितं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोष गछे भट्टारक श्री पयाणंद सूरि पट्टे श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1304]

सं० १५७६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० ज्ञा० टप गोत्रे ठ० सदा भा० सक्तादे पु० थिरपाल भा० षेमलदे पु० सहसमल्ल हापा जगा सहितेन पितृ नि० श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री सण्डेरगछे श्री शांतिसुन्दर ॥

[1305]

संवत् १५०२ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने आदित्यनागगोत्रे तेजाणी शाखायां शा० मुहणा पु० हासा पुत्र सखारण दा० नरपाल सधारण भार्या सूहवदे पुत्र ४ श्री करणरंगा समरथ अमीपाला सखारण स्वपुण्याय कारितं । श्री उपकेश गछे भट्टा० श्री सिद्ध सूरिभिः श्री अभिनन्दन बिंबं प्रतिष्ठितं स्वपुत्रपौत्रीय श्रेये मातु ॥

[1306]

संवत् १५०० वर्षे वैशाख विदि १३ सोमे श्री सण्डेरगछे ऊ० भण्डारी गोत्रे भ० ईसर पु० वीसल भा० कील्हूपत्ते निमित्तं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः॥

[1307]

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे नवाठ वास्तव्य हूंबड़ ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे दोसी श्रीपाल भार्या सिरीआदे सुत दोसी रूढाकेन भा० राणी युते श्री पद्मप्रभ बिंबं तपा० श्री तेजरत्न सूरिभिः प्रति० ॥

[1308]

संवत् १६४३ वर्षे फाल्गुन सित ११ अहमदावाद वास्तव्य बाई कोडकीसञ्ज्ञया प्राग्वाट सेठि मूला भा० राजलदे पुत्री श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री विजयसेन सूरिभिः श्री तपागछे ॥

[1309]

संवत् १६९६ वर्षे मिगसिर सुदि १० रवौ उपकेश ज्ञातीय लघु शाखायां बुरा गोत्रे फुमण गोत्रे बाइ गेलमादि पुत्र ठाकुरसी टाइसिंघ श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारापितं श्री तपागछे गुरु श्री विजयदेव सूरि तत्पटे विजयशिव सूरिः प्रतिष्ठितं ॥

[1310]

संवत् १६९९ वर्षे वैशाख शुक्ल ९ दिने .... श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागछे श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1311]

संवत् १६९९ वर्षे फाल्गुन विदि २ तिथौ सा० पुरुषाकेन शीतल बिंब कारितं प्रतिष्ठितं .... गछे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1312]

संवत् १७१५ श्री श्रीमाल ज्ञातौ शाह आसा भार्या अणुपमदे पुत्र थिर पालेन भ्रातृ लूणसिंह .... निज भार्या .... निमित्तं श्री पञ्चतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गछे श्री पद्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री रत्नाकर सूरिभिः ॥

चौवीसी पर ।

[1313]

संवत् १५२० वर्षे पौष विदि ५ शुक्रे श्रीमोढ ज्ञातीय मे० काल्हा भार्या काचू सु० भूराकेन भा० मांई सु० अजनरामा सहितेन पितृभ्रातृश्रेयसे स्वपूर्वजनिमित्तं श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रति० श्री विद्याधरगच्छे श्री विजयप्रभ सूरि पट्टे श्री हेमप्रभ सूरिभिः ॥ वर्द्धमान नगरे ॥

[1314]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ मण्डपदुर्गे प्राग्वाट सं० अजन भा० टबकू सुत सं० वस्ता भा० रामा पुत्र सं० चाहाकेन भा० जीविणि पुत्र सं० नाग आकादिकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ २४ पट्ट का० प्र० तपा पक्षे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—दफ्तरियों का महल्ला ।

[1315]

संवत् १५१३ माघ शुक्ल ७ बुधे श्री उसवाल ज्ञातौ लोढा गोत्रे सा० भूचर भा० सरू पु० हंमू भा० सहजाई पु० नरहूकेन पितृ श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री रुद्रपल्लीय गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[1316]

संवत् १५२७ वर्षे आषाढ सुदी २ गुरौ उपकेश ज्ञातीय तावअजा भार्या आल्हलदे पुत्र नीवा भा० मानू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं अञ्चलगच्छे श्री जयकेसर सूरिभिः ॥

[1317]

संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने उपकेशवंशे बोथरागोत्रे शा० जेसा पु० थाहा सुश्रावकेण भा० सुहागदे पुत्र देल्हा मानी वाकि युतेन माता लखी पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1318]

संवत् १५३४ वर्षे मिगसिर वदि ५ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे शा० चाहड़ भार्या हरखू पुत्र वीजाकेन भा० वीजलदे पुत्र केशवयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री धर्म्मसुन्दर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1319]

संवत् १५३४ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सोमा जा० देऊसु जोटाकेन जा० वानरि भ्रातृ जोजा प्रमुखकुटुम्बेन युतेन श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० तपापक्षे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ वीसनगरे ॥

[1320]

सवत् १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने सोजात वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय शा० जाणा जा० जावलदे पु० आशाकेन जा० मीइ सुत वाण वीदा प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

[1321]

सवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमवार पुष्य नक्षत्रे नाहर गोत्रे सं० पटा तत् पुत्र से० पासा जार्या पालजदे तत् पुत्र सं० लाखणाख्येन तद् जार्या जाषणदे तत् पुत्र सं० नानिग सं० खीमसिंह .... सहितेनात्मश्रेयसे बिंबं कारितं श्री शांतिनाथस्य श्री धर्म्मघोष गछे जट्टारक श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितः जद्रं जवतात् ॥

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1322]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ५ शुक्रे प्राग्वाट श्रे० हरराज जा० अमरी पु० समधरेण जा० नाई प्रमुखकुटुम्बसहितेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश गछे सिद्धाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त सूरि पट्टे श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

चौवीसी पर।

[1323]

संवत् १५३१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री वायरू ज्ञातीय मं० माहव ना० हलू सु० म(हा)देवदास ना० जीवि सु० सिंहराज भ्रातृ हरदास नाहीं आसुरा पञ्चायण अमीपाल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावाड़ा वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—(घोड़ावतों की पोल)

पंचतीर्थियों पर।

[1324]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र विदि ६ भौमे श्री वृहद्गच्छीय श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री हीरचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं। श्रे० शुभंकर भार्या देवइ तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन भार्या पूनदेवि पुत्र श्रीवच्छ नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री वीरजिन बिंबं कारितं॥

[1325]

संवत् १५०३ वर्षे माल्हू गोत्रे सा० भाखर भरमी श्राविकायाः पुण्यार्थं सा० खन्नाकेन जीवा खीदा भीदा भादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्रीखरतरगच्छे ॥

[1326]

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख विदि ५ ओसवाल ज्ञातौ सूराणा गोत्रे सा० सखर सहस वीरेण भार्या भोजी पु० भीमा वरता रंगू रत्नू युक्तेन स्वभार्या पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितः प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्माणन्द सूरिभिः॥

[1327]

संवत् १५४५ वर्षे ज्ये० विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्राग्० ज्ञाति सा० रत्ना ज्ञा० माघू पु० सा० जीमाकेन ज्ञा० हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री श्री श्री सूरिज्ञिः ॥ श्रिये ॥

[1328]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगच्छे उसवा गोत्रे को० वुहथ ज्ञा० चाहिणदे पुत्र वीवावणा वधा दोहावणी पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शांति सूरिज्ञिः ॥ मेरुता नगरे ॥

चौवीसी पर ।

[1329]

संवत् १४५० वर्षे फाल्गुन शुक्ल ए जाइलवाल गोत्रे सा० शिखर पुत्राज्यां शा० संग्राम सिंह धनाज्यां निज मातृ साल्ही श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्टं कारितः प्रतिष्ठितं । तपा जट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे जट्टारक श्री हेमहंस सूरिज्ञिः ॥

बीकानेर ।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

आसानियों का महल्ला—बांठियों के उपासरे के पास ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1330]

सं० १४०६ फागुण वदि ६ बुधे ऊकेश ज्ञातीय सा० जगसी ज्ञा० ऊवकू पुत्र्या श्रा०

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा स्वजर्तृनिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री कोरंटगछे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिः ॥

[1331]

सं० १४ए७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जश्ता जार्या वरजू पु० बुठा स० श्रात्मश्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं ···· श्री मुनिप्रज सूरिजिः ॥

[1332]

सं० १५०ष वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे श्रोसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना जार्या श्रमरी पु० तोलूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1333]

सं० १५०ए वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे मालू शाषायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माला पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं श्री खरतरगछे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1334]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगछे ककुदाचार्य संताने जाड्गोत्रे सा० साधा सा० सारंग जा० तल्ही पु० षीमधर जा० जेठी पु० षेता षेमायुतेन श्रात्मश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं का० प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ।

[1335]

सवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० जादा पुत्र सा० धणदत्तं तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल बिंबं मातृ श्रपू पुण्यार्थं कारितं प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिजिः

[1336]

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ बुधे ऊकेश शुभ गोत्रे श्रे० आमधर पुत्र श्रे० पूनड़ भार्या फती पुत्र सा० करमणेन भार्या कर्मादे धर्म्म पुत्र सा० समरा भार्या मह्जलदे सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थंकर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः। श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

[1337]

सं० १५३२ फा० सुदि ···· श्री ········ संभवनाथ बिंबं श्री संडेरगच्छे भट्टारक श्री ······· ।

[1338]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री उपकेश वांभ गोत्रे। सा० वन्ना भा० वोगिणि पु० सा० सच्चू भा० लषमादे मातृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ बिंबं कारापितं श्री मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिभिः ॥

[1339]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ ओसवाल धामी गोत्रे सा० पदमा भार्या प्रेमलदे पु० भोला भा० भावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्र० ज्ञानकीय गच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥ सोग ······· ।

[1340]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तइट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुरपतिना भा० गरलदे पु० सहसा पुनि भार्या गगारदे पुत्र करमसी पहराज युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं निज पुण्यार्थं कारितं प्र० नमदाल गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः।

[1341]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ऊकेश ···· रा गोत्रे सा० डूङ्गा पुण्यार्थं पुत्र सा० अषयराज तद् भ्रातृ ली ····युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[

सं० १५३९ वर्षे वैशाष सुदि ४ शुक्रे उ० ज्ञातीय प्राह्मेचा गोत्रे व्य० चांदा भा० धर्मिणि पु० गांगा भा० ष्यापुरि सहितन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० भावड़ गछे श्री भावदेव सूरिभिः।

[1343]

संवत् १५४९ वैशाष सु० ५ बुध काष्ठासंघ भट्टारक श्री ······· तस्याम्नाये ·················।

[1344]

सं० १५५२ वर्षे फा० शु० ६ शनौ ओसव० ज्ञातीय सा० मुंज भा० मुजादे पु० सा० परवत भा० अमरादे सा० पर्वत श्रेयार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागछे श्री हेमविमल सूरि।

[1345]

संवत् १५६१ वर्षे माह सुदि ५ दिने शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय श्रे० विजपाल भा० हीरू सु० श्रे० पद्माकेन भा० चांपू सु० षोना भा० रषी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृत्तेन स्वश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछाधिराज श्री लक्ष्मीसागर सूरि तत्पट्टे श्री सुमतिसाधु सूरि तत् पट्टे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिभिः॥ वीचावेरा वास्तव्य॥

[1346]

सं० १५७३ वर्षे वैशाष वदि ७ श्री ओसवंशे भंडसाली गोत्रे। फीरोजपुर स्थाने। सा० धनू भार्या ···· सुत सा० वीरम भार्या वीरमदे सुत दीपचंद उधरणादि कुटुम्बयुतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं ·············।

[1347]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवार श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरवेड्या शाखायां

सा० पासा पुत्र ऊदा भा० पऊमादे पु० कामा रायमल देवदत्त ऊदा पुण्यार्थं बिंबं कारापितं उपपल सिद्ध सूरिभिः प्रति ···· ।

[1348]

संवत् १६२७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह काजड़ गोत्र साह चापसी भार्या नारंगदे पु० श्री वासपु श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूरिभिः ।

जैन उपासरा का शिला लेख ।

[1349]

(१) पृथवी तल मांहे प्रगटः बड़ो नगर बीकांण ।
(२) सुरतसींह महाराजजुः राज करै सुविहाण ॥ १ ॥
(३) गुणी क्षमामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रधान ।
(४) वाचक विद्या हेमगणिः सुप्रत सुख संस्थान ॥ २ ॥
(५) सय अढार गुणसठ में महिरवान महाराज ।
(६) नव्य बनाय उपासरो दियो सदा थिर काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिलालेख ।

[1350]

॥ संवत् १५६२ वर्षे आषाढ़ सुदि ए दिने वार रवि । श्री बीकानेर मध्ये महाराजा राई श्री श्री श्री बीकाजी विजयराज्ये । देहरो करायो श्री संघ ॥ संवत् १३०७ वर्षे श्री जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठितः ॥ श्री मंडोवर मूलनायक ॥ श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति

पट्टं ॥ नवलखक रासल पुत्र नवलखक राजपाल पुत्र श्री नवलखक सा० नेमिचंद्र सुश्रावकेण साहु वीरम डुमाक देवचंद्र कान्हड़ मट्टं ॥ संवत् १५७१ वर्षे श्री श्री श्री चउवीस इन्द्रजी रो परघो मट्टं वगावते जराये। छे ॥

चौवीस जिनमाता के पट्ट पर।

[1351]

॥ संवत् १६०६ वर्षे फागुण वदि ७ दिने श्री वृहत् खरतरगच्छे। श्री जिनभद्र सूरि सन्ताने। श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे॥ श्री जिनहंस सूरि तत् पट्टालंकार श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः प्रतिष्ठिता श्री चतुर्विंशति श्री जिनमातृणां पट्टिका कारिता। श्री विक्रमनगर संघेन ॥

चरण पर।

[1352]

संवत् १९०५ वर्षे शाके १७७१ प्रमिते माधव मासे शुक्ल पक्षे पौर्णिमास्यां तिथौ गुरुवारे वृहत् खरतर गणाधीश्वर भ०। जं०। यु० प्र० श्री १०८ श्री हर्ष सूरि जित्पादुके श्री संघेन काराधितं प्रतिष्ठितं च भ०। जं०। यु०। प्र०। श्री जिनसौभाग्य सूरिभिः श्री विक्रमपुर वरे ॥ श्री ॥

श्रीमन्दिर स्वामी का मन्दिर—भांडासर।

[1353]

सं० १५३७ वर्षे मार्ग सुदि १२ ऊकेश ज्ञातीय बांहटिया गोत्रे सा० समुधर पुत्रेण सा० भाखु .... युतेन श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं तपा भ० श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरिभिः।

[1354]

सं० १५७९ वर्षे प्राग्वाट श्रे० गोगेन भा० राणी सुत वरसिंग भा० वीवू नाम्न्या भ्रातृ

श्रमा नरसिंह लोलादि कुटुम्बयुतया श्री संजव बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछे श्री इन्द्रनन्दि सूरिजिः पत्तने ॥ श्री ॥

कुंम श्रौर नहर पर की शिलालेख ।

[1355]

॥ श्री नेमिनाथाय नमः ॥

श्री बीकानेर तथा पूरब बंगाला तथा कामरू देस आसाम का श्री संघ के पास प्रेरणा करके रुपया जेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बनाया सुश्रावक पुण्य प्रजावक देवगुरुजक्तिकारक गुरुदेवं को जक्त चोरडिया गोत्रे सीपानी चुन्निलाल रावतमलाणि सिरदारमल का पोता सिंघिया की गवाड़ में वसता मायसिंघ मेघराज कोठारी चोपड़ा मकसुदाबाद अजिमगंजवाले का गुमास्ता श्रौर कुंड के ऊपर दारईकेलाव (?) बकतावर चंद सेठिया बनाया संवत् १९५४ शाके १७९० प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे जाड़वामासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ जौमवासरे ।

मोरखानो–बीकानेर ।

[1356] *

१. ॥ ॐ ॥ श्री सुसाणं कुलदेव्यै नमः ॥ मूलाधारनिरोधबुद्धफणिनीकंदादिमंदानिले । (ऽ) नाक्रम्य ब्रह्मराज मंम

* यह स्थान "देशनोक" से दक्षिण-पूर्व कोण १२ मील पर है। यहां के देवी मंदिर में काले पाषाण पर यह लेख खुदा हुआ है और टेस्सिटोरी साहब ने अपने ई० सं० १९१६ की रीपोर्ट में छापी है। See J & P of the A. S. of Bengal Vol XIII. pp. 214-215.

२. लधिया प्रागुपश्चिमांतं गता। तत्राप्युज्वलचंद्रमंडलगलत्पीयूषपानोल्लसत्कैव-
ल्यानुजन्या सदास्तु जगदानं

३. दाय योगेश्वरी ॥ १ या देवेंद्रनरेंद्रवंदितपदा या जडतादायिनी। या देवी किल
कल्पवृक्षसमतां नृणां दधा-

४. .... लौ। या रूपं सुरचित्तहारि नितरां देहे सदा बिभ्रती। सा सूराणासवंश
सौख्यजननी भूयात्प्रवृद्धिं क-

५. री ॥ २ तंत्रैः किं किल किं सुमंत्रजपनैः किं भेषजैर्वा वरैः। किं देवेंद्रनरेंद्र-
सेवनतया किं साधुभिः किं धनैः। ए-

६. का या भुवि सर्वकारणमयी ज्ञात्वेति भो ईश्वरी। तस्याध्यायत पादपंकजयुगं
तद्ध्यानलीनाशयाः ॥ ३ ॥ श्री भूरिर्द्धर्म-

७. सूरी रसमयसमयांभोनिधेः पारदृश्वा। विश्वेषां शश्वदाशा सुरतरुसदृशस्त्या-
जितप्राणिहिंसां। सम्यग्दृष्टि ....

८. मनणु गुणगणां गोत्रदेवीं गरिष्ठां। कृत्वा सूराणवंशे जिनमतनिरतां यां चका-
रात्मशक्त्या ॥ ४ तद्यात्रां महता महेन

९. विधिवद्भिक्षो विधायाखिले निर्गे मार्गणचातकपृणगुणः सत्तारटंकबटः। जातः
क्षेत्रफले यदिभरुधरा धारा-

१०. धरः ख्यातिमान् संघेशः शिवराज इत्ययमहो चित्रं न गर्जिध्वजः ॥ ५ तत्पुत्रः
सच्चरित्रे वचनरचनया भूमिराजः

११. समाजालंकारः स्फारसारो विहित निजहितो हेमराजो महौजाः। चंगप्रोत्तुंग-
शृगं भुवि भवनमिदं देवयानोप-

१२. मानं। गोत्राधिष्ठातृदेव्याः प्रसृमरकिरणं कारयामास भक्त्या ॥ ६ संवत् १५७२
वर्षे ज्येष्ठमासे सितपक्षे पूर्णिमा-

१३. स्यां शुक्रे ऽनुराधायां षीमकर्णे श्री सूराणवंशे सं० गोसल तत्पुत्र सं० शिवराज तत्पुत्र सं० हेमराज तद्भार्या सं० हेमश्री त-

१४. त्पुत्र सं० धंजा सं० काजा सं० नाल्हा सं० नरदेव सं० पूजा भार्या प्रतापदे पुत्र सं० चाहड़ भा० पाटमदे पुत्र सं० रणधीर

१५. सं० नाथू सं० देवा सं० रणधीर पुत्र देवीदास सं० काजा भार्या कउतिगदे पुत्र सं० सहसमल्ल सं० रणमल

१६. सहसमल पुत्र मांभण। रणमल पुत्र पेता पीमा। सं० नाल्हा पुत्र सं० सीहमल्ल पुत्र पीथा सं० नरदेव पुत्र मोकला-

१७. दिसहितेन। सं० चाहड़ेन प्रतिष्ठा कारिता सपरिकरेण श्रीपद्मानंद सूरि तत्पट्टे भ० श्री नंदिवर्द्धन सूरीश्वरेभ्यः॥

चुरू–बीकानेर।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1357]

सवत् १३०४ .... गच्छे .... कारितं श्री पार्श्वनाथ बिंबं।

[1358]

॥ सं० १३०० ज्येष्ठ सु० १४ श्री उएसगच्छे श्रे० म .... ला भा० मोषलदे पु० देहा कमा पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री ककुदाचार्य सं० श्री कक्क सूरिभिः।

[1359]

सं० १४६ए वर्षे फा० वदि २ शनौ नागर ज्ञातीय अलियाण गोत्र श्रे० कर्म्मा नार्या धाणू सुत कूग न्रातृ सांगा श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० अंचलगछ ना० श्री मेरुतुंग सूरिजिः ॥

[1360]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० ओसवंशे नाहरे गोत्रे सा० हेमा जा० हेमसिरि पु० तेजपालह आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० धर्म्मघोषगछे ···· ।

[1361]

सं० १५३० वर्षे फा० व० २ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० साह करमा जा० कुनिगदे पु० सा० दोला जा० देल्हा चोला न्रातृ जुंणा स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णि० कछोली-वालगछे ज० श्री विद्यासागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1362]

॥ सं० १५४५ वर्षे माह सु ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० श्रेष्ठि गोत्रे साह आसा जा० ईसरदे पु० जईता जा० जीवादे पुत्र चाहा युतेन पित्रो श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मल्लाहरुज गछे ········ ज० श्री कमलचंद्र सूरिजिः ॥

गवालियर (लस्कर) ।

पंचायती मंदिर — सराफा बजार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1363]

ॐ सं० ११ए० ज्येष्ठ सु० १२ देवम सुतया वीटिकया कारितेयं प्रतिमा ।

[1364]

सं० १३४० वै० सुदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय ···· श्री प्रद्युम्न सूरिभिः ।

[1365]

संवत् १३७६ वर्षे वैशाख सु० ३ ································ प्रणमंति ।

[1366]

सं० १४९१ माघ सुदि ६ बुधे उप० बोहड़ वर्धमान गोत्रे सा० राणा भा० सूहवदे पु० महिपा मोकल श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं खरतरगच्छे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरि प्रति० ॥

[1367]

सं० १४९८ फागुण वदि १० चंदेजरिया गोत्रे। सा० धर्मा पुत्रेण जीणाजूणाभ्यां निजपितृनिमित्तं श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ।

[1368]

संवत् १५०० वर्षे वैशाख सुदि ३ भाज श्रीमाल ज्ञातीय । श्रे० सादा भा० मनूं सुत माईआ भा० अघू सुत देवराजेन पितानिमित्तं श्री शीतलनाथ पंचतीर्थी बिंबं कारापितं प्रति० श्री ब्रह्माणगच्छे प्र० भ० श्री विमल सूरिभिः ।

[1369]

संवत् १५०१ वर्षे मा० सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० भांषर सुत भट्टसा भा० भामि पु० सायकरणा परनारायभिः पित्रो श्रे० चंद्रप्रभ स्वामि बिंबं प्र० श्री बृहत् सा ···· गच्छे प्र० श्री मंगलचंद्र सूरिभिः ।

[1370]

सं० १५०५ वर्षे चै० सु० १३ शान्ति बिंबं का० प्र० तपापक्षे श्री जयचंद्र सूरिभिः ।

[1371]

सं० १५०७ वैशाष सु० ए फूका बेबिकाभ्यां स्वश्रेयसे कारिता .... ।

[1372]

सं० १५०ए वर्षे माघ सु० १० शनौ ऊकेशवंशे माल्हू गोत्रे मं० जोजराज जा० ऊमादे पुत्र सं० देवोकेन ज्रा० मं० सोनार संग्रामादि सहितेन सू (?) जा० देवलदे श्रेयोर्थं श्री अजित बिं का० प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[1373]

सं० १५१२ माघ सु० १ बुधे श्री ओसवाल ज्ञानौ सुहणाणी सुचिंती गो० सा० सारग जा० नयणी पु० श्रीमालेन जा० षीमी पु० श्रीवंत युतेन मातृश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं उपकेशगछे ककुदाचार्य सं० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1374]

सं० १५१३ पोष सु० ७ ऊकेशवंशे वि .... क गोत्र सं० नरसिंहांगज सा० मार पुत्रेण सा० कील्हाकेन निजमातृपुण्यार्थं श्री नमि बिंबं का० प्र० ब्रह्माण तपागछे उदयप्रज सूरि जट्टारक श्री पूर्णचंड सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[1375]

सं १५१३ वर्षे माह सु० २ ऊकेश षीथेपरिया गो० सा० षिथपाल जार्या षेमथी ...... पु० जाषू सेषू जा० सोम श्री ...... माथी ...... प्ररपोध (?) आ० श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहद्गछे श्री सागरचंड सूरिजिः ।

[1376]

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे गूर्जर ज्ञातीय दो० अमरसी जा० रूपिणि सुत

ऊसाकेन भा० वइजीयुतेन पितुरादेशेन आत्मश्रेयसे जीवितस्वामी श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय भट्टारक श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ ब ॥

[1377]

सं० १५२० वर्षे वैशाष सुदि ९ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय फतड़ा (?) गोत्रे सा० बछराज पु० सा० जाटा भार्या गउवदे पु० सा० राजू भार्या हर्षमदे पु० सा० रत्नपाल सीधर समदा सायराज्यः स्वपितृणां श्रेयसे श्री श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[1378]

॥ संवत् १५२१ वर्षे वैशाष वदि ८ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० देवसीय भार्या पाल्हणदे पुत्र सा० नामवेन भा० माकू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री साधपूर्णिमापक्षे ५। श्रीरामचंद्र सूरि पट्टे पूज्य। श्री पुज्य चंद्र सूरीणामुपदेशेन विधिना श्राचष्टे।

[1379]

सं० १५२६ वर्षे वैशाष वदि ७ भौमवारे प्रामेचा गोत्रे सा० जाटा भा० जइतो पुरषी माता जाटी पु० भइरवदास ...... भा० डुल्लादे सहितेन लाभि निमित्ते श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं खरतरगच्छे प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्र सूरिभिः। शुभं भवतु।

[1380]

सं० १५३२ वर्षे वैशाष सुदि ६ सोमे श्री कोरंटगच्छे श्री नन्नचाय संताने उप० पोमालेचा गोत्रे सा० जगनाल भा० जासहदे पु० सा० सारंग भा० संसारदे पु० सा० मेहा नरसि सहितेन श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं प्र० श्री सांबदेव सूरिभिः ॥

[1381]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमवासरे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० हेमा भा० मानू पुत्र

स० बकूआ जा० फाई ···· पु० स० वता जा० मजकूं पुत्र ठूंगर आत्मश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं साधुपूर्णिमापक्षे प्रतिष्ठितं श्री जयशेखर सूरिभिः ।

[1382]

सं० १५३४ वर्षे फागुण सुदि ए बुधवारे प्रा० ज्ञा० सा० मोकल जा० मोहणदे पु० मेहाके० जा० कुंती पु० रो० जा० लषमण आसर वीसल सहितेन आ० श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० पू० ठि० कल्लोली वा० ज० श्री विजयप्रज सूरीणामुपदेशेन ।

[1383]

संवत् १५४ए वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ सोमे ओसवाल ज्ञातीय सा० मूला जा० माणिकदे सं० माणिक जा० गंगादे सु० जूनं च जा० लाठी बिंबं कारितं मूला श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्रतिष्ठितं । श्री संडेरगछे श्री सुमति सूरिभिः ॥

[1384]

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुगै उपकेश ज्ञा० जूरि गोत्रे सा० चांपा चउहथ चां० जा० चांपले पु० कान्हा जा० नंगी पु० देवा शिवा सुकुटुम्बयुतेन चउहथ श्रियोर्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं श्री धर्मघोषगछे ज० श्री श्रुतसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । शुजं जवतु ॥

[1385]

सं० १५६७ वर्षे वैशाष सुदि १० बुधे गूंदेचा गोत्रे ऊकेशवंशे सा० ठाकुर जार्या टहन पु० ऊधा सुत कचा वर्जू जा० २ जसा गुणा प्रमुख कुटुंबसहितैः श्री अंचलगछे जावसागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1386]

सं० १५७२ वर्षे वैशाष सुदि ५ सोमे ऊ० ज्ञा० फूलपगर गोत्रे सा० दधीरथ पु० सा० धर्मा जा० २ पाबू साल्ही पाबू ···· पु० झांझा जा० पूरी ···· पुत्र मोकल प्रमुख समस्त

कुटुम्बेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वडगछे श्री श्री चंद्रप्रज सूरिजिः ॥
॥ श्री ॥ जावर वास्तव्य ॥

[1387]

सं० १५७९ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे कूकर वाड़ा वा० नागर ज्ञातीय श्रे० कान्हा जा० धनी सु० श्रे० हरपतिलदणकेन जा० लषमादे प्र० क० सुतेन नपा सीपा पदमा श्रे० श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री वृहत्तपा प० श्री धनरत्न सूरि श्री सौजाग्यसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1388]

संवत् १६२७ वर्षे वैशाष शुदि ३ शुक्रे ऊकेशवंशे गोठ १ गोत्रे सोप श्रीवछ सोप जोला पुत्र सो० उदयकरण जार्या अठवोदे पुत्र सो० जसवीर । सो० नका सो० धबजी प्रमुख परिवारयुतैः श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं श्री वृहत्खरतरगछे श्री जिनसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

चौवीसी पर ।

[1389]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सुदि १० श्री उपकेश ज्ञातीय बापणा गोत्रे सा० देहड़ पु० देल्हा जार्या धाइ पुत्र सा० लूला जीमा कान्हा स० जीमाकेन जा० वीराणि पुत्र श्रवणा माकू ऊाकू सहितेन श्री शांतिनाथ मूलनायक प्रभृति चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री उपकेशगछे ककुदाचार्य संताने प्र० श्रीसिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिजिः ॥ शुजं ॥

[1390]

सं० १५४१ वर्षे आषाढ सु० ३ शनौ उप० श्रेष्ठि गोत्रे सा० रामा जा० रत्नू पु० राजा साजा शिवा राजा जा० टहकू पु० वना सांगा मांगा गीईआ आसा सहदेव जार्या जटी सा० सांगाकेन जा० करमी द्वि० जा० रामति प्र० समस्तकुटुम्बसहितेन भ्रातृ वना

निमित्तं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्टकं का० श्री मड्डाहड़ गच्छे रत्नपुरीय भ० श्री धर्म्मचंद्र सूरि पट्टे भ० श्री कमलचंद्र सूरिभिः॥ शाल्मलीयपुरे।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1391]

सं० १६७५ वर्षे वै० सु० १५ दिने इंदलपुर वास्तव्य प्रा० वाद् (प्राग्वाट) ज्ञातीय बाई वज्र का० श्री संभव बिं० प्र० श्री। विजयदेव सूरिभिः।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1392]

संवत् ११७७ फागुण सुदि ए सालिगदे लूण वति भा० कारिता।

[1393]

सं० १३७६ माह वदि २ श्री बृहद्गच्छ बा० श्री देवार्य स० ऊकेश ज्ञा० श्रे० आसचंद्र सा० श्रे० देदासिसीहेन पितृश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री अमरचंद्र सूरि शिष्यैः श्री धर्म्मघोष सूरिभिः॥

[1394]

॥ सं० १४६६ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातौ म० साल्हा सुत पितृ म०मूलू मातृ मूरगी सुत ठकुरसिंहेन पितृमातृश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणगच्छे श्रीवीर सूरिभिः॥ श्री॥

[1395]

सं० १४६ए वर्षे माह सुदि ६ षंडेरकीयगच्छे ऊ० सा० अजा भा० कपूरदे सु० तिहुअण

भा० माल्हणदे पु० तेजाकेन पितृ घस्समेठी सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति बिंबं का० प्रति० श्रीसुमति सूरिभिः ॥

[1396]

सं० १४७० वर्षे माघ सु० १२ गुरुवारे आदित्यनाग गोत्रे सा० सलषण पुत्र कम्मण भा० सांवत दीर तेजाकेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीदेव सूरिभिः ॥ ० ॥

[1397]

सं० १४८९ माघ सुदि १० शनौ श्रीमाल ज्ञातीय मं० षेता संताने मं० ठाड़ा भा० नाऊ नाम्ना पु० कान्हा सोना सहितया भर्तु श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री विद्याशेखर सूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

[1398]

संवत् १४९९ माह सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय वीटवल व्य० पाता सुत वयरसी भार्या माही ···· पितृमातृश्रेयोर्थं सुत मेलाकेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री नागेन्द्र गच्छे श्री गुणसागर सूरिः शिष्यैः प्रतिष्ठितं श्री श्री गुणसमुद्र सूरिभिः ॥ श्री सांतपुरे पितृव्य देवलवर्णाली ।

[1399]

सं० १५०४ वर्षे फागण शु० ११ गुरौ दिने नाहर गोत्रे सा० जाहड़ भा० जोलाही सा० राजा भा० लाबू ···· पु० ऊाफू सहितं निजपुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री धर्म० गच्छे श्री विजयचंद्र सूरिभिः ।

[1400]

सं० १५०७ ज्येष्ठ सुदि २ दिने ऊकेशवंशे सा० नोणमी भार्या कपूरदे श्राविकया निज भर्तृ नौणतीपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं का० प्रति० खरतरगच्छाधिराज श्री जिनराज सूरि पट्टालङ्कार प्रति० श्री जिनभद्र सूरि राजैः ॥

[1401]

ॐ ॥ सं० १५११ वर्षे माघ वदि ए जोहरिया गोत्रे सा० दातु पूरेण ..... श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा जट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

[1402]

सं० १५११ फा० शु० ए रवौ प्राग्वाट० सा० पेषा जार्या राजू सुत वीढाकेन जार्या कमा सुत दरपाल टाहा जरकीता जरमा कगतादि कुटुम्बयुतेन श्री संजवनाथ बिंबं स्वश्रेयसे कारितं प्रतिष्ठितं तपागछ नायक जट्टारक श्री सोमसुंदर सूरि प्रांषज श्री रत्नशेषर सूरिजिः ।

[1403]

सं १५१३ वर्षे मा० व० ५ प्राग्वाट व्य० तिहुणा जा० कर्मा पुत्र हासा जगिन्या व्य० दना पत्न्या श्रा० मनी नाम्न्या श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥

[1404]

संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० बुधे श्री कोरंटगच्छे उपकेश ज्ञा० काला पमार शाखायां सा० सोना जा० सहजलदे पु० सादाकेन भ्रातृ चउड़ा जादा नेमा सादा पु० रणवीर वणवीर सहितेन स्वश्रेयसे श्री चंद्रप्रज बिंबं कारि० श्री कक्क सूरि पट्टे श्रीपाद .... ।

[1405]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाष सुदि ३ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय बजोला जार्या देमाइ सुत व्यव० कुरुपालेन जार्या कमलादे सुत व्यव० विद्याधर वीरपाल प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्टितं तपागच्छनायक जट्टारक श्री सूरसुंदर सूरिजिः । श्रीपत्तन वास्तव्य शुजं जवतु ॥ श्री ॥

[1406]

॥ संवतु १५१७ वर्षे माह सुदि १० दिने श्रीमालवंशे । पहड्वड़ गोत्रे सा० मेया जार्या

मेलाही पु० सा० वीरमेन भार्या षीमा पु० सा० समरा सहसू श्रे० श्री शांतिनाथ बिं० प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री रत्नाकर सूरि प० श्री मुनिनिधान सूरि श्री मेरुप्रभ सूरिभिः ॥

[1407]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सु० १० सोमे ओसवाल ज्ञा० सा० ठाकुरसी भा० वीसलदे सुत सा० धनाकेन भार्या सोनाई पुत्र सा० हांसादियुतेन सुता बाबू श्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री वृहत्तपापक्षे श्री उदयवल्लभ सूरिभिः।

[1408]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाष वदि ५ श्री संडेरगच्छे ओसवाल ज्ञा० राणु डाथेच (?) गोत्रे केल्हादेन भणा आल्हू पु० गोकाला डुदेल्ह .... जयनादर्पदयुतेन आत्मपुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ स्वामि बिंबं का० प्र० श्री .... सूरि संताने श्री शांति सूरिभिः।

[1409]

सं० १५३३ माघ सुदि ५ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जयशेषर सूरिभिः।

[1410]

सं० १५३६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ भौमे श्री श्रीमाल ज्ञा० महाजन। सदा भा० सूहवदे सुत बीका आका महा० बीका भा० कपूर सुत तालहा कान्हा जनासहितेन मातृपितृश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरि० चांद्रसमीया असारि गोयं वासर (?) वा०।

[1411]

॥ सं० १५३६ वर्षे माघ सुदि ९ सोमे प्रा०। ज्ञाति सा० सारंग भा० सहजलदे सुत सा० सूरा पाल्ह सा० जोगा भार्या कमी सुत डुसल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीधर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं प्र० .... सूरिभिः ॥ ७ ॥ श्री ॥

[1412]

सं० १५५४ वर्षे वरडउद वास्तव्य ऊकेश ज्ञातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग नार्या जाल्ही पुत्र सा० फेरू नार्या सूहवेदकेन नाराऊयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलपक्षे श्री सिद्धान्तसागर सूरिनिः ।

[1413]

सं० १५५७ वर्षे वैशाष सु० ६ शुक्रे ऊकेशवंशे नणसाली गोत्रे न० गुणराज पु० न० सहदे पु० न० हासा न० राजी .... पु० न० वसुपाल ना० लीला पु० न० सालिग सुश्रावकेण ना० नीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयोर्थं स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री ।

[1414]

सं० १५५७ वर्षे वैशाष शु० ७ बुधे उपकेश ज्ञा० श्रे० सालिग सुत श्रे० नरवद ना० षेतू पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वृहद्गच्छे बोकडिआ बंटुकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पट्टे श्री मणिचंद्र सूरिनिः ॥

[1415]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा ना० संपूरी पु० सा० कालण सा० ऊदा सा० ठाला सा० कालण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र इत्यादिपरिवृत्ताभ्यां सा० ऊदा० सा० टालाभ्यां श्री सुविधिनाथ बिं० का० स्वपितृव्य दोदा श्री संसरी पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिनिः ॥

[1416]

सं० १५७१ वर्षे पोस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा ना० चांगू पु० दासा ना० करमा पु० कमा अषाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गणे कवि श्री ईश्वर सूरिनिः ॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटदुर्गे ।

धातु के यंत्र पर।

[1417]

॥ संवत् १७५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्रं यंत्रमिदं। प्रतिष्ठितं वा। लावण्य कमल गणिना। कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्र ज्ञानचंद्रेण श्रेयोर्थं ॥ श्रीरस्तु॥

[1418]

ॐ ॥ श्रीमन्वि ... गच्छे संगंनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना ज०........ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1419]

॥ सं० १३७१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु .... श्री शांतिनाथ बिंबं।

[1420]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंघे ....।

[1421]

सं० १४७२ वर्षे फा० सुदि ३ श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सादा जा० मटकू सुत श्रे० देवराज हरपति भ्रातृयुत श्रे० वरसिंह जार्या कपूरादे सुत पर्वतेन जार्या वरणू निज पितृमातृश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री तपागच्छ नायक श्री श्री श्री सोमसुंदर सूरिभिः।

[1422]

॥ सं० १४९६ वर्षे वैशाष सु० ५ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० माका जा० शाणी

युतौ सालगगदा श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री मुनिसिंह सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री शीलरत्न सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1423]

॥ सं० १५३६ वर्षे माह सुदि ५ ओसवालान्वय सूराणा गोत्रे स० नाल्हा भा० नावलदे भ० । यग पक्षपु सनपन कारापित वासुपूज्य बिं० धर्म्मघोष गच्छे श्री ···· सूरि प्रतिष्ठितः ।

मुरार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1424]

सं० १४९६ वर्षे फा० व० २ हुंबड़ ज्ञातीय ठ० चाकम भा० वाल्हणदे सुत करमसी देवसीहाभ्यां निज पितृश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ मङ्गलं भवतु ॥ छ ॥

चरण पर—दादावाड़ी ।

[1425]

सं० १९२१ शा० १७८६ माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां - ६ पूर्वं तु मरुदेशे मेरुतेति नाम नगरस्थोऽभूत् अधुना च मुरारि छावण्यां वास्तव्य धाड़ीवाल गोत्रीय शंभुमल्ल सुजान-मल्लाभ्यां युगप्रधान दादा श्री जिनदत्त सूरीणां श्री जिनकुशल सूरीणां च पादन्यासौ कारापितौ प्रतिष्ठितौ च बृ । भ । खरतरगच्छीय श्री जिनकल्याण सूरिभिः उ० माणिक्यचंद तच्छिष्य पं० हुकुमचंद्रोपदेशात् ।

ग्वालियर (गोपाचल) दुर्ग ।

शिलालेख । *

[1426] †

पहला पत्थर ।

(१) ॐ नमः पद्मनाथाय । हर्षोत्फुल्लविलोचनैर्दिशि दिशि प्रोज्झीयमानं जनैर्मेविन्यां विततन्ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् । श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्री पद्मभूभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्म्मलवपुः श्वेतानि रुद्धश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्यस्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः । दर्शयन्निव केशस्थ नवजीमूत कर्णिकाम् ॥२॥ मुक्ताशैलछलेन क्षितिति

(२) लकयशो राशिना निर्म्मितोऽयन्देवः पायादुषायाः पतिरतिधवलस्वच्छकान्तिर्जगन्ति । मन्वानः सर्वथैव त्रिभुवनविदितं श्यामता पह्लवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुटतटमिलन्नीलकान्त्या बिभर्ति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न भवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्चैष

(३) भगवान् । उषाकर्णोत्तंसीकरणभुजगं नीलनलिनं वहत्यव्याप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्वीर्यलघुकृतेन्द्रतनयो निःशेषभूमीभृतां वन्द्यः कच्छपघातवंशतिलकः क्षौणीपतिर्लक्ष्मणः । यः कोदण्डधरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानुगाङ्गामेकःपृथुवत्पृथूनपि हठादुत्पाट्यपृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्वज्रधरोपमः क्षिति

(४) पतिः श्रीवज्रदामाभवद् दुर्वारोर्ज्जितबाहुदण्डविजिते गोपाद्रिदुर्गे युवा । निर्व्याजंपरिभूय वैरिनगराधीशप्रतापोदयं यद्वीरव्रतसूचकः समभवत् प्रोद्घोषणाडिंडिमः ॥ ६ ॥

---

* ग्वालियर किले के लेख डा: राजेन्द्रलाल मित्र के "इंडुएरियनस्" में छपे थे । वह पुस्तक अब दुष्प्राप्य होने के कारण वे भी यहां प्रकाशित किये गये ।

† Indo-Aryans, Vol. II pp. 370-373.

न तुलितः किल केनचिदप्यभूज्जगति भूमिभृतेति कुतूहलात् । तुलयतिस्म तुला पुरुषः स्वयं स्वमिह वर्म्म विशुद्धहिरण्मयैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्त्रधामा नृपोभव-

(५) न्मङ्गलराजनामा । यङ्केश्वरैकप्रणति प्रभावान् महेश्वराणाम्प्रणतः सहस्त्रैः ॥ ८ ॥ श्री कीर्तिराजो नृपतिस्ततोभूद्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः । धूलीवितानैः सममेव चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमभूद् द्विषश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोस्य कथामृतं नरपतेरेतेन शौर्याब्धिना धत्ते मालवभूमिपस्य समरे सङ्ग्रामतीतार्जितः यस्मिन् रङ्गमुपागते दिशि दिशि त्रासा-

(६) त्कराग्रच्युतैर्ग्रामीणाः स्वगृहाणि कुन्दनिकरैः सञ्छादयाञ्चक्रिरे ॥ १० ॥ अद्भुतः सिंहपानीयनगरे येन कारितः । कीर्तिस्तम्भ इवाभाति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥ तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्भुवनपाल इति प्रसिद्धः । श्री नन्ददण्ड-गदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरलंकृततनुर्मनुतुल्यकीर्त्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि भूपालां सर्वाम्पालयतः

(७) प्रभोः । भुवन् त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमभूज्जगत् ॥ १३ ॥ पत्नी देवव्रता तस्य हरेर्लक्ष्मीरिवाभवत् । तस्यां श्री देवपालोभूत्तनयस्तस्य भूपतेः । दानेन कर्णमजयत् पार्थं कोदण्डविद्यया । धर्मराजञ्च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १४ ॥ सुनुस्तस्य विशुद्धबुद्धिविभवः पुण्यैः प्रजानामभून्मान्धातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपालः प्रभुः यत्स्वाम्येपि क-

(८) रप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन्दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणं सान्द्रैश्चमूरेणुभिः ॥ १५ ॥ कृत्वान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशात्सक्ष्मापतिर्दक्षिणानुत्खिलाचलसन्निभानविरत .... वाजिव्रजैः । उद्भूतान् पततः प .....: संप्रेक्ष्य रेणूत्करान् भूयोप्युद्भटसेतुबन्धन-- धिया त्रस्यन्ति .... ॥ १६ ॥ तस्येन्दुद्युतिसुंदरेण यशसा नाके सुराङ्गणे, सौवर्ण्यभ्रमशीलखंडन-

(९) जयादप्राप्नुवत्य: प्रियान् । नूनं शक्रपुर: सुरासुरवधूसङ्घा: श्रिये साम्प्रतं ······ यंति ये प्रथमत: सर्वा वपु: संश्रिते ॥ कैर्दृप्ता ···· पादपा गाव:कामदुघा ···· कैश्चिन्तितार्थप्रदा: । पूर्णा: कस्य मनोरथा इह न कैः ···· मुना पूरिता वीरा यानि तदस्ति तद्गुणवतः कस्य द्रुमादीन्यपि । श्रुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षितारं प्रासादयोपि यदसौ बत नम्रजाव: ।

(१०) योध्यापि ···· तनुर्बिपिनेष्यशो ···· ॥ भ्रम: कुलालचक्रे च लाज: पुण्यार्जनेषु च । काठिन्यं

कुम्जेषु क ···· शासविमर्द्दिनीम् ॥ असम्मतो ···· पीडा साधुर्न निस्त्रिंशपरि ···· तोपि इ ···· लम्भेन धनुर्न चासिं तथापि या वैरिगणं जिगाय । सध ····

(११) ···· पाधिप शिरोमणि जि ···· । लोकानुरागयशसापि ···· प्रतापं विस्तारयां यदसि ···· ॥ वलयानीव नारीणां हिमानीव नज:श्रिय: । ···· स विमृश्य नदीपूरचलवरे सम्पदायुष: पूर्त्तधर्म्मे मतिं चक्रे जिघृक्षुरनयो: फलम् ॥ प्रजा ···· त्वते

(१२) न क्षितितिलकभूतं न भवनं ···· कारितमद: । ···· मिव गिरा यस्य शिखरं समारूढसिंहो मृगमिव नृ ···· मशितुम् ॥ ···· सश्च ···· वरशिखरस्पार्द्धिनो हिममण्ड ···· स्यावतीयं शशिकरधवला वैजयन्ती पतन्ती । निर्व्वातं जाति भूतिच्छुरितनिजतनोर्देवदेवस्य शम्भो: स्वर्गाङ्गेव पिङ्गस्फुटवि-

(१३) कटजटाजूटमध्यं विशन्ती ॥ तदेतद्ब्रह्माण्डं स इह भविता पङ्कजभुव: पुनर्वेयं कोढासो वयमिह ···· वियति ···· । ···· तदिदमुररीकृत्य सकलं भुवं संसेवन्ते हरिपदन ···· तममी ॥ ···· कनकाचल: शुभविद्यावन्त: स्थित: श्रीपतिर्विप्राणो द्विजसत्तमानुदधिआवासो नृसिंहान्वित: । निर्म्माता लवृत: समस्तविबुधैर्लब्धप्रतिष्ठैरयं प्रासादश्च

(१४) धरातले सममहो कल्पं हरे: कल्पताम् । ···· द्विजपुङ्गवेषु प्रतिष्ठितेष्वष्ठसु पद्मपाल: शुचैव देवप्रतिकूलभावा ···· बभूव ॥ तस्य भ्राता नृपतिरभवत् सूर्यपालस्य सूनुः श्री

गोपाद्रेः प्रकृतनिलयः श्री महीपालदेवः। यम्प्राप्यैव प्रथितयशसन्तावभूतां सनाथौ सोयं त्यागो हरिरविसुतावावडुस्थोऽचिरेण। सृष्टिङ्कुर्वन्नमात्यानां विप्रा-

(१५) णां स नृपस्थितिम्। प्रत्नयं विद्विषामासीद् ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः यत्र धामनिधौ राज्ञि पालयत्यवनीतलम् ॥ ···· मुद्वहन्ति शिरसःखलु राजहंसाः सृष्टास्त्वया पुनरिमाः समयावसन्नाः। नाथ प्रजा सुमनसां प्रथमो ···· सि त्वं सिद्धवीररसता-

(१६) मरसोद्भवस्य ॥ लक्ष्मीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिह्नं पाणिद्वयं वहसि भूप भुवं विजर्षि। श्यामं वपुः प्रथयसि स्थितिहेतुरेकस्त्वं कोपि नीतिविजितो ······ सम्पालयस्य निश-मर्थिजनस्य कायं रामश्रिया त्वमसि नाथ मु ····। सङ्कर्षणस्त्वमसि विद्विषदायुधन्त्वं त्वं कोसि सञ्चारितहालहलायुधस्य ॥ ···· ख्यातारति ···· रूपं तवातिश ····

(१७) यविस्मयकारिदेव। त्वं मीनसिद्धपुरुषोत्तमसम्भवोसि कस्त्वं द्विंतीशवरशंकर सूदनस्य ॥ भूभृत्सुता पतिरसि द्विषतां पुराणि भेत्ता त्वमीश ···· म्। भूर्ति दधास्य मलचन्द्रविभूषिताङ्गः कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शङ्करस्य ॥ त्वं तेजसा शिखिन मिद्धमधः करोषि शक्तिं दधासि ····। त्वन्तारकं रिपुबलं

(१८) ···· बला निहंसि कस्त्वं नवीनललनीश्रमलब्धजन्मा (?) ॥ त्वं वज्रभृत्त्वमसि पक्षभिदप्य-शेषं भूमीभृतां विबुधवन्धगुरुप्रियोसि····दुर्गाचरणोसि कोसि त्वं भीमसाहससहस्र-विलोचनस्य। ख्यातं तवेश बहु पुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकावलिभिरामतमैः सुगुप्ता॥ त्वामामनन्ति परमेश्वरबद्धसख्यं त्वं कोसि सद्गुणनिधानधरा-

(१९) धिपस्य। तेजोनिधिस्त्वमसि भूमिभृतः समग्राः क्रान्ताः करैः प्रयतमुग्रतरैस्तवेश। प्राप्तोदय सततमर्थिजनस्य कोसि त्वं कल्पभूधरसरोरुहबान्धवस्य ॥ आनन्ददोसि जनतान*नोत्पलानामाप्यायिताखिलजनः करमार्दवेन। त्वं शश्वदीश्वरशिरस्तलदत्त-पादस्त्वं कोसि मर्त्यभुवनेश निशाकरस्य ॥ त्वामंशमीश नि-

(२०) गदन्ति मधुद्विषोमी श्यामाभिरामतनुरस्य मलप्रबोधः पुण्यं ···· रतमिदं विहितं त्वयैव

त्वं कोसि सत्यधनसत्यवती सुतस्य । .... न्ति सुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तन्त्वयो-न्नतिमग्नो गमितः स्ववंशः । पूर्वे पवित्रवनके विहिताश्च कोसि वंशस्थलब्धपरता ....जगीरथस्य ॥ एतत्त्वया कृतमताङ्कसासुधिस्त्वं व्यासा महीह

(२१) ....रीश मनोजवैस्ते पुण्यावतारकरणकृतदुर्दशास्वस्त्वं कोसि हन्त रिपुलाघव राघवस्त्वम्। धर्म्मप्रसूस्त्वमसि सत्यधरस्त्वमेकस्त्वं वासुदेवचरणार्चनदत्तचित्तः । त्वं कोसि विप्र-जनसेवितशेषवृत्तिः संग्रामनिष्ठुर युधिष्ठिरपार्थिवस्य ॥ त्वं वृकिकुञ्जरबलो भुवनैक-मल्ल .... भूषित तनुर्नृपपावनोसि । प्रच्छन्न

दूसरा पत्थर । *

(१) .... : कस्त्वं कवीन्द्रकृतमाद .... कादरस्य । एकस्त्वमीश भुवि धर्मभृतां वरिष्ठः सस्वामिकारिगुणदर्पहरस्त्वमाजौ । त्वं सर्वराजपृतनाविजयाप्तकीर्तिस्त्वं कोसि सुन्दर पुरन्दरनन्दनस्य । दुर्योधनारिबलदर्पहृतस्ववेश यत्नः पराजंनयशः प्रसरे निरोद्धुम् । त्वं कोसि भूजनित .... कर्त्तन विकर्त्तनसम्भवस्य ।

(२) .... यस्त्वमसि कर्म गभीरतायास्त्वं पासि पार्थसमभूमिभृतः प्रविष्ठान् । अन्तः स्थितस्तव हरिः सततं नरेश कस्त्वं विदीर्णरिपुजागरसागरस्य ॥ .... क्रमसमा-गतसत्त्ववृत्तिस्त्वं राजकुञ्जरशिरः प्रवितीर्णपादः । दीप्तारिभास्करतिरस्कृति-सिंहिकाभूः कस्त्वं महीपतिमृगाङ्कमृगाधिपस्य । दानं ददासि विकटो वत वंश-शोजस्त्वं दन्तपालिकरवा-

(३) लहृतारिदर्पः क्षोणीभृतो जयसि तुङ्गतया नरेन्द्र त्वं कोसि वैरिबलदारण वारणस्य ॥ सद्म श्रियस्त्वमसि मित्रकृतप्रमोदस्त्वं राजहंससमलंकृतपादमूलः । स्वामिन्नधः कृतजमोसि जनाभिरामः कस्त्वं स्मिताद्यमुखपङ्कज पङ्कजस्य ॥ सत्पत्रभूषिततनुः सुविशुद्धकोश स्त्वं चन्द्रकीर्त्तिसमलंकृतकान्तमूर्त्तिः स्यात् तवैव कवितां .... व वुहिक ....

* Indo-Aryans, Vol. II, pp. 373-377.

(४) समरजैरवकैरवस्य ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि सश्वन्मङ्गख्यभूस्त्वमसि निर्मलताभिरामः । कोसि प्रसीद बहु सद्गुणरत्नयोनिस्त्वंकल्पारिकुलभूषण भूषणस्य ॥ धात्रा परोपकरणाय विसृष्टकायः सञ्जायजन्मसमलंकृततुङ्गगोत्र । ब्रूहि ···· मवनीश्वरवन्दनीयस्त्वं कोसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य ···· ॥ नत्वाशु शुरूहृदय प्रथितो·

(५) प्रमायस्त्वं जानुना हतवृषो न जम्भीकृताह्वस्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथं ते ॥ नित्यं सन्निहिते कृपाणतमसा प्रायोभिभूयेत स त्वन्नासाद् भुवनैकनाथ हरिणा· स्तस्योदरे प्राविशन् । मूर्त्तिस्ते च कलङ्किता सजम्भनां धत्ते ···· : शङ्खस्थैर्विदित स्तथापि नृपते राजा त्व····म्नुतः····विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यसिनस्तुतिरर्ज्जुन·

(६) स्याविहिते व्यज्ञायि पूर्वं किल तत्सम्यक् प्रनिजाति सम्प्रति पुनः श्रीमन्महीपालवत् त्वामालोक्य सहस्रशो रिपुबलं निघ्नन्तमेकं रणे ॥ किं ब्रूमोपि ···· स्त्वं नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपतेरनिसृणात्मप्रियाणां शृणु । कीर्त्तिर्भ्राम्यति दिक्षु ···· किं चित्रं भुवनैकमल्ल यदि

(७) मन्दाकिनोपश्चभूलोकाडुद्धरता जगीरथनृपेणानायि निम्नां महीम् । आश्चर्यं पुनरेतदीश यदि ते निम्नान्महीमंम्भलाद्दूर्द्धं कीर्त्ति····णीकमलभूलोकं त्वया प्रापिता । चित्रं नात्र फल ···· सर्वात्मना विद्विषो विशिखैः संमूर्छितस्याहवे । ···· मध्ये

(८) न्नताश्चर्यकृत् ॥ अत्यंबुधिजवद्भैमत्यादित्यजवन्महः । अतिसिंहजवत्शौर्यमतः केनोपमीयते ॥ केयूरं बलभूपालभुजदण्डे विराजते किरीटमिव ···· न्निधासि विजयश्रियः । ···· भुवनगुरोस्तोत्रमकृथास्तदेष

(९) वैतालिकैरित्थमभिष्टुतेन संपूजितामर्त्यगुरुद्विजेन । विमुक्तकारागृहसंयतेन विदीर्णभूताजयदक्षिणेन । तेनाभिपिक्तमात्रेण प्रतिजज्ञे द्वयं स्वयम् । पद्मनाथस्य भूसिद्धिः कन्यायाः ···· ॥ ···· यशः शरीरम् ॥ स·

(१०) सर्पिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान् विधायावनिदेवसुख्यान्। प्रवर्ति ... ममतन्द्रितेन मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ श्री पद्मनाथस्य सलोकनाथ ... नैवेद्यपाका ... विला

(११) सिनीवा ... नादिर्यथार्हतः पादकुलस्य मूर्त्तिम्। स पद्मनाथस्य पुरः समग्राम-कल्पयत्प्रेक्षणकायभूपः ॥ पाषाणपल्लीं प्रविभज्य सम्यग् देवाय ... । सम्पाद-यामास तथा द्विजेभ्यः ... ।

(१२) गतो योगीश्वरांगोद्भवः ख्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपतेः सर्वत्र विश्वासभूः। आधारो विनयस्य शीलभवनं भूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य क क वसतिः ....

(१३) द्वीपाले नटो विप्रास्तस्मिन् ग्रामे प्रतिष्ठिताः। तेषां नामानि लिख्यन्ते विसूरः शासनोदितः ॥ देवलब्धिः सुधीराख्यस्ततः ओधरदीक्षितः ॥

(१४) ... रामेश्वरो द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः। अष्टादशैते विप्राश्च .... द्विजः। पादोनपदिका .... णेकौसुरार्चकौ। द्वावर्द्धपदिनावेष विप्राणां संग्रहः कृतः। ...दद्धपदं नृपः। विधाय ...कायस्य सूरये देवाय दत्तः सौवर्णो राज्ञा दत्तैः समाचितम्। ... हरिण्मणिमयं भूप—

(१५) ... कं ददौ। रत्नैर्विचित्रं निष्कश्च निष्क ....: स भूपतिः ॥ प्रा—केयूरयुगलं रत्नैर्बहुभिराचितम्। कङ्कणानां चतुष्कश्च महार्हमणिभूषितम्। .... द्वितीय मनि .... स्य सौवर्णं केवलं यथा। कङ्कणानां चतुष्कश्च नीलपट्टद्वयं तथा। .... लैः पंचभिर्युता। .... धारापात्रश्च कां।

(१६) ... चतुष्टयम्। सुवर्णाण्डत्रयं देवपरिवारविभूषणम्। .... परिहेमाब्जमातपत्रीकृतं विभोः ॥ निवेश्य ताम्रपट्टे च तन्मयेनैवम ....। प्रतिमा नित्यं मणि .... राजती ... प्रतिमा .... का द्वितीया .... द्युती। राज .... मयी चान्या ....। ताः प्रयत्नेन तिस्रोऽपि पूज्यते ....वेश्मनि। तत्र ताम्रमयं देवं दीपार्थं मण्डकाकृतम्।

(१७) ....क। ताम्रार्थपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीभुजा। सधूपदहनाः सप्त घण्टाश्चा ....। दत्ताः शङ्खाश्च सप्तैव ताम्रपात्रीचतुष्टयम्। स कांस्यभाजनं प्रादान्नृपतिः ....चामरं दण्ड.... बृहच्चतुष्टयम् ताम्रमयं तास्ता ...। दत्ताश्च दशतन्मयाः॥ ....देवोपकरणद्रव्याणां संग्रहः कृतः।

(१८) ....वापीकूपतडागादि .... नानावनेषु च। दशमासं तथा विंशत्यूर्द्धं सर्वत्र मण्डले। ददौ राजा नि ...यते सर्वं प्रवर्तते। अयं देवालयो नाम ...स्फटिकामल ... भारद्वाजेन मीमांसान्यायसंस्कृतबुद्धिना। कवीन्द्ररामपौत्रेण गोविन्दकविसूनुना। कविता मणिकर्णेन सुभाषितसरस्वती। प्रशस्ति

(१९) ....लङ्केश्वरवान् द्वितीयां विभ्रत्सुहृतां मणिकण्ठसूरेः। पञ्चासे चाश्विने मासे कृष्णपक्षे नृपाज्ञया। रचिता मणिकर्णेन प्रशस्तिरियमुज्ज्वला॥ अङ्कतोपि ११५० ॥ आश्विनबहुलपक्ष।

(२०) ... खिलां महीम्। यस्य गीर्वाणमन्त्री च मन्त्री गौरो भव। प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा सद्वर्णा पद्मशिल्पिना।

(२१) ● ● ❁ ❁ ❁

मूर्त्तियों के चरणचौकी पर।

[1427] *

श्री आदिनाथाय नमः॥ संवत् १४९७ वर्षे वैशाख ... ७ शुक्रे पुनर्वसुनक्षत्र श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीडुंग ...संवर्त्तमानो श्रीकाञ्चीसंघे मायूरान्वयो पुष्करगणभट्टारक श्रीगणकीर्तिदेव तत्पदे यत्यः कीर्त्तिदेवा प्रतिष्ठाचार्य श्रीपंडितरघूतेपं

---

* श्री आदिनाथजी की बडी मूर्ति पर यह लेख है। Indo-Aryans, Vol. II, p. 382.

आम्नाये अग्रोतवंशे मोङ्गलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्रः साधु भोपा तस्य भार्या नाह्ली। पुत्र प्रथम साधुक्षेमसी द्वितीय साधुमहाराजा तृतीय असराज चतुर्थ धनपाल पञ्चम साधुपाल्हका। साधुक्षेमसी भार्या नोरादेवी पुत्र ज्येष्ठ पुत्र भधाधि पतिकौल ॥ भ—भार्य. च ज्येष्ठ स्त्री सुरसुनी पुत्र मल्लिदास द्वितीय भार्या साध्वीसरा पुत्र चन्द्रपाल। क्षेमसी पुत्र द्वितीय साधु श्रीभोजराजा भार्या देवस्य पुत्र पूर्णपाल॥ एतेषां मध्ये श्री॥ त्यादिजिनसंघाधिपति काला सदा प्रणमति ॥

[1428] *

(१) सिद्धि संवत् १५१० वर्षे माघसुदि ८ अष्टम्यां श्रीगोपगिरौ महाराजाधिराज रा

(२) जा श्रीडंगरेन्द्रदेवराज्यप्र .... श्रीकाष्ठासंघे मायूरान्वये भट्टारक श्री।

(३) क्षेमकीर्त्तिदेवस्तत्पदे श्रीहेमकीर्तीदेवास्तत्पदे श्रीविमलकीर्त्तिदेवाः ....

(४) डिता .... सदाम्नाये अग्रोतवंशे गर्गगोत्रेसा .... त

(५) योः पुत्राः ये दशाय श्रीचंद भार्या माल्लाही तस्य प्रवसा०षेषार रा .... जीसा .... द्रु

(६) तीयसा० हरिचंदभार्या जसोधर हितये .... णसा सा० सधा सा० तृती

(७) य हेमा चतुर्थ सा० रती पुत्र सा० सह सापं .... मु सा० धं....सा० सल्हापुत्र एसेवं..ए

(८) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेषा तथा हरिचंद्र देवकी भार्या ....

(९) दीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीर प्रतिमा प्रतिष्ठाप्य भूरिभक्त्या प्रणमंति ॥

(१०) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य भक्त्या प्रतिष्ठापयतो महत्या। फलं बलं राज्य

(११) मनन्त सौख्यं भवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्ति ॥ शुभं भवंतु सर्वेषां ॥

[1429]

(१) श्रीमङ्गोपाचलगढदुर्गे ॥ महाराजाधिराज श्री मल्लसिंह देवराज्ये प्रवर्त्तमाने। सवंत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि।

* Indo Aryans. Vol, II. pp. 383—84.

२४

(२) ... सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये । भ० श्रीपद्म नन्दिदेव तत् पट्टालंकार श्री ।

(३) शुभचंद्र देव । तत्पट्टे भ० मणिचंद्र देव । तत्पट्टे पं मुनि ... गणि कचरदेव तदन्वये वारह जेणीवंशे सालम भार्या व --

(४) शुक पु ४ तेषां मध्ये अणंद भार्या उदैसिरि। पुत्र ६ लोहंगराम मुनिसिंघ अरजुन भधरण मल्हू नल्हू । मल्हू भार्या ।

(५) पियौसिरि पुत्र पारसराम भार्या नव। डुर्ग। पुत्र गमसि भार्या नागसिरी । तृतीय पुत्र लिभ । चतुर्थ पुत्र रोपणि ॥ सॉ मल्हु ।

(६) .. तीर्थंकर बिंबं निर्मापितं प्रणमति प्रीत्यर्थं ॥

सुहानीय।

पाषाण की मूर्त्तियों के चरणचौकी पर।

[1430] *

संवत १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेन कभा खोदिता ।

[1431] †

संवत १०३४ श्रीवज्रदाम महाराजाधिराज वइसाख वदि पाचमी •

* Indo Aryans, Vol. II, p. 369.
† Do. p. do.

[1432] *

६: ॥ सिद्धि । सन्तु १४०७ वर्षे बैशाख सुदि १५ दि — नमो ··· मथावे वे र ··· करा ब्रह्मज्ञुता सर ··· गत्या र ··· आदि अखंड ढा ··· औस्व ··· क···सुत ··· रिता मु ठेढ ··· व ···

[1433] †

· ११६० कातिक सुदि १३ गुरू दिने रतन लिषितं राऊन ताढ ··· तथार दिवसम्मि पंथ ··· चंद्राना पसावे आदेसू संवतु १५२२ वर्षे चैत सुदी १० बुधे।

मथुरा।

श्रीपार्श्वनाथजी का मंदिर—घीयामंडि।

पंचतीर्थियों पर।

[1434]

॥ सं १३७५। श्र० ऊसर्सीह जार्या मालू पुत्री लषमिणि मातापितृ श्रयसे श्री शांतिनाथ का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीमदनप्रज सूरि पट्टे श्रीविजयसेन सूरिजि:॥

[1435]

ॐ सं० १३८० वर्षे माघसुदि ५ उस० सुचिंती गोत्रे सा० षीमा पुत्र सा० भूणा जोजा·· श्रीजिनचन्द्र सूरि शिष्य श्रीजगत्तिलक सूरिजि:। ··· श्रीपद्मानंद सूरिजि: ॥

[1436]

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे उपकेश ज्ञा० व्य० जइता पु० जगपाल जा० पूजलदे पु० लोलाकेन पितृमातृ श्र० श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० वृहद्गच्छे श्रीरामदेव सूरिजि:।

---

* Indo-Aryans, Vol. II, p. 381.

† किले पर "सास बहु" के मंदिर की मूर्त्ति पर यह लेख है।

[1437]

सं० १५२३ व० वै० सु० ६ प्राग्वाट श्रे० वस्ता भा० फडू सुत श्रे० सारंगेण भा० भरगादे पुत्र श्रे० वीकादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिम्बं का० प्र० तपागछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागर सूरिभि : ॥ जइतपुर ॥

[1438]

स० १५२८ वर्षे फागुण - - श्रीमालज्ञातीय टार्का गोत्रे स० भाविनो पुत्र श्रीभागू श्रावक श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनसागर सूरि तत्प० श्री सुंदर सूरि पट्टे श्री हर्ष सूरिभिः ।

[1439]

सं० १५७९ वर्षे माघसुदि ६ शुक्रे बैशाष वदि ५ उसवंशे लाषाणी गांधी गोत्रे सा० तेजपाल पुत्र सा० कुयरपाल भार्या सालिगदे पुत्र रायमल्ल श्रावकेण स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगछे श्रावकेण श्री गुणनिधानसूरि उपदेशात् ।

धातुकी मूर्त्ति पर

[1440]

सं० १६०८ फाग० सु० १० क्षेमकीर्त्ति ………… ।

धातुके यंत्र पर

[1441]

सं० १८५२ पोष सुदी ४ दिने । बृहस्पति वासरे श्रीसिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं सवाई जैनगर मध्ये वा० लालचंद्र गणिना कारितं बीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोप चंद तत्पुत्र जेठमल्लेन श्रेयोर्थं शुभं भवतु ॥

आगरा ।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर—रोशन मोहल्ला ।

पंचतीर्थियों पर

[1442]

॥ संवत् १३७७ वर्षे वैशाख सुदी ६ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अरसीह भा० पामना-पुत्र ··· बाल्हाकेन श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1443]

॥ संवत् १५२४ वर्षे मार्गशिर बदी ४ रवौ उपकेश ज्ञातीय लिंगा गोत्रे सा० पीथा भा० ऊदी····पु० सा० चेडन भा० सूहवादे पु० शेषा सरूजन अरजन अमरासहितेन स्वपु० श्रीकुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री उपकेशगच्छे ककुदाचार्यसन्ताने श्री सिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1444]

॥ सं० १५३३ वर्षे पोस सुदि १५ सोमे सिद्धपुर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सा० नासण भा० वानू सु० बडाकेन भा० माई मुसूरा प्र० कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपागच्छे श्री ज्ञानसागर सूरि पट्टे श्री उदयसागर सूरिभिः ॥

[1445]

॥ संवत् १५३६ व० ज्येष्ठ वदि ४ सोमे श्रीश्रीमाली दोसा रगना उपरिसन प्रावरू भा० हपारा सुत भैरवदासेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बि० का० प्रति० बृहत्तपा श्री उदयसागर-सूरिभिः ॥

[1446]

॥ संवत् १५७२ सा० खीवा भा० का० ···· सं० गांडण रणधीर र··· देवाति प्रणमन्ति

[1447]

॥ संवत् १५९२ माघ सुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचन्द्र तदाम्ना जसवाल इल्हा ... कुवेसल श्री हेमणे ....

[1448]

॥ संवत् १६२८ वर्षे ज्येष्ठ वदी १ .... श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री- बृहत् खरतरगछे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1449]

॥ स० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य भा० मूल श्रीनवपद कारितं प्रतिष्ठितं श्री (?) विजयसूरी.... ।

धातु की चौविशी पर।

[1450]

॥ संवत् १५७४ वर्षे वैशाख सुदी दशमी शुक्र ओसवाल ज्ञातीय राका शाखायां वलह गोत्रे सं० रत्नापुत्र स० राजा पु० सं० नाथू भा० बल्हा पुत्र सं० चूहड़ भा० हीसू पु० स० महाराज भा० संभ्रा पुत्र सोहिल लघुभ्रातृ महपति भा० माणिकदे सु० नरहपाल भा० मलूही पु० धनपाल स० हेमराज भा० उदयराजी पु० संघागोराज भ्रातृ सैन्यरत्न भा० श्रीपासी पु० संघराज समस्तकुटुम्बसहितेन सुश्रावकेन हेमराजेन श्री धर्मनाथ बिम्बं कारापितं श्रीउपकेश गछे ककुदाचार्यसन्ताने प्रतिष्ठितं भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1451]

ॐ सिद्धिः ॥ संवत् १६६७ ज्येष्ठ सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे अनुराधा नक्षत्रे। ओस- वाल ज्ञातीय अरडक सोनी गोत्रे साह पूना संताने सा० कान्हड़ भा०भामनी वहु पुत्र सा०

हीरानंदेन बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्धन सूरि संताने .... श्री लब्धिवर्द्धन शिष्येन ।

[1452]

श्रीमत्संवत १६७१ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री आगरावासी उसवाल ज्ञातीय चोरड़िया गोत्रे साह .... पुत्र सा० हीरानंद भार्या हीरादे पुत्र सा० जेठमल श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्रीमद्धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्पट्टे ....

पाषाण के चौविशी के चरण पर ।

[1453]

संवत १८६२ ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवारः श्री सिंघाड़ा बाई ने बनाया । श्री आगरा वास्तव्य व्य० संघपति श्री श्री चंद्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

शिलालेख ।

[1454]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १५ श्री अर्ग्गलपुरे जलालूद्दीन पातिसाह श्री अकब्बर सुत जहांगीर सुत सवाई साहिजां विजयराज्ये .... राजद्वार शोभक सोनी .... श्री हीरानंद .... श्री जहांगीरस्य गृहे .... कृतं । तत्र तस्य नंदनबनोद्यानसमवाटिकायां ....निज धनस्य .... भार्या सोना सुत निहालचंद भार्या मृगां स्वाङ्गंग पुत्र चिरं सहसमल्ल सना श्री गंगाजल वारि पूरपूरित निर्मल कूपः कारापितः ॥ आचंद्रार्कं यावत्तिष्ठतु ॥

[1455] *

१। ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥ सत्पट्टोत्तुंगशृंगोदयं शिखरि शिखा भानु बिंबोपमाना जैनोपज्ञाः स

---

* बड़े मंदिर के बगल में जो जड़ाई काम को नई वेदी और सभामंडप बने हैं उसके दाहिने तर्फ उपर में यह शिलालेख लगाया हुवा है। इसकी लंबाई अंदाज २ फिट और चौड़ाई १॥ फिट है और मामूली पत्थर है। शिलालेख के निचे ४ यंत्र है (१) २० का (२) १५ का (३) ३४ का और (४) १७० का खुदा हुवा है।

२। मं चच्चरित चित तपस्तेजसा तप्यमानाः नूनं नंद्या सुरैरेते भुवि यशविमला राज राजीव हंसा ॥

३। श्रेयः श्री हीरनामा विजयपदयुता सूरिवंशावतंसाः १ भट्टारक श्री विजयेण युक्तः श्री

४। धर्मं सूरी जगति प्रसिद्धः तत् प्राज्यराज्ये प्रगुणी कृतो यः श्री संघमानन्द विकास-हेतु २ श्री

५। हीरवंशे भुवि कीर्त्तिविश्रुतं यशोत्तरं यस्य समीक्ष्य मानवाः पश्यंति नेत्रैर्न सुधाकरं वरं श्री पा

६। ठकश्रेणिपुरन्दरप्रभुः ३ श्रीमेघनामा भुवि पाठक प्रभु प्रसह्य पापं दहतेस्म कामदः महादवं

७। वन्हिरिव स्फुरद्युतिः ज्वलत्प्रतापावलि कीर्त्तिमंगलं ४ तत्पट्टे विबुधार्चितो विजय. प्राक् श्री

८। मेरुनामा मुनी तच्छिष्यो मणिसदृशो शुभमति माणिक्य भानू जयौ ताभ्यां शिष्य कुशाग्रधीति कु

९। शलो जैनागमे यन्मति तद्वाक्यं श्रवणेन निर्मलधीयां निर्मापितोयं गृहं ५ श्री अकब्बराबादपुरे

१०। श्रीसंघमेरुसदृशो धर्मे निर्माप्य जिनभवनं करोति बहुभक्तिः वात्सल्यं ६ दिगष्टैक मिते

११। वर्षे माघशुक्के चतुर्दशी बुधवारे च पुष्यर्क्षे स्थापितोयं जिनेश्वरान् ७ श्रेयः कल्याणं जयं

१२। ॥सवैया ३१ प्रथम वसंत सिरी सीतल जू देवहु की प्रतिमा नगन गुन दस दोय भरी है आग

१३। रे सुजन साचे अठारैसै दस आठे माह सुदी दस च्यार बुद्ध पुष धरी है देहरा नवीन कीन्यौ संग

AGRA TEMPLE PRASHASTI
Dated, V. S. 1818 (A. D. 1761)

१४। जिनराय चिन्यौ कुशलविजय पुन्यास तपगछ धरी है देख श्रीवछ विचार सम्यक् गुन सुधार

१५। जरम की रज टार पूजा जिन करी है १ कुंमलिया चोमुष की प्रतिमा चतुर धरम विमल जिन नेम

१६। मुनिसोवूत उर आनिकै करत जवानी पेम करत जवांनी पेम नेम जिन संष सुजानौ विमल लष

१७। न वाराह धरम जिन व (ज) र पिछानौ मुनिसोवूत जिन कूर्म लषन लष होत सबै सुष प्रति

१८। मा चारौं जांन आंन सुज्ञ धरीसु चौमुष २ ॥

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

६	७	२
१	५	९
८	३	४

१५	४	५	१०
६	९	१६	३
१२	७	२	१३
१	१४	११	८

२५	८०	क्षि	१५	५०
२०	४५	प	३०	७५
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७०	३५	स्वा	६०	५
५५	१०	हा	६५	४०

[1456] *

पातिसाहि श्री जहांगी (र) ।

१। ॥ ए० ॥ श्री सिद्धेभ्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री विष्णुपुत्रो निखिल गुणयुतः पारगो वीतरागः । पायाद्वः क्षीणकर्म्मा सुरशिखरि समः [कल्प]

२। तीर्थप्रदाने ॥ श्री श्रेयान् धर्म्ममूर्तिर्भविकजनमनः पंकजे बिंबभानुः कल्याणांभोधिचंद्रः सुरनरनिकरैः सेव्यमा

३। नः कृपालुः ॥ १ ॥ ऋषभप्रमुखाः सर्वे गौतमाद्या मुनीश्वराः। पापकर्म्म विनिर्मुक्ताः क्षेमं कुर्वंतु सर्वदा ॥ २ ॥ कुंर ।

* यह लेख प्रफेसर बनारसीदासजी ने "जैन साहित्य संशोधक" खंड २ अंक १ पृ० २५-३४ में विस्तृत टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया है ।

४। पाल स्वर्णपालौ। धर्म्मकृत्य परायणौ। स्ववंशकुजमार्त्तंडौ। प्रशस्तिर्लिख्यते तयोः
। ३। श्रीमति हायने रम्ये चन्द्रर्षि रस

५। भूमिते। १६७१ षट् त्रिंशत्तिथौ शाके। १५३६। विक्रमादित्यभूपतेः। ४। राधमासे
बसन्तर्तौ शुक्लायां तृतीया तिथौ। युक्ते तु

६। रोहिणी तेन। निर्दोषगुरुवासरे। ५। श्रीमदंचलगच्छाख्ये सर्वगच्छावतंसके। सिद्धा-
न्ताख्यातमार्गेण। राजिते विश्वविस्तृते। ६। उग्रसे

७। नपुरे रम्ये। निरातंके रमाश्रये प्रासादमंदिराकीर्णे। सद्‌ज्ञातौ ह्युपकेशके।
लोढागोत्रे विवस्वांस्त्रिजगति सुयशा ब्रह्मवी

८। र्यादियुक्तः श्री श्रंगाख्यातनामा गुरुवचनयुतः कामदेवादि तुल्यः। जीवाजीवादि-
तत्वे पररुचिरमतिर्लोकवर्गेषु यावज्जीवा

९। श्रंद्रार्कविंबं परिकरभृतकैः सेवितस्त्वं मुदाहि। ८। लोढा सन्तानविज्ञातो। धन-
राजो गुणान्वितः। द्वादशव्रतधारो च। शुभ।

१०। कर्म्मणि तत्परः। ९। तत्पुत्रो वेसराजश्च। दयावान सुजनप्रियः। तुर्यव्रतधरः श्री मान्
चातुर्यादिगुणैर्युतः। १०। तत्पुत्रौ द्वा।

११। वजूतां च सुरागावर्थिनां सदा। जेतू श्रीरंगगोत्रौ च। जिनाज्ञा पालनोत्सुकौ
तौ जीण। सीह मल्लाख्यौ। जेतूवात्मजो बजूवतु

१२। :। धर्म्मविदो तु दक्षौ च। महापूज्यौ यशो धनौ। १२। आसीच्छ्रीरंगजो नूनं।
जिनपदार्चने रतः। मनीषी सुमना जव्यो राजपा-

१३। ल उदारधीः। १३। आर्या। धनदौ चर्षजदास। पेमाख्यौ विविध सौख्य धनयुक्तौ।
आस्तां प्राज्ञौ द्वौ च। तत्वज्ञौ तौ तु तत्पु

१४। त्रौ। १४। रेषाजिधस्तयोर्ज्येष्ठः। कल्पद्रुरिव सर्वदः। राजमान्यः कुलाधारो।
दयालुर्धर्म्मकर्म्मठः। १५। रेषश्रीस्तत्प्रिया

१५। जव्या। शीलालंकारधारिणी। पतिव्रता पतौ रक्ता। सुलशा रेवती निजा। १६।
श्री पद्मप्रजबिंबस्य नवीनस्य जिनाल।

१६। ये । प्रतिष्ठा कारिता येन सत्श्राद्धगुणशालिना । १७ । बलौ तुर्यवृतं यस्तु । श्रुत्वा कल्याणदेशनां । राजश्रीनंदन :

१७। श्रेष्ठ । आणंदश्रावकोपम : । १८ । तत् सूनुः कुंरपालः किल विमलमतिः स्वर्णपालो द्वितीय । भ्रातुर्यौदार्यधैर्यप्रमु- ।

१८। खगुणनिधिर्जाग्यसौजाग्यशाली । तौ द्वौ रूपाभिरामौ त्रिविधजिनवृषध्यानकृत्यैक- निष्ठौ । त्यागैः कर्णावतारौ निज-

१९। कुलतिलकौ वस्तुपालोपमार्हौ । १९ । श्री जहांगीरनृपालमान्यौ धर्मधुरंधरौ । धनिनौ पुण्यकर्तारौ विख्यातौ भ्रा-

२०। तरौ भुवि । २० । याभ्यामुप्तं नव क्षेत्रे । वित्तबीजमनुत्तरं । तौ धन्यौ कामदौ लोके। लोढा गोत्रावतंसकौ । २१ । अवा

२१। प्य शासनं चारू । जहांगीरपतेर्ननुः कारयामास तुर्धर्म्मं । कृत्यं सर्वं सहोदरौ । २२ । शालापौषधपूर्वावै । यकाभ्यां सा

२२। विनिर्मिता । अधित्यका त्रिकं यत्र राजते चित्तरंजकं । २३ । समेतशिखरे जव्ये शत्रुंजयेर्बुदाचले । अन्येष्वपि च तीर्थेषु । गि

२३। रिनारिगिरौ तथा । २४ । संघाधिपत्यमासाद्य । ताभ्यां यात्रा कृता मुदा । महर्द्ध्या सवसामग्र्या । शुद्धसम्यक्त्वहेतवे । २५ । तुरंगा

२४। णां शतं कांतं । पंचविंशति पूर्वकं । दत्तं तु तीर्थयात्रायां गजानां पंचविंशतिः । २६ । अन्यदपि धनं । वित्तं । प्रत्तं संख्यातिगं खलु

२५। अर्जयामासतुः कीर्त्तिं । मित्थं तौ वसुधातले । २७ । उत्तुंगं गगनालंबि । सच्चित्रं सध्वजं परं । नेत्रासेचनकं ताभ्यां । युग्मं चैत्य

२६। स्य कारितं । २८ । अथ गच्छं श्रीअंचलगच्छे । श्रीवीराद्‌ष्टचत्वारिंशत्तमे पट्टे । श्रीपावक गिरौ श्री सीमंधरजिनवचसा । श्रीचक्रे (श्वरीद)

२७। त्तवराः । सिद्धांतोक्तमार्गप्ररूपकाः । श्री विधिपक्षगच्छसंस्थापकाः । श्री आर्यरक्षित सूरय । १ । स्तत्पट्टे श्री जयसिंह सूरि २ श्रीधर्म्मघो

२८ ष सूरि ३ श्रीमहेन्द्रसिंह सूरि ४ श्रीसिंहप्रभसूरि ५ श्रीअजितसिंह सूरि ६ श्री देवेंद्रसिंह सूरि ७ श्रीधर्मप्रभ सूरि ८ श्री (सिंहतिलक सू)

२९। रि ९ श्रीमहेंद्रप्रभसूरि १० श्रीमेरुतुंगसूरि ११ श्रीजयकीर्त्ति सूरि १२ श्री जयकेशरि सूरि १३ श्री सिद्धांतसागर सूरि १४ (श्री भावसा)

३०। गर सूरि १५ श्री गुणनिधान सूरि १६ श्रीधर्म्ममूर्त्ति सूरय १७ स्तत्पट्टे संप्रति विराजमानाः श्रीभट्टारकपुरंदराः स ......

३१। णय : श्रीयुगप्रधानाः। पूज्य भट्टारक श्री ५ श्रीकल्याणसागरसूरय १९ स्तेषामुपदेशेन श्रीश्रेयांसजिनबिंबादीनां ...

३२। कुंरपालसोनपालाभ्यां प्रतिष्ठा कारापिता। पुनः श्लोकाः। श्री श्रेयांसजिनेशस्य बिंबं स्थापितमुत्तमं। प्रतिष्ठितं .... गुरू

३३। णामुपदेशतः। २९। चत्वारिंशत् मानानि सार्धान्युपरि तत् क्षणे। प्रतिष्ठितानि बिंबानि जिनानां सौख्यकारिणां। ३०। ....

३४। तु लेभाते प्राज्य पुण्यप्रभावतः देवगुर्वोः सदाभक्तौ। शश्वतौ नंदतां चिरं। ३१। अथ तयोः परिवारः संघराजो पु .....

३५। ..... ३२। सूनवः स्वर्णपाल .... श्चतुर्भुज ... पुत्री युगलमुत्तमं। ३३। प्रेमनस्य त्रयः पु (त्राः ....)

३६। षेतसी तथा। नेतसी विद्यमानस्तु सच्छीलेन सुदर्शन। ३४। धीमतः संघराजस्य। तेजस्विनो यशस्विनः। चत्वारस्तनुजन्मानः ...... मताः। ३५। कुंरपालस्य स ....

३७। भार्या .... पत्नीतु स ... पतिप्रिया। ३६। तदंगजास्ति गंभीरा जादो नाम्नी स .... दानी महाप्राज्ञो ज्येष्ठमल्लो गुणाश्रयः। ३७।

३८। संघश्रीसुलषश्रीर्वा दुर्ग्गश्रीप्रमुखैर्निजैः। वधूजनैर्युतौ भातां। रेषश्री नंदनौ सदा। ३८। भूमंडलं सभारंगमिंद्वर्कयुक्त संव ......।

श्री श्रीमंदिर स्वामी जी का मंदिर—रोशन महल्ला।

पाषाण की मूर्ति पर।

[1457] *

(१) ॥ सं० १६६० ज्यैष्ठ सुदि १५ गुरौ ॥ ओसवा
(२) ल ज्ञाति श्रृंगार। अरडक सोनी गोत्रे
(३) सा० हीरानंद पुत्र सा निहालचंद
(४) न श्री पार्श्वनाथ कारितः सर्परूपाकार
(५) श्री खरतरगच्छे श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री
(६) जिनचन्द्र सूरिणा। श्री आगरा नगरे

धातुकी मूर्त्तियों पर।

[1458]

॥ सं० १५३४ वर्षे माघ सुदी ५ श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री जिनवरदेवाः तत् शिष्य मुनिरत्नकीर्त्ति उपदेशात् खण्डेलवालान्वये पहाड्या गोत्रे सा० तेजा भार्या रोहिणी पुत्रौ सा० पूना पाल्हा नित्यं प्रणमन्ति ॥

[1459]

॥ सं० १६४१ श्री सुपार्श्वनाथ बि० का० प्र० श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

[1460]

॥ संवत् १६७४ वर्षे माघ वदी १ दिने गुरूवारे पुष्यनक्षत्रे साह श्रीजहांगीर विजय मानराज्ये ओसवालज्ञातीय नाहर गोत्रे। सं० हीरा तत्पुत्र स० अमरसी भा० अन्तरङ्गदे तत्पुत्र सा० साढूला भा० सोभागदे युतेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं जहांगीर महातपाविरूद्धधारक भट्टारक श्री ५ श्री विजयदेवसूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

* यह लेख श्री पारश्र्वनाथ स्वामी की श्वेत पाषाण की कायोत्सर्ग मुद्रा की मनोज्ञ मूर्ति के चरणचौकी पर खुदा हुआ है।

पंचतीर्थियों पर

[1461]

॥ सम्वत् १५०० वर्षे वै० शु० ५ उपकेशज्ञातीय सा० नानिग भा० मल्हाड सुत सा० लाखा भा० लाखणदे सुत सा० चाहडेन मातृ हासा सिधराज भा० चापलदेवी सुत वसुपालादिकुटुम्बयुतेन पितृ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छनायक श्री श्री मुनिसुन्दर सूरिभिः ॥

[1462]

॥ संवत् १५३६ वर्षे आषाढ सुदी नवम्यां तिथौ उप० वीरोलिया गोत्रे सा० मूमा भा० केल्ही पु० दशरथ नाम सा० दशरथ भा० दत्तसिरी पु० जिणदत्त श्री संभवनाथ बिम्बं का० प्र० श्री पल्लीवालगच्छेश भ० श्री ऊजोअण सूरिभिः ॥

[1463]

संवत् १५५९ वर्षे महा सुदी १० श्रीमालवंशे वहकटा गोत्रे सा० तेजा पुत्र सा० जोगाकेन पुत्रादियुतेन श्रा० अमरसहितेन श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

[1464]

॥ संवत् १५०० वर्षे ज्येष्ठ वदी० सोमे श्री अलवर वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय वृद्धशाखायां आयत्रिणयगोत्रे चोरवेडिया शाखायां सं० साहणपाल भा० सहलालदे पु० सं० रत्नदास भा० सूरमदे श्रेयोऽर्थं श्री उकेशगच्छे कुकदाचार्यसन्ताने श्री सुमतिनाथ कारापितं बिम्बं प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

चौविशी पर।

[1465]

॥ संवत् १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ प्रा० ज्ञातीय सं० पूजा भा० कर्मादे पुत्र स० नरजम भा०

नायकदे पुत्र स० खीमाकेन जा० हरषमदे पुत्र परवत गुणराज प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० लक्ष्मीसागर सूरिभिः सीरोही नगरे

धातु के यंत्रों पर।

[1466]

॥ सं० १६०४ वर्षे शाके १४७० प्रवर्त्तमाने आश्विनमासे वदिपक्षे १४ दिने रविवासरे दीपालिकादिने श्री श्रीमालगोत्रीय साह श्री जयपाल सुत साह सोरंगकेन सुखशांति श्री हर्षरत्न सदुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ यंत्रं कारापितं प्रतिष्ठितम् शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ ७ ॥

[1467]

॥ संवत् १८०५ वर्षे माघशुक्ल ५ गुरौ श्री गूर्जरदेशीय पाटण वास्तव्य श्री खरतरगच्छीय कावडीया गोत्रे सेठ वेलजी पुत्र सेठ हेमचन्द्रेण स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक नवपदगुह्यकर्म क्षयार्थं करापितं श्री आगरा नगरमध्ये श्रीतपागच्छीय पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् ॥ ह्रीँ ॥

[1468]

॥ सं० १८०७ वर्षे आश्विन शुक्ल १० भौमे डूगरू गोत्रीय सा० कपूरचन्द्र पुत्र सिताव सिंह गृहे तरसम्रित(?) सुखदे नाम्नी स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्रयंत्रं कारितं श्र तपागच्छीय भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वरराज्ये पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् कृतम् ॥ श्रीः ॥

[1469]

सं० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढ़ा गोत्रे प्रतापसिंहस्य भार्या मूलो श्री नवपद कारितं प्रतिष्ठितं श्री धरणेन्द्रविजय सूरिराज्ये तपा।

श्री सूर्यप्रभस्वामी जी का मंदिर—मोती कटरा

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1470]

॥ संवत् १५३३ मार्ग सुदि ६ शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय बड़गोत्रे सा० भीमदे भा० रूल्हही पुत्र सा० भोजा भा० जेठी नाम्न्या पुत्र सा० महीपति मेघादि कुटुम्बयुतया स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

[1471]

॥ संवत् १५४६ वर्षे पौष वदी ५ सोमे राजाधिराज श्री श्री श्री नाभिनरेश्वरराज्ञी श्री श्री श्री मरुदेवी तनया पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री आदिनाथदेवस्य बिम्बं सुप्रतिष्ठितम् ॥

[1472]

॥ सं १५०७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्री मंडपे श्रीमाल ज्ञातीय सं ऊदा भा० हर्षू सा० खीमा भा पूंजी पु० सा० जेगसी भा० माऊ पु० सा० गोल्हा भा० सापा पु० मेघा पु० कार्णा लघुभ्रातृ सं० राजा भार्या सागू पु० सं० भावडेन भा० धनाई जीवादे सुहागदे सत्तादे धनाई पुत्र सं० हीरा भा० रमाई सं० लालादिकुटुम्बयुतेन बिम्बं कारापितं निज श्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री सोमसुन्दर सूरिसन्ताने लक्ष्मी सागर सूरिपट्टे श्री सुमतिसाधु सूरिभिः ॥

चौवीसी पर ।

[1473]

॥ सं० १५१३ वर्षे वैशाखमासे ऊकेश ज्ञातीय से० पेथड भा० प्रथमसिरी पुत्र सं० हेमाकेन भार्या हीमादे द्वितीया लाछि पुत्र देल्हा राणा पासादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्री-कुन्थुनाथादि चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री अञ्चलगच्छेश श्री जयकेशरी सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

श्री गोड़ीपार्श्वनाथजी का मंदिर — मोती कटरा।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1474]

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदी ११ सूराणा गोत्रे सा० धन्ना भा० धानी पुत्र सा० फलहूकेन आत्मपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री पद्माणक सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1475]

॥ सं० १५२० वर्षे वैशाख शुदी १२ बुधे श्री श्रीमाली ज्ञातीय श्रे० हीरा भा० जीविणि सु० कान्हाकेन भा० पदमाई सु० रत्नायुतेन भ्रातृ हांसा मना निमित्तं श्री अरनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ अहमदावाद वास्तव्य ॥

[1476]

॥ संवत् १५३६ वर्षे कार्त्तिक शु० १५ गूजर श्रीमाल ज्ञातीय वहरा गोत्रे स० धन्ना भा० धारलदे सु० सा० माडा पुत्र देवाराजादि श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितम् ॥ प्रतिष्ठितम् ॥ श्री सूरिभिः ॥

[1477]

॥ संवत् १५५४ वर्षे मा० व० २ सीहा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० अमा भार्या लखमादे पुत्र व्य० माल्हण भा० माल्हणदे सुत नरवद प्रमुखसमस्तकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपापक्षे श्री हेमविमल सूरिभिः ॥

[1478]

॥ ॐ ॥ सं० १९४० वर्षे वैशाखसुदी ५ भृगुवारे अर्गलपुरे ओसवाल वंशोद्भवे ज्ञातौ वैद मोता गोत्रे साह० हंसराज चन्द्रपालस्य कारितं नेमनाथस्य बिम्बं प्रतिष्ठितम् ॥ कमला गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः ॥ उपकेश गच्छे ॥ ॥ श्री ॥ श्रेयम् ॥

चौवीसी पर।

[1479]

॥ संवत् १५०५ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री उपकेश ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे सा० ठाकुर पु० सा० धणसीह भा० धणश्री पु० सा० साधू भा० मोहणश्री पु० श्रीवंत सोनपाल भिखू एतैः पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारापितः। श्री उपकेशगच्छे श्री ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितः। भट्टारक श्री सिद्ध सूरिः तत्पट्टालंकारहार भट्टारक श्री कक्क सूरिभिः ॥ छः ॥

[1480]

॥ सं० १५११ वर्षे माघे शुदी ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यवहीता सुत व्यव० कर्मसीह भार्या कस्मीरदे सुत सायरकेन भार्या मेघू सहितेन पितृमातृआत्मश्रेयसे श्री कुंथु नाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री पूर्णिमापक्षे भट्टारक श्री राजतिलक सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितम् ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर – मोती कटरा।

पञ्चतीर्थी पर।

[1481]

॥ संवत् १४९६ वर्षे वैशाख सु० १२ गुरु डाइखा गोत्रे सं० घेल्हा पुत्र स० दया डीडा पुत्र स० भादा सादा भार्या रू० डीडानिमित्तं श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितम् तपागच्छे भट्टा (रक) श्री पूर्णचंद सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

चौवीसी पर।

[1482]

॥ ॐ ॥ सं० १५०१ वर्षे ... व० ६ बुधे लोढ़ा गोत्रे सा० हरिचन्दसन्ताने। सा० गोगा पु० सं० गोरा। पुत्र। स० आसपाल तत्पुत्रेण सा० लाखाकेन। भ्रातृ स० वस्तुपाल तेजपाल

पूनपाल। पुत्र सोनपाल पासवीर। सं। हंसवीर भ्रातृ पुत्र। कुंवरपाल पर्वतादियुतेन निजमाता मूणी पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिम्बं चतुर्विंशति देवपट्टे। का० प्र० तपागच्छे श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः॥

धातु के यन्त्र पर

[1483]

॥ ॐ ॥ स्वस्ति संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदी ५ गुरुवासरे श्रीमत् योगिनीपुरे राज्य श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री श्री क्षेमकीर्त्तिदेवानुस्तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमकीर्त्तिदेवाँस्तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्रदेवान् श्री महेन्द्रकीर्त्तिदेवान् श्री जिनचन्द्र देवान् जिनचन्द्र शिष्यिणी बाई सहजाई एतेन श्री कलिकुण्डयंत्रस्वकर्मक्षयार्थं कारापितं ॥ शुभं भवतु ॥

श्री केशरियानाथजी का मंदिर — मोतीकटरा।

पञ्चतीर्थी पर।

[1484]

संवत् १५०२ वर्षे सुदी ६ शुक्रे ऊकेशवंशे घांघ गोत्रे सा० भीतर भा० लखमाई पुत्र सा० सांगा भ्रासा० सिया हीरा तन्मध्ये सांगाकेन भा० सिंगारदे पु० राजसी रामसी…युतेन श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गच्छे श्री गुणसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

श्री नेमनाथजी का मंदिर — हींगमंडी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1485]

॥ संवत् १५२५ वर्षे मलारणावासी मुहरल गोत्रे श्रीमाल ज्ञातीय सा० धोधू भा० ल्हू पु० मडमथेन भा० माल्ही भ्रातृ हरिगण भा० पूरा पुत्र० सरजन प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिम्बं का० प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

[1486]

॥ संवत् १९२१ शा० १७८६ प्र० माघ शु० ७ गुरुवारे अञ्चलगच्छे कच्छ देशे कोठारा वास्तव्य उसवाल शा० गांधी मोहता गोत्र श्री केशवजी नायकेन श्री सिद्धक्षेत्रे श्री नेमिनाथ जिन बिम्बं कारापितं प्र० भ० श्रीरत्नशेखर सूरिभिः ॥

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर — नमकमंडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1487]

॥ सं० १४०५ वर्षे फा० सु ए शुक्रे श्री ज्ञानकीय गच्छे उसभ गोत्रे उ० ज्ञातीय सा० शिवा भा० कांऊं पुत्र केल्हा भा० कील्हणदे सन्ततिवृद्ध्यर्थं पितृमातृनिमित्तं श्री कुंथुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री शान्ति सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1488]

॥ संवत् १४२५ माघ वदि ७ सोमे श्री संडेरगच्छे श्री उपकेशज्ञाति सा० महीपाल भा० मल्हणदे पु० वैला भा० सहजादे पु० सरवणनैक (?) भ्रातृ कसामलस्य श्रेयसे श्री आदि नाथ पञ्चतीर्थी कारिता । प्र० श्री ईश्वर सूरिभिः ॥

[1489]

॥ सं० १४५३ ··· शु० ३ शनौ श्रीमाल माथलपुरा गोत्रे सा० केला पुत्रेण सा० तोलाकेन नरपाल श्री पालेत्यादि पुत्रयुतेन श्री धर्मनाथ बिम्बं कारितं प्र० तपागच्छे श्री पूर्णचन्द्र सूरिपट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः

[1490]

॥ सं० १४५७ वर्षे वै० शु० ३ शनौ उपकेश गच्छे धेधड भा० केसी प्रा० भूपणा भा० पोमी पु० सीगकेन (?) पितृमातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बि० का० प्र० श्री श्रीमाले श्री रामदेव सूरिभिः ॥

[1491]

॥ सं० १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ उसवाल खांटड गोत्रे सा० जाहजू ना० अहवदे पु० पूना पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री पद्मशेषर सूरिजिः ॥

[1492]

॥ सं० १५०३ मार्ग सुदि ५ उ० ज्ञा० जटितवाल गोत्र सा० मेघा पुत्र सा० खेताकेन जा० हर्षमदे सह पूर्वपुरषमेलानिमित्तं शान्तिनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिजिः ॥

[1493]

॥ सं० १५०९ वर्षे उएश वंशे सा० पेथड़ जा० षीथाई पु० खेना सरवण साजण कै श्री अंचलगच्छेश श्री जयकेशरी सूरि उपदेशेन श्री विमलनाथ बिम्बं स्वश्रेयसे कारितं प्र० ॥

[1494]

॥ सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ उपकेश सुचिन्ति गोत्रे सा० नरपति पु० सा० साल्हा पु० फमण जा० केल्हाही पु० सुधारण जा० संसारदे युतेन पित्रोः श्रेयसे श्री आदिनाथ बिम्बं कारापितं उपकेश० ककुदाचार्य प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1495]

॥ सं० १५२४ वर्षे मागसिर वदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय महं केल्हा जार्या कील्हण पुत्र मुरजणकेन जा० राणी सहितेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणीयगच्छे ज० श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[1496]

॥ संवत् १५५४ वर्षे माह वदि २ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय शृङ्गारसंघवी सिद्धराज सुश्रावकेन जार्या रणकू पुत्र सा० कूपा जार्या रम्मदे मुख्यकुटुम्बसहितेन श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

श्री दादावाडी – साहगंज ।

श्री महावीरस्वामी के वेदी पर ।

[1497]

संवत् १९७५ मिति वैशाख सुदि ३ सोमवारे डुलीचन्द के पुत्र प्यारेलाल चोरडिया की बहूने वेदी बनाई ॥

चरणों पर ।

[1498]

॥ सं० १९४४ मिति आषाढ़ सुदि १० श्री गोतमस्वामीजी प्रतिष्ठितं । पं० संवेगी श्री रणधीर विजय कारापितं ।

[1499]

श्री अर्गलपुरे साहगञ्जे प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १७७९ मिति ज्येष्ठ सुदि १५ खरतरगच्छे श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरिजी के पादुके संवत् १९६४ मिति जेठ सुदी २ गुरुवार प्रतिष्ठा समय विद्यमान श्री तपागच्छ उपाध्याय श्री वीरविजयजी ॥

[1500]

॥ सकल भट्टारक पुरन्दर भट्टारक श्री १०८ श्री हीरविजय सूरीश्वरकस्य चरण प्रतिष्ठापितं तपागच्छे ।

[1501]

॥ संवत् १९६४ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल २ दिने गुरुवारे श्री आगरा नगरे सकलसंघेन श्री लोंकागच्छे श्रीमद् आचार्य खेमकरणस्य पादुका श्री तपागच्छीय श्रीमद् वीरविजयेन प्रतिष्ठा कारिता ॥

लखनउ ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर — बोहरन टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1502]

सं० १३०६ वर्षे वैशाष सु० १३ सा० करमण जा० ... खसिरि पु० गोसाकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्री बिंबं का० प्र० च धर्म्मप्रज सूरि ... ।

[1503]

संवत् १४०२ वर्षे फा० सु० ३ उकेस वंशीय सा० जेसिंग सुत सामल जार्या सह जलदे सुत सा० जसा जा० जासलदे भ्रातृ देधर जार्या श्रा० सेगाई स्वश्रेयोर्थं श्री अजित नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनजद्र सूरिजिः ॥

[1504]

सं० १५१२ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे श्रीमाली ज्ञातीय मं० अर्ज्जुन जा० स्वसु पु० टोइ आमाइं .... हृदाकेन जा० लखी सहितेन निजश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० उकेशगछे श्री सिद्धाचार्य संताने श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितमिति ।

[1505]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञाती श्रे० ठाकुरसी सुत श्रे० धंगाकेन जार्या हीमी सु० धना वना मिला राजी युतेन श्री शीतलनाथादि पंचतीर्थी आगमगछे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशात् कारिता प्रतिष्ठिता च माडलि वास्तव्य ।

[1506]

सं० १५२७ वर्षे माघ वदि ७ रवौ उप० ज्ञा० मं० कूपा जा० सोषल पुत्र रूपा जार्या रतू सुत जिदा जुणा मिला आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री

जिरायपल्लीय गच्छे भट्टारक श्री शालिभद्र सूरि पट्टे श्री भ० श्री उदयचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री ॥ ३४ ॥

[1507]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाष सुदि ६ सोमे सा० भचू भार्या सखीराई। पुत्र श्रका श्री विजयदान सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1508]

संवत् १६१६ वर्षे वैशाष शुदि १० रवौ श्रीमाली ज्ञातीय सा० सता श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिभिः ।

[1509]

सं० १६१६ वर्षे वै० शु० १० रवौ श्रे० ककुश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं तपा गच्छे प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिभिः ।

[1510]

संवत् १६९८ व० फागुण सुदि ९ .... ।

मूर्त्तियों पर ।

[1511]

॥ सं १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं कारितं च उस वंश गजेन्द्र गोत्रे । लाला जीवनदास पुत्रेण दुर्गाप्रसादेन कारितं भट्टारक श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं विजयगच्छे ।

[1512]

॥ सं० १८२४ मा० शु० १३ सुमतिजिन बिंबं का० उस वंश वैद मुहता बालचंद तद्भार्या महतावो बीबी प्र । विजयगच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थं ।

[1513]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ मुनिसुव्रत जिन बिंबं कारितं उस वंशे आजेड़ गोत्रे लाला हरप्रसाद तत् पुत्र जीवनदास भार्या नन्ही बीबी श्रेयोर्थं भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं विजय गच्छे।

[1514]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ सुमतिनाथ जिन बिंबं वैद मुहता गोत्रे लाला धर्मचंद्र पुत्र शिवरचंद तद् भा० सांवन बीबी श्रेयोर्थं। भ० श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रति० विजय गच्छे

[1515]

॥ सं० १९२४ मा० शु० १३ महावीर जिन। वैद धर्मचंदजी विजय गच्छे भ० शांति-सागर सूरिभिः।

[1516]

सं० १९२४ मा० शु० १३ श्री सुमति जिन बिंबं का० उस वंशे मालकस गोत्रीय धर्म चंद तत् पुत्री मंगल बीबी प्र०। विजयगच्छे भ०। श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थे प्रतिष्ठितं हीरा बीबी।

[1517]

सं० १९२४ मा० शु० १३ संभव जिन। मालकस गो० धर्मचंद्र तत् पुत्र हीरा बीबी। प्र०। शांतिसागर सूरिभिः विजयगच्छे।

[1518]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री धर्मनाथ बिंबं का० उस वंशे सुचिंति गोत्रे ला० नोवतराय पु० रेवा प्रसादेन कारितं प्र० विजयगच्छे शांतिसागर सूरिभिः।

[1519]

सं १८७३ माघ सुदि १० बुधवारे राजनगरे ऊसवाल ज्ञाति वृद्ध शा० सा० वीरचंद रूपा श्रेयोर्थं शांतिनाथ बिंबं कराबी प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं तपागछे ।

[1520]

शाहजहां विजय राज्ये । श्री विक्रमार्क समयातीत संवत् १६७१ वर्षे शाके १५३६ प्रवर्त्तमाने आगरा वास्तव्य ऊसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे अग्राणी वंशे सं० शाषजदास तत्पुत्र सं० श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिराज्यां श्री अनंतनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीमदंचल गछे पूज्य श्री ५० श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि पदाम्बुज हंस श्री श्री कल्याणसागर सूरीणा मुदेशेन ।

श्याम पाषाणके मूर्त्तियों पर

[1521]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ ऊश वंशे लोढा गोत्रे हरषचंद्रस्य ... श्री सुपार्श्व बिंबं ... ।

[1522]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ ऊस वंशे मयाचंदजी तत्पुत्र धनसुख ... ।

[1523]

सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ श्रीमाल पाड़ड़ मन्नुलाल ... ।

[1524]

॥ सं १८७९ फा० सु० ९ शनौ चोरडिया गोत्रे दयाचंद .... ।

श्वेत पाषाणके चरणों पर ।

[1525]

सं १८६३ मि० माघ सु० ५ दिने श्री अतीत चौविसी भगवान जी की ऊसवाल वंशे

नाहटा गोत्रे राजा बच्छराज बाबू विशेश्वरदास बाबू भैरुनाथ बाबू वैजनाथ बाबू जगन्नाथै बाबू लछमणदास ने चरण लगाया बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयोर्थं शासन देवी अस्य मंदिरस्य रक्षां कुर्वंतु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री लखनऊ नगरमध्ये नवाब साहब सहादतअलि विजय राज्ये।

[1526]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने वर्त्तमान चौविशी २४ भगवान जी के ओसवाल वंशे काकरिया गोत्रे खुनालराय। वखतावरसिंह। गोकलचंद। माणकचंद। स्वरुपचंद। रतनचंद। तारांचंद। सपरिवारेण चरण वनवाया श्री बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनऊ नगरे।

[1527]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने अनागतचोविसी ओसवाल वंशे नाहटा गोत्रे राजा बच्छराज तत्पुत्र बाबू जगन्नाथस्य भार्या स्वरुपनें इदं चरणं कारापितं श्रेयोर्थ श्री बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनऊ नगरे।

[1528]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने २० विहरमान ४ शास्वतानि भगवानजी के ओसवाल वंशे कांकरिया गोत्रे जेठमल गुजरमल बहादुरसिंह स्वरुपचंद सपरिवारेण चरण वनवाया श्री बृहत्खरतर गच्छे भ० श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनऊ नगरे।

सहस्रकूट पर।

[1529]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य प्रल्हावत गो०। श्री जेठमल तत्पुत्र कालकादास तत्पुत्र बलदेवदासेन श्रेयोर्थमानंदपुर

[1530]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघशुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्त्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिन-महेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य चो०। गो०। श्री हंसराज तद्भार्या सोना बिबि तया श्रेयोर्थमानंदपुरे ॥ पं०। प्र०। कनकविजय मुण्युपदेशात्।

[1531]

॥ सं १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्त्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य ओ०। गो०। सा० उमेदचंद तत्पुत्र हरप्रसाद रामप्रसाद तत्पुत्र जीवनदास धनपतराय तत्पुत्र दुर्गाप्रसादेन सपरिकरैः श्रेयोर्थमानंदपुर।

[1532]

॥ सं० १९१० शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्त्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारित श्री लखनऊ समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थमानंदपुर।

[1533]

संवत् १९१३ शाके १७७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां परमार्हत श्रीमत् शांति जिन मोक्ष कल्याणक पादुका लक्ष्मणपुर वास्तव्य समस्त श्री संघेन कारितं प्र० च बृहत्खरतर गच्छीय जं। यु। प्र। श्री जिनचंद्र सूरि पट्टजभृत् श्री जिन जयशेखर सूरिभिः।

श्वेतपाषाण के पंचमुष्टिलोच के भाव पर।

[1534]

संवत १९१३ शाके १७७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ..... दीक्षा कल्याणक पादुका ..... ओस वंशे महता गोत्रे ..... ।

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर — बोहरनटोला।

शिलालेख। *

[1535]

॥ ६० ॥ ॐ नमः सिद्धं । संवत् १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ ॥ श्लोकाः ॥ विजयगच्छाधिपो सूरि । विहरन् सन् महीतलं ॥ शांति सूरीति नामेन । संप्राप्तो लक्ष्मणेपुरे ॥ १ ॥ जगवान् देशनारब्धा । जिनजक्तिसमुद्भिका ॥ कार्यंचनीव संजाता । जव्यानां बोधहेतवे ॥ २ ॥ तदा तदुपदेशेन । श्री संघो जक्तिवत्सल ॥ कारयतिस्म जिनं चैत्यं । ऋषजस्वामिमंदिरं ॥ ३ ॥ सूरिस्तु विचरन् जूम्यां । स्वशिष्यं स्थापितं मुदा ॥ धर्मचंद्राजिधानं च । संस्थिति धर्मेहेतवे ॥ ४ ॥ तत्रैव धर्म दिसतिस्म । शिष्यान् पाठयति सदा ॥ स्वशिष्यं गुणचंद्राह्वं । गुरुजक्तिपरायणं ॥ ५ ॥ मंदिरोपरि जूम्यां च । त्रिद्वारं जमरिकायुतं ॥ मंदिरं कारयेत् संघः । जातः सर्वसंघवत्सलः ॥ ६ ॥ माघमासे शुक्लपक्षे । त्रयोदश्यां गुरौ दिने ॥ जट्टारक शांति सूरिः । प्रतिष्ठां चक्रिरे मुदा ॥ ७ ॥ तस्मिन् जिनमंदिरे । श्री चतुर्मुख बिंबानां चतुर्णां मध्ये । श्रीआदिजिनस्य बिंबं । ओसवंशे वरड्या गोत्रे लाला छोटेलाल पुत्रेण स्वरूपचंद्रेण कारितं । तथा द्वितीयं श्री वासुपूज्य जिनबिंबं । फूलपाणी गोत्री लाला सीताराम तद्भार्या जांडिया गोत्री तया कारितं । तृतीयं श्री शांतिनाथ जिनबिंबं । श्री शांतिसागर सूरि शिष्येण । ऋषिणा धर्मचंद्रेण कारितं । चतुर्थं श्री महावीर स्वामि जिनबिंबं । सुचिंती गोत्रे । लाला घेरातीमल्ल पुत्रेण गोविंदरायेण रूपचंद्र पुत्र सहितेन कारितं । श्री विजयगच्छाधीश्वर सार्वजौम जंगमयुगप्रधान जट्टारक श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रजालंकार श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं । ऋषिणा चतुर्जुजनाथ । गोकुलचंद्रेण संयुता ॥ इयं कृति लिखिताज्यां । गुरुजक्तिपरायणौ ॥ १ ॥ श्रीरस्तुः ॥ श्रीः ॥ पद्मावती लब्धवर प्रसादात् । यो मेदपाटाधिपतिं स्वरूपं । राणापदे संस्थित शत्रु सिंह रोगात् प्रमुच्येत स शांति सूरिः ॥ २ ॥

---

* इस लेखके अन्तमें चार यंत्र हैं; दाहिने २० का और बाये १६ का हैं, उनके निचे दाहिने ६ खाने का और बांये १२ खाने का यंत्र है, इनके जोड़ मिलते नहीं हैं।

१०	२	८
४	७	९
६	११	३

७	२	१०
९	६	४
३	११	५

३१	३०	३५	२२	२१	२६	६७	६६	७१
३६	३२	२८	२७	२३	१९	७२	६८	६४
२९	३४	३३	२०	२५	२४	६५	७०	६९
७६	८५	८०	४०	३९	४४	४३	३	८
८२	७७	७३	४५	४१	३७	९	५	१
७४	७९	७८	३८	४३	४२	२	७	६
१३	१२	१७	५८	५७	६२	४९	४८	५२
१८	१४	१०	६३	५९	५५	५४	५०	४६
११	१६	१५	५६	६१	६०	४७	५२	५१

६६	५३	४०	२७	१४	१	१२०	१०७	९४	८१	६८
६७	६५	५२	३९	२६	१३	११	११९	१०६	९३	८०
७९	७७	६४	५१	३८	२५	१२	१०	११८	१०५	९२
९१	७८	७६	६३	५०	३७	२४	२२	९	११७	१०४
१०३	९०	८८	७५	६२	४९	३६	२३	२१	८	११६
११५	१०२	८९	८७	७४	६१	४८	३५	३३	२०	७
६	११४	१०१	९९	८६	७३	६०	४७	३४	३२	१९
१८	५	११३	१००	९८	८५	७२	५९	४६	४४	३१
३०	१७	४	११२	११०	९७	८४	७१	५८	४५	४३
४२	२९	१६	३	१११	१०९	९६	८३	७०	५७	५५
५४	४१	२८	१५	२	१२१	१०८	९५	८२	६९	५६

धातु की मूर्त्ति पर।

[1536]

सं० । १५७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ साधु साखायां जेलड़िया वंशे सा० वरसा पुत्र सा० लखमसी पुत्र सा० वर्द्धमान सा० रीडा श्री पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा कृता श्री साधु वचनात् ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1537]

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर वदि २ बुधे सामलिया गोत्रे सा० जोजा पु० सा० फाफण

भ्रात् उसीह ... भिः पितुः पु० श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥ श्री शुभं ॥

[1538]

सं० १५११ वर्षे माघ वदि ५ उसवाल ज्ञाती जाइलवाल गोत्रे भोजा पुत्र धडिया पु० मोहण पुत्र पेताकेन स्वभार्या श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री महीतिलक सूरिभिः ॥

चौवीशी पर।

[1539]

सं० १५१० माघ शुदि ५ दिने पत्तन वासी श्रीमाली श्रे० ठाकरसी भा० धारी सुत श्रे० गोधा साका भाणा भगिन्या श्रे० नरसिंग भार्या वैगमति नाम्न्या श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री श्री तपगच्छे ॥

[1540]

सं० । १६१६ वर्षे शाके १४८२ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि १० दिने रवौ अहमदावाद वास्तव्य उकेस वंशीय सा० आंबा० भा० अमरा तत्पुत्र सा० राकर भा० संपू तत्पुत्र सा० मेलाख्येन भा० मेलादे पुत्र पुत्री परिवारयुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे भट्टारक श्री आनंदविमल सूरि तत्पट्टे विजयदान सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

पाषाण के चरण पर।

[1541]

सं० १९२४ । भूरा वंशे पहलावत गोत्रे लालु तत् पुत्र किसनचंद कारितं ।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर – बोहरनटोला।

मूलनायकजी पर।

[1542]

॥ सं० १९ ... श्री वर्द्धमान जिन बिंबं ओसवंशे बलुरा गोत्रे लाला कीर्त्तिचंद तद्भार्या गुलीया बिबि तयो पुत्र मोतीचंदेन कारितं बृहत् विजय गच्छे ज० श्री सार्वभौम श्री पूज्य श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रभाकर जं। यु। प्र। शांतिसागर सूरिभिः।

मूर्त्ति पर।

[1543]

सं० १९ ... श्री पार्श्वजिन बिंबं ओसवंशे बड़ड़िया गोत्रे लाला दयाचंद तत्पुत्र छोटमल्लेन तत्पुत्र सरुपचंदेन सहितैः कारितं प्र० विजय गच्छे ...... सूरिभिः।

पंचतीर्थी पर।

[1544]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदी ८ रवौ सं० फाला भा० लषी सा० हर्षा भा० वारू सा० राजा भा० माजी सं० वना भा० वाल्ही सं० जोगा श्री शांतिनाथ बिंबं तपा श्री हेमविमल सूरि। चंकिनी ग्रामे।

श्री पद्मप्रभ स्वामीजी का मंदिर – चूड़िवाली गली।

पंचतीर्थियों पर।

[1545]

सं०। १३९९ ज० श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं कारितं च सा० केसव पुत्र रत्न सा० जेहड़ सुश्रावकेन पुण्यार्थं।

[1546]

सं० १४९१ वर्षे माह शुदि ५ बुधदिने गादहिया गोत्रे सा० सिवराज सुत सा० सहजाकेन माता पदमाईनिमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेस गछ प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः।

[1547]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ ओसवाल ज्ञातीय अजमेरा गोत्रे सा० सुरजन भा० सहजलदे पु० सा० सहजाकेन आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिं० का० प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गछे भ० श्री विजयचंद्र सूरिभिः।

[1548]

सं० १५०८ वर्षे वैशाष वदि ४ शनौ श्री संडेर गछे पकुनेवी गोष्टीगानान्वये सा० कुंपाश्र पु० धांधा भा० वाल्हू पु० नुपाकेन भा० कोला पुत्र स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः।

[1549]

सं० १५१० वर्षे वै० व० ५ प्रा० सा० ... भा० राजू पुत्र सा० सरमाकेन भा० चांपू पुत्रेन स्वश्रेयसे श्री सुविधि बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1550]

॥ सं० १५११ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ श्री उकेस वंशे दोसी गोत्रे मं० डूडा पु० सा० नरचंद्र भा० सीतू तत्पुत्रेण सा० धाराकेन भार्या मणकाई पुत्र उदयसिंहयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरिभिः

[1551]

सं० १५१६ वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ मांडण मातृपुंजी श्रेयोर्थं सुत सांगाकेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं श्री ब्रह्माण गछे श्री मुनिचंद्र सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री वीर सूरिभिः गुंडली वास्तव्यः ॥

[1552]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री ज्ञानकीय गच्छे उप० किल्लासीया गोत्रे श्रे० रेखा जा० माल्हणदे पुत्र कर्मा जा० कर्मादे पु० घडसीसहितेन कर्मा पद्मा द्वाभ्यां आत्म-पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेन सूरि पट्टे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1553]

॥ संवत् १६१३ वर्षे माघ वदि १ गुरौ मं० आला भार्या अपलादे पु० मं० नींबाकेन भ्रातृ मं० कान्हाई सा० वस्था आजीवा भार्या जइवंत तत् पुत्र मं० कर्मसी राजसी ने तया कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपागच्छे श्री दानविजय सूरिभिः श्री हीरविजय सूरि प्रमुखैः परिवारपरिवृतैः ॥

[1554]

सं० १५२३ वर्षे आषाढ़ शुदि २ शुक्रे ऊसवाल ज्ञा० सा० खेपा भा० लषमादे पु० सा० राउलकेन भा० रत्नादे पु० सा० कोल्हा भा० शाल्हणदे पु० सा० गांगा सकुटुंबयुतेन स्वपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० संडेरक गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

[1555]

सं० १५३६ वर्षे वै० ए चंद्रे ... भाईलेचा गोत्रे सा० पातल भा० वाचा पु० वींका भा० मदना नाथी पु० राजू स्वपितृ श्रे० श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री यशो सूरि पट्टे भ० उद्योतन सूरिभिः ।

[1556]

संवत् १५६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रे काकरेचा गो० पूर्वं सा० डोटा पु० चुंडा पु० चेता भा० जाऊ तत्पुत्र कान्हा भा० कस्मीरदे सकुटुंबेन श्रे० नि० श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री शांति सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1557]

सं० १७७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा तिथौ गुरुवारे मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जिन पंचतीर्थी जिनैः प्रतिष्ठितं श्री बृहत् परम भट्टारक श्री जिनसुख सूरि वराणां उपाध्याय श्री क्षेत्रराम गणिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥ कारितं चैतत् गणधर चोपड़ा गोत्रे शाह श्री लाल चंदजी पुत्ररत्न श्री कपूरचंदजीकेन स्वपुन्यविवृद्ध्यर्थं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री आदि जिन बिंबं ॥ श्री नेमिनाथ जिन बिंबं ॥ श्री शांति जिन बिंबं ॥ श्री महावीरस्वामी बिंबं ॥

श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा पर

[1558]

संवत् १७२५ शाके १५९० वैशाख सुदि ५ आदित्यवारे ····।

श्री आदिनाथजी का मंदिर – चुड़ीवाली गली।

मूर्त्ति पर।

[1559]

सं० १९२४ माघ शुदी ३ चंद्रप्रभ बिंबं कारितं। मालकोस गो० परमसुख करमचंद प्रति०। विजय गछे भ०। श्री शांतिसागर सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर।

[1560]

॥ सं० १५२४ वर्षे मार्ग सु० दसमी ऊकेस चउथ गोत्रे शा। पेडा भा०। देउ सुत म। षिमा। भा० धनी लाषाकेन भा० अमरी पुत्र नाथू प्रमुखकुटुंबयुतेन निजपितृव्य श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। प्र०। तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्रीरस्तुः ॥

[1561]

सं० १५७७ वर्षे माघ शु० ५ बुधे प्राग०। ज्ञा०। श्रे० कइया भा० वानू सु० मूठा शखा। रागा लखरद भा० जोविणी विरु मानू सु० धावर तेजा सहिजादि कुटुंबयुतेन पितृमातृ

श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का०। प्र०। श्री पार्श्वचंद्र सूरिभिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर ।

[1562]

सं० १८६१ वर्षे आश्विन शु० १५। गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाल पटणीय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला बखतावरसिंहजी श्रेयार्थं तपागच्छीय जं। यु। प्र। भ। श्री १०८ श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरिभिः विजयराज्ये वाणारस्यां ।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर – सुंधि टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1563]

सं० १४३९ वर्षे पोष वदि ९ ....।

[1564]

॥ सं० १४८२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रे श्रीमाली ज्ञातीय फोफलिया नरसिंग भा० नामलदे सुत बाला पितामह पितृश्रेयसे माता बईजलदे युतेन सुतेन योगकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे भीमपल्ली श्री पासचंद्र सूरि पट्टे श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1565]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० सरवण भा० वारू पुत्र श्रे० गोवल भा० फूसी पु० सहसाकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे श्री गुणसमुद्र सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ ८ ॥ महिसाणा स्थाने ॥ श्री ॥

[1566]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ श्री श्रीमाल० सं० सामल ना० लाखणदे सुत देवा ना० मेघू नाम्न्या देहड़ा कुटुंबसहितया अंचल गछे श्री जयकेशर सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

[1567]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० झांझा ना० जासू सुत सा० सामंत नार्या काईसु श्रद्धाकेन भ्रातृ वहा पाशवीर प्रभृतिकुटुंबयुतेन मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं पूर्णिमा । श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[1568]

सं० १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० जेसा नार्या पोईणी सुत राजाकेन नार्या राजलदे भ्रातृ मौर्थद ना० मारू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्री श्री सुमति बिंबं का० प्र० कनकरत्न सूरिभिः ।

[1569]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धन्ना ना० रांनू सुत सं० वेला ना० जीविणी सुत सं० समधर संग्रामाभ्यां स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं । तपागछे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । जीर्णधारा वासिनः ॥ श्रीरस्तु ॥

[1570]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट व्य० देवसी नार्या देल्हणदे पुत्र विंजाकेन ना० वींझलदे पुत्र सांडादिकुटुंबयुतेन श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । श्री नेवग्रामे ॥

[1571]

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ सोमदिने । उपकेश ज्ञातौ वलही गोत्रे रांका सा० गोयंद पु० सालिग ना० वाल्हदे पु० दोल्हू नाम्ना ना० ललतादे पुत्रादियुतेन पित्रोः

पुण्यार्थं स्वश्रेयसे च श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छीय श्री ककुदा० सं० श्री देवगुप्त सूरिभिः ।

[1572]

सं० १५२९ वर्षे वैशाष सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० नरसिंग भा० संजू सुत वकूआ-केन भार्या रही प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री रत्नशेषर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । मूंडहटा वास्तव्यः ॥

[1573]

सं० १५५४ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सं० मेहा भा० सरूपदे पु० सं० रिणमल्लेन भा० रत्नादे पु० लाषा दासा जिणदास पंचायणकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अचल गच्छ श्री सिद्धांतसागर सूरिभिः ॥

[1574]

सं० १५७१ वर्षे फागुण शुदि ३ शुक्रे उसवाल ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे साह सहदे पुत्र साह नयणाकेन कलत्रपुत्रादिपरिवारयुतेन पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संतान भट्टारक श्री श्री सिंह सूरिभिः ॥ अश्वावलपुरे ॥ श्रीरस्तु ॥

[1575]

सं० १७०१ वर्षे मार्ग शिर कृष्णैकादश्यां रूढा बाई नाम्ना कारितं श्री नमिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छ श्री विजयदेव सूरि पट्टे प्रभाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ।

सं० ... ७२ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे उसवाल ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे सं० सोहिल तत्पुत्र संघवी सिंघराज तस्य पुण्यार्थं सं० सिद्धपालेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं श्री रूपवाल गच्छ श्री सिद्ध सूरि प्रतिष्ठितं । पूजक श्रेयसे ॥ श्रीः ॥

चौवाशी पर।

[1577]

संवत् १५७१ वर्षे चैत्र वदि ७ गुरौ श्री वायड़ ज्ञातीय मं० नरसिंघ भा० चमकू सुत समधर द्वितीया भा० हीरू नाम्न्या देकावडा वास्तव्यः सुत मं० धनराज नगराज संघादि स्वकुटुंबयुतया स्वश्रेयसे श्री अभिनंदन स्वाम्यादि चतुर्विंशति पट्ट श्री आगम गच्छे श्री अमररत्न सूरि तत्पट्टे सोमरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर — सुंधटोला।

मूलनायकजी के चरणचौकी पर।

[1578] *

(१) ॥ श्री विक्रम समयात् सं० १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ ॥ श्रीमत्क्षीराब्धि सोलक—

(२) ल्लोलडिंडीरपिंडप्रसरस्मरसशारदशशांककिरणसुयुक्तिमौक्तिकहारनिकरधवलय—

(३) शोभिः पूरितदिङ्मंडलसकलधर्म्मकर्म्मनीतिप्रवृत्तिकरणप्रासाशेषभुवनप्र—

(४) सिद्धिनानाशास्त्रोत्पन्नप्रबलबुद्धिप्राग्भारभावितांतःकरणाश्वपतिगजपतिछत्रपति—

(५) प्रणतपादारविंदद्वंदप्रथिततनुभवजव्यभुजादंडचंडप्रचंडकोदंडखंडितानेकका—

(६) ठिन्यतमकुशितारिप्रकरतरवशीकृताखिलखंभूपालमौलिसंधृतनिर्देशाधिशेषधर्म्म—

(७) शर्म्माधिकाधाससत्कीर्त्तिनिःशेषसार्वभौमशार्दूलसमस्तमनुजाधिपत्यपदवीपौ—

* दिल्ली सम्राट जहांगीर के समय ये मूर्त्तियां की प्रतिष्ठा हुई थी, उस समय पातसाह को कई लोगोंने कह दिया कि सेवड़ोंने (जैनी लोगोंने) मूर्त्तियां बनवाई हैं और हजूरके नामको अपने बुतोंके (मूर्त्तियों के) पैरों के निचे लिख दिया है। फिर क्या था। पातिसाहके क्रोधका पार न रहा। श्री संघने पातिसाह का क्रोध शांति तथा राज्यके तर्फसे सर्व प्रकार अनिष्ठ दूर करनेको ये मूर्त्तियों (नं० १५७८ - १५८४) के मस्तक पर पातिसाह का नाम खुदवा दिया था ऐसा प्रवाद है।

(८) सोमीपरिरंजमुनाशीरविजयराज्ये । ऊसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे आंगाणी संघवी
(९) रेषा तद्भार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्र श्री कुंरपालसोनपालाख्याः । तेषां प्रागुक्तमालीगुत
(१०) प्रतिष्ठाया ॥ स्तन्नाम्ना प्रतिमा द्वय प्रतिष्ठा गतः संघेशैः स्वपितृणाम् धर्म्म चिंतामणि
(११) पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं । अंचलगच्छेश श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टालंकार पूज्य
(१२) श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥
(मस्तकपर) पातिसाह सवाई श्री जहांगीर सुरत्राण

[1579]

(१) संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ ऊसवाल ज्ञाती-
(२) य लोढा गोत्रे आंगाणी सं० ऋषभदास तद्भार्या श्रा०
(३) रेषश्री तत्पुत्रप्रवरैः श्री कुंरपाल सोनपाल सं-
(४) घाधिपैः सुत सं० संघराज रूपचंद चतुर्भुज धन-
(५) पालादियुतैः श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ श्री धर्म्ममूर्त्ति
(६) सूरि पट्टे श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
(७) विद्यमान श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजय राज्ये ।

[1580]

(१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृपविक्रमादित्य संवत्सर समयातीत संवत् १६७१ वर्षे
(२) शाके १५३६ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीमदागरा दुर्ग वास्तव्योपकेश
(३) ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे साह जेठमल तत्पुत्र सा० राजपाल तद्भार्या श्रा० रा
(४) जश्री तत्पुत्र श्री विमलाद्यादि संघकारक सं० ऋषभदास तद्भार्योजयकुमा-
(५) रानंददायिनी रेषश्री तत्पुत्राभ्यां श्री शत्रुंजय समेतगिरि संघ महन्महद्भिर्वा-
(६) ह प्राप्तसत्कीर्त्तिभ्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां ॥ सुत सं० संघराज
रूपचंद पौत्र

(७) सं० कुंअरदास सूरदास सिवदास पद्मश्री। प्रपौत्र साधारणादि परिवारयु-
(८) ताभ्यां श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टांभोजतास्कराणां पूज्य श्री ५
(९) श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं भव्यैः
पूज्यमानं चिरं नंद्यादिति श्रेयस्तुः ॥
(मस्तक पर) पातिसाह श्री ५ श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1581]

(१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृप विक्रमादित्य समयात् संवत् १६७१ वर्षे शा-
(२) के १५३६ प्रवर्त्तमाने श्री आगरादुर्ग वास्तव्य उपकेश ज्ञा-
(३) तीय लोढा गोत्रे ... सा० राजपाल तद्भार्या श्रा० राजश्री त-
(४) त्पुत्र संघपतिपदोपार्ज्जनक्षम सं० ऋषभदास तद्भा-
(५) र्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्राभ्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां श्री अंचल-
(६) गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टे श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदे-
(७) शेन श्री अभिनंदन स्वामि बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ पूज्यमानं चिरं नंद्यात्
(मस्तकपर) पातिसाह अकबर जलालुद्दीन सुरत्राणात्मज पातिसाह श्री जहांगीर
विजयराज्ये

[1582]

(१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ ऊसवाल ज्ञा-
(२) तीय लोढा गोत्रे आगाणी वंशे सं० ऋषभदास त-
(३) द्भार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्राभ्यां सं० श्री कुंरपाल सं० सोन-
(४) पाल संघाधिपैः तत्पुत्र सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्भुज
(५) धनपालादिसहितैः श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्प-
(६) ट्टे श्री कल्याणसागर सूरिरुपदेशेन विद्यमान श्री ऋषभानन जिन
(७) बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1583]

(१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाष शुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे श्री आ-
(२) गरा वास्तव्योपकेश ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे सं० ऋषभदास
(३) भार्या रेषश्री तत्पुत्र संघाधिप सं० श्री कुंरपाल सं० श्री सोनपा-
(४) ल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्भुज धनपालादियुतैः
(५) श्रीमदंचल गछे पूज्य श्री ५ श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्पट्टे पूज्य
(६) श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन विहरमान श्री ईश्वर
(७) जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं सं० श्रीकान्ह ... ।
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1584]

(१) ॥ श्रीमत्संवत् १६७१ वैशाष शुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे आगरा वा-
(२) स्तव्योसवाल ज्ञाती लोढा गोत्रे गावंशे सा० राजपाल भार्या राजश्री
(३) तत्पुत्र सं० ऋषभदास भा० रेषश्री तत्सुत संघाधिप सं० कुंरपाल सं०
(४) श्री सोनपाल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद सं० चतुर्भुज सं० धन-
(५) पाल पौत्र जुधरदास युतैः श्री अंचल गछे पूज्य श्री
(६) ५ श्रीधर्म्म सूरि पट्टालंकार श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
(७) श्री पद्मानन जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1585]

(१) ॥ ऐं० ॥ स्वस्ति श्री संवत् १६६७ वर्षे ॥ ज्येष्ठ शुदि १५ तिथौ गुरुवासरे
(२) अनुराधा नक्षत्रे उसवाल ज्ञातीय अगड़कठोली गोत्रे सा० कूना
(३) ॥ संताने सा० कान्हड़ । भा० भामनी ... पुत्र सा० पहीराज ...
(४) भा० इंद्राणी । भा० सोनो पुत्र सा० निहालचंद । तेन श्री चंद्रानन शास्वतजि-
(५) न बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री खरतरगछे श्री जिनवर्द्धन सूरि संताने

६) श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥ श्री आगरा नगरे ॥ शुभं भवतु ॥

[1586]

स० १८०० मा० शु० ५ श्री वर्द्धमान जिन बिंबं कारितं ऊसवंशे चोरडिया गोत्रे हरीमल भार्या ननी तया । प्र । बृ । भ । खरतर ग । श्री जिनाक्षय सूरि पङ्कजप्रबोध स्वपितृसम श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारितं पूजकयोः श्रेयोर्थं । लखनऊ नगरे ।

पंचतीर्थियों पर

[1587]

सं० १५१५ वर्षे माह व० ६ बुधे श्री ऊएस वंशे सा० जिणदास भा० मूल्ही पु० सा० लाषा भा० लाषणदे पु० सा० काह्ना भा० लषमादे पुत्र सा० बाबा सुश्रावकेण पुहती पुत्र नरपाल पितृव्य सा० पूंजा सा० सामंत सा० नासण प्रमुख समस्तकुटुंबसहितेन श्री अंचल गछ गुरु श्री जयकेशरी सूरीणां उपदेशेन मातुः श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1588]

सं० १५१३ व० माघ शिति १ ओस षावली गोत्रे सा० ईसर भा० गोपालदे पु० धीरा भा० दूमहलदे पु० जावड़ासा निज भ्रातृ श्रेयोर्थे श्री नेमिनाथ बिंबं का० तपापक्षे श्री जयशेषर सूरि पट्टे प्र० कमलवज्र सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1589]

॥ सं० १५३५ वर्षे माघ व० ९ शनौ ज्ञा० व्य० समा भा० गुरा सुत धना भा० रूपाई नाम्ना पितृ व्य० जाणा भ्रातृ धर्मा कर्मादिकुटुंबयुतया स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छेश श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । कुतबपुर वास्तव्य ॥ श्रीः ॥

चौवीशी पर

[1590]

सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ रवौ आजुभि वास्तव्य श्री श्रीमाली मं० सिंघा भार्या

वीरू सुत अर्जुन सहितेन वरदे पुत्री आजु नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितो वृद्ध तपापक्षे भट्टा० श्री ज्ञानसागर सूरिभिः ॥

[1591]

। संवत् १५५२ वर्षे फाल्गुन शुदि तृतीया ३ तिथौ बुधे ॥ श्री पटोलिया गोत्रे । सा० पोल । तत्पुत्र षेता । तत्पुत्र रूवा । तत्पुत्र गईपाल । तत्पुत्र मोहण । तत्पुत्र एडा पुत्रौ द्वौ । चांपा पाहा । चांपा स्वनिजपुण्यार्थं । स्वयशसे च । श्री चतुर्विंशति पट्टं कारितवान् प्रतिष्ठितः श्री राजगछीय श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

श्री संभवनाथजी का मंदिर – फूलवाली गली।

श्याम पाषाण क मूर्तियों पर।

[1592]

सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री गौड़ी पार्श्वनाथ बिंबं का० । उस वंशे सखलेचा गोत्रे महताव ···· ।

[1593]

सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रानन शास्वतजिन बिंबं कारितं उस वंशे कुचेरा गोत्रे वसंतलालस्य भार्या ···· ।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1594]

श्री मूलसंघे बघेरवालान्वये वांझा मेला प्रणमति।

[1595]

सं १८९१ माघ सु० १३ बु । उ । वंशे डागा गोत्रे सेढमल तद्भार्या गिलहरी ताभ्यां श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं का० । वृ० भ । खर । ग । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

[1596]

सं० १९२१ शाके १७८६ । ... । शु । पक्षे ६ । बुधे श्री महावीरजी जिन बि० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः का० सुचिंती गोत्रे रूपचंद तत्पुत्र धर्म्मचंद्र श्रेयोर्थं ।

[1597]

सं० १९२१ शाके १७८६ । मा । शु० ६ बुधे श्री महावीर जिन बिंब प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः का० सुचिंती गोत्रे बाबू रूपचंद तद्भार्या मनि बिबि श्रेयोर्थं ।

[1598]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अजित जिन बिंबं ओस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्मचंद तद्भार्या गुलाबो बिबि श्रेयोर्थं प्र० श्रीशांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1599]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं ओस वंशे सूगणा गोत्रे लाला खैरातीमल पुत्र रूपचंद तद्भार्या छोटी बिबि का० प्र० श्रीशांतिसागर सूरिभिः विजयगच्छे ।

[1600]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं ओस वंशे लोढिया गोत्रे ला। रजूमल तत्पुत्र इन्द्रचंद्रण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः विजय गच्छे ।

[1601]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं ओस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्मचंद्रेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः विजय गच्छे ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1602]

सं० १३१३ फा० शु० ६ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० बोचा भार्या सहज मननश्री (?) पूर्वज

श्रेयोर्थं सुत सांगणेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं।

[1603]

॥ संवत् १५४४ वर्षे आषाढ़ वदि ८ गुरौ उपकेश ज्ञातौ डुंडोयूरा गोत्रे सं० गांगा पु० पदमसी पु० पासा भा० मोहणदेव्या पु० पाल्हा श्रीवंतसहितया स्वपुण्यार्थं श्री आदि-नाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः॥

[1604]

संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ दिने ऊ० ज्ञा० बलदउत ग्रामवासि व्य० वेला भा० सारू पु० व्य० येसाकेन भा० कील्हु सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः॥ श्रीरस्तु।

[1605]

संवत् १५५८ वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० मोकल भा० वरजू पु० पांचा भा० जासू पु० वछासहितेन स्वपूर्वजश्रेयोर्थं शीतलनाथ बिंबं का० नागेंद्र गच्छे भ० श्री कमलचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि प्रतिष्ठितः॥

[1606]

... श्री नागपुरीय गच्छे श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टावतंसैः श्री हेमरत्न सूरिभिः॥ शुभं॥

लाला माणिकचंदजी और राय साहब का देरासर।

मूर्त्तियों पर।

[1607]

सं० १९३० मि० फा० कृष्ण २ बुध सा। प्र। भा० महताब कुंवर श्री अधिष्टायक जिन बिंबं का० श्री अमृतचंद्र सूरिभिः।

[1608]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री ऋषभदेव जिन बिंबं कारितं ओस वंशे चोरडिया

गोत्रे भाभा प्रतापचंद्र तत्पुत्र शिखरचंद्रेण । प्रतिष्ठितं । भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1609]

सं० १५२७ आषाढ़ सुदि १० बुधे श्री वीर वंशे ॥ सं० पोपा भा० करणुं पुत्र सं० नरसिंघ सुश्रावकेण भा० लषू भ्रातृ जयसिंघ राजा पुत्र सं० वरदे कान्हा पौत्र सं० पदमसी सहितेन निज श्रेयोर्थं श्री अंचलगच्छेश श्री जयकेशर सूरीणां उपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्र० संघेन पत्तन नगरे ।

[1610]

॥ संवत् १५६३ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ गुरौ पत्तन वास्तव्य । मोढ ज्ञातीय श्रे० जींवा भा० हीरू पुत्र श्रे० अमराकेन भा० पुहुति सुत हांसादिकुटुंबयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक । श्री निगमाविर्भाविका । परमगुरु । श्री श्री श्री इन्द्रनंदि सूरिभिः ॥

लाला खेमचंदजी का देरासर ।

[1611]

सं० १९०४ माघ शुक्ल ९ बुधे श्री । वज्रजातीय गोत्रे ला० रोसनलाल तत्पुत्र सोताबचंद्रेण भा० नति बिबि तया श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पांचाल देशे कंपिलपुर प्र० च श्रीमद् भट्टारक ... सूरिभिः ।

लाला हीरालालजी चुन्निलालजी का देरासर ।

मूलनायकजी पर ।

[1612]

संवत् १९२५ वर्षे चैत वदि १ सुत दलसुख जगमल । श्री ऋषभदेवजी ... ।

मूर्त्ति और पंचतीर्थियों पर ।

[1613]

सं० १७०५ व० वै० व० २ उवकेश ज्ञा० सा० कान्हजी सुत वीरचंद नाम्ना श्री विमलनाथ कारि० प्रति० त० श्री विजयदेव सूरिभिः । जय ।

[1614]

सं० १७१० व० जे० सु० ६ मि० प्राग्वाट लघुशाखायां श्री व्य० मं० मनजीकेन सुपार्श्व बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं तपा विजयराज सूरिभिः ।

[1615]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री सुविधिनाथ जिन बिंबं श्रीमाल नांडिया कन्हैयालाल तद्भार्या कूनु श्रेयार्थे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रति० विजय गच्छे ।

[1616]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अनंतनाथ जिन बिंबं श्रीमाल टांक गोत्रे हुसमतरायजी तत्पुत्र हजारीमलेन कारितं प्र० श्री विजय गच्छे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः ।

[1617]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री आदिनाथ बिंबं .... निहालचंदेण कारितं प्रतिष्ठितं विजय गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थं ।

[1618]

सं० १९२४ माघ शुदि १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्रीमाल षारड़ गोत्रे षड़चंद [?] तत्पुत्र श्री कपूरचंद्रेण कारितं । प्र० भ० श्री पूज्य शांतिसागर सूरिभिः । विजय गच्छे ।

[1619]

सं० १५२८ चैत्र व० १० गुरौ श्री ओएस व० गिरडीआ सो० जावड़ भा० जसमादे

पु० सो० गुणराज सुश्रावकेण जा० मेघाई पु० पूनां महिपाल भ्रातृ हरषा श्री राजसिंह राज सोमपालसहितेन श्री अंचल गच्छे श्री जयकेशरि सूरि उ० पत्निपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं। प्र० श्रीसंघेन चिरं नंदतु।

[1620]

॥ ॐ सं० १५७० वर्षे आ० सुदि ५ बुधे सूराणा गोत्रे सं० शिवराज पु० सं० हेमराज जार्या हेमसिरि पुत्र संघवी नाल्हा जा० नारिगदे संघवी सिंहमल्ल आर्या संघवीणि चापश्री पुत्र पृथ्वीमल्ल प्रमुखपुत्रपौत्रसहितैः श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं। पितृमातृपुन्यार्थं। आत्मश्रेयसे श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मानंद सूरि पट्टे श्री नंदिवर्द्धन सूरि प्रतिष्ठितं।

चौवीसी और पाषाण के चरणों पर।

[1621]

॥ ॐ संवत् १५३० वर्षे जेठ सुदि २ मंगलवारे उपकेश ज्ञातीय सोनी गोत्री सा० तिणाया पुत्र सा० संसारचंद्र पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति कारापितं। प्र। रुद्रपल्लीय गच्छे जट्टारक श्री जिनदत्त सूरि पट्टे ज० श्री देवसुंदर सूरिजिः॥

[1622]

॥ सं० १९१४ व० ज्ये। छु। ति। चं। श्री जिनकुशल सूरि पादौ ज। श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः का। श्री गो। कन्हैयालालेन मुद्रार्थं।

[1623]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री गौतमस्वामी पादुका कारिता ओ० वं० नाहर गोत्र लाला चंगामल पुत्र जवाहिरलालेन प्रतिष्ठितं। श्री विजय गच्छ श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टोदयाद्रिदिनमणि पूज्य श्री शांतिसागर सूरिजिः॥

श्रीमंदिर स्वामीजी का मंदिर — सहादतगंज।

[1624]

॥ संवत् १५१० वर्षे माघ सूदि ७ शुक्रे श्री मोढ ज्ञा० मं० गोरा जा० राजू सुत जोजा

महिराज ···· भ्रातृ नागानिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री विद्याधर गच्छे भ० श्री हेमप्रभ सूरिभिः ॥ मांडलि वास्तव्यः ॥ १ ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर – सहादतगंज ।

पचतीर्थी पर ।

[1625]

सं० १५७८ वर्षे वैशा० सुदि ६ सोमे डूगड़ गोत्रे सा० वील्हा भा० पूना पु० ४ सा० मेहा भा० रेडाही सा० कामा भा० फूला सा० पूना भा० मूलाही सा० उदा० भा० षीमाही सा० सधारण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं रद्रुल गच्छे श्री सूरि प्रतिष्ठितं ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर – सहादतगंज ।

मूलनायकजी पर ।

[1626]

॥ संवत् ११७७································· ।

पचतीर्थियों पर ।

[1627]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाष सुदि ३ दिने श्री श्रीमालज्ञातीय श्रेष्टि राउल भार्या लाछी सुत जोगा भार्या रूपी जसमादे सुत करमण काल्हा करमण भार्या रत्नादेसहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं श्री ···· गच्छे शांति सूरि पट्टेश सर्वदेव सूरिभिः । कंथरावी वास्तव्यः ॥

[1628]

संवत् १६३० वर्षे वैशाष शित पंचम्यां तिथौ सोमे मेड़तानगर वास्तव्य समदड़ीया गोत्रीय । उकेश ज्ञातीय वृद्धशाषीय सा० माना भा० मनरमदे सुत रामसिंह नाम्ना भ्रातृ रामसिंह प्रमखकुंटुंबयुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा गच्छे श्री अकबर सुरत्राण·

दत्तबहुमान भ० श्री हीरविजय सूरि पट्टालंकार श्री अकबरछत्रते (?) परिषतप्राप्तवाद-जयकार भ० श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर – सहादतगंज ।

मूर्त्तियों पर ।

[1629]

सं० १८८८ मा । सु । ५ । श्री आदि जिन बिंबं कारितं उस वंशे पहलावत गो । सदानंद पुत्र गुलाबराय भार्या फूलाख्या का० प्र । बृ । भ । खरतर । ग । श्री जिनाक्षय सूरि तत् पंङ्कजभृंगैः श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

[1630]

सं० १८१७ फागुण शीत २ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांपिलपुर प्रतिष्टितं । श्रीमद्भट्टारक बृहत् खरतर गच्छाधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित श्री जिनचंद्र सूरि पदकजलयलीन विनेय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिभिः उस वंशे पहलावत गोत्रे लालाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र लाला श्री सदानंदजी तत्पुत्र लाला गुलाबरायजी तद्भार्या फून्नु बिबि तेन कारितं महता प्रमोदेन ।

पंचतीर्थी पर ।

[1631]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ बुधे भदेउरा ज्ञा० सा० कमलसी भा० तेजू सुत सा० खेताकेन भा० वीरणिश्रेयोर्थं पुत्र गोविंदादियुतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर – सहादतगंज ।

चौकी पर ।

[1632]

॥ संवत् १८२३ का मिति जेष्ठ सुदि १० म्यां श्रीमाल वंशे छोटेसाजन फूसपाणी गोत्रे

लाला विसनचंद जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवीप्रसाद तद् भ्रातृवधुः ननकु ॥ श्रेयोर्थं ॥ १ ॥

पंचतीर्थियों पर

[1633]

संवत् १५२३ वर्षे माह सुदि ६ नासणुली वासि मं० भलाकेन भार्या भावलदे सुत मांडण भा० जेअरि प्रमुखकुटुंबयुतेन भ्रातृ बलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छेश श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1634]

सं० १५५८ वर्षे वैशाष सुदि ११ गुरौ श्री उंसवाल ज्ञातौ कठउतिया गोत्रे । सं० पदमसी भा० पदमलदे पु० पासा भा० मोहणदे । पु० पाल्हा श्रीवंत तत्र सा० पाल्हाकेन स्वभार्या इंद्रादेपुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं । ककुदाचार्य संताने उपकेश गच्छे भट्टारक श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1635]

सं० १६७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्री अहमदावाद वास्तव्य उंसवाल ज्ञातीय वृद्ध-शाषायां श्री शांतिदास भा० वाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री मुनिसागर गणिभिः श्रेयोस्तु ॥

चौवीसी पर ।

[1636]

सं० १६१९ वर्षे वैशाष वदि ५ शु० श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री भुवनकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्त० भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री शुभचंद्र देवास्तत्पट्टे

भट्टारक श्री सुमतिकीर्त्ति गुरूपदेशात् हुंबड़ ज्ञातीय वजीयाणा गोत्रे सा० धारा भा० राणी सु० हाद्दा भा० हरषमदे सुत० सा० जगा भा० जगमादे भ्रा० जयवंत भा० जीवादे भ्रा० जेता भा० काऊआ सुत बचूआ सुतैः श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकरदेव नित्यं प्रणमंति ॥

श्री दादाजी का मंदिर — जौहरीबाग ।

श्वेत पाषाण के चरणों पर ।

[1637]

संवत् १९१३ शालिवाहन शाके १७७८ प्रवर्त्तमाने तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ॥ ५ ॥ शुक्रवासरे जं । यु । प्र । भट्टारक श्री जिनकुशल सूरि पादुकां लक्ष्मणपुर वास्तव्य श्रीसंघेन कारितं बृहत् भट्टारक खरतर गच्छीय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरि पट्टालंकृत श्री जिनजय-शेखर सूरिभिः॥ श्रेयोस्तु ॥ श्री ॥
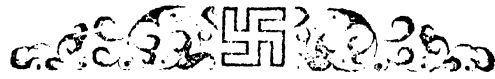
अयोध्या ।

यह बहुत प्राचीन नगरी है । प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी का च्यवन, जन्म, और दीक्षा ये तीन कल्याणक यहां हुए । दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथजी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक और चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनन्दनजी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक और पांचवें तीर्थंकर श्री सुमति-नाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक तथा चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक इसी नगरी में हुए, श्री महावीर स्वामी के नवमें गणधर श्री अचलभ्राता इसी अयोध्या के रहने वाले थे। रघुकुलतिलक श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी आदि भी इसी नगरी में पैदा हुए थे ।

श्री अजितनाथजी का मंदिर – महल्ला कटड़ा।

पाषाण की मूर्त्तियां पर।

[1638]

मूलनायकजी।

संवत् १८७१ माघ सुदि ३ बृहत् खरतर गच्छे श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक श्री हीरधर्मगण्युपदेशेन श्रीमाल टांक जांवतराय सुतन चुन्निलालेन सुत बहादुरसिंहयुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं । श्री वाराणश्यां प्रतिष्ठितं । श्री जिनहर्ष सूरिणा श्री खरतर गच्छे ।

[1639]

सं० १९५९ मि० फा० सु० ५ इदं श्री ऋषभदेवजी आदिनाथ बिंबं कारितं श्री ओसवाल वंशज ताराचंद लखमीचंद प्रतिष्ठितं बृहद् भट्टारक श्री जिनचंद सूरिभिः ।

[1640]

सं० १९५९ मि० फा० सु० ५ इदं श्री महावीर बिंबं कारापितं सेठ सराचंद प्र० भट्टारक जिनचंद्र सूरिभिः ।

पंचतीर्थियों पर।

[1641]

सं० १४९५ वर्षे मार्ग० वदि ४ गुरौ उपकेश ज्ञातौ सुचिंतो गोत्रे साह भिकु भार्या जयतादे पु० सा० नान्हा भोजाकेन मातृपितृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं भ० श्री श्री श्री सर्व सूरिभिः ॥

[1642]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाष सुदि १० उ० सुचिंती गोत्रे सा० जेसा भार्या जस्मादे पु० मीडा भार्या हर्षु आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। को० श्री नन्ह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1643]

सं० १५७५ वर्षे फा० व० ४ दिने प्रा० सा० आल्हा जार्या आल्हणदे पुत्र सा० विसा-केन जा० विल्हणदे पुत्रीपुत्र जयवंतप्रमुखयुतेन श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री जयकल्याण सूरिजिः ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1644]

सं० १७०६ फा० व० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेंद्र सूरिणा । फो० गो० सेवाराम ।

धातु के यंत्र पर ।

[1645]

श्री । संवत् १९०९ आ० सु० ३ श्री सिद्धचक्र यंत्रं का० गांधी गुलाबचंद्रस्य जार्या कल्ली नाम्ना प्र० श्री जिनमहेंद्र सूरिणा श्री वृहत् खरतर गच्छे ।

[1646]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्र द्वितीया तिथौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० ज० श्री महेंद्र सूरिजिः का० गो० नाहटा उसवाल लछमणदास तद् जार्या मुन्नि बिबि तत्पुत्र हजारीमल श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

पाषाण के चरण पर ।

[1647]

॥ सं० १७७७ रा धराकार्या पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयपुर वास्तव्य ओसवाल सेठ हुकुमचंदजेन उदयचंदेन अयोध्यायां श्री मरुदेव १ विजया २ सिद्धार्था ४ सुमंगला ५ सुयशा १४ गर्जरत्नानां परमेष्ठिनां चरणन्यासाः कारिताः प्र० श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

समवसरणजी के चरणों पर।

[1648]

॥ सं १८७७ रा धराकायां बृहत् खरतर भट्टारक गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जय-नगर वासिना ओसवाल ज्ञातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन अयोध्यायां श्री अजित सर्वज्ञस्य पादन्यासः कारितः। प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा॥

[1649]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री वृषजनाथानां पादन्यासः कारितः ओसवाल। मिरगा जाति सामंतसिंहेन बडेर गोत्रीयेन बीकानेरस्थ पदार्थमल्लेन। प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1650]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन ओसवाल जातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन जयनगरस्थेन। अवधौ सर्वज्ञाजिनंदन पादाः कारिताः। प्र। जिनहर्ष सूरिणा।

[1651]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासिना ओसवाल जातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन। अयोध्यायां श्री सुमति सर्वज्ञ पादाः कारिताः प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1652]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन अवधौ सर्वज्ञानंत पादन्यासः कारितः सेठ उदयचंद प्र। श्री जिन-हर्ष सूरिणा॥ १४॥

[1653]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री अजिताभिनंदन सुमत्यनंतनाथानां चरणन्यासः कारितः जयनगर वासिना। ओसवाल सेठ गोत्रीय हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन प्रतिष्ठितः खरतर भट्टारक गणेश श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1654]

॥ सं० १८७५ रा धराकायां खरतरगणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन। अयोध्यायां श्री नाभि १ जितशत्रु २ संवर ४ मेघ ५ सिंहसेन १४ जानामार्हतां क्रमन्यासः कारितः जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1655]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय हीरधर्मोपदेशेन जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन। अयोध्यायां २। ४। ५। १४। जिनाद्यो गणधराणां श्री सिंहसेन। वज्रनाभ। चमरगणि। यशसां पादाः कारिताः। प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

दादाजी के चरण पर।

[1656]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां पितामहानां श्री जिनकुशल सूरीणामयोध्यायां चरणन्यासः प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर भट्टारक श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन कारिताः। जयनगर वासिना अधुना मिरजापुरस्थेन सेठ हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन श्रेयोर्थं।

यक्ष और देवियों के पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1657]

॥ श्री गोमुख यक्ष मूर्त्तिः ॥ १ ॥ ॥ सं० १८३९ फाल्गुन कृष्ण ७ गुरौ प्रतिष्ठितं।

भं । यु । प्र । वृहत्खरतर भट्टारकेंद्र श्री जिनमुक्ति सूरि जिनामादेशारमंडलाचार्य श्री विवेककीर्त्ति गणिना कारितं । श्री संघस्य श्रेयोर्थमयोध्यायाम् ॥ शुभम् ॥ १ ॥

नोट– ऐसेही लेख और (१)॥ श्री महायक्षमूर्त्तिः ॥ २ ॥ (२) ॥ श्री यक्षनायक मूर्त्तिः ॥ ४ ॥ (३)॥ श्री तुंबुरुयक्षमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ (४) ॥ श्री पातालयक्षमूर्त्तिः ॥ १४ ॥ (५) ॥ श्री अजितबला देवी ॥ २ ॥ (६) ॥ श्री कालिदेवीमूर्त्तिः ॥ ४ ॥ (७) ॥ श्री अंकुशदेवी मूर्त्तिः ॥ १४ ये सात मूर्त्तियों पर हैं ।
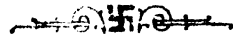
नवराई ।

नवराई फैजाबाद से १० मैल और सोहावल स्टेशन से अंदाज २ मैल पर एक छोटा गांव है । यही प्राचीन तीर्थ 'रत्नपुरी' है । यहां १५ वें तीर्थंकर श्री धर्मनाथस्वामी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुवे हैं ।

पंचतीर्थियों पर

[1658]

संवत् १५१२ वर्षे माह शुदि ५ सोमे वाडिज वास्तव्य भावसार जयसिंह भा० फाली पु० पोचा भा० जासी पु० लीबा सरवण साहू उमालु पोचाकेन । श्री सुविधिनाथ बिंब कारापितं श्री बिवंदणीक गछे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

[1659]

सं० १५६७ वर्षे वैशाष सु० १० बु० श्री उपकेश ज्ञातौ सं० साहिल सु० सं० हासा भा० गाजी नाम्न्या स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सं० भ० श्री सिद्ध सूरिभिः

[1660]

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ सोमे श्री पत्तने उसवाल ज्ञातीय सा० अमरसी सुत आणंद। जा० वीरु सुत काहाना सारंगधर बिंबं श्री पद्मप्रजनाथ । प्रतिष्ठितं। तपा गच्छे श्री विजयदान सूरिजिः॥ श्री ॥

[1661]

॥ संवत् १६४४ वर्षे फागुण शुदि २ दिने उसवाल ज्ञातीय बंज गोत्रीय साह कटारू जार्या दुलादे सुत सा० तारू जार्या जीवादे सुत सा० टटना प्री (?) संघनाम चिंतामणि श्री श्रेयांसनाथ बिंबं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1662]

संवत् १८७७ रा धराकार्यां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथानां पादाः कारिताः वरढ़ीया बूलचंदज वेणीप्रसाद प्र। बृहत् खरतरगणेश श्री जिनलाज सूरि शिष्य पाठक हीर-धर्मोपदेशेन। ओसवालेन। काशीस्थेन प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1663]

संवत १८७७ रा धराकार्यां श्री रत्नपुरे श्री धर्मार्हतापादाः कारिताः बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाज सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन बरढ़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन ज। श्री जिनहर्ष सूरिणा बृहत् खरतरगणेशेन।

[1664]

सं। १८७७ रा धराकार्यां बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाज सूरि शिष्य पाठक हीर-धर्मोपदेशेन काशीस्थ वरढ़ीया बूलचंदज। वेणीप्रसादेन श्री धर्मपरमेष्ठिनां पादाः कारिताः श्री रत्नपुरे प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश।

[1665]

सं। १८७७ रा धराकार्यां श्री रत्नपुरे श्री धर्म सर्वज्ञानां पादाः कारिताः ओसवंशे

बरढ़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन श्री काशीस्थेन वृहत् खरतर गणनाथ श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश।

[1666]*

सं० १८७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथाद्यः गणधर श्रीमद् अरिष्टाख्यानां पादाः कारिताः ओसवाल वंशे बरढ़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन वृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशन। प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा। वृहत खरतर गणेशेन।

[1667]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ। श्री गौतम स्वामी जी पादन्यासौ। प्र। भ। श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः। का। गा० श्री अगरमल्ल पुत्र ठोटण-लालेन आणंदपुरे॥ श्री॥

[1668]

सं० १९१० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे श्री जिनकुशल सूरीणां पादन्यासौ प्रतिष्ठितः भ। श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः का। गां। श्री वेणीप्रसा-दांगज ठोटणलालेण आणन्दपुरे।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1669]

सं। १६६७ का .... अभिनंदन ...। जं। यु। प्र। भट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1670]

सं। १६७५ वैशाष सुदि १३ शुक्रे श्री वृहत् खरतर संघेन कारितं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि शिष्यैः।

---

* किन्नर यक्ष और कंदर्पा देवी मूर्तियों पर भी ऐसे ही लेख हैं।

[1671]

॥ सं। १८९३ शाके १७५८ प्र। माघ सुदि १० बुध वासरे श्री पादलिप्त नयरे श्री अजिनंदन बिंबं कारितं श्री बृहत् खरतर गच्छे भ। जं। यु। श्रीमहेंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

[1672]

सं। १८९३ माघ सुदि १० बुध वासरे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं बृहत्खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० भ० श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः।

[1673]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं भ० श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारितं वमा (?) गोत्रीय श्री हुकुमचंद तत्पुत्र अगरमल्ल तद्भार्या बुध तया श्रेयोर्थमाणंदपुरे।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1674]

सं० १९२० मि० फा० कृष्ण २ बुधे डूगड़ प्रतापसिंह भार्या महताब कुंवर का० विहर-मान अजित जिन २० बिंबं श्री अमृतचंद्र सूरि राज्ये वा० भानश्चंद्र गणिना।
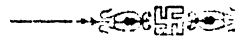
फैजाबाद।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर। महल्ला – पालखीखाना।

पंचतीर्थियों पर।

[1675]

ॐ सं० १४६१ वर्षे जेठ सुदि १० शुक्रे प्रा० श्रेष्ठि लाषा भा० देवल पु० जेसा भ्रातृव्य पीचनाम्यां स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं का० प्रति० पिप्पल गच्छे श्री वीरप्रभ सूरिभिः॥

[1676]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय श्री एलहर गोत्रे शा० दया-संताने सा० पूनात्मज म० मिच्चाकेन भ्रातृ डोडाप्रभृतिपरिवारयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं श्री वृहद् गच्छे श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्र० रत्नप्रभ सूरिभिः ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1677]

सं० १६६४ वर्षे राय पालक० मु० पा० प्र० तप .... ।

पट्ट पर ।

[1678]

सं १६७२ भाद्र सुदि ११ श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं ॥ वीरदास प्रणमति । ठः ठः ॥

पाषाण के चरणों पर ।

[1679]

सं० १८७९ फाल्गुण शुदि ४ वार शनि अयोध्या नगरे बंगलावसति वास्तव्य ओस वंशे नखत गोत्रीय जोरामल तत्पुत्र बषतावरसिंघ तत्पुत्र कनईयालालादिसहितेन श्री जिन-कुशल सूरि पादुका कारितं । प्रतिष्ठितं वृहत् भट्टारक खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारक पूजकानां भूयसि वृद्धितरां भूयात् ॥

[1680]

सं० १८७९ मि । फा । सु० ४ श्री जिनकुशल पादौ । प्र । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

चंद्रावती ।

यह तीर्थ बनारस से ७ कोस पर गंगा के किनारे अवस्थित है। आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभस्वामी का इसी चंद्रावती नगरी में च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुए हैं।

पाषाण के चरण पर।

[1681]

श्री वाराणसी नगरीस्थित समस्त श्री संघेन श्री चंद्रावत्यां नगर्य्यां श्री चंद्रप्रभु सुनाम ८ म जगनाथानां चरण न्यासः समस्त सर्व सूरिभिः प्रतिष्ठितं। संवत् १०६० मिति आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे ११ वार शुक्रवार शुभं।

पाषाण की यक्ष मूर्त्ति पर।

[1682] *

संवत् १९१३ फाल्गुण शुक्ल सप्तम्यां विजय यक्ष मूर्त्ति प्रतिष्ठितं। भट्टारक। युगप्रधान श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारिता च काशीस्थ श्री श्वेताम्बर श्री संघेन।

[1683]

सं०। १८८८ माघ शुदि ५ सोमे श्री जिनकुशल सूरि चरण कमलं कारितं श्री-मालान्वये फोफलिया गोत्रीय वषतमल्ल पुत्र दिलसुखरायेण प्र। बृ। भ। खरतर ग। श्री जिन-चंद्र सूरिभिः श्री जिनाक्षय सूरि पदस्थैः।

शिलालेख।

[1684]

श्री दादाजी महाराज के मंदिरजी का जीरणउद्धार। लक्ष्मीचंद राखेचा की लड़की गेटी बिबि की तरफ से बनाया। भादो सुदि ४ शुक्रवार सम्वत् १९५२।

---

* ज्वाला देवी की मूर्ति पर भी इसी प्रकार का लेख है।

[1685]

श्री संवत् १७७१ शाके १७५७ माघ शुक्ल १५ सोमवार पुष्यनक्षत्रे आयुष्यमाण योगे चोरडिया गोत्रोत्पन्न लाला मन्नुलालजी बुधसिंहेन निर्मिता विश्रामस्थान ।

[1686]

॥ सं। १७९४ वर्षे शा १७५९ माघ शुक्ला ४ चतुर्थ्यां चंद्रवासरे श्रीमालान्वये फोफलिया गोत्रे सा । श्री सुखवषतरायजी तत्सुतौ दिलसुखराय .... चाभिधानौ श्री चंद्रप्रभ कल्याणकभूम्यां चंद्रावती पूर्यां धर्मशाला कारापिता संघार्थ ।
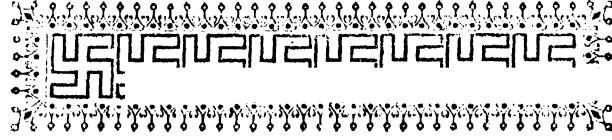
श्री सम्मेदशिखर तीर्थ ।

मधुबन – जैन श्वेताम्बर मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1687]

सं० १२१० आषाढ़ सुदि ९ सोमे श्री षंडेरक गच्छे .... प्रतिमा कारिता वसु .... ।

[1688]

संवत् १२३५ वैशाख सुदि ३ बुधे तंगकीय सोहि सुत पोल श्रावकेण स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता । .... श्री पूर्णचन्द्र सूरिणा ।

[1689]

संवत् १२४२ वैशाख सुदि ४ श्री थारदीय गच्छे श्री जीवदेव सूरि पितृश्रेयोर्थं सूरि श्रेयोर्थं श्री० टाणाकेन कारितं ।

[1691]

संवत् १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० कर्मसी जार्या मटकू सुत गुणीआकेन स्वकुलश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री बृहत्तपापक्षे श्री ज्ञानकलश सूरि पट्टे श्री विजय तिलक सूरिभिः।

[1692]

सं० १५५३ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे ऊकेश वंशे सा० पनरबद जार्या मानू पुत्र साह नदा सुश्रावकेण जार्या धनाई पुत्र कुंरपाल सोनपाल प्रमुखसहितेन श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयोर्थं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री वृहत् खरतर गछनायक श्री जिनसमुद्र सूरिभि ।

[1693]

संवत् १५७० वर्षे माह वदि १३ बुध दिने सुराणा गोत्रे। सं० केसव पुत्र सं० समरथ जार्या सं० सोमलदे पु० सं० पृथीमल्ल महाराज कर्म्मसी धर्मसी युतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं मातृपितृपुण्यार्थं आत्मश्रेयसे प्रतिष्ठितम्। श्री धर्मघोष गछे जट्टारक श्री श्री नंदिवर्द्धन सूरिभिः॥

चौवीसी पर।

[1694]

सं० १२२७ वैशाख शु० ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीय पुत्र लूणदे श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारिताः। श्री मोढ गछे बप्पजट्टि संताने जिनजद्राचार्यैः प्रतिष्ठितः।

[1695]

सं० १५०७ प्रा० सा० पाल्हणसी जा० जोटू सुत सा० राजाकेन जा० मंदोअरि सुत सीहा करुआदिकुटुम्बयुतेन श्री कुन्थुनाथ सपरिकर चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभि ॥ छ ॥ श्री ॥

जलमंदिर।

पंचतीर्थि पर।

[1696]

सं० १५११ पोष वदि ६ गु० मंत्रीश्वर गोत्रे श्री हुंबड़ ज्ञाति गारुडिया जा० पूजू सु० समेत जा० सहनल दे सु० समधर सोमा श्रेयोर्थं जा० पाल्हण नाल्हा एतैः श्री आदिनाथ बिंबं कारितं वृद्धतपा ग० श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रति० ॥

श्री पावापुरी तीर्थ।

मंदिर प्रशस्ति।

शिलालेख।

[1697]

(१) ॥ ऐं ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे। पातिसाह श्री साहिजांह सकलनूर

(२) मंग्लाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितमजिनाधिराज श्री वीरवर्द्धमान स्वामी

(३) निर्वाण कल्याणिक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीरजिनचैत्यनिवेशः। श्री

(४) ऋषभ जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्ती श्री भरत महाराज सकलमंत्रिमंडलश्रेष्ठ मंत्रि श्रीदलसन्तानीय म-

PAWAPURI TEMPLE PRASHASTI
Dated V. S. 1698 (1641 A.D.)

(५) हतिआण ज्ञातिशृङ्गार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसीदास जार्या निहा-
लो पुत्र सं० संग्राम ।

(६) लघुभ्रातृ गोवर्द्धन तेजपाल जोजराज । रोहदीय गोत्रीय मं० परमाणंद सपरिवार
महधा गोत्रीय विशेष धर्म्म ।

(७) कर्म्मोद्यम विधायक ठ० डुलीचंद काङड़ा गोत्रीय मं० मदनस्वामीदास मनोहर
कुशला सुंदरदास रोहदिया ।

(८) मथुरादास नारायणदासः गिरिधर सन्तादास प्रसादी । वार्त्तिदिया गो० गूजरमल्ल
बूदड़मल्ल मोहनदास ।

(९) माणिकचन्द बूदमल्ल जेठमल्ल ठ० जगन नूरीचन्द । नान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल
मलूकचन्द मला-

(१०) चन्द । संघेला गोत्रीय ठ० सिंजू कीर्त्तिपाल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ ।
काङड़ा गो० दयाल-

(११) दास जोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किलू । काणा गोत्रीय ठ० राजपाल
रामचन्द ॥

(१२) महधा गो० कीर्त्तिसिंघ रो० ठबोचन्द । जाजीयाण गो० मं० नथमल्ल नंदलाल
नान्हड़ा गोत्रीय ।

(१३) ठ० सुन्दरदास नागरमल्ल कमलदास ॥ रो० सुन्दर सूरति मूरति सबल कृती प्रताप
पाहड़िया ।

(१४) गो० हेमराज जूपति । काणा गो० मोहन सुखमल्ल ठ० गढ़मल्ल जा० हरदास पुर-
सोत्तम । मीणवा-

(१५) ण गो० बिहारीदास बिंडु । मह० मेदनी जगवान गरीबदास साहरेणपुरीय जींवण
वजागरा गो० ।

(१६) मलूकचन्द जूफ गो० सबल बन्दी संती । चो० गो० नरसिंघ हीरा धरमू उत्तम
वर्द्धमान प्रमुख श्री ।

(१७) विहार वास्तव्य महतीयाण श्री संघेन कारितः तत् प्रतिष्ठा च श्री बृहत् खरतर गच्छाधीश्वर युगप्रधान श्री।

(१८) जिनसिंह सूरि पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरि विजयमान गुरुराजानामा-देशेन कृत।

(१९) पूर्वदेश विहारे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री समयराजोपाध्याय शिष्य वा० अभयसुन्दर ग-

(२०) णि विनेय श्री कमललाभोपाध्यायैः शिष्य पं० लब्धकीर्त्ति गणि पं० राजहंस गणि देवविजय ग-

(२१) णि थिरकुमार चरणकुमार मेघकुमार जीवराज सांकर जसवन्त महाजलादि शिष्य सन्ततिः सपरिवार्यैः। श्रीः।

क्षत्रियकुण्ड। *

पंचतीर्थी पर।

[१०९४]

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ५ दिने। भारडेचा गोत्रे सा० कोहा भा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा भा० हीरू श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कोरंट गच्छे श्री नन्न सूरिभिः॥

* 'लछवाड़' ग्रामसे १ कोस दक्षिण में छोटे पहाड़ पर यह स्थान है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय वाले २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के च्यवन, जन्म और दीक्षा ये ३ कल्याणक इसी स्थान में मानते हैं। वहां के लोग इसको 'जन्म थान' कहकर पुकारते हैं। पहाड़ के तलहटी में २ छोटे मन्दिर हैं। उन में श्री वीर प्रभु की श्याम वर्ण के पाषाण की मूर्त्तियां हैं। पहाड़ पर मन्दिर में भी श्याम पाषाण की मूर्त्ति है और मन्दिर के पास ही एक प्राचीन कुण्ड का चिह्न वर्त्तमान है।

लछवाड़ ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1699]

॥ सं० १९२० मि० फाल्गुन कृ० २ बुधे भारू गो० केसरीचंद भार्या किसन बिबि वीर जिन बिंब का । भं । यु । भ । श्री जिनहंस सूरि राज्ये उ । सं । ग । च । प्रति० ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1700]

सं० १५१३ । वै० सुदि ५ गुरो श्री हुंबड़ ज्ञातीय फडो शिवराज सुत महीया श्रेयसे भ्रातृ हीयकेन भ्रातृज कुरूया युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० वृहत्तपा पक्षे श्री श्री रत्नसिंह सूरिभिः ॥

[1701]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रतापसिंह दूगड़ गोत्रे भार्या महताब कुंवर श्री सुमति जिन पंचतीर्थी का० भ० । सदालाभ गणिना श्री जिनहंस सूरि राज्ये ।

यंत्र पर ।

[1702]

सं० १९३३ ज्येष्ट शुक्ल १२ शनिवासरे श्री नवपद यंत्र कारितं ओस वंशे दूगड गोत्रे श्री प्रतापसिंह तत्पुत्र रायबहादुर धनपतसिंहेन कारितं प्रतिष्ठितं विजयगच्छे भ० श्री शांति-सागर सूरिभिः ।

[1703]

सं० १९३३ का ज्येष्ठ शुक्ल १२ द्वादश्यां शनिवासरे नवपद यंत्र........का० मकसूदा-बाद वास्तव्य उस वंशे दूगड गोत्रे बाबू प्रताप सिंह तत्पुत्र राय बहादुर लछमीपतसिंह रायबहादुर धनपतसिंह ने कारितं विजय गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

चन्दनचौक ।

मन्दिर का शिला लेख ।

[1704]

१ । ॐ ॥ संवत् १३४४ वर्षे आ-
२ । षाढ़ सुदि पूर्णिमायां देव श्री ने-
३ । मिनाथ चैत्ये श्री कल्याण.....
४ । यस्य पूजार्थं श्रे० सिरधर । त-
५ । त्पुत्र श्रे० गांगदेवेन वीस....
६ । स प्रीय द्रमाणं ए२० श्री नेमि
७ । नाथ देवस्य जांडागारे निक्षि-
८ । तं वृद्ध फल जोगेन सम्प्रति द्र-
९ । ....३३ प्रदत्तं पूजार्थं आचंद्र-
१० । कालं यावत् शुजं जवतु श्री ॥

मूर्त्ति के चरण चौकी पर ।

[1705]

१ । गुणदेव जार्या जइतसिरि साल्हु-
२ । पुत्र दहरा पूना लूणावी ··· कम-
३ । रेवता हरपति कर्मद राणा क-
४ । र्मद पुत्र खीमसीह तथा धीर-
५ । देव सुत अरसीह तत्पुत्र वस्तु-
६ । पाल तेजःपाल प्रभृति सकल-
७ । कुटुंब सामस्त्येन श्रे० गांग-
८ । देवेन कारितानि ।

———卐———

रत्नपुर - मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[1706]

१ । सं० १३४३ वर्षे माह सुदि १० शनौ रत्नपु-
२ । रे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री उसिवाल ज्ञातीय व्यवसीं-
३ । ह गष्ठ सुतयासी पुत्राद्दि सरोराज हसिकया व्यव महि-
४ । लण जार्यया महणदेव्या स्वात्म श्रेयसे कारितं श्री आ-
५ । दिनाथ बिंबस्य नेचक निमित्तं श्री पार्श्वनाथ देव जांडा-
६ । गारे दित्त वीसल प्रिय ड्रम्म २० तया सं० १३४६ माह सुदि
७ । १५ पूर्णिमायां कल्याणिक पंचकनिमित्तं दित्तं ड्र १० ज
८ । जयं ड्र ३० अमीषां ड्रम्माणां व्याजे शतं मासं प्रति ड्र २०
९ । विशति ड्रम्मा पुम्वाणां व्याजेन नवकं करणीयं दश ड्रम्मा-
१० । णां व्याजेन कल्याणिकानि करणीयानि शुजं जवतु ।

मूर्तियों पर ।

[1707]

१ देव श्री शान्तिनाथ
२ । दीसावाल न्याती सुरमा
३ । णपुर वास्त (व्य) साधु रतन
४ । सुत सा० हापु कलगे

[1708]

१ । ॐ ॥ सं० ॥ १३३७ फागुण सुदि १० गुरौ । अद्येह रत्नपुर श्री षंडेर ०...
२ । ....महं मदन पुत्रमहं डूंगरसीहेन
३ । ....श्रे

४। योर्थं श्री जिनेन्द्रस्य बिंबं--कारितं ॥ प्र०

५। श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री सुमति सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

गांधाणी (मारवाड़)।

प्राचीन जैन मंदिर।

धातु की मूर्त्ति पर

[1709]*

(१) ॐ ॥ नवसु शतेष्वब्दानां। सप्तत्रिं (त्रिं) शदधिकेष्वतीतेषु। श्रीवच्छलांगभीभ्यां। ज्यष्ठार्याभ्यां

(२) परमभक्तया ॥ नाभेय जिनस्यैषा ॥ प्रतिमा ऽषाढ़ार्द्धमास निष्पन्ना श्रीम-

(३) तोरण कलिता। मोक्षार्थं कारिता ताभ्यां ॥ ज्येष्ठार्यपदं प्राप्तौ। द्वावपि

(४) जिनधर्म्मवच्छलौ ख्यातौ। उद्योतन सूरेस्तौ। शिष्यौ श्रीवच्छवलदेवौ ॥

(५) सं० ए३७ अषाढ़ार्द्धे ॥

* गांव 'गांधाणी' जोधपुर से उत्तर दिशा में ६ कोस पर है। वहां तालाव पर एक प्राचीन जैन मन्दिर में यह सर्वधातु की श्री आदिनाथजी की मूर्ति है और उसके पृष्ठ पर यह लेख खुदा हुआ है। जोधपुर निवासी पंडित रामकर्णजी की कृपा से मुझे यह लेख का छापा और अक्षरान्तर प्राप्त हुआ है। उन्होंने इस लेख पर निम्न लिखित नोटस् लिखे हैं।

पंक्ति— १। "ज्येष्ठार्य" यह पदवी वाचक शब्द ज्ञात होता है; जो पंक्ति ३ में के "ज्येष्ठार्य पदं प्राप्तौ" इस वाक्य से स्पष्ट है।

„ — २। "आषाढ़ार्द्ध" पद से आषाढ़ सुदि १ और वदि १५ का भी ज्ञान हो सकता है; परन्तु यहां प्रतिपदा का सम्भव अधिक है, क्योंकि शुभ कार्य में अमावस्या वर्जित है।

„ — ४। "उद्योतन सूरेः" —पट्टावली में इनके स्वर्गवास का संवत् ६६४ मिलता है परन्तु उन के पट्टाधिकारी होनेका संवत् देखने में नहीं आया। लेख से जाना जाता है कि उद्योतन सूरि संवत् ६३७ में आचार्य पद पा चुके थे। इनके समय पर्यंत गच्छ भेद नहीं था इसी लिये लेखमें गच्छ का उल्लेख नहीं है। ऐतिहासिक दृष्टिसे यह लेख बड़े महत्व का है।

सूरपुरा – नागोर।

माताजी के मंदिर के स्तम्भ पर।

शिला लेख।

[1710]

(१) संवत् १२१५ पोस व-
(२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
(३) ···· पुत्र्या धाहरू ना-
(४) येया देवधरमात्रा सू
(५) हवाभिधानया आत्म श्रे-
(६) योर्थं स्तंभद्धयं दत्तं ॥

[1711]

(१) संवत् १२३९ पोस व-
(२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
(३) ······ पुत्र्या धाहरू ना-
(४) येया देवधरमात्रा सू-
(५) हवाभिधानया आत्म श्रे-
(६) योर्थं स्तंभद्धयं दत्तं ॥
(७) मूल्ये द्र १० ॥ सर्व शु-
(८) भं ॥

उसतरा – नागोर।

शिला लेख।

[1712]

(१) संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय बाहणा गोत्रे।
(२) ······
(३) संभवनाथ ····· तपागच्छ श्री श्री हीरविजय सूरि।

नगर - मारवाड ।

मूर्त्तियों के चरणचाकी पर ।

दाहिने तर्फ ।

[1713]*

१। ॥ ॐ ॥ संवत् १२७२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रवौ श्री नारदमुनि विनिवेशीते श्री नगर-वरमहास्थाने सं० ए०
२। ७२ वर्षे अतिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद विनष्टायां।
३। श्रीराजुल्लदेवी मूर्त्ते पश्चात् श्रीमत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट ठ० चंडपात्मज ठ० श्रीचंड-प्रसादांगज ठ० श्री सो- ।
४। मतनुज ठ० श्री आसाराजनन्दनेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसंभूतेन महामात्य श्री वस्तुपालेन स्वभार्या म-
५। हं श्री स ..... पुण्यार्थमिहैव श्री जयानित्य देवपत्न्या श्री राजलदेव्या मूर्त्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥

बायें तर्फ ।

[1714]

१। ॥ ॐ ॥ संवत् १२७२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रवौ श्री नारद मुनि विनिवेशीते श्री नगर वर महास्थाने सं० ए००७२ वर्षे अ-
२। तिवर्षाकालवशादतिपुराणं तया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद पतन विनष्टायां श्री रत्नादेवी मूर्त्तौ
३। पश्चात् श्री मत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० श्री चण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आसाराजनन्द-

---

* श्री भीड़भंजन महादेव के मंदिर में सूर्य के मूर्ति के दोनों तर्फ स्त्री मूर्तियों के चरणचौकी पर यह लेख है ।

४। नेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसम्भूतेन महामात्य श्री वस्तुपालेन स्वभार्यां मध्याः ठ० कन्हड पुत्र्याः ठ० संपू कुक्षिभवा

५। याः महं श्री ललिता देव्या पुण्यार्थमिहैव श्री जयादित्य देवपत्न्या श्री रत्ना देवी मूर्त्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ छ ॥

नगर - खेडगढ़ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर । *

[1715]

१। ॐ सं० १६६६ वर्षे। भाद्रपदे शुक्लपक्षे। श्री द्वितीया दिने। शुक्रवारे। वीरमपुर वरे। श्री शान्तिनाथ प्रासाद

२। भूमि गृह। श्री खरतर गच्छे। युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये। आचार्य श्री जिनसिंह सूरि यौवराज्ये। श्री

३। राउल श्री तेजसिजी विजयिराज्ये। कारितं श्री संघेन ॥ लिखितं वा० श्री गुणरत्न गणिना विनेयेन रत्नविशालगणिना

४। सूत्रधार। चांपा पुत्र। रत्ना। पुत्र। जोधा दामा। पुत्र मन्ना। धन्ना। वर योगेन कृतं। भार्या सोमा किल पाणा। वल्ली। मेघ। श्री रस्तु।

घाणेराव मारवाड़ ।

महावीर स्वामीका मन्दि । †

[1716]

सं० १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मङ्गल दिने श्री दण्डनायक तैजल देव राज्ये श्रीवंश

* यह लेख मन्दरि के भूमिग्रह का है।

† यह मन्दिर "घाणेराव" से १॥ कोस पहाड़ पर है।

ज्ञातीय राउत महणसिंह भक्तिभसहभ वाटमध्यात् । श्री महावीर देव बिंबं प्रति द्राम ४ पालसुधे दत्ताः यस्य भूमि तदा फलं ॥ से० रायपाल सुत रावभिकु महाजन कुरुपाल विना लिय सारिवाहिं ॥

—✻(卐)✻—

अझार ।

श्री पारश्वनाथजी का मन्दिर ।

प्रशस्ति ।

[1717]

१ । उँ नमः श्री पार्श्वनाथाय । ५ श्री ह ···· र्षे गणेशस्य ····
२ । श्री मेह मुनीन्द्र गुरुभ्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री पार्श्वनाथांघ्रि तुष्टि
३ । हेतु स्मृतौ सतां । यौ विश्वत्रय विख्यातौ तावभिष्टप्रदौ मम ॥ १ ॥
४ । श्री मद्विक्रमतः संवत् । मुनिवाजीरसेन्दुके । १६७७ । वर्षे वैशाष मा
५ । सेंदुवृद्धिपक्षेऽर्कभूदिने ॥ २ ॥ अक्षयायां तृतीयायां रोहिणीस्थे ···· वां
६ । भवे एवं सर्व शुभेथस्ते । जीर्णः प्रसाद उद्धृतः ॥ ३ ॥ श्री मत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य कल्या
७ । ण फलहेतवे । श्रीमत्यात्मज पुर्य्यां च धुर्यायां तीर्थ संसदि ॥ ४ ॥ श्री श्री-
८ । मालीकुलांभोधि । चान्द्रेण सितकीर्त्तिना । दोसी श्री श्री जीवराजःह्व सुत-
९ । न गुणशालिना ॥ ५ ॥ सद्धर्मचारिणा हर्षाङ्कुन्नतपुरवासिना । श्रीम-
१० । रकुंअरजी नाम्ना सद्द्रव्यस्य व्ययेन च ॥ ६ ॥ साहाय्यहीरसंघस्य
११ । गुरुदेव प्रसादतः । जाता कार्यस्य संसिद्धिः । पुण्यैः किं किं न सि-
१२ । द्धति ॥ ७ ॥ श्रीमत्तपागणाधीश श्री हीरविजय प्रभोः । पट्टे श्री विजय
१३ । : सेन । सूरि परमभाग्यवान् ॥ ८ ॥ तत्पट्टेऽभिविराजति । सुगुणै श्री
१४ । विजयदेव सूरीन्द्रे । निष्पन्नोयं पुण्यः । प्रासादवरश्चिरंजीयात् ॥ ९ ॥ तस्य द

१५। ङ्क्ष्मि दिग्नागे। सदंगरचनान्विते। स्तूपे श्री कुशलस्वामी पादुकेऽत्र महाद्भु-
१६। ते ॥ १०॥ पूजनीयाः शुभाः श्लाघ्याः। गुरूणां तत्र पादुकाः कारिता मदनाख्येन। दो-
१७। सीना भ्रालयान्विता ॥ ११॥ धर्म्मशाला विशाला च शालाकारकेन निर्म्मिता। साहाय्या-
१८। द्वारसंघस्य दोसीसंज्ञस्य शुभ्रयेः ॥ १२ ॥ पण्डितगणमौक्तिमणेः। तार्क्किकसिद्धान्त-
१९। शब्दशास्त्रार्थः। श्रीमत्कल्याणकुशलं। सुगुरोश्चरणप्रसादेन ॥ १३ ॥ तच्छिष्यस्य सुबु-
२०। द्धेर्विबुधः सुयतेर्दयाकुशलनाम्नः। महतोद्यमेन कृत्यं। सिद्धं श्री भगवतः कृ-
२१। पया ॥ १४॥ रम्यो जीर्णोद्धारो। श्रीपार्श्वनाथान्वितोऽर्थ्यमानश्च। आचंद्रार्कं राजत् जी-
२२। याज्जनसुखकरो नित्यं ॥ १५ ॥ संवत् १६७७ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री अजपु-
२३। रे महातीर्थे जीर्णोद्धारो जातः श्रीखरतरगच्छेश भट्टारक प्रभु भ० श्री ५
२४। श्री जिनराजसूरि विजयराज्ये। पं० श्री मेहमुनीन्द्र गणि शिष्य पं० श्री
२५। कल्याणकुशल गणि पं०। श्री दयाकुशल गणि शिष्येन। प्र-
२६। शस्तिरियं लिखिता गणि भक्तिकुशलेन ॥ श्री रस्तु ॥ श्रीः ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर।*

[1718]

१। सं० १३४३ वर्षे माघ वदि २ शनौ श्रीमाळीय हरिपालेन
२। .... सूरिभिः।

[1719]

१। सं० १३४६ वर्षे वै० सुदि २ बुधे दीशावाल ज्ञातीय मह० धापण सुत धी-
२। रमन सुत। वाहल श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेन्द्र सूरिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1720]

सं० १५०० वर्षे वैशाष सुदि १५ शनौ श्री .... पदेशेन हुंबड़ ज्ञातीय व्र० अर्जुन

---

* ये मूर्त्तियां खण्डित हैं, लेख चरणचौकी पर है।

मारुतयो युत धीधा जुट्टा सुत नेमिनाथ प्रणमति ।

[1721]

सं० १५१९ वर्षे वैशाष सुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० वाछा भार्या गोमती तया आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रभ स्वाम्यादि पञ्चतीर्थी श्री आगम गछे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ।
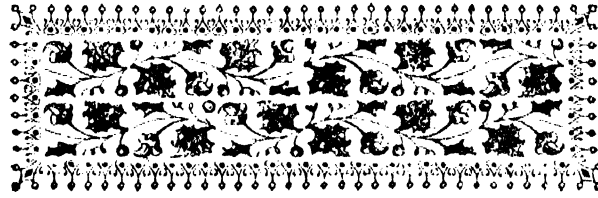
पिंडवाड़ा-सीरोही ।

श्री महावीरजीका मन्दिर ।

शिला लेख

[1722]

(१) नीरागगन्धादिभावेन सर्वज्ञानविनायकं । ज्ञात्वा भगवतां भापं जिनानमिव पावनं ॥

(२) द्रोणयेयक यशोदेव देव ···· । ···· रिदं जैनं कारितं युग्ममुत्तमं ॥

(३) भयशतपरम्परार्जित गुरुकर्म्मराजो ···· कारापितां परदर्शनाय शुद्धं सज्ज्ञानचरणलाभाय ॥

संवत् ८(७?)४४ ।

ॐ साक्षात्पिता महन व विश्वरूपविनायिना । शिल्पिना गोपगार्गेन कृतमेतज्जिनद्वयम् ॥

खीमत-पालणपुर ।

जैन मंदिर ।

मूर्त्तिकी चरणचौकी पर ।

[1723]

१ । ॐ० ॥ सं० १२१५ वैशाष वदि ४ शुक्रे खीमंत स्थाने प्राग्वाट वं-
२ । शीय श्रे० आसदेव जार्यया दमति श्राविकया स्वपुत्र जसचन्द्र देवय
३ । तत् पुत्र पूना अजयडषड्ड प्रति समस्तमानुषसमेतया आ-
४ । त्मश्रेयसे श्री महावीर जिनयुगलं कारितं सूरिजिः प्रति(ष्ठितं) ।

श्री तारंगा तीर्थ ।

श्रीअजितनाथ स्वामीजी का मंदिर ।

सहस्त्रकूट के चरण पर ।

[1724]

श्री शाश्वता परमेश्वर ४ श्री चौवीस तीर्थंकर २४ श्री वीस विहरमाण २० श्री गणधरना १४५२ सर्वमलिने संख्या पनरसो जोड़ावि छई सहि । सं० १०७३ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे श्री तारंगाजी डुर्गे । श्री श्री विजयजिनेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं तपा गछे । सा० करमचन्द मोतीचन्द सुत पनाचन्द करापितं । वीसनगर वास्तव्य ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1725]

सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ उकेस वंशे साहु गोत्रे सा० तुंणा जा० जूणादे

पु० सा० सातलकेन ला० संसारदे पुत्र सा० हेमादियुतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः।

[1726]

सं० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ६ बुधे श्री कोरंट गच्छे। उपकेश मड़ाहड वा० सा० श्रवण ला० राऊ पु० साल्हा ला० सांपू पु० ऊकण सहितेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं। प्रति० श्री सांवदेव सूरिभिः

[1727]

सं० १५२४ वर्षे वै०। सु० ३ विद्यापुर वासि श्री श्रीमालि ज्ञा० म० लषमीधर ला० जासू पु० मं० जूठाकेन ला० डीरू द्वि० जसमादे प्रमु० पुत्रादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री विवंदनीय गच्छे श्री कक्क सूरिभिः।

[1728]

सं० १५३२ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अर्जुन ला० हवकू पु० सहिजाकेन ला० मांनू सु० जूठा जावा स्वस्वपुर्वनिमित्तं कुटुंब० श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे भट्टा० श्री गुणतिलक सूरि प्रतिष्ठितं॥ श्री॥

[1729]

॥ सं० १५७० वर्षे माघ वदि १ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० चुंडा ला० चांपलदे सुत वीसा धरणा वीसा ला० माणिकदे पितृमातृश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुणप्रभ सूरि पं० श्री तिलकप्रभ सूरि प्रतिष्ठितं॥ साचुरा॥ छ॥

[1730]

सं० १५८८ वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय महं धना सुत महं जीवा भार्या जसमादे सुत गोगा भार्या रूपाई श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपा गच्छे हेमविमल सूरिभिः पेथापुर।

चौविशी पर ।

[1731]

सं० १४८९ वर्षे आषा० शुक्ल ५ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय मंत्रि बाहड़ सुत सिंघा भा० पूजल सुत ठकुआकेन भा० कपूरीयुतेन निजश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ मूलनायक चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री तपागच्छाधिप श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ।

[1732]

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि राणा संताने श्रे० रत्ना भा० धरणू सुत पूर्णसिंहेन भार्या देमाई सहितेन तथा भ्रातृ हरिदास स्वपुत्र पासवीर युतेन श्री अजितनाथ बिंबं चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्र० श्री साधुपूर्णिमापक्षे भ० श्री रामचन्द्र सूरि पट्टे शिष्य पूज्य श्री श्री पूर्णचन्द्र सूरीणामुपदेशेन विधिना नारु श्रावकैः॥

[1733]

सं० १५०८ वर्षे वैशाष वदि ११ दिने उपकेश ज्ञा० डागलिक गोत्रे । सा० धिना भा० वारू पुत्र संघवी पासवीरेण भा० संपूरदे सहितेन स्वश्रेयसे श्री सप्तत्यादि तीर्थकृच्चतुर्विं-शति पट्टः का० प्र० श्री कोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

नन्दीश्वरद्वीप की देहरी पर ।

[1734]

सं० १८८८ महा सुदि ५ शुक्रे श्री विजयजिनेन्द्र सूरिजी नन्दीश्वरद्वीप बिंबप्रवेश प्रतिष्ठित श्रीमत्तपागच्छे श्री गाम वड़नगर दो० पानचन्द जयचन्द स्थापित ।

सिहोर-काठियावाड़।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मंदिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1735]

सं० १४७० वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० मं० रत्ना ना० रजाई पु० सं० सहस्रकिरण भार्या धरणू सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिभिः। बलासर वास्तव्य॥

[1736]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व० तयरा भा० वाबू सुत माणा वड़ीय गोत्र भा० हांसू सु० वीरा भा० बांऊलदे सुत खालु काएहु वानर एनै जिनपितृमातृ श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गछे भ० ····।

[1737]

सं० १५३६ वर्षे पोष वदि ···· गुरू श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० टोइया भा० लखा सुत पर्वत भ्रातृ कमि श्रेयोर्थं जीवितस्वामी श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्री आगमगछे श्री श्री सिंघदत्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि।

पालीताना।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—माधोलालजी की धर्म्मशाला।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1738]

संवत् १५९५ वर्षे माह शुदि १२ शुक्रे आणंदविमल सूरि बा० चन्दा भा० माहवजी श्रीवजदेव (?) ····॥

[1739]

संवत् १६०० [पो]स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नाथुजी-केन धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1740]

संवत् १६२६ वर्षे फाल्गुण सुदि ८ सोम उस० ज्ञा० व्य० .... श्री सुमतिनाथ बिंबं .... हीरविजय सूरिः .... ।

[1741]

संवत् १६७० वर्षे माघ सुदि २ दिने ब। इन्द्राणीता (?) श्री श्री आदि बिंबं का० प्र० तपागछे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

[1742]

संवत् १६८७ वै० शु० ५ शु० स .... ।

[1743]

संवत् १७०२ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्रे श्री अंचलगछाधिराज पूज्य भट्टारक श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुपदेशेन श्री दीव बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय नाग गोत्रे मंत्रि विमल सन्ताने मं० कमलसी पुत्र मं० जीवा पुत्र मं० प्रेमजी सं० प्रागजी मं० आणंदजी पुत्र केशवजी प्रमुखपरिवारयुतेन स्वपितृ मं० जीवा श्रेयोऽर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन ।

[1744]

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी भार्या बाई मनरंगदेकेन मुनि-सुव्रत बिंबं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि ।

[1745]

सं० १७९८ वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० खिमचंद भार्या विश्व श्री अनन्त बिंबं प्र० भ० श्री विजयऋद्धि सूरि ।

[1746]

संवत् १८४... ॥ फाल्गुण सुदि २... वासरे ठदिने श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० बाई श्रीमी जरावती ॥

[1747]

दो० बाघा श्री जीराउलाउ श्री पार्श्वनाथ ।

[1748]

बा० हीराई श्री शान्तिनाथ .. श्री हीरविजयसूरि प्र० ॥

[1749]

संवत् १९०३ वर्षे माघ विदि ५ शुक्रे श्री चन्द्रप्रभ बिंबं करापितं श्रीमालि वंशे शा० अनोपचन्द तस्य भार्या बाई नाथी अंचल गछे ॥

श्री सिद्धचक्र यन्त्र पर ।

[1750]

संवत् १९५४ ना वर्षे माघ विदि ५ चन्द्रे श्री तपागछे बाई फूली तस्या पुत्री बाई जवल श्री सिद्धचक्र करापितं पं० पद्मविजैः (?) प्रतिष्ठितं श्री राजनगर मध्ये ।

चौवीसी पर ।

[1751]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख विदि ७ रवौ श्री सीरूंज वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० वाला भा० मानूं सुत श्रेष्ठि समधरेण भा० जासी भा० धर्म्मादे सुता लाली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्टितः श्री तपागछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे गछनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1752]

सं० १४३९ (?) ... प्राग्वाट ज्ञातीय शा० हाला भार्या दानू सुत शा० डुंगरेण

श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री देवचन्द्र सूरिभिः।

[1753]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ़ सुदि १० शुक्रे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० पींचा भार्या लाखणदे तयोः पुत्रैः श्रे० वीरम भीटा भीमाख्यैः मातृपितृश्रेयोऽर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे वृद्धशाखायां श्री जिनरत्नसूरिभिः। श्री सहूआला वास्तव्य।

[1754]

सं० १५१२ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आसपाल भा० पचू पुत्र धना भा० चमकू पुत्र माधवेन भा० वाल्ही भ्रातृ देवराज भा० रामकी देपालादियुतेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्र० तपागच्छेश श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचन्द्र सूरिशिष्य श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः॥ श्री॥

[1755]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ़ सुदि १० बुधे ऊकेश वंशे लुंकड गोत्रे शा० गुजर पु० शा० देवराज पु० आसा पु० शा० समधरेण स्वमातृ चांई पुण्यार्थं श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्री विवेकरत्न सूरिभिः।

[1756]

सं० १५१८ वर्षे वैशाख सुदि १३ सवांरि वासि प्रा० सा० जावड़ भा० वारू सुत हरदासेन भा० गोमती भ्रातृ देवा भा० धर्मिणियुतेन श्रेयोऽर्थं श्री सुमति बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1757]

सं० १५१९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यव० गहगा भार्या वाल्ही आत्मश्रेयोऽर्थं जीवतस्वामी श्री अजितनाथ मुख्य पंचतीर्थी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री राजतिलक सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं॥ जाबू वास्तव्य।

[1758]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० गोपाल भा० सखी सु० पोमाकेन भा० रमकू श्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षे भ० श्री सागरतिलक सूरि पट्टे भ० श्री गुणतिलक सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[1759]

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय शा० राजा भा० राजबदे सु० स० शाह गिरूया भार्या राजाई तया सु० पासा जीवायुतया स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं श्री आगम गच्छे श्री जयानन्द सूरि पट्टे श्री देवरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठापितं च ॥ शुभं भवतु ॥ श्री स्तम्भतीर्थे ॥ ७४ ॥

[1760]

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय म० देवसी भा० देल्हणदे पुत्र सहिजाकेन भा० धनी पुत्र गंगदास सचू हांसा भ्रातृ कीपा प्रमुखकुटुम्बयुतेन पितृनिमित्तं स्वश्रेयसे च श्री कुन्थुनाथ बिंबं श्री पूर्णिमापक्षे श्री सौभाग्यरत्न सूरिणामुपदेशेन का० प्र० विधिना श्री लीवासी ग्रामे ॥

[1761]

सं० १५५२ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय प० सधा भा० अमकू सु० प० मूलाकेन भा० हांसी सु० हर्षा लषा सहितेन स्वश्रेयोऽर्थं श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपापक्षे भ० श्री उदयसागर सूरिभिः ॥ श्री पत्तने ॥

[1762]

सं० १६३७ वर्षे माघ वदि ९ शनौ श्री दीव वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखामण्डन श्रे० कावा भा० कामलदे सुत कक्की भार्या हर्षादे सुत सचवीर भार्या सहिजलदे सुत हीरजी भार्या हीरादे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे श्री हीरविजयसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[1763]

सं० १६५१ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ४ गुरौ दो० वेधराजकेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे श्री हीरविजयसूरिश्वरैः भार्या मोलादे सुत धनजी प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री दीवबन्दिर वास्तव्येन ॥ श्री रस्तु ॥

[1764]

सं० १६५६ वर्षे फाल्गुण वदि २ गुरौ दीवबन्दिर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय बाई मनाईकया निजश्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिराज परम-गुरु श्री ६ विजयसेन सूरिभिः परिकरसहितैः ।

शत्रुंजय तीर्थ ।

दिगम्बर मन्दिर ।

श्री शान्तिनाथजी की मूर्त्ति पर ।

[1765] *

सं० १६७६ वर्षे वैशाष सुदि ५ बुधे शाके १५५१ वर्त्तमाने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारकगणे श्री कुंदकुंदान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री भुवन-कीर्त्ति देवास्तत् पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री वादिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री पद्मनन्दि गुरूपदे-शात् पादशाह श्री साहजांह विजयराज्ये श्री गुर्जरदेशे श्री अहमदाबाद वास्तव्य हुंबड़ ज्ञातीय वृहद्शाखीय वाग्वर देश स्थातरीय नगर नौतनचन्द्रप्रसादोद्धरणधारजाज (?) सं० भोजा भा० सं० लक्कु सं० संवस्ता भा० सं० रनादे तयोः सुत ब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालनेन

* यह लेख "जैन मित्र" माघ वदी २ वीर सं० २४४७ के अङ्क से मिला है।

पवित्रीकृतनिजांग सप्तक्षेत्रारोपितस्वकीयवित्त सं० छटकणा भा० सं० ललतादे तयोः सुत जिनकुलकमलविकाशनैकसूर्यावतारः दातृगुणेन नृपतिश्रेयांससमः श्री जिनबिंब-प्रतिष्ठातीर्थयात्रादिधर्म्मकर्म्मकरणौत्सुकचित्त संघपति श्री रत्नसी भा० सि० रुपादे द्वि० भा० सं० मोहणदे तृतीय भा० सं० नवरंगदे द्वितीय सुत संघवी श्री रामजी भा० सं० केशरदे तयोः सुत संघवी कूंगरसी भा० सं० भाऊसदे द्वितीय सुत संघवी शुक्रमती भा० सं० मसतादे एतेषां महासिद्धक्षेत्र श्री सेत्रुंजय रत्नगिरौ श्री जिनप्रासाद श्री शांतिनाथ बिंबं कारयित्वा नित्यं प्रणमति। शुभं भवतु।
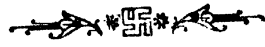
चोरवाड़–जुनागढ।

जैन मन्दिर।

शिला लेख।

[1766]

१। सुरमण्डलविशाल नगर श्री चोरवाटके रुचिरचिंतामणि पार्श्वनाथ विभोश्च पद-
रजस्य तत् सुत व-

२। सी। सायर तनयौ। आंबाख्यस्तत्र चादिमो गुणवान्। द्वितीयो मनाभिधानो जिन-
धर्म रतः कृपावासः ॥ २ ॥ आं

३। बाख्यस्य तनुजः सुविवेकः समरसिंह इत्याह्वः। देवगुरुभक्तिपरमः तत् सूनु चैत्र-
पालाख्यः ॥ ३ ॥ श्री

४। सं० १५२९ वर्षे वैशाख सुदि तृतीया गुरौ। श्री मंगलपुर वास्तव्य। श्री उसवाल
ज्ञातीय सोनी साय-

५। रजनदे सुत सोनी आंबा भार्या बाई सहित सुत सोनी समरसी भार्या मनाई अपर
भार्या ललबाई

६। त० सोनी जयपाल भार्या मृगाई ॥ ततः ॥ सोनी सायर भार्या बाई बाकू सुत सोनी मना भार्या बाई

७। बरजू सुत सोनी श्रीवंत सोनी जयवंतो। सपरिजनसहितेन ॥ सोनी समरसिंह भार्या बाई पाही-

८। सहितेन ॥ एतै श्री चारवाड पुरे वर (?) ॥ निजभुजोपार्जितधनकृतार्थहेतोः ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वना-

९। थ चैत्यं कारापितं ॥ श्री बृहत्तपागछे भट्टारक श्री जयचन्द्र सूरि पट्टावतंस ॥ भट्टा० श्री जिन-

१०। सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री जयसुन्दर गणि शिष्य महोपाध्याय श्री संवेगसुन्दर गुरूपदेशेन ॥ प्र-

११। तिष्ठितं चेति कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥

घोघा-काठियावाड़।

श्री सुविधिनाथजी का मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1767]

॥ ॐ सं० ११६१ माघ ११ श्री नागेंद्रकुले श्री विजय तुंगसूरि....।

[1768]

सं० १५०३ धर्म्मप्रभ सूरि त० पट्टे श्री धर्म्मशेखर सूरिभिः शुभं भवतु आराधकस्य।

[1769]

सं० १५१७ वर्षे महा सुदि ५ शुक्रे श्रेष्ठि नरपाल भा० कडुई तेषां सुता सामंत हेमा

रोका षीमा स्वभार्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री आगम गच्छे श्री आनन्दप्रभ सूरिभिः आबरणि वास्तव्य ।

[1870]

सं० १५३६ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ श्री ओसवाल ज्ञाती सा० पाला भार्या वरुघू सुत गोविन्द भा० गंगादे नाम्ना आत्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० बृहत्तपा पक्षे भ० जिनरत्न सूरिभिः

[1771]

सं० १५५५ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ घनौघ वास्तव्य श्री उसवाल ज्ञा० सा० गोगन भा० गुरदे सुत हांसाकेन भा० कस्तुराई सहितेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० श्री बृहत्तपा गच्छे भ० श्री धर्म्मरत्न सूरिभिः ।

[1772]

सं० १५५५ वर्षे वै० सु० ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मनोरद भा० मांकी सु० वाहराज भा० जीविनी सु० देवदासेन भा० दगा सु० पासा करन धर्मदास सूरदास युतेन श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री अंचलगच्छे श्री सिद्धांतसागर सूरि गुरूपदेशात् ।

[1773]

सं० १५५७ वर्षे पोष वदि ६ रवौ घनौघ वासी श्री श्रीमाल ज्ञा० सा० माईया भा० जीवी सुत कानाकेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे श्री लक्ष्मी-सागर सूरिभिः । श्रेयो भवतु पूजकस्य ।

[1774]

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ११ शुक्रे श्री श्रीवंशे मं० माईया सुत मं० मूला भा० रमा सुश्राविकया सुत मं० धना मेघा रामा सहितया निजश्रेयार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० धर्मवल्लभ सूरिभिः श्री जांबू ग्रामे ।

चौविशी पर ।

[1775]

सं० १५१२ वर्षे फा० शु० शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० कह्वा भार्या राजुल सुत सिंह-राज मं० विरुपाकेन पितृमातृभ्रातृश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री त० गुणसुंदर सूरिभिः ।

[1776]

सं० १५२४ वर्षे आ० सुदि १० शुक्रे श्री श्रीवंशे मं० सांगन भा० सोहागदे पुत्र मं० वीरधवल भा० गुरी पु० खेतसी जन्मनाम्ना जूठाकेन मं० भार्या जयतलदे भ्रातृ काला चडथा भारपुत्र भोजा देवसी धीरा प्रमुखसमस्तकुटुम्बसहितेन तत्पितृश्रेयोर्थं श्री अंचल-गच्छेश्वर श्री जयकेसरी सूरीणामुपदेशेन श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री श्री-संघेन श्री सिहुंदड्डा ग्रामे ।

शीयालबेट-काठियावाड़ ।

जैन मंदिर ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1777]

१। ॐ संवत् १२७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ अद्येह

२। टिंबानके मिहरराज श्री रणसिंह प्रतिपत्तौ समस्तसंघेन श्री महावी-

३। र बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्रगच्छीय श्री शान्तिप्रभ सूरि शिष्यैः श्री हरिप्रभ सूरिभिः ॥

[1778] *

ए० ॥ सं० १३०० वर्षे वैशाष वदि ११ बुधे श्री सहजिगपुर वास्तव्य पल्ली० ज्ञातीय ठ० देदा भार्या कमूदेवी कुक्षिसंभूत परी० महीपाल महीचन्द्र तत् सुत रतनपाल विजय-पालैर्निजपूर्वज ठ० शंकर भार्या लक्ष्मी कुक्षिसंभूतस्य संघपति मूधिगदेवस्य निजपरि-वार सहितस्य योग्यं देवकुलिकासहितं श्री मल्लिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्र-गच्छीय श्री हरिप्रभ सूरिशिष्यैः श्री यशोभद्र सूरिभिः ॥ छ ॥ मंगलमस्तु ॥ छ ॥

[1779] *

सं० १३१५ फाल्गुण वदि ७ शनौ अनुराधा नक्षत्रे अद्येह श्री मधुमत्यां श्री महावीर देवचैत्ये प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि आमदेव सुत श्री सपाल सुत गंधि चिल्लाकेन आत्मनः श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव बिंबं कारितं चन्द्रगच्छे श्री यशोभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1780] *

सं० १३२० माघ सुदि .... गुरौ प्राग्वाट ज्ञात .... प्र व्य० वीरदत्त सुत व्य० जाला भार्या माऊिकया स्वश्रेयोर्थं रांकागच्छीय श्री महीचन्द्र सूरिभिः महावीर चैत्ये श्री ऋषभदेव बिंबं कारितं ।

* वहां के गोरखमण्डी में भोयरे के पास पड़े हुए मूर्तियों पर ये लेख हैं।

JAMNAGAR TEMPLE PRASHASTI - Dated, V. S. 1697 (A. D. 1640)

जामनगर-काठियावाड़ ।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर—वर्द्धमान सेठवाला ।

शिला लेख

[1781]

(शिरोभाग) जाम श्री लक्षराजराज्ये ॥

१ । ॥ ए८० ॥ श्री मत्पार्श्वजिनः प्रमोदकरणः कल्याणकंदांबुदो । वि.
२ । घ्नध्वाधिहरः सुरासुरनरैः संस्तूयमानक्रमः ॥ सर्प्पांको भविनां म.
३ । नोरथतरुव्यूहे वसंतोपमः । कारुण्यावसथः कलाधरमुखो नी-
४ । लछविः पातु वः ॥ १ ॥ क्रीड़ां करोत्यविरतं । कमलाविलास । स्थानं
५ । विचार्य कमनीयमनंतशोभं । श्री उज्जयंतनिकटे विकटाधिना.
६ । थे । हाल्लारदेश अवनि प्रमदाललामे ॥ २ ॥ उत्तुंगतोरणमनोहर-
७ । वीतराग । प्रासादपंक्तिरचनारुचिरीकृतोर्व्वी । नंद्यान्नवीनग-
८ । री क्षितिसुन्दरीणां वक्ष(:)स्थले लसति सारि लसंनिकेव ॥ ३ ॥ सौराष्ट्रना-
९ । थः प्रणतिं विधत्ते । कच्छाधिपो यस्य जयाद्विनेति । अर्द्धासनं यच्छति मालवेशो
१० । जोव्याद्दयशोजितुस्वकुलावतंसः ॥ ४ ॥ श्रीवीरपट्टक्रमसंगतोऽभूत् भाग्या-
११ । धिकः श्रीविजयेंदुसूरिः । श्रीमंधरैः प्रस्तुतसाधुमार्ग्गश्चक्रेश्वरोदत्तवरप्रसा-
१२ । दः ॥ ५ ॥ सम्यक्त्वमार्ग्गो हि यशोधनाह्वो । दृढ़ीकृतो यत् सपरिग्रहोऽपि ।
१३ । संस्थापित श्रीविधिपक्षगच्छः । संघैश्चतुर्धा परिसेव्यमानः ॥ ६ ॥ पट्टे तदीये ज-
१४ । यसिंहसूरिः । श्री धर्म्मघोषोऽथ महेंद्रसिंहः । सिंहप्रभश्चाजितसिंहसूरि ।
१५ । देवेंद्रसिंहः कविचक्रवर्त्ती ॥ ७ ॥ धर्म्मप्रभः सिंहविशेषकाह्वः । श्री मा-

* जामनगर का सेठ वर्द्धमान शाहका बनाया हुआ प्रसिद्ध मन्दिर का यह लेख वहां के पण्डित हीरालालजी हंसराजजी ने अपने "जैनधर्म्म नो प्राचीन इतिहास" नामक पुस्तक के २ य भाग के पृष्ठ १७७-१७८ में अक्षरान्तर छपवाया था, आचार्य महाराज मुनि जिनविजयजी ने अपने "प्राचीन जैन लेख संग्रह" के २ य भागमें पृष्ठ २१६ से २१८ में प्रकाशित किया है, परन्तु मूल शिलालेख की प्रत्येक पंक्तियां दोनोंमें स्पष्ट नहीं है इस कारण यहां पुनः प्रकाशित किया गया।

१६ । न् महेंद्रप्रभसूरिरार्य्यः ॥ श्रीमेरुतुंगोऽमितशक्तिमांश्च । कीर्त्यद्भुतः श्री ज-
१७ । यकीर्त्ति सूरिः ॥ ८ ॥ वादिद्विपौघे जयकेसरीशः । सिद्धांतसिंधुर्भुवि ना-
१८ । वसिंधुः । सूरीश्वरश्रीगुणशेवधिश्च । श्री धर्म्ममूर्त्तिर्मधुदीपमूर्त्तिः ॥ ९ ॥
१९ । यस्यांघ्रिपंकजनिरंतरसुप्रसन्नात् । सम्यक्फलंतिसमनोरथवृक्षमालाः ॥ श्री-
२० । धर्म्ममूर्त्तिपदपद्ममनोज्ञहंसः । कल्याणसागरगुरुर्जयताद्धरित्र्यां ॥ १० ॥
२१ । पंचाणुव्रतपालकः स करुणः कल्पद्रुमानः सतां । गंभीरादिगुणोज्वलः शु-
२२ । भवतां श्रीजैनधर्म्मे मतिः । हे काले समतादरः क्षितितले श्री ओसवंशे विभुः
२३ । श्रीमल्लालणगोत्रजो वरतरोऽभूत् साहि सीहानिधः ॥ ११ ॥ तदीय पुत्रो हरपालना-
२४ । मा देवाद्यनंदोऽथ स पर्वतोऽभूत् । वभुस्ततः श्रीअमरासु सिंहो । भाग्याधिकः कोटि-
२५ । कलाप्रवीणः ॥ १२ ॥ श्रीमतोऽमरसिंहस्य । पुत्रामुक्ताफलोपमाः । वर्द्धमानचांपसिंह
२६ । पद्मसिंहा अमीत्रयः ॥ १३ ॥ साहि श्री वर्द्धमानस्य । नंदनाश्चंदनोपमाः । वीराह्वो
२७ । विजपालाख्यो भामो हि जगडूस्तथा ॥ १४ ॥ मंत्रीश पद्मसिंहस्य । पुत्रारत्नोपमा
स्त्रयः ।
२८ । श्रीश्रीपालकुंरपाल । रणमल्ला वरा इमे ॥ १५ ॥ श्रीश्रीपालांगजो जीया । नारायणो
मनो-
२९ । हरः । तदंगजः कामरूपः कृष्णदासो महोदयः ॥ १६ ॥ साहि श्रीकुंरपालस्य । वर्त्तते
ऽन्व-
३० । यदीपकौ । सुशीलस्थावराख्यश्च । वाघजिद्भाग्यसुन्दरः ॥ १७ ॥ स्वपरिकरयुताभ्याममं-
मात्य-
३१ । शिरोरत्नाभ्यां साहि श्रीवर्द्धमानपद्मसिंहाभ्यां हल्लारदेशे नव्यनगरे जाम श्रीशत्रु-
शल्यात्मज
३२ । श्री जसवन्तजी विजयिराज्ये श्री अंचलगच्छेश श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुप-
देशेनात्र श्री शां-
३३ । तिनाथप्रासादादिपुण्यकृत्यं श्रीशांतिनाथप्रभृत्येकाधिकपंचशतप्रतिमाप्रतिष्ठायुगं कारा-

३४। पितं चाद्या सं० १६७६ वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे द्वितीया सं० १६७० वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवासरे

३५। सं० १६०७ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ गुरुवासरे उपाध्याय श्रीविनयसागरगणेः शिष्य सौभाग्यसागरैः

(अधो भाग)

३६। रत्नखीयं प्रशस्तिः॥ मनमोहनसागरप्रासाद

(वाम भाग)

३७। मंत्रीश्वर श्रीवर्द्धमान पद्मसिंहाभ्यां सप्तलक्षरूप्यमुद्रिकाव्ययीकृतानवक्षेत्रेपु साहि श्रीचांपसिंहस्य पुत्रैः श्रीअमियाभिधः। तदंगजौ शुभमती। रामजीमावुभावपि १० ॥

श्री आदीश्वरजी का मन्दिर।

[1782]

१। ॐ श्री गौतमस्वामीनि लब्धि ॥ भ-
२। ट्टारक चक्रवर्त्ति भट्टारक श्री
३। हीरविजय सूरीश्वर चरण पादु
४। काभ्यो नमः॥ सं० १६३३ वर्षे परम
५। गुरु श्रीमत्तपागच्छाधिराज सकल-
६। भट्टारकपुरंदर भट्टारक श्री हीरवि-
७। जय सूरिराज्ये तथा जाम श्री शत्रशल्य
८। राज्ये प। श्रीरविसागर गणि विशिष्यो
९। पदेशेन नवीननगर सकल संघ मु-
१०। खसंघेन स्वश्रेयसे नवीनशिख-
११। रं बध्वा प्रासादः कारितः॥ ततो अक-
१२। बर सुरत्राण प्रेषित मुग्गलैरुप-
१३। द्रवकरणान्तरं भट्टारक श्री श्री
१४। हीरविजय सूरि पट्टोदयाद्रिदिन-
१५। कर भट्टारक श्री ५ श्री विजय से-
१६। न सूरिराज्ये॥ सं० १६५१ वर्षे
१७। श्री श्रीमाली ज्ञातीय। भणसाली
१८। आणन्द भणसाली अबजीभ्यां
१९। भणसाली आणन्द सुत जीवरा-
२०। ज मेघराज प्रमुखसकलकुटुं-
२१। बयुताभ्यामेक त्रिंशत् सहस्र
२२। ३१००० रौप्य मुद्राव्ययेन पुनर-
२३। पि तथैव कारितं। सांप्रतं विज-
२४। यमान आचार्य श्री श्री श्री ३ श्री

२५। विजयदेव सूरीश्वर प्रसादात्। २६। चिरं तिष्टतु। शिवमस्तु सकल सं-
२७। घस्य ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ आदिनाथ २८। आवां कृतः। प्रासादनामत्रिजयभूषणः
प्रासादः

तालाजा-काठियावाड़।

पाषाण के चरणचौकी पर।

[1783]*

ॐ सं० १२०२ वैशाख सु० ३ धवल्लकक्का वास्तव्य ठ० पद्मसीह सुत ठ० जाला ठ० मदन जयता तेन ॥ ठ० मदन भार्यां ठ० लक्ष्मा देवी श्रेयोर्थं सुत ठ० पाल्हणेन श्री महा. वीर बिंबं पट्टकं च प्रतिष्ठितं आचार्य श्री माणिक्य सूरिभिः।

[1784]

सं० १२१९ वर्षे दण्ड श्री धांध प्रभृति पञ्चकुलेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी देवा
२ .... णि .... पा विशेषपूजाप्रत्ययमण्डपिकायां प्रतिवर्षां हो
.... द्र (२) ४ चतुर्विंशतिद्रम्मा:। द्र० खवमादेश.। बहुभिर्वसु
४ [धा भुक्ता] राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य
तदा फलं ॥ १ ॥ तथा समस्तप्रमदाकुलाय श्र .... पूर्णिमादि
६ .... (रके) ४ चत्वारि द्रमाश्च ॥ पञ्चकुलसमक्षे देवद....
७ .... द्र ४ पींजाक—द्र ३४ रक्तपटा
८ —मजाय

* यह लेख तलाजा से पूर्व में हजूरापीर की कबर से मिली हुई मूर्तिरहित पाषाण की चरण चौकी पर है और भावनगर बार्टन लाइब्रेरी के म्युजियम में सुरक्षित है।

माङ्गरोल-काठियावाड ।

पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1785] *

१ । ॐ ॥ सं० १२५३ वर्षे आषाढ़ सुदि ४ शनौ ठ० चाविगव महं वस्त्रराजे(न आ)त्म-
श्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामि प्रतिमा

२ । कारिता प्रतिष्ठिता च श्री देवचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥
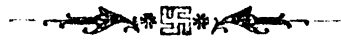
वेरावल-काठियावाड ।

शिला लेख ।

[1786] †

१ । ········ ङ्गिवम्नाति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ श्रे(?) प्रपा(सा) दनीष्ट संसिद्ध्यै
मुखं चन्द्रप्रभं ····

२ । ······ ल्ल पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ ॥ मन्ये वेधा विधायैतद्विविधिस्सुः
पुनरीह ···· दे

३ । ········· रेन्द्रैस्त्रयमंत्रैर्यत्रलक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥ ५ ॥ तन्निःशेषमहीपालमौलीः
घृष्टांघ्रि

४ । सौ नृपः । तेनोत्खातासुन्मूलो मूलराजः स उच्यते ॥ ७ ॥ एकैकाधिकभूपाला
सम ····

५ । ···· सव्रजखुराहतं । अतुछलत्युयं पर्वव्रममजीजनत् ॥ ९ ॥ पौरुषेण प्रज्ञापेन
पुण्येन ···

* यह लेख रावली मसजीद के पास खुदाई में निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है ।

† यह लेख वहां के फौजदारी उतारे में रखा हुआ है ।

६ । ······· र न्यूनविक्रमः । श्री जीमन्नूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्ययं ॥ ११ ॥ जावाङ्कराएयनम्राणि यो वसङ्गम(वज्रजम)

७ । ···· न्नंदि संघे गणेश्वराः । बन्नूबुः कुंदकुंदाख्या साक्षात्कृतजगत्रयाः ॥ १३ ॥ येषा-माकाशगामित्वं त्य ।

८ । ······ शत(पं)चकमुज्वलं । रमयित्वाथ जन्मांतियेऽन्यन्नियमपुर्वकं ॥ १४ ॥ कालेऽस्मिन् जारते क्षेत्रे जाता

९ । ···· रीणा तत्व वर्त्मनि तेषां चारित्रिणो वंशे जूरयः सूरयोऽजवन् ॥ १७ ॥ सद्दूषाव्य-पि निर्दूषाः सकलापंकः

१० । प्रज्ञा यस्या रुरोह तत् । श्रीकीर्त्ति प्राप्य सत्कीर्त्ति सूरिं जूरिगुणं ततः ॥ १९ ॥ यदीयं देशनावारिं सम्यग् वि(प्रो)

११ । ········ कश्चित्रकूटाच्च चावसः श्रीमन्नेमिजिनाधिशः तीर्थयात्रानिमित्ततः ॥ २१ ॥ अणहिल्लपुरं रम्यमाजगा

१२ । ···· नींड्राय ददौ नृपः । विरुदं मएफलाचार्यः सछत्रं समुखासनं ॥ २३ ॥ श्रीमुखवसंति-काख्यं जिनजवनं तत्र

१३ । ···· संज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचन्दोयस्ततो जूत् स गणीश्वरः ॥ २४ ॥ चारु कीर्त्तियशः कीर्त्तिश्च

१४ । ········ युक्तो को रत्नत्रयवानपि । यथावद्विदितात्मां साजूत् क्षेमकीर्त्तिस्ततो गणि ॥ २७ ॥ उदतिस्म ललद्ज्योति

१५ । ····· लेपिवासिते हेमसूरिणा वस्तू प्रायरणं येन वशे ···· लेयिनं ॥ २९ ॥ ····· पू ····

१६ । ············ कीर्त्तिर्यत्कीर्त्तिर्न्नर्त्तको व ···· । त्रिजुवनरा ···· वासुकिं नूपुरशशितिलक-निपथ्या ॥ ३१ ॥ ते

१७ । ···· ति ॥ ३२ । समुद्धृतसमुच्छन्नश्चीर्णजीर्णजिनालयः । यः कृता रत्ननिर्वाहेसमुत्साह शिरोमणि

१८। .... शयैरवगण्यते ॥ ३४ ॥ वादिनो यत्पद द्वन्द्वनखचन्द्रेषु विंबिताः। कुर्वते विगत श्रीकाः कलंक

१९। ... दं तीर्थभूतमनादिकं ॥ ३६ ॥ सीतायाः स्थापना यत्र सामेशः पक्षपातकृत्। प्रभो-स्त्रैलोक्य

२०। ....तदुच्छ्रृततेन जातोद्धारमनेकशः ॥ ३८ ॥ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजभुजमुद्धृत्य सक

२१। .... षतो मंडलगणि ललितकीर्त्ति सुकीर्त्तिः। चतुरधिकविंशति जसध्वजपटपट्टहंसूक॥

२२। ..... मेतदीय सभोष्ठिकानामपि गच्छकानां ॥ ४१ ॥ यस्य स्तानपयोनुलिप्तमखिलं कुष्ठं दूवी

२३। .... चन्द्रप्रभः स प्रभुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद्दिग्व्यसस्तां शासनं ॥ ४२ ॥ जिन पतिगृह

२४। .... चाणवर्णिवर्यो व्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैरुपेतैः ॥ ४३ ॥ श्रीमद्विक्रम नृपस्य वर्षाणां द्वादशे

२५। .... क कीर्त्ति लघुबंधुः। चक्रे प्रशस्तिः मनघो गणि .... प्रवरकीर्त्तिरिमां ॥ ४५ ॥ सं० १२ ....

जैन मंदिर।

शिला लेख।

[1787]

१। ॥ ऐं ९० ॥ संवत् १८७६ वर्षे शाके १७४१ प्रवर्त-
२। माने माघ मासे शुक्लपक्षे अष्टमी तिथौ शनिवा-
३। सरे श्री देवका पाटण नगरे श्री चन्द्रप्रभ जि-
४। न जीर्णोद्धार समस्त संघेन कारापितं भट्टार-
५। क श्री श्री विजयजिणेन्द्र सूरि उपदेशात् श्री
६। मांगरोर वास्तव्य शा० नानजी जयकरण
७। सुत मकनजी ॥ ८ ॥ सुन्दरजीकेन जीर्णोद्धा-

८। र प्रतिष्ठा कारापितं भट्टारकं श्री श्री विजय-
९। जिणेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागछे
१०। जब लग मेरु अडग है तब लग शशि ओ-
११। र सूर। जिहां लग ए पट्टक सदा रहजो स्थि-
१२। र भरपूर १ लि। वजीर ज्योति लोकविजयेन।

गाणेसर-गुजरात।

जैन मन्दिर।

शिला लेख।

[1788]

१। ॥ ९० ॥ स्वस्ति सं० १२११ वर्षे वैशाख सुदि १४ गुरौ श्रीमदणहिलपुर वास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० (चं)
२। डप्रसादांगज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आशाराज तनुजन्म ठ० श्री कुमारदेवी-कुक्षिसमुद्भूत ठ० लूणि(ग)
३। महं० श्रीमालदेवयोरनुजमह० श्री तेजःपालाग्रज महामात्य श्री वस्तुपालात्मज महं० श्री जयतासिंह (स्तम्भ)
४। तीर्थमुद्राव्यापारं सं ३९ वर्ष पूर्वं व्यावृण्वति महामात्य श्री वस्तुपाल महं० श्री तेजःपालाभ्यां समस्तमहातीर्थेषु
५। तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्म्मस्थानानि जीर्णोद्धाराश्च कारिताः तथा सचिवेश्वर श्री वस्तु-
६। पालेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउभि ग्रामे प्रपा श्रीगाणेश्वरदेवमण्डपः पुरतस्तोरणं (अपर)तः प्रतोलीद्वारालं(कृ)

७। त प्राकारश्च कारितः ॥ ७ ॥ गांभीर्ये जलधिर्वलिर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः सौन्दर्ये पुरुषव्रते रघुपति र्वाचस्पतिर्वा ....

८। ये। लोकेऽस्मिन्नुपमानतामुपगताः सर्वे पुनः सम्प्रति प्राप्तास्तेऽप्युपमेयतां तदधिके श्री वस्तुपाले सति ॥ १ ॥ विद(धति)

९। विदग्धमतयस्तुल्यौ कौटिल्यवस्तुपालौ ये। ते कुर्वते न कस्मात्कूपाकूपारयोः समतां ॥ २ ॥ वदनं वस्तुपाल(स्य)

१०। कमलं को न मन्यते। यत् सूर्यालोकने स्मेरं भवति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥ श्री वस्तुपाल सम्प्रति परं महति कर्म(कुर्व)

११। ता भवता। निर्वृतिरर्थिजने च प्रत्यर्थिजने च संघटिता ॥ ४ ॥ तस्मै स्वस्ति चिरं चुलुक्यतिलकामात्याय ....

१२। क्रान्तक्रतुकर्म्मनिर्म्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति। राधे येन विना विना च शिविना [.... य ना [....

१३। दत्तासित मम्मटाः स्वसदनं गच्छंति सन्तः सदा ॥ ५ ॥ महामात्य श्री वस्तुपालस्य प्र(शस्तिरियं) ....

प्रभास पाटण - गुजरात।

बावनजिनालय मन्दिर।

मूर्त्तियों पर।

[1780]

१। ठ० हीरा देवि पितृ० वीरदेव मातृ सक्कं संघ० पेथड संघ० कुञ्जरा संघ० पदमेल मह० वि(कम)सी वयजलदेवि मह० आल्हणसीह मह० महणसीह व्यव० लापण सो० महिपाल मातृ सक्क

२। ठ० रत्न ठ० लूणी ॥ ठ० ॥ षीमसीह श्रे० डोकर भ० धउलसीह ठ० धांध श्रे० आमुल नागल श्रे० नागसूर राजअ सा० वस्तुपाल धांधलदेवि ठ० बरदेव ठ० महतू

३। फो० रिणसीह ठ० महणा बड़हरा अरसीह राजपाल श्रे० रतना भा० रामसीह मातृ लक्ष्मी कमरुसी दो० लूणा ठ० पाता श्रीयादेवी सूहव ठ० पतसीह ठ० सिरी

४। ठ० सीहा ॥ मातृ० वाल्हिणि ठ० वयरसीह फो० धरणिग धाधलदेवि राजल ॥ बा०ईं बा० तेजी ठ० तिहुणपाल ठ० लाछि फो० मूणा सुपल प ठ्ठा० सोवल कामलदेवि ठ० लषमीधर।

चरणचौकी पर।

[1790] *

१। ॥ ए० ॥ सं० १६एए वर्षे फाल्गुन सित द्वादशी सोमवासे श्री द्वीप बन्दिर वास्तव्य वृद्धशाखीय ऊकेश ज्ञातीय सा० सुहुणसी भार्या संपूराई सुत सा० सिवराज नाम्ना श्री कुंकुमरोल पार्श्व बिंबं सपरिकरं कारितं प्रतिष्ठितं च स्वप्रतिष्ठायां। प्रति-

२। ष्ठितं च तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री १ए श्री हीरविजय सूरीश्वर पट्टालंकार भ० श्री १ए श्री विजयसेन सूरीश्वरपट्टप्रभाकर भट्टारक प्रभु श्री १ए श्री विजयदेव सूरिभिः। स्वपट्टप्रतिष्ठिताचार्य श्री ५ श्री विजयसिंह सूरिभिः साश्रा(?)स्वशिष्योपाध्याय श्री ५ श्री लावण्यगणिप्रमुखपरिकरितैः ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

[1791] †

१। सं० १३३० वैशाख सुदि(२) शनौ पल्लीवाल ज्ञातीय ठ० आसाढ़ ठ० आसापल्लाभ्यां भा० जाल्हू श्रेयोर्थं

२। श्री मल्लिनाथ बिंबं ठ० आसपालेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णभद्र सूरिभिः।

[1792] †

१। ॥ ॐ सं० १३४० ज्येष्ठ वदि १० शुक्रे पल्लीवाल... भा० वीरपाल भ्रा० पूर्णसिंह भा० वय-

* यह लेख जमीन से निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है।

† मल्लिनाथ महादेव के मन्दिर के पास पड़ी हुई खण्डित मूर्तियों पर ये लेख है।

२। जलदेवि पु० कुमरसिंह केलिसिंह भा० त०····आत्मश्रेयोर्थं ॥ श्री पार्श्वनाथ बिंबं का-
३। रितं प्रतिष्ठितं श्री कोरंटकीय ····· सूरिभिः शुभं ॥

खंभात-गुजरात।

श्री आदीश्वर भगवान का मन्दिर।

शिला लेख

[1798]

१। ॥ ए० ॥ ॐ नमः श्री सर्वज्ञाय ॥ धीराः सत्वमुशंति यन्निभुवने (यन्नेति) नेति श्रुत साहित्योपनिषन्नि
२। पएणमनसो यत् प्रतिनं मन्यते सार्वज्ञं च यदा मनंति मुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं ज्योति-र्योतितवि-
३। श्वं वितनुतां भुक्तिं च मुक्तिं च वः ॥ १ ॥ श्री मद्गुर्जरचक्रवर्त्तिनगरप्राप्त प्रतिष्ठोऽजनि प्राग्वाटाह्वयर-
४। म्य वंशविलसन्मुक्तामणिश्चंडपः ॥ यः संप्राप्य समुन्नतां किल दधौ राजप्रसादोल्लसद्दि-क्कूलंकष-
५। कीर्त्तिशुभ्रलहरीः श्रीमंतमंतर्जिनं ॥ २ ॥ अजनिरजनिजानिज्योतिरुद्योतकीर्त्तिस्त्रिज-गति तनुज-
६। न्मातस्य चण्डप्रसादः ॥ नखमणिसख(शार्ङ)सुन्दरः पाणिपद्मः कमकृत न कृतार्थं यस्य कल्पद्रुकल्पः
७। ॥ ३ ॥ पत्नी तस्या जायतात्यायताक्षी मूर्त्तेन्द्र श्रीः पुण्यपात्रं जयश्रीः ॥ जज्ञेताभ्याम प्रिमः सूरसंज्ञः पुत्रः श्री

८। मान् सोमनामा द्वितीयः ॥ ४ ॥ निर्माप्यादि जिनेन्द्रबिंबमसमं शेषत्रयेविंशति श्री जैनप्रतिमा विराजि-

९। तमसावन्यर्चितुं वेश्मनि ॥ पूज्यः श्री हरिभद्रसूरिसुगुरोः । पार्श्वात् प्रतिष्ठाप्य च स्वस्यात्मीय कुलस्य चाद्भ-

१०। यमयं श्रेयो निधानं व्यधात् ॥ ५ ॥ असावत् साबाशागाजं तनुजसमं सोमसचिवः प्रियायां सीतायां शुचि च

११। रितनत्यामजनयत् ॥ यशोभिर्यस्यैभिर्जगतिविशदे क्षीरजलधौ निवासैकप्रीतिं मुदस-नजादिं-

१२। दुःदुःप्रतिपदं ॥ ६ ॥ श्री रैवते निर्मितसत्यपात्रः केनोपमानस्त्विह सोऽश्वराजः ॥ कलंकशंकामुपमान-

१३। मेव पुण्याल्पहो यस्य यशः शशांके ॥ ७ ॥ अनुजोऽस्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा स्वसाकेली

१४। आशा राजस्याजनि जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥ तस्याऽभूत्तनयो जयो प्रथमकः श्री मल्लदेवोऽपरश्चं

१५। चञ्चंद्रमरीचिमण्डलमहाः श्री वस्तुपालस्ततः । तेजःपालइति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र तुर्यः स्फुरच्चा-

१६। तुर्यः समजायतायतमतिः पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥ श्री मल्लदेव पौत्रौ लीलू सुत पुण्यसिंह तनुज-

१७। न्मा ॥ आल्हणदेव्या जातः पृथ्वीसिंहाख्ययाऽस्ति विख्यातः ॥ १० ॥ श्री वस्तुपाल सचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ-

१८। हलक्ष्मीः ॥ विशदतरचित्तवृत्तिः श्री ललितादेवी संज्ञास्ति ॥ ११ ॥ शीतांशुप्रतिवीर पीवर यशा विश्वेऽत्र

१९। पुत्रस्तयो विख्यातः प्रसरद्गुणो विजयते श्री जैत्रसिंहः कृती ॥ लक्ष्मीर्यत्करपंकज प्रणयिनी हीलाश्रयोत्सेन

२० । सा प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरहः स्नानेन दानं जसा ॥ १२ ॥ अनुपमदेव्यां पत्न्यां श्री तजःपाल सचिवतिलकस्या ।

२१ । लावण्यसिंह नामा धाम्नांधामायमात्मजो जज्ञे ॥ १३ ॥ नाभूवन्कति नाम संति कतिनो नो वा भविष्यंति के किं-

२२ । तु क्वापि न कापि संत्रपुरुषः श्री वस्तुपालोपमः ॥ पुण्येषु प्रहरन्नहर्निशामहो सर्वा-भिसाराङ्कुरो येनायं वि-

२३ । जितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवं ॥ १४ ॥ लक्ष्मीधर्माङ्गयागेन स्थेयसीतेन न-न्वता ॥ पौषधालयमालायं(लेग्यं)

२४ । निर्म्मसेन विनिर्म्ममे ॥ १५ ॥ श्री नागेन्द्रमुनीन्द्रगच्छतरणिर्जज्ञे महेन्द्रप्रभोः पट्टे पूर्वमपूर्ववाङ्मयनि-

२५ । धिः श्री शांति सूरिर्गुरुः ॥ आनन्दामरचन्दसूरियुगलं । तस्मादभूत्तत्पदे पूज्य श्री हरिभद्र सूरि गुरवोऽभूवन् भु-

२६ । वो भूषणं ॥ १६ ॥ तत्पदे विजयसेन सूरयस्ते जयंति भुवनैकभूषणं ये तपोज्वलन भूतिभूतिभिस्तेजयंति

२७ । निजकीर्त्तिदर्प्पणं ॥ १७ ॥ स्वकुलगुरुर्गणिरेषः पौषधशालामिमाममात्येन्द्रः ॥ पित्रोः पवित्रहृदयः पुण्यार्थं

२८ । कल्पयामास ॥ १८ ॥ वाग्देवतावदनवारिज (मित्र) सामंतैराज्यदानकलितोरुयशः पताकां चक्रे गुरोर्विज-

२९ । यसेन मुनीश्वरस्य शिष्यः प्रशस्तिमुदयप्रभ सूरिरेनां ॥ १९ ॥ सं० १२८१ वर्षे महं श्री वस्तुपालेन कारित पौषध-

३० । शालाख्य धर्म्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि० रावदेव सुत श्रे० मयधर । भा० सोभाउ भा० धारा । व्यव० वेलाउ विकल श्रे० पूना

३१ । सुत वीजावेड़ी उदयपाल । उ आसपाल । भा० आल्हण उ गुणपाल एतैर्गोष्ठिकत्वमं-गीकृतं ॥ एभिर्गोष्ठिकैरस्य धर्म्मस्थानस्य

३१ । ····स्तम्नतीर्थे – कायस्थवंशेनाक ···· उट्टंकितः ···· लिपा ····· लिख ···· मिहच ठ० सु० ···· सूत्रधार कुमरसिंहेनोत्कीर्णा ॥

शिला लेख—जोंयरे के द्वार पर ।

[1794]

१ । ॥ ए० ॥ श्री गुरुज्यो नमः ॥ श्री विक्रम नृपात् संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री

२ । स्तंजतीर्थनगर वास्तव्य ॥ ऊकेश ज्ञातीय ॥ आबूहरा गोत्रविजूषण ॥ सौवर्णिक ॥ कलासु-

३ । त ॥ सौवर्णिक ॥ वाघा जार्या रजाई ॥ पुत्र ॥ सौवर्णिक वछिआ ॥ जार्या सुहासिणि ॥ पुत्र । सौव-

४ । र्णिक ॥ तेजपाल जार्या ॥ तेजलदे नाम्न्या ॥ निजपति सौवर्णिक तेजपाल प्रदत्ताज्ञ-

५ । या ॥ प्रजूतद्रव्यव्ययेन सुजूमिगृहश्रीजिनप्रासादः कारितः ॥ कारितं च तत्र मूल-

६ । नायकतया स्थापनकृते श्रीविजयचिंतामणि पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्त-

७ । पागच्छाधिराज जट्टारक श्री आणंदविमल सूरि पट्टालंकार ॥ जट्टारक श्री विजयदा-

८ । न सूरि तत्पट्टप्रजावक सुविहितसाधुजनध्येय सुगृहितनामधेय ॥ पात ॥

९ । साह श्री अकब्बरप्रदत्तजगद्गुरुविरुदधारक जट्टारक श्री हीरविजय सूरि

१० । तत्पट्टोदयशैलसहस्त्रपाद ॥ पातसाह । श्री अकब्बरसजासमक्षविजितवा-

११ । दिवृंदसमुद्भूतयशः कर्पूरपूरसुरजीकृतदिग्वधूवदनारविंद जट्टारक श्री विजय-

१२ । सेन सूरिजिः ॥ क्रीडायातसुपर्वराशिरुचिरो यावत् सुवर्णाचलो ॥ मेदिन्यां ग्र-

१३ । हमण्डलं च वियति ब्रह्मेन्दुमुख्यंलशत् ॥ तावत्यत्रगताग्रुसेवितपद् श्री पार्श्वना-

१४ । थप्रजो ॥ मूर्त्ति श्री कलितोऽयमत्र जयतु श्रीमज्जिनेन्द्रालयः ॥ १ ॥ छः ॥ : ॥
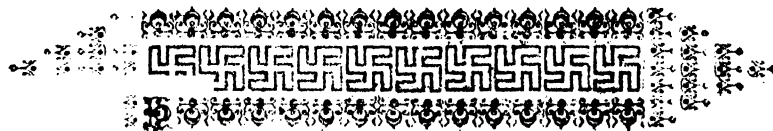
पोसिना-भरुअछ।

शिला लेख

[1795] *

१। प्राग्वाटवंशे श्रे० वहुड यन श्री जिन-
२। भद्र सूरि सदुपदेशेन पादपरा ग्रामे उं-
३। दिरवसहिका चैत्यं श्रीमहावीर प्रतिमा
४। युतं कारितं। तत्पुत्रौ ब्रह्मदेव शरणदे-
५। वौ। ब्रह्मदेवेन सं० १२७५ अत्रैव श्रीने-
६। मि मंदिर रंगमंडपे दाढाधरः कारितः
७। श्रीरत्नप्रभसूरि सदुपदेशेन तदनुज श्रे०
८। शरणदेव भार्या सूहवदेवि तत्पुत्राः श्रे०
९। वीरचंद्र पासड। आंबड रावण। यैः श्री पर-
१०। मानन्द सूरीणामुपदेशेन सप्ततिशततीर्थं का-
११। रितं॥ सं० १३१० वर्षे। वीरचंद्र भार्या सुषमिणि
१२। पुत्र पूना भार्या सोहग पुत्र लूणा झांझण आं-
१३। बड़ पुत्र बीजा खेता। रावण भार्या हीरू पुत्र बो-
१४। डा भार्या कामल पुत्र कडुआ॥ द्वि० जयता भार्या मूं-
१५। धा पुत्र देवपाल। कुमरपाल। तृ० अरिसिंह भा०
१६। गउरदेवि प्रभृतिकुटुम्बसमन्वितैः श्री परमा-
१७। नन्द सूरिणामुपदेशन सं० १३३८ श्री वासुपूज्य
१८। देवकुलिका। सं० १३४५ श्री संमेतशिषर-
१९। तीर्थं मुख्यप्रतिष्ठा महातीर्थयात्रां विधाप्या-
२०। त्मजन्म एवं पुण्यपरंपरया सफली कृतः
२१। तदद्यापि पोसिना ग्रामे श्री संघेन पूज्यमान-
२२। मस्ति॥ शुभमस्तु श्री श्रमणसंघप्रसादतः॥

---

* भरुअछ से ६ मैल दूर पर 'पोसिना' ग्राम में जैन मन्दिर के भैरवजी की मूर्ति के निचे पत्थर पर यह लेख है।

उना-काठियावाड़।

जैन मन्दिर-शाहवाला बाग।

शिला लेख।

[1706] *

१। ॐ स्वस्ति श्री सं० १६५२ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ बुधे

२। येषां जगद्गुरूणां संवेगवैराग्यसौभाग्यादिगुणगण-

३। श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पातिसाहि श्री अकब्बराभि-

४। धानैः गूर्जरदेशात् दिल्लीमण्डले सबहुमानमाकार्य धर्म्मोपदेशा-

५। कर्णनपूर्वकं पुस्तककोशसमर्पणं डावराभिधानमहासरोमत्स्यव-

६। धनिवारणं प्रतिवर्षं षाण्मासिकामारिप्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंजयतीर्थे मुं-

७। डकाभिधानकरनिवर्त्तनं जीजियाभिधानकरकर्त्तनं निजसकलदेशे दा-

८। णमृतं स्वमोचनं सदैव बूंद(?)ग्रहणनिवारणं सत्यादिधर्म्मकृत्यानि सकल-

९। लोकप्रतीतानि कृतानि प्रवर्त्तं तेषां श्री शत्रुंजये सकलदेशसंघयुतकृत-

१०। यात्राणां भाद्रपदशुक्लैकादशीदिने जातनिर्वाणं शरीरसंस्कारस्थानासन्न-

११। कलितसहकाराणां श्री हीरविजय सूरीश्वराणां प्रतिदिनं दिव्यनाथनाद-

१२। श्रवण दीपदर्शनादिकैर्जाग्रत्स्वभावाः स्तूपसहिताः पादुकाः कारिताः पं०

१३। मेघेन भार्या लाडकी प्रमुखकुटुम्बयुतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजैः भ-

१४। ट्टारक श्री विजयसेन सूरिभिः उ० श्री विमलहर्षगणि उ० श्री कल्याण-

१५। विजय गणि उ० श्री सोमविजय गणिभिः प्रणताभव्यजनैः पूज्यमानाश्चि-

१६। रं नंदंतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्मानन्दगणिना। श्री उन्नतनगरे शुभं भवतु ॥

---

* 'उना' का प्राचीन नाम 'उन्नत नगर' था। यह शिलालेख मन्दिर के ७ देहरी में पश्चिम तर्फ से पहली देहरी का है।

[1797]

(१) ॥ ऐं० ॥ स्वस्ति श्री प्रणयाश्रयः शिवमयः श्री वर्द्धमानाह्वयस्तीर्थेशश्चरमो वज्रूव
जुव-

(२) न सौजाग्यजाग्यैकजूः । नंदीश प्रथमोपि पंचमगतिः ख्यातः सुधर्म्माग्रणी । जज्ञे
पंचमपंचमः शमव-

(३) ताँ निग्रथं १ गोत्रेग्रणी ॥ १ ॥ श्री कौटिक २ वनवासिक ३ चष्ठ्र ४ वृहजञ्ज ५ सत्तपा
६ क्रमतः । तदा

(४) गच्छानां संज्ञाजातास्तपगच्छस्तथाऽजूत् ॥ २ ॥ प्राणजूक्षितिपालजालविलसत्कोटीर-
हीरस्फुरज्यो-

(५) तिर्जालजलाजिषेकविधिना (जा)नाबुपंकेरुहः ॥ चि(द्रु)पावलिहीरहीरविजयाह्वानः
प्रधान प्र-

(६) जुः श्रामण्येकनिकेतनतनुभृताम् कल्याणकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥ तदादेशवाक्यैः सुधा-
सारसारै । मुदा

(७) कब्बरः पातिसाहिः प्रबुद्धः । स्वदेशेऽखिले जीवहिंसा न्यवारीदमुंचत्करंचापिशत्रुं-
जयाद्रेः ॥ ४ ॥

(८) तन्नध्योदपितोलमौक्तिमहिमावर्षेसहस्रत्विपि । जातः श्री विजयादिसेनसुगुरुः प्रज्ञाज्ञ-
बालारुणः ।

(९) येन श्रीमदकब्बरक्षितिपतिः पर्षद्यनेकद्विजान् ॥ निर्जित्यैव जयश्रिया सह महां-
श्चक्रे विवाहो

(१०) नवः ॥ ५ ॥ (त)त्पट्टे (सा)रगजमूर्द्धनि देवराज (सू)रिर्बजूव जगवान् वि(जया-
(ददे)वः । य(स्या)त्रसत्यवचना-

(११) दनले तपोर्कः साक्षइवौ कुमतद्रुस्तपसां वि(ना)शी ॥ ६ ॥ सम्यग् निशम्य च
यदीय यशःप्रशस्तिमा-

(१२) ह्ववतद्गुणगणस्यदिदृक्षयैव । सूरेर्महातपइतिप्रथितं विरुदं श्रीपातिसाहिरकरोत्स-
सलेमसाहि

(१३) ॥ ७ ॥ यस्याध्याप्युपदेशपेशलरसङ्गोणंजगत्सिङ्जी: संबुद्धः सरसोर्थिसारविसरे मारीन्यावारीत्ततः ॥

(१४) [सं]व्यूढां गुणरागरंगललितैः कीर्त्तिस्त्रिलोकोभ्रमश्रांतां स्थानविधानतोऽनुरमेत र्फिरिपिंडिधवलात् ॥

(१५) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]मुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्जोज्यप्रतिमः प्रवोध्य सूरत्तीरारंजतो मोचयन्

(१६) तद्धत श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्थापयेदम्निपातनपरो धर्मं सपद्भंगतः ॥

(१७) ॥ ए ॥ एवं विहृत्यनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य ···· । श्रीमज्जिन-

(१८) ···· कृता ···· चय मूर्त्तिति ···· मूर्त्तिः सकलरात्रौध्वजरूपमूर्चैः ॥ १० ॥ पूज श्री मालि कुलोपु-

(१९) रा जगण ···· यो ··· नामतिनामा । ··· र्म्मना: ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजइन्द्रो पवि-

(२०) ···· श्रीमालिविमलकुलांवुज ···· माली । विश्वातिशायियशसाजिनपूर्णचन्द्रः श्री राजवं-

(२१) ···तिस···रि · तु प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाग्र···पूर्वस्वद्रव्यस्यसफलीकरणाय श्री विजया-

(२२) दि सूरीश्वराः श्री गूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रिपस्यापिप्रत्तूर्णामहामहसां

(२३) ···· कारिता ॥ ततश्च सं० १७१२ वर्षे आषाढ शुद्धैकादशी तिथौ । जट्टारक श्री विजयदेवसूरी-

(२४) श्वराणा स्व ····मुषापादुकास्तूशेयं ········ श्रीवासणारत्नजेन वाई पातली जन्मना श्रीरायचन्द

(२५) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१२ वर्षे माघमास सितपञ्चमी तिथौ महा महोत्सवेन ।

(२६) सूरेः श्री विजयादिदेवसुगुरोः पट्टाब्जसूर्योश्रयः सूरि श्री विजयप्रभाव्यदधत श्रेष्ठा प्रतिष्ठा·

(२७) मिमां श्रीमद्वाचकरान् विनीतविजयैः शांत्याह्वयैः पाठकैर्युक्ताश्चारुयशोभराः प्रतिम-

(२८) या वाचस्पतेः सन्निभाः ॥ १३ ॥ तथा साधु श्री नेमिदासेन तथा साधु वाघजीकेन भिनोप्रमेन का

(२९) रितः । कृतश्चायं हरजीनाम्ना शिल्पिना । मुहूर्त्तदातातु अत्र उन्नतपुरवास्तव्य भट्ट-गुसांई

(३०) पुत्र भट्ट रणछोड़ नामा ॥ श्रीद्वीपबंदरवास्तव्यसंघभातिव्याजे जीयतां श्रीदेव-विहारभा

(३१) गः स्तूपरूपः ॥ श्रीमत् श्रीविजयादिदेवगणभृत्पट्टोदयोयत्कृतेः । सूरेः श्री विजय-प्रभस्य क-

(३२) रुणादृष्ट्या प्रकृष्टोदयः ॥ विद्वद्रूपमर्णीकृपादिविजयां तेनासिमेणाह्वयो । लेस्यदेव-विहार ····

(३३) विदिते स्तूपप्रशस्ति श्रिये ॥ १४ ॥ इति प्रशस्ति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ छः ॥ छः ॥

बम्बई ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—वालकेश्वर ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[1798]

सं० १४८८ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञा० पं० राणा भा० रूपादे सुत आसाकेन स्वमातृश्रेयसे आगमगछे श्री जयानन्दसूरीनामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारितं श्री सूरिभिः। शुभं भवतु ॥

चौविशी पर ।

[1799]

सं० १७६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ गुरौ स्तम्भतीर्थ बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध-शाषीय वे। मेघराज भा० वैजकुआर सुत सूरजमलेन स्वद्रव्येण श्री शांतिनाथ चौविशी पट्ट कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० श्री विजयप्रभ सूरि पट्टे संविज्ञपक्षीय भ० श्री ज्ञान-विमलसूरिभिः।

घरदेरासर – गामदेवी, वाचागांधी रोड।

चौविशी पर।

[1800]

संवत १५२५ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे मोढ ज्ञातीय ठकुर वरसिंह भार्या चांपू सुत ठकुर मूलू भार्या कीबाई सुत ठकुर मधुरेण भार्या संपूरी प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री अभिनन्दननाथादि चतुर्विंशतिपट्टः श्री आगमगच्छे श्री जयचन्द्रसूरिपट्टे श्री देवरत्न गुरूपदेशेनकारितः प्रतिष्ठापितश्च ॥ श्री स्तम्भतीर्थवास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

सिरपुर-सागर (सी. पी.)।

शिला लेख।
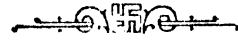
[1801]

१। ॐ ॥ स्वस्ति श्री सं० १३३४ वर्षे वेशाख सुदि २ बुधदिने श्रीवृहद्गच्छे सा० प्रह्लादन पुत्र सा० रत्नसिंह कारितः श्री शांतिनाथ चैत्ये सा० समधा पुत्र महण भार्या सोहिणी पुत्री कुम-

२। रल श्राविकया पितामह सा० पूना श्रेयसे देवकुलिका कारिता ॥

श्री सम्मेत शिखर ।

टोंक पर के चरणों पर ।

[1802]

॥ श्री ऋषभानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1803]

॥ श्री चंद्रानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1804]

॥ श्री वारिषेण जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1805]

॥ श्री वर्द्धमान जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1806]

(१) संवत् १९३१ माघे । शु । १० । चंद्र श्री चंद्रप्र
(२) भु जिनेन्द्रस्य चरण पादुका । मलधार पूर्णिमा ।
(३) श्री मद्विजयगच्छे । भ । श्री जिन शांति सागर सू ।
(४) रिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं । श्रेयसेस्तु ।
(५) श्री संघेन कारापिता ।

[1807]

(१) संवत् १८४९ मिति माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ ।
(२) बुधवारे श्री पार्श्वनाथ जिनस्य चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण ।
(३) श्री बृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधा
(४) न भट्टारक । श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः श्रीरस्तु ॥

[1808]

(१) संवत् १९४२ का मि। पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन साधु संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका

(२) खरतर गछे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं। हित वल्लभ मुनिना प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तग्गत मांडल वास्तव्य........

(३) वीर सोभाग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प

(४) रि स्थापितं ॥

१। श्री ऋषभ १०००० साधुसुं अष्टापद ऊपर २। श्री अजित १००० साधु सुं ३। श्री संभव १००० साधुसुं ४। श्री अभिनंदन १००० साधुसुं ५। श्री सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रभ ३०० साधुसुं ७। श्री सुपार्श्वनाथ ५०० साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रभ १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १०। श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज्य ६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ७००० साधुसुं १५। श्री धर्म्म १०८ साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १००० साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। श्री मुनिसुव्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६ साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी पावापुरी ॥

[1809]

॥ सं। १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शैलस्य पर्व्वतोपरि भव्य जीवस्य दर्शनार्थं श्रीमत् आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादूरेण का० प्र० श्री विजयराज सूरि तपागछे ॥

[1810]

(१) सं। १९२५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी
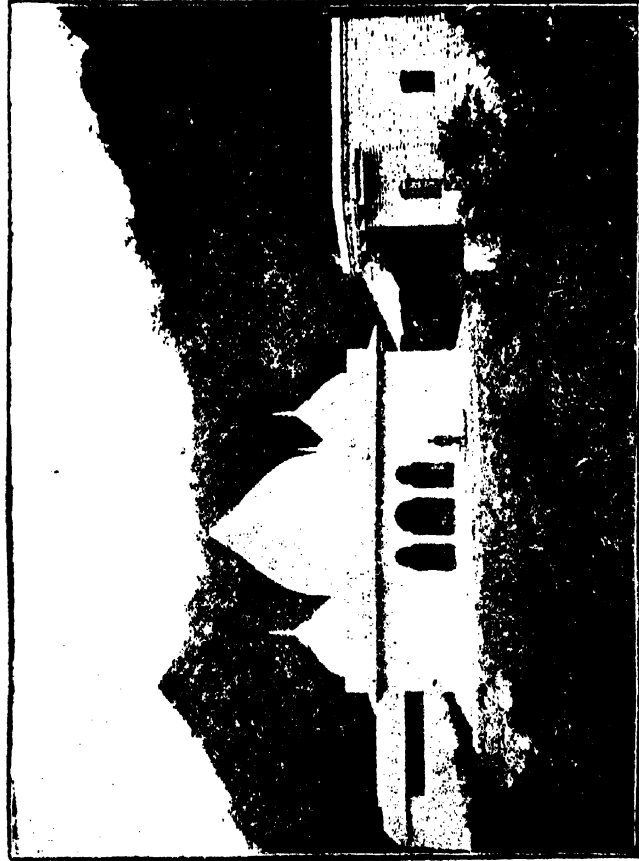
TIRTHA SAMMET SIKHAR-- Jalmandira.

(२) पंच कल्याणक चरण न्यास मकसुदावाद वास्तव्य डुगड़ साः प्रतापसिंह
(३) जार्जा महताब कुमर ज्येष्ठ सुत लक्ष्मीपतस्य कनिष्ठ भ्रात धनपत सिंह
(४) कारापितं प्रतिष्ठितं भः श्री जिनहंस सूरिभिः वृहत्खरतरगच्छे ॥

[1811]

(१) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नेमनाथ जिन तीन कल्यानक रेवत ..
(२) चवली तस्य चरण न्यासः ममत शिखरे स्थ पिता मकसूदाबाद अजीमगंज
(३) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह जार्जा महताब कुमर सुत लक्ष्मीपत कनिष्ठ भ्राता
(४) धनपत सिंह कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी भः श्री जिनहंस सूरीभः खरतर गच्छे
(५) वृहत् खरतर गच्छ ॥

[1812]

(१) ॥ सं १९३४ श्री फाल्गुण वदि ५ श्री वीर वर्धमानजी का चरण पादुका मकसुदा
(२) वाद वाली राय धनपति सिंह डुगडने स्थापित किया था सो उसको छत्री बिजली
(३) उपद्रव सु गिरगइ उसपर सं १९६५ के फाल्गुण सुदी ६ को कच्छ मांडवी वासी
(४) साः जगजीवन वालजी ने जीरण उधार कराइ।

जल मंदिर।

पाषाण की मूर्त्तियोंपर।

[1813]

(१) ॥ संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदावाद वास्तव्य साउसुखा गोत्रीय ओसवंस ज्ञाती
(४) य वृद्धशाखायाम् ॥ लालचंद सुत सुगालचंदेन श्री सद्गुरुणा उपदेशात् आत्म सं श्रेयार्थं च श्री समेत शैल
(३) श्री जैन विहारे श्री सहस्र फणा पार्श्व जिन बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहितामणीभिः सकल सूरिवरैः ॥ मंगलं ॥

[1814]

(१) ॥ सं १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदाबाद वास्तव्य साउंसुखा गोत्रीय ओसवंस ज्ञातीय

(२) बृद्धशाखायां सा सुगालचंद भार्यया केसरकया आत्म संश्रेयोर्थं श्री समेत गिरौ श्री जैन विहारे श्री सं-

(३) भवनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहिताग्रणीभिः । सकल सूरिभिः ॥ इति मंगलं ॥
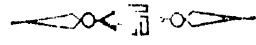
मधुवन ।

जगतसेठजी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[1815]

॥ सं १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ सा सुगालचंदेन श्रीपार्श्व बिंबं कारापितं । प्र। सकल सूरिभिः ।

[1816]

(१) संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ मग ······ ज्ञातीय बृद्ध शाखायां सा रूपचंदजी सुत लखमीचंदजी

(२) सुत लालचंदजी माता मद कपूरचंदजी ······ देत स्वश्रेयोर्थं श्री सम्मेत गिरौ श्रीजैन वि

(३) हारे श्री पार्श्व जिन बिंबं कारापितं ······

[1817]

॥ संवत् १८२२ वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री खरतर गछ आचार्यीय सा भीमजी सुत सा निहालचंदेन पं ··· कारापितं ॥

[1818]

॥ सं० १८२७ शाके १६९३ । प्रवर्त्तमाने वैसाख सुदि द्वादशी तिथौ । भृगुवारे ओसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां ॥ आदि गोत्रे। सा० रूपनदास तद्भार्या गुलाबकुअर सहितेन श्रेयोर्थं । कायोत्सर्ग्ग मुद्रास्थित सहस्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं ॥

[1819]

॥ सं० १८२२ [?] वैशाख सु० १३ गुरौ श्री गहिलडा गोत्रीय साह कस्तुरचंद ॥

धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्ति पर ।

[1820]

॥ संवत् १८२५ माहा सुदि ३ सा। सुगालचंदेन श्री धरणेन्द्र पद्मावत्या कारापिता प्र० तपागच्छे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

शिलालेख ।

[1821]

(१) ॥ संवत् १८८९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गो-
(२) डी पार्श्वनाथस्य द्विभूमि युक्त चैत्यं । श्री बालूचर वास्त-
(३) व्य दुगड गोत्रीय । श्री प्रतापसिंघेन कारित । प्रतिष्ठि-
(४) तं च श्री खरतर गच्छेशाःजं । यु । ज । श्री जिन हर्ष सूरी-
(५) णामुपदेशात् । उ । श्री क्षमाकल्याण गणीनां शिष्येणेति

पाषाण की मूर्तियोंपर ।

[1822]

(१) ॥ सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री गवडी पार्श्वनाथ जिन बिं-

(२) बं कारितं ओसवंशे डुगड गो। प्रतापसिंहेन। प्र। बृ। ज। खरतर ग-

(३) छाधिराज श्री जिनचंद्र सूरि ··। ······ स्थितैः।

[1823]

॥ श्री गोडी पार्श्व जिन बिंबं ॥ (ॐ) ॥ संवत् १८३१ वर्षे ज्येष्ट शुक्ल ११। चंडे जीर्णोद्धाररूपा। विजय गच्छे। भट्टारक श्री पूज्य श्री जिन शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1824]

(१) संवत् १८८९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गौडी पार्श्वनाथ चैत्ये विंशति जिनेश्वराणां चरण न्यासाः श्री बालूचर नगर वास्त

(२) व्य डुगड गौत्रीय साह श्री प्रताप सिंघेन कारिताः प्रतिष्ठिताश्च। श्री मद्बृहत्खरतर गच्छेशाः जंग-

(३) म युग प्रधान भट्टारकाः श्री जिन हर्ष सूरीश्वराणामुपदेशात् उपाध्याय पद शोभिता। श्री क्षमाकल्याण गणीनां शि-

(४) ष्य प्राज्ञ ज्ञानानंदेन पं। आनंदविमल पं। सुमति शेखर सहितेनेति। श्रेयोर्थं। सम्यक्त वृद्ध्यर्थं च ॥

॥ श्री अजितनाथजी २ ॥ श्री संभवनाथजी ३ ॥ श्री अभिनंदन नाथ जी ४ ॥ श्री सुमति नाथ जी ५ ॥ श्री पद्मप्रभ जी ६ ॥ श्री सुपार्श्वनाथ जी ७ ॥ श्री चंद्रप्रभजी ८ ॥ श्री सुविधिनाथ जी ९ ॥ श्री शीतल नाथ जी १० ॥ श्री श्रेयांस नाथ जी ११ ॥ श्री विमल नाथ जी १३ ॥ श्री अनंत नाथ जी १४ ॥ श्री धर्म नाथ जी १५ ॥ श्री शांति नाथ जी १६ ॥ श्री कुंथुनाथ जी १७ ॥ श्री अरनाथ जी १८ ॥ श्री मल्लिनाथ जी १९ ॥ श्री मुनिसुव्रत नाथ जी २० ॥ श्री नमिनाथ जी २१ ॥ श्री पार्श्वनाथ जी २३ ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1825]

(१) ॥ संवत् १९३१ ॥ माघे ॥ शुक्ला ९। चंद्रे। गोतम स्वामी ॥

(२) चरण पादुका कारापिता ॥

(३) मुनि गोकल चंद्रेण

(४) भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः। प्रतिष्ठितं ॥ श्री बिजय गच्छे ॥

[1826]

(१) ॥ संवत् १९३३ मिति माघ शुक्ल ११ अभिनंदन जिन पादुकामिदं मक्

(२) सूदाबाद वास्तव्य ओशवंशीय लुंपक गणेमानाक् डुगड गोत्रीय बाबु

(३) प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुमारिकस्य बृद्ध पुत्र राय बहादुर

(४) लछमीपत सिंघस्य लघु भ्रातृ रा। धनपत सिंघेन कारपितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिणा ॥

कानपुरवालों का मंदिर।

शिलालेख।

[1827]

॥ सं १९४३ का वर्षे शाके १८०८ प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां बुधे श्रेष्ठी श्री सिखरूप मल्ल तादात्मज भंडारी श्री रघुनाथ प्रसाद तद्भार्या श्री बदामो बीबी तया कारितं श्री पार्श्वजिन मंदिरं महोत्सवेन स्थापना कारापिता श्री शिखर गिरि मधुवने बृहद्विजयगच्छे सार्वभौम भट्टारक श्री जं. यु. प्र. श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयसे। (इसके बाईं ओर एक पंक्ति में) श्री मत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री १०८ श्री विजयराज सूरि राज्ये शुभं भवतु।

मूर्तियों पर।

[1828]

॥ सं० १९५४ वर्षे माघ वदि ५ चंद्रे श्री खरतर पीपल्या गछे श्री जिनदेव

सूरीश्वर राज्ये ओसवंस वृद्ध शाखायां सा पानाचंद श्री पार्श्वजिन बिंबं ······· घेन प्रति ····

[1829]

॥ सं. १९०५ शाके १७६७ वदि ५ भृगौ सीपोर वास्तव्य सा. र (त) न चंद तद्भार्या जीजा बाइ तत्पुत्री बेन नवल स्वश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं ॥ कारापितं तपागछे भट्टारक श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

लाला कालीकादासजी का मंदिर।

मूर्तियों पर।

[1830]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री सुपार्श्वनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्ट प्रभावक ·······

[1831]

॥ सं. १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री वासुपूज्य जि बिंबं प्रतिष्ठितं च। श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः कारितं च श्री ·········

[1832]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री धर्मनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिन हर्ष सूरीणां पट्ट प्रभावक ·········

पाषाण की पंचतीर्थी पर।

[1833]

॥ सं० १९३१ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १२ बुधे श्री पंचतीर्थीय जिन बिंबं वेलुयुतो गोत्रे लाला कालीकादास तद्भार्या चत्री बीबो तया कारितं मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गछे च। श्री पूज्य श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

चंद्रप्रभुजी का मंदिर

मूर्त्तियों पर ।

[1834]

॥ सं १८०८ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं कारितं ओसवंसे नवलखा गोत्रे मोटामल पुत्र यश रूपेन प्र। बृहत् खरतर ग। श्री जिनाक्षे सूरि चरणकज चंचरीक श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

पार्श्वनाथ जी का मंदिर।

मूर्तियों पर ।

[1835]

॥ सं. १६७६ मिति फालगुण शुक्ल १३ ·········

[1836]

॥ सं. १८७७ वै। शु। १५ श्री पार्श्व बिंबं प्र। श्री जिनहर्ष सूरीणा गोलवछा महता बोजानी मूलचंदेन धर्मचंदेन कारितं कास्यां बृहत् खरतर गणे

[1837]

॥ सं. १८७७ वै। शु। १५ श्री चंद्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिन हर्ष सूरीणा कारितं....

[1838]

॥ सं. १८७७। वै। शु। १५ श्री चंद्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा कारितं माल-वस चेनसुखज कुंदन लालेन श्री ······

पट्ट पर ।

[1839]

॥ सं. १८८५ मि। फालगुण सुदि १३ रवौ शिखर गिरौ श्री सिद्धचक्रमिदं प्रतिष्ठित

ज। श्री जिनहर्ष सूरिभिः श्री बृहत् खरतर गच्छे कारितं डु० पुरणचंदेन सभार्यया सपुत्रेण श्रेयोर्थं।

[1840]

॥ संवत् १९५४ वैशाख शुक्ल पक्षे चतुर्थी चंद्रवासरे अमृत सिद्धि योगे राजनगर निवासि वायचाणा शा ··· जेचंदेन श्री तपागच्छ सूरीश्वर विजयसिंह सूरीणा ·····

सुज स्वामीजी का मंदिर।

चरणों पर।

[1841]

(१) सं. १८७५ मि। मार्गशीर्ष ९ तिथौ रविवासरे
(२) श्रीमच्छ्री जिनदत्त सूरीणां चरणपंकजानि
(३) बृ। ख। जं। यु। प्र। ज। जिनहर्ष। सू। प्रतिष्ठितानि॥

[1842]

(१) ॥ सं. १८७५। मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ९ तिथौ रविवासरे
(२) श्री सद्गुरुणां पादो बृहत् खरतर ग
(३) छे। जं। यु। प्र। ज। श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री॥
(४) ॥ दादाजी श्री जिनकुशल सूरिः
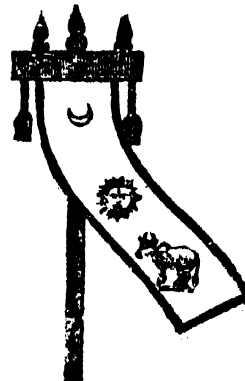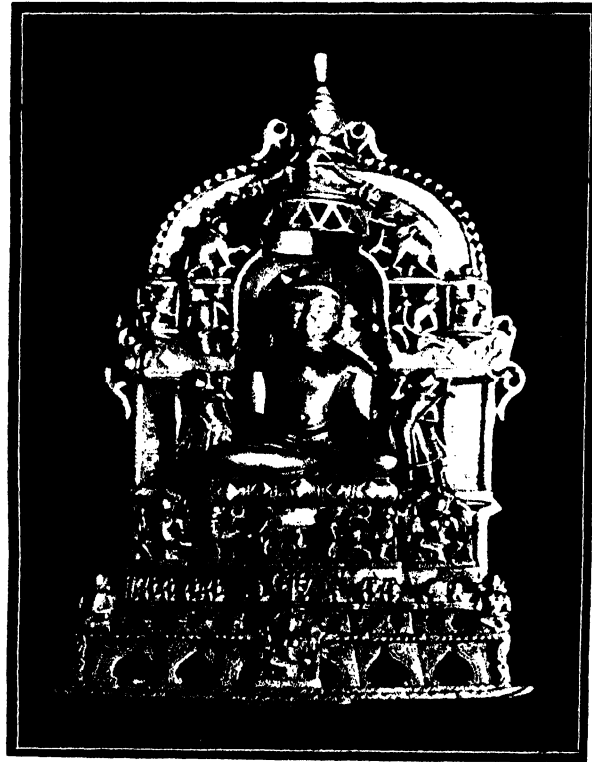
METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.

Jain Swetambara Temple—Tirtha Rajgriha.

Dated V. S. 1512 (A.D. 1455)

श्री राजगृह ।

गांव मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[1843]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाष सुदि १३ उकेश सा० जादा जार्या जरमादे पुत्र सा० नायक जार्या नायक दे फदेकू पुत्र सा० अदाकेन जा० सोनाई ज्रातृ सा० जोगादि कुटुंबयुतेन श्री सुमति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ वढली वास्तव्यः ॥ श्री ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[1844]

सं० १७२० । म । का । कृष्ण २ बुधे डुगड प्रतापसिंह जार्या महताब कंवर श्री संती नाथ जिन बिंबं का० ॥

सफण मूर्ति पर ।

[1845]

संबत् १६२० आषाड वदि २ । मित्रवाल वंशी षी (वी) सेरवार गोत्रीय सं० गनपति पु० स० तारात पुत्र हेमराज पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे जिनजद्र सूरिजिः ॥ शुजमस्तु ॥

श्याम पाषाण की मूर्ति पर ·

[1846]

(१) ॥ संवत् १५०४ वर्षे फागण सुदि ए महतीयाण वंशे ठ० देवसी पुत्र सं० जेलू बहनी लखाई जार्या बेणी । श्री शांति

(२) नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वा० शुभशील
गणिभिः

चरण पर ।

[1847]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री चंद्रप्रभ जिनवर चरणकमले शुभे स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओसवंशे गांधी गोत्रे बुलाकिदास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन पत्रीकुंडे कुंडघाटे जीर्णोद्धार करापितं ॥ १ ॥

वैभार गिरि ।

चौथे मंदिर में ।

चरणों पर ।

[1848]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे
(२) शुभे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशी गुरूवासरे ··· श्री व्यवहार
(३) गिरि शिखरे श्री जिनचैत्यालये मूलनायक श्री
(४) महावीर जिन चरणन्यासः प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे बृद्धवि
(५) जय थापीतं (दू) साह बाहादरसंह प्रताप-
(६) सिंह तत् पुत्र राय लछमीपत धनपतसिंग
(७) बाहाद (र) जिरणोद्धार करापितं श्री रस्तु
(८) ॥ प्रथम प्रतिष्ठा संवत १८७४ शा० १७३९ मासो
(९) त्तमासे शुभे ज्येष्टमासे कृष्णपक्षे पं-
(१०) चम्यां तिथौ सोमवासरे श्री जिनचन्द्र
(११) सूरिजी महाराज का० श्री ।

[1849]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममास
(२) शुभे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां तिथौ गुरूवासरे व्य·
(३) वहार गिरिशिखरे श्री आद देव चरण न्या·
(४) सः प्रतिष्ठितं वृद्धविज [य] गणी राय लछमिपत
(५) सिंह धनपतसिंह जीरणोद्धा·
(६) र करापितं श्रीरस्तु

[1850]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने
(२) मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
(३) द्वादशम्यां गुरुवासरे श्रीव्यवहारगिरि शिखरे
(४) श्री शांतिजिन चरणप्रतिष्ठा। प्रथम
(५) श्री जिनहर्ष सूरिभिः वृद्ध विजय प्रतिष्ठा
(६) राय लछमिपत धनपत बा·
(७) हादुर जिरणोद्धार करापितं श्री
(८) रस्तु

[1851]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने
(२) मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे
(३) शुक्लपक्षे द्वादशम्यां गुरूवासरे
(४) श्री व्यवहार गिरिशिखरे श्री नेमिजिन
(५) चरणन्यास प्रतिष्ठ (ा) वृद्ध विजयगणि राय लछमिपात
(६) धनपत संग जिरणोद्धार करापितं श्रीरस्तु।

[1852]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
(२) ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे द्वादशम्यां तिथौ गुरूवासरे
(३) श्री व्यवहार गिरिशिखरे
(४) श्री पार्श्वनाथ चरणयनासः प्रतिष्ठितं बृद्धविज-
(५) य गणि राय लछमिपत सिंह धन-
(६) पत संग जिरणोद्धार करापीतं

छठे मंदिर में।

चरण पर

[1853]

(१) संवत् १९३८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
(२) द्वादशम्यां तिथि गुरूवासरे आदिनाथ जिन चरण-
(३) न्यास प्रतिष्ठितं बृद्धविजय गणि प्रथ-
(४) म जीरणोद्धार बूलाकिचंद तत् पुत्र माणिक
(५) चंद जिरणोद्धार करापीतं द्विति-
(६) य जिरणोद्धार राय लछमिपति सं-
(७) घ धनपतसंघ करापितं। श्रीरस्तु   ८। व्यवहारगिरी

बड़ी मूर्त्ति पर

[1854]

॥ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने मडतियाण............श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री खरतर गच्छे...............श्री जिनसागरसूरीणां निदेशेन श्री शुभशील गुणिभिः॥

खंडहर ।

पाषाण की मूर्तियों पर

[1855]

॥ ओँ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ए दिने महतीयाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज पुत्र सं० षीमराज पुत्र सं० जिणदासेन श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचनाचार्य शुजशील गणिजिः॥

[1856]

(१) संवत् १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतीयाण वंशे वार्त्तिदिया (?) गोत्रे न० हरिपा
(२) लेन जार्या लाडो पु० न० हरिसि । श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री
(३) खरतर गछे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाच
(४) नाचार्य शुजशील गणिजिः॥

सोन जंडार ।

[1857] *

निर्वाणलाजाय तपस्वियोग्ये, शुजे गूहेऽर्हत् प्रतिमा प्रतिष्टे ।
आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः, विमुक्तये ऽकारयद्दीर्घतेजः ॥

मणियार मठ ।

चरण पर

[1858] †

सं. १०३३ वर्षे मासे माह सुदी ५ तद्दिने श्रीओसवाल वंशे विराणी गोत्रे केशोदास तस्य मोतुलालकस्य जार्या बीबी सताबो राजगृहे नागस्य शालिजद्रजीकस्य चरण स्थापितः ।

---

* देखो—आर्किओलजिकल सर्वे रिपोर्टस् — १९०५-०६ पृ० ९८
† „ — „ — „ — „ — पृ० १०३

[242]

'खुस्यालचंदस्य पत्नी' के स्थान में 'खुस्यालचंदस्य पीपाड़ा गोत्रस्य पत्नी' होना चाहिये। यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है।

[244]

'सा श्री हकु—' के स्थान में 'सा। श्री हकुमतराय—' होना चाहिये।

[256]

'देवराज सं० षीमराज' के स्थानमें 'देवराज पुत्र सं० षीमराज' होना चाहिये।

संशोधित पाठ।

[257]

॥ ओं सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजयराज्ये-तदादेश ....श्री कमलसंयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचन्द्र सूरि पादुके प्र० का० श्रीमाल वं० नीपू पुत्र ठ० ढीतमल श्रावकेण श्री वैभार गिरौ मुनि मेरुणा लि० ॥

यह चरण गांव के मंदिरमें है।

[258]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंयमोपाध्यायैः धनाशालिचन्द्रमूर्त्ति ॥ प्र० का० ठ० ढीतमल श्रावकेण।

[268]

"पत्नी महाकुमा—तस्या" के स्थान में "पत्नी महाकुमार्या तस्या" होना चाहिये।

पटना।

शहर मंदिर।

संशोधित पाठ।

[323]

॥ संवत १५४७ वर्षे वैसाष शुदि ३ मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव राज पापडिवाल नित्य प्रणमति सर मंम्हासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल....।

[324]

संवत १५४७ वर्षे वैसाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज पापडिवाल सहर मंम्हासा श्री राजा सिवसघंजी रावल....।

दिगंबरी मंदिर—घीया तमोली गली, सिटी।

श्वेत पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1859]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाल्गुण वदि २ श्री संडेर गच्छे उ० साह केल्हा भार्या कस्तुरी पुत्र श्री देपाल भा० देवल दे पुत्र मोकल सहितेन श्री शीतल बिंबं का० प्र० श्री शांति सुरिभिः॥

पटना—म्युज़ियम।

संशोधित पाठ।

[555]

सम्वत्। १८७४। वर्षे शाके १७३९। प्रवर्त्तमाने। शुभ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ। सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री॥ शांति जिन चरणान्प्रतिष्ठितं च। श्री जिनहर्ष सूरिभिः।

[734]

॥ सं०। १९११ व। सा। १७७५....शुचिः। शु। १० ति। श्री शांति जिन पादन्यासो प्र। खरतर गच्छ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः का। से। श्री उदेचंद भार्या माह्रा कुमार्य्य श्रे०॥

बनारस।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1860] *

(१) ओँ संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ (२) श्रीमाल वंशे [ढोर] गोत्रे व०
(३) सं० ऊढरव अजीतमल्ल भार्याया (४) पुत्र.........
(५) श्री सुमति नाथ बिंबं का० (६) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...
(७) श्री जिनतिलक सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1861] *

(१) ओँ स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुष्यनक्षत्रे गुरौ श्रीमालवंशे ढोर गोत्रे सोवनपाल भार्या......
(२)...............आदिनाथ.................
(३) खरतर ग० श्री जिनहर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[1862] *

(१) [नर] पाल भार्या। महुरी पुत्र ठ० भरतपाल....
(२) सं० ऊड़रव अजितमल्ल....

श्याम पाषाण की छोटी मूर्त्ति पर।

[1863] *

सं० १३७२ वैसाख वदि......

काले पाषाण की टूटी परकर के बांये तर्फ

[1864] *

(१) .... ज्येष्ट सुदि १३ शुक्र वासरे। ब० दे....

(२) ....। बिंबं कारितं।

[1865] *

(१) ॥ श्रीँ॥ सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ६ दिने श्रीमाल वंशे नांदी गोत्रे सं० नरपाल भार्या महु-

(२) री कारितं श्रीमहावीर बिंबं। श्री खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरिभिः॥

मूलनायकजी पर।

[1866]

सं० १९१८ शाके १७८३ मिती आषाढ कृष्ण २ श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठिता कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जङ्गम यु० प्रधान भट्टारक श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्द्रेन स्वश्रेयोर्थं सोम वासरे॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1867]

सं० १९१८ शाके १७८३ मिती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्रीवर्धमान जिन बिंबं प्रतिष्ठा कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारित च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्र पौत्र मनोरथचन्द्र श्रेयोर्थमिति।

[1868]

सं० १९१८ शाके १७८३ मिती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री ऋषभ देव जिन बिंबं प्रतिष्ठा

---

* ये मूर्त्तियां हाल में जौनपुर से डेढ कोस पर गोमती के किनारे खेत से मिली हैं। बाबू शिखरचंद जी जौहरी ने लाकर अपने बनारस के मंदिर में रखी हैं।

कृता वृहत् खरतर भट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज फूलचन्द श्रेयोर्थमिति ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1869]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्रसूरिणा कारिता नाहटा लक्ष्मीचन्द तत् भार्या लक्ष्मी बीबी विधत्ते ।

[1870]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री सुपार्श्व बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिना का० बा० लक्ष्मी-चन्द्र पुत्री नानको नाम्ना बुक्कोतम श्री कुशलचन्द गणयुपदेशतो वृहत् खरतर गच्छे ।

[1871]

सं० १८२० फा० सु० २ बुधे प्रतापसिंहजी भार्या महताब कुंवर कारितं श्री चन्द्रप्रभ श्री सागरचन्द्र गणि प्रतिष्ठितं ।

सिद्धचक्र पर ।

[1872]

सं० १९१८ आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री सिद्धचक्र प्रतिष्ठितं ज० यु० प्र० भ० श्री जिन मुक्ति सूरिभिः कारितं च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्देन स्वहितार्थं ।

देहली।

लाला हजारीमलजी का घरदेरासर।

देवी की मूर्त्ति पर।

[1873] *

(१) संवत् ११२५ श्री (२) पचासरीय (!) गच्छे
(३) श्रीमल्लवादि संताने (४) चेल्लकेन विरोल्या कारिता ॥

चीरेखाने का मंदिर।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1874]

सं० ११९९........।

[1875]

सं० १२३४ आषाढ़ वदि २ सनौ ज्ञातृ लीवूंदेव श्रेयोर्थ नागदेवेन प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मल्लवादि श्री पूर्णचंद्र सूरिभिः।

[1876]

सं० १४३१ वर्षे माघ सुदि १० नाहर वंशे सा० षेता पु० सा० तोला भार्या तिहुणश्री पु० हेमा धर्माभार्यां पितृव्य श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचंद्र सूरिभिः ॥ गिर....ग।

[1877]

संवत् १५०२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३........।

[1878]

सं० १५७५.... वदि ७ श्री ऋषभानन........।

* यह लेख १३ वीं विद्यादेवी की धातु की मूर्त्ति के पृष्ठ पर खुदा हुवा है। देवी की मूर्त्ति सुखासन में बैठी हुई सर्प वाहन चार हाथवाली प्राचीन है।

चौवीशी पर ।

[1879]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाष सु० ३ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय सा० देवा भा० रामति सु० जइ-आकेन भा० माणिकदे सु० डाहीयानाथ पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्र० श्री वृहत्तपा पक्षे भ० श्री उदयसागर सूरिभिः ॥ गिर...ग ।

जोधपुर

राजवैद्य भ० श्री उदयचंद्रजी का देरासर ।

पंचतीर्थी पर ।

[1880]

संवत् १५१६ वै० सु० ५ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मोषसी टमकू पु० जाणा हरखु पु० पुंजा रणसा० पाहु प० जिनदत्त युतेन श्री संभव बिं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिभिः ।
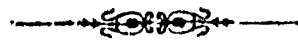
जसोल (मारवाड़) ।

पीले पाषाण की मूर्ति पर ।

[1881]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०.....श्री महावीर बिंबं.....खरतर श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1882]

संवत् १४७६ वैशाष वदि २ श्री ऊकेशवंशे भाजहड़ गोत्रे सा० षेता पु० आसधर पु० करमा भा० कूरमादे पु० भारमलेन भा० भरमादे पु० सहणा सादा यु० श्री आदिनाथ बिंबं कारितं आत्मश्रेयसे प्रति० श्री पल्लीवाल गछे श्री यशोदेव सूरि (भिः) ।

[1883]

॥ संवत् १५१३ वर्षे माघ बदि ५ दिने श्री ऊकेश गछे श्री ककुदाचार्य संताने श्री उप. केश ज्ञातौ बिंबट गोत्रे सं० दादू पु० सं० श्रीवत्स पु० सुललित भा० ललतादे पु० साहण- केन भा० संसार दे युनेन पितरौ श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1884]

सं० १५१९ माघ सु० शुक्रे प्रा० व्य० मीचत भा० नासल दे पुत्र सूचाकेन भा० चांपू माल्हई पु० मेरा तोलादि युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री लक्ष्मी- सागर सूरिभिः ॥

नाकोड़ा ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

पीले पाषाण के चरण पर ।

[1885]

संवत् १५२५ वर्षे वैशाष वदि ५ दिने श्री वीरमपुरे श्री खरतर गछे श्री कीर्तिरत्न सूरिणां स्वर्गः ॥ तत्पादुके संखवालेचा गोत्रे सा । काजल पुत्र सा० त्रिलोकसिंह षेतसिंह जिणदास गजडीदास कुसलाकेन करापितं । सं० १६३१ वर्षे मगसर सुदि २ दिने प्रतिष्ठितं ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[1886]

सं० १४०५ वैशाष सुदि ३ ऊएस ज्ञातीय ठाजहड़ गोत्रे सा० गणधर जार्या बलनू पुत्र मोहण जयताकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथः कारितं प्रति० श्री अजयदेव सूरिजिः ।

[1887]

सं० १५१३ वर्षे माघ मासे ऊकेश वंशे सा० बल्हा जा० सूल्ही पुत्र सा० बाहड़ जा० गउरी सुत डूंगर रणधीर सुरजनैः रणधीर श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री यशोदेव सूरिजिः ॥ ठाजहड़ गोत्रे ॥

[1888]

ॐ संवत् १५३६ वर्षे श्री कीर्तिरत्न सूरि गुरुज्यो नमः सा० जेठा पुत्र रोहिनी प्रणमंति ॥

बाड़मेर–मारवाड ।

पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

[1889]

सं० १६६५ वर्षे उकेश वंशे सा० ठाकुरसी कु० प्र० क..... प्रमुख श्री संघेन उ० श्री विद्यासागर गणि शिष्येण श्री विद्याशील गणि शिष्य वा० श्री विवेकमेरु गणि शिष्य पं० श्री मुनिशील गणि नित्यं प्रणमति । श्री अंचल गछे ।
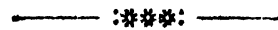
उदयपुर ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर–सेठों की वाड़ी में ।

पचतीर्थियों पर ।

[1890]

॥ सं० १५०६ वर्षे मा० वदि ५ दिने श्री संडर गछे उप० ज्ञा० सा० आसा पु० सात जा० पेठी पु० पितमा जा० धारू पु० जाषर जा० लाडी पु० पामा स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री यशोजद्र सूरि संताने गछेशैः श्री शांति सूरिजिः ॥

[1891]

॥ संवत् १६२७ वर्षे वैशाष सुदि ११ बुधे नारदपुरी वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० टीला सुत सा० चूनाख्येन जार्या बाई पानु सुत लाधा हीता प्रभृति कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछाधिराज नट्टारक श्री हीरविजय सूरिजिश्चिरं नन्दतात् ॥

श्री रुषनदेवजी का मंदिर–हाथीपोल ।

पंचतीर्थी पर ।

[1892]

॥ सं० १३४२ ज्येष्ठ शु० ए गुरौ गेपुत्रीवाल(?) ज्ञातीय व्यव० पुनाकेन जार्या ..श्रेयसे श्री पद्मप्रच बिंबं का० प्र० श्री सुमति सूरिजिः ॥

श्री रुषनदेवजी का मंदिर–कसैरी गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1893]

॥ सं० १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ५ उपकेश ज्ञातीय....श्री आदिनाथ बिंबं का०....

[1894]

॥ सं० १५३३ वर्षे वैशाष सु० ५ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० व्य० मेला जा० फवकू सुत सुधाकेनपितृमातृभ्रातृ श्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० श्री नागेंद्र गछे श्री गुणदेव सूरिजिः ॥ वडेचा सषवाराही ग्रामे वास्तव्य ॥

[1895]

॥ संवत् १५५ए वर्षे आषाढ सुदि ७ दिने डूगड़ गोत्रे जार्या सिरिया पुत्र करमसी जार्या फुल्ला धरमाई पुत्र षीमपाल नरपाल नरपति मातृ श्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री बृहद्गछे ज० श्री श्री वलज सूरिजिः ॥

[1896]

॥ सं० १५७२ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे ऊकेश वंशे वईताला गोत्रे सा० तोला भा० डीडो पु० सा० आसाकेन भा० राना दे पु० जीवा द्वितीय भा० अचला दे पुत्र गोव्हा पदमादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनहर्ष सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥ पं० कुशल....सुप....।

श्री गौतमस्वामी की धातु की मूर्त्ति पर।

[1897]

॥ सं० १६२९ व० का० सु० ३ गुरुवारे...सरताण...श्री गौतमस्वामि बिंबं का०..।

धातु के यंत्र पर।

[1898]

॥ सं० १९१२ वर्षे मिती आसोज सुदि १५ शुक्रे मेदपाट देशे उदयपुर ओशवंशे धुद्धिशाखायां गोत्र बोल्यां साहाजी श्री एकलिंग दासजी तत्पुत्र साहाजी श्री भगवान दासजी तत्पुत्र कुंवरजी श्री......श्री सिद्धचक्र यंत्र कारापितं भट्टारक श्री आनन्द सागर सूरि कारापितं बृहत्तपा गच्छे।

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर—सेठों की हवेली के पास।

मूलनायकजी पर।

[1899]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री ऋद्धिवृद्धि जयो। मंगलाभ्युदय श्री ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्री मन्नृपति विक्रमार्क्क समयातित संवत् १६९९ वर्षे श्री शालिवाहन राज्यात् शाके १५६४

(२) ॥ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले माघ मासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री रामगढ़ दुर्गे महाराजाधिराज महाराव श्री हठीसिंघ जी विजयराज्ये ऊपकेश वंशे वृद्धि शाखा

(३) यां घांघ गोत्रे साह श्री माल्हण तत्भार्या सरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि भार्या दीपां लघु भार्या सूषम दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपाल सहितेन श्री प्रासाद बिं

(४) बं ॥ श्री ऋषभदेव बिंबं स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे भट्टारिक श्री महिमा सागर सूरी तत्पट्टे श्री कल्याणसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्री उदय सागर सूरिः । शुभं ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1900]

॥ ॐ ॥ सं० १४९९ वर्षे फा० सुदि २ दिने ओसवाल ज्ञातीय सा० झाझण पु० सा० भुदा सुश्रावक भार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमालादि सहितेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1901]

॥ सं० १४९९ माह सुदि ६ सोमे उ० ज्ञा० गूंदोचा गोत्रे सा० लाषा भा० लाषण दे पु० मेहाकेन भा० मयणल दे पु० पित्रपाल रणपालादि सह भाई पेता भा० पेतल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गच्छे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिभिः ॥

[1902]

॥ संवत् १५२९ वर्षे वै० व० ४ शुक्रे प्रा० ज्ञातीय प० चांपसी भा० पोमादे सु० सांगाकेन भा० दई सुत करण भ्रा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । झाड़उलि ग्राम वास्तव्यः ॥

चौवीशी पर ।

[1903]

॥ सं० १५११ व० आषा० व० ८ श० उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे धाधू शा० सा०

ऊषा ज्ञा० ऊंब श्री पु० सुवर्णपाल जार्या सोमश्री पुत्र सा० लाषा केन ज्ञा० अधकू पु० सदरथ सूरचंद्र हरिचंद्र युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं उपकेश ग० ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजि ॥ श्रीः ॥

प्रतिमा पर।

[1904]

॥ सं० १९१९ रा मिगसर सु० १० उसवाल भागा गोत्रे सा० शिवनीदास जी जार्या अनरुप दे पुत्र नाथजी अनरुप दे जी पंच पर....प्रतिष्ठितं।

करेडा-मेवाड।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर।

धातु की प्रतिमा पर।

[1905] *

(१) ओं देव धर्म्मोयं सुमति गुरोः मध्यम शाखस्य

(२) वसति का० देवसूरि संवतु........

(३) जिः

[1906]

सं० १६०४ व० ज्येष्ठ व०...बा कहानी (?) श्री कुंथुनाथ व जि...दान...सरपत्र खत सोनी सीदकरण

[1907]

॥ संवत् १६१९ वैशाख सुदि ६ श्री आदिनाथ......श्री विजयदान सूरि प्र० बा० ....पु० ना० सुंदर......।

* संवत् के अंकों का स्थान टूट गया है, परन्तु लेख के अन्य अक्षरों से स्पष्ट है कि प्रतिमा बहुत प्राचीन है।

[1908]

॥ सं० १६२२ व० वैशाख सुदि १२ वो श्री शीतलनाथ बिंबं गुरू श्री विजय सूरिभिः ॥

[1909]

॥ सं० १६४६ असा० सुदि ६ वाजसा श्री धर्म......

[1910]

॥ संवत् १७१० वर्षे ज्येष्ठ सित ६ गुरौ श्री सुविधि बिंबं श्रेयोर्थं का० प्र० भ० श्री विजयराज सूरिभिः श्रा० कनका भ० श्री विजय सेन सूरिभिः ॥

पंचतीर्थी पर।

[1911]

॥ सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे प्राग्वाट वंशे सं० कर्मट भा० माजू पु० उधरणेन भार्या सोहिणि पुत्र आल्हा वीसा नीसा सहितेन श्री अंचल गच्छेश श्री जयकेसरि सूरि उपदेशेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य स्वामी बिंबं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

[1912]

॥ सं० १५१६ वीरम ग्रामे श्रे० वीठा सोनल पुत्र श्रे० जुडसिकेन भा० संपूरी पुत्र धन्ना वाघा भार्या कांऊ प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छ नायक श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[1913]

॥ संवत् १५२९ वर्षे फागुण सुदि २ शुक्रे श्री श्री (?) वंशे रसोइया गोत्रे श्रे० गुहा भार्या रंगाई पुत्र श्रे० देधर सुश्रावकेण भा० कुंवरि भ्रातृ सीधा युतेन श्री अंचलगच्छेश्वर श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥

[1914]

॥ संवत् १५४१ वर्षे वैशाख मासे नागर ज्ञातौ श्रे० केल्हा भा० मानूं सुत धांगा भार्याकेन सुत हरखा भांगा बाला सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंब का० प्र० बृ० तपापक्षे भ० श्री जिनरत्न सूरिभिः ॥

[1915]

॥ संवत् १५०७ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ उपकेश ज्ञा० सा० हापा पु० बिजा भा० बइ- जल दे पु० ठाकुर रीडा ठाकुर भा० अठवा दे पुत्र कुंरपाल युतेन आत्मश्रे० पित्रोः पु० श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री० वृ० वो० श्री मलयहंस सूरिभिः ॥ कईउलि वास्तव्य ॥

रंगमंडप के वांये तर्फ आले के नीचे का शिलालेख।

[1916]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्री आंचल गछे। प्राग्वाट ज्ञातीय महं साजण महं तेजा .... सा झांझणेन निज मातृ

(२) ...... कपूर देवी श्रेयोर्थं रवनक (?) श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं ॥ संताने महं मंडलिक महं माला महं देवसीह महं प्रमत्तसीह .....

सभामंडप में दरवाजे के दाहिने स्तंभ पर।

[1917]

॥ ॐ ॥ संवत् १४६६ वर्षे चेत्र सुदि १३ सुविहित शिरोरत्न शेखर श्री रत्नशेखर सूरि पट्टांबुधि पूर्णचंद्र श्री पूर्णचंद्रसूरि गुरुक्रम कमलहंसाः श्री हेम हंससूरयः सपरिकरा करः...

सभामंडप के ३ मकले के स्तंभ पर।

[1918]

श्री जिनसागर सूरि उदयशील गणि आज्ञासागर गणि क्षेमसुंदर गणि मेरुप्रभ मुनि श्री ......

बावन जिनायलमें पंचतीर्थीयों पर ।

[1919]

॥ सं० १२४ए......लषमिणी श्रेयोर्थं पुत्र उधरणेन जात्रि आसधर श्रेयोर्थं श्री पार्श्व-नाथ बिंबं कारितं ॥

[1920]

ॐ संवत् १२६१ ज्येष्ठ सुदि १० शनौ बायट ज्ञातीय स्वसुर नायक आसल श्रेयोर्थं ......श्री श्रेयांस बिंबं कारितं । श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वर्द्धमान सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[1921]

संवत् १३२१ वर्षे फागुण सु० .... जा० घाटी पु० ऊदा जा० रुपिणि सुत आसपालेण माता पिता पूर्वज श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री चैत्रगच्छीय श्री आमदेव सूरिजिः श्री शांतिनाथ ......।

[1922]

सं० १३५५ श्री ब्रह्माण गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय रिज पूर्वज श्रेयसे सुत मालाकेन श्री आदि नाथ बिंबं प्र० श्री विमल सूरिजिः ।

[1923]

सं० १३५६ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[1924]

सं० १३७१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० धीना जार्या देवल पुत्र चकूजा केन मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री पूर्णिमा गच्छे श्री सोमतिलक सूरि उपदेशेन बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1925]

सं० १३७३ वैशाख वदि ११ श्रे० सिरकुंआर जा० सींगार दे०या प्र० सा छू ...... श्री महावीर कारितं ।

[1926]

संवत् १३९१ मा० सु० १५ खरतर गच्छीय श्री जिन कुशल सूरि शिष्यैः श्री जिन पद्म सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठिता कारिता च मव० बाहि सुतेन रह्मसिंहन पुत्र आल्हादि परिवृतेन स्वपितृ सर्व पितृव्य पुन्यार्थं ।

[1927]

सं० १४०८ व० सु० ५ प्रा० रोस्तरा पदम । साहरु साकल श्रे० देवसीहेन का० प्रति० सिद्धान्तिक श्री माणचन्द्र सूरि ।

[1928]

सं० १४२२ व० ज्येठ सु० ११ बुधे......मंडलिक भा० कान्हण दे सुत धाणाश्रेयोर्थं व्य० धानाकेन श्री संभवनाथ बिंबं का०...तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरीणामुपदेशेन .....

[1929]

सं० १४३९ माह वदि ७ श्रीमाल ज्ञा० व्यव० राणासीह भा० ललती पुत्र बयरा केन श्री सुमतिनाथ बिंबं का० श्री विजयसेन सूरि पट्टे....

[1930]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि ......श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० कछोलीवाल गच्छे श्री संघतिलक सूरि....

[1931]

सं० १४८२ वर्षे....साहलेचा गोत्रे सा हांपा....भा० गयणल दे पुत्र सा० लींबा भा० वीरणी पुत्र षरहथेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पल्लीकीय गच्छे श्री यशोदेव सूरिभिः ।

[1932]

ॐ सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीमाल वंशे वहगटा गोत्रे सा० ऊदा पुत्र सा० जगकेन आसा जूसा सहसादि पुत्रयुतेन पुन्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

[1933]

सं० १४९३ व० वै० सु० ५ श्री संडेर गच्छे पीपलउडेचा गोत्रे श्रे० जा० सा० कान्हा जा० वीमणि पु० रतनाकेन पित्रौ निमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० श्री जशोभद्र सूरि संताने श्री शालि.....।

[1934]

सं० १५०३ व० ज्ये० सु० ११ शु० श्री उप० ग० ककुदाचार्य सं० त्रिपड गो० सा० जीकण पु० रामा जा० जीवदई पु० जिलाकेन पत्नीपुत्रस्वश्रे० श्री श्रेयांस बिं० का०......।

[1935]

सं० १५०८ मा० व० १३ ऊकेश सं० मारंग सुत संजा जा० हेमा दाणा डुंगर नापा सं० रावा जा० पोतू सुत साहस जहाए जा० लक्ष्म्या श्री संजव बिंबं का० प्र० श्री उदयनंदि सूरिभिः।

[1936]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे उपकेश ज्ञा० कस्याट गोत्रे। सा० धाना जा० ससमादे पुत्र सा चउसीडाकेन पितर बालू निमित्तं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश० कुल श्रावक......।

[1937]

सं० १५१७ वर्षे चैत्र वदि १ शुक्रे श्रीश्रीमाल ज्ञा०......सु० वडूआस पुत्र पौत्र सहितेन श्री अजितनाथ मु० जिवितस्वामि प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री राजतिलक सूरिणा-मुपदेशेन।

[1938]

सं० १५२५ वर्षे मार्ग० सु० ९ आगर वासि प्राग्वाट सा० वाघा जा० गाऊ पुत्र सा० मालाकेन जा० आल्हू पुत्र पर्वत जा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1939]

सं० १५३....। व० वैशाख सुदि ३ शनौ श्री संडेर गच्छे उ० टप गोत्रे देल्हा भा० दल्हण दे गोरा भा० मल्हा दे पु० आल्हा भा० करमा भा० आनूण दे पु० तोला श्रे० पूर्वज पुन्यार्थं वासुपूज्य बिंबं का०...।

[1940]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे ऊकेश वंशे जाजा गोत्रे सा० धर्मा भा० धर्मा दे पुत्र सा० काजा सुश्रावकेण भा० भोजा प्रमुख परिवार सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1941]

संवत् १५३० वर्षे ज्येष्ठ सु......माला भा० माला दे सुत केल्हा भा० सिवा सुत पोचकेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री जयचंद्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1942]

संवत् १६३७ वर्षे वैशाख सुदि १३ रवौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री नागर ज्ञातीय सा० पना भार्यां कीबादे सुत सा० होसा भार्या वा। हांसलदे नाम्ना श्री आदिनाथ पंचतीर्थी करापितं। श्रीमत्तपा गच्छे भट्टारक प्रभु श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं। शुभं भवतु ॥

[1943]

॥ संवत् १६७५ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवासरे......वास्तव्य उकेश ज्ञातीय द० साह थांहसा भा० प्रभा सुता भोमा......सुत हेमा कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनि.... तपा गच्छे भ० श्री हीरविजय सूरि भ० श्री विजयदेव सूरिश्वर.......।

[1944]

संवत् १७०७ माघ सु० ५ गुरुदिने आचार्य श्री क्षेमकीर्तिः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः

श्रग्रोतकान्वये साधु मात्रा जा० क्षीनाही तयोः पुत्राः साधु कौला चूला कौला जार्या सुनुना तयों पुत्र कील्हा जार्या बंदो पुत्र दासू वस्तुपाल नित्यं प्रणमति ॥

चौवीशी पर।

[1945]

(१) ॐ संवत् ११४२ मार्ग सु० ७ सोमे श्री सांबदेवा धंमके (?) . . . जासल श्रावक पुत्रि

(२) कया श्रीमत्धसिंकया श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टकः कारितः ॥

(३) (बिंबं) शं० बि० . . . . चाल्ह । का० प्र० तपा गछे ॥

चौवीसी पर।

[1946]

॥ सं० १५६५ वै० शु० ७ शनौ श्री नटीपद्र वास्तव्य श्रीश्रीमाल ज्ञातीय सा० कान्हा जार्या फुतिंगदे सुता सा० मेघा जा० बारधाई सुत रूपा षीमादि सकुटुंब युतया सा० राजा जार्या बीमाई सुता राकू नाम्न्या श्री अनंतनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गछे श्री सोम सुंदरसूरि संताने श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

ह्रींकार यंत्र पर।

[1947]

॥ संवत् १६७७ वर्षे पोस मासे १० दिने श्री बृहत् खरतर गछे श्री जिनराज सूरि विजय राज्ये चंदा पूर्म्यां ओसवाल ज्ञातीय नाहटा गोत्रे सा० सहसराज पुत्र सा० सिंघराज तत्पुत्राः सा० श्री चंद संवतु १ सा० सधारण सा० श्री हंस सा० करसण ढासा सधारण जार्या सहयदे सुत तत्पुत्रा सहसकरण सुमति सहोदर शुजकर प्रतिष्ठितं श्रीमन् श्री परानथन सुहगुरुणा ॥ हितं कारापितं ॥

बावन जिनालय की देहरियों के पाट पर।

[1948]

(१) संवत् १०३ए (व) र्षे श्री संडेरक गछे श्री यशोजद्र सूरि संताने श्री श्यामा (?) चार्या ......

(२) .... प्र० ज० श्री यशोजद्र सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ पूर्ण चंद्रेण कारितं ....

[1949]

(१) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गछे श्री जद्रेश्वर संताने राटउरीय वंशे

(२) श्रे० जीम अर्जुन कमवट श्रे० बूमा पुत्र श्रे० धयजा धांधल पासम ऊदादिजिः कुटुंब समेतैः ....

(३) थ प्रतिमा कारिता। प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिजिः ॥

[1950]

(१) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गछे श्री नन्नाचार्य संताने ...

(२) सा० जीमा पुत्र जिसदेव रतन अरयमदन कुंता महणराव मातृ लाछी श्रेयोर्थं विंबं (कारि)

(३) (ता)। प्रतिष्ठितं। श्री सर्वदेव सूरिजिः ॥

[1951]

(१) ॥ (संवत् १३१७) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री षंडेरक गछे प्रतिबद्ध चैत्यालये श्री यशोजद्र सूरि संताने श्रे० साढ देव पुत्र मह सामंत मह आसपालेन पु० धांधल सा०..

(२) .... (श्रे) योर्थं श्री संजवनाथ बिंबं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिजिः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

[1952]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३ए वर्षे फागुण सुदि ० शनौ नां देवान्वये साधु पउमदेव सुत संघपति साधु श्री पासदेव जार्या षेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रतन
(२) बाहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिनिः देवकुलिका सहितं श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि गछे श्री मुनिचंद्र सूरि शिष्यैः श्री गुणचंद्र सूरिनिः ॥ ब ॥

[1953]

(१) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३ए फागुण सुदि ० शनौ श्री राज गछे साधु नेमा सुत धार सत तनुज साधु नाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकढ जार्या नान्ही पुत्र पाल्हा ॥
(२) जा० धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी ललतू द्वि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल जार्या हीरा देवी द्वि० हरिसिणि पुत्र महीपाल ॥
(३) देव तृ० हिमश्री सा० कुमरसिंह तथा सा० तेजा जार्या लीलू पुत्र धरणिग पून सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपालेन श्री षंडे ॥
(४) र गछे प्रतिबद्ध श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुलिका सहितं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रन सूरिनिः ॥

[1954]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १३३ए वर्षे फा० सुदि ० शनौ श्री राज गछे सा० नेमा सुत सा० धार सत सुत सा० गाहड़ तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकढ जार्या नान्ही पुत्र पाल्हा जा० ॥
(२) धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति जार्या ललतू द्वि० नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल पत्नी हीरादेवी द्वि० हरिसिणि पुत्र महीपा-
(३) ल देव तृ० हेमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा जार्या लीलू पुत्र धरणिग पूनसीह

पुत्रादि धर्म्म कुटुंब समुदये पितृ सा० काकढ श्रेयसे सा० पाल्हाकेन श्री

(४) पंडेर गच्छे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये देवकुलिका श्री आदिनाथश्च कारितं प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्य अमलप्रभ सूरिभिः ॥

[1955]

(१) ॥ संवत् १३७४ वर्षे पौष सुदि ७ रवौ श्री चित्रकूट स्थाने महाराजाधिराज पृथ्वीचंद्र......

(२) श्री मालदेव पुत्र श्री वणवीर सत्कं सिलहदार महमद देव सुहड सींह चउंडरा सत्कं पुत्र......

(३) दिवं गतं तस्य सत्कं गोमट्ट कारापितं : ॥

[1956]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १४७१ वर्षे ॥ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवारे श्रीमाल ज्ञातीय मउठिया गोत्रे सा० डाहड सा० धाना भा० इल्हा पुत्र सं० हेमराज सं० थिरराज सं० लालू सं० गाङ्पाल कु......

(२) ...वे पुत्र सा० हेमराज पुत्र समुद्रपाल भार्या....श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनप्रभ सूरि अन्वये । श्री जिनसर्व सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1957]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १४७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवारे श्री ऊकेश वंशे नाहट शाखायां । सा० माजण पुत्र सा० व

(२) णवीर पुत्र सा० भीमा । वीसल रणपाल प्रमुख पौत्रादि परिवार सहितेन श्री करहेटक स्थाने श्री पार्श्व

(३) नाथ भुवने श्री विमलनाथ देवस्य देवकुलिका कारापिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सू-

(४) रीणामनुक्रमे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टकमलमार्तंडमंडलिः श्री मज्ज्ञानसागर सूरिभिः ॥ शिवमस्तु ॥

(५) बरसंग देवराज पुण्यार्थः ॥
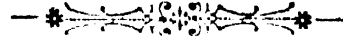
नागदा–मेवाड़।

श्री शांतिनाथ जी का मंदिर।

मूलनायक की श्वेत पषाण की विशाल मूर्ति की चरण चौकी पर।

[1958]*

(१) संवत् १४९४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरुवारे श्री

(२) मेदपाट देशे श्री देवकुल पाटक पुरवरे नरेश्वर श्री मोकल पुत्र

(३) श्री कुंभकर्ण नृपति विजयराज्ये श्री उंसवंसे श्री नवलक्ष शाष मंडन सा० लक्ष्मी

(४) धर सुत सा० लाधू तत्पुत्र साधु श्री रामदेव तद्भार्या प्रथमा मेला दे द्वितीया माल्हण दे। मेला दे कुक्षि संभूत

(५) सा० श्री सहणपाल। माल्हण दे कुक्षिसरोजहंसोपम श्री जिनधर्मकर्पूरवातसद्य धीनुक सा० सारंग तदंगना हीमा दे लखमा दे

(६) प्रमुख परिवार सहितेन सा० सारंगेन निजभुजापार्जितं लक्ष्मी सफली करणार्थं निरुपममद्भुतं श्रीमहत् श्री शांति जिनवर बिंबं सपरिकरं कारितं

(७) प्रतिष्ठितं श्री वर्द्धमानस्वाम्यन्वये श्री मरखरतर गछे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरि त(स्त)त्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि त(स्त)त्पट्टपूर्वाचलचूलिका स-

---

* यह लेख "भावनगर इन्स्क्रिपसन्स" पृ० ११२-१३-में और "देवकुलपाटक" पृ० १६ नं० १८ में प्रकाशित हुआ है।

हस्तकरावतारैः श्री मज्जिनसागर सूरिभिः ॥

(८) सदा वन्दंते श्रीमद् धर्ममूर्ति उपाध्यायाः घटितं सूत्रधार मदन पुत्र धरणा सोमपुराध सूत्रधारः रोमी जुरो रुग्रोवीकाभ्यां ॥ आचंद्रार्क्कं नंद्यात् ॥ श्रीः ॥ छ ॥

सभामंडप के बायें तर्फ स्तम्भ पर।

[1959]

(१) संवत् १८७९ वर्षे वैशाष सुदि ११ सोमे साहाजी श्री जेठमल जी ताराचंद जी कोठारी जात श्री............ साहजी श्री उदेचंदजी............

पाषाण की टूटी चौवीसी पर।

[1960]

(१) ॐ सं० १४२५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधवारे ऊकेश वंशे नवलक्षा गोत्रे साधु श्री रामदेव पुत्रेण माल्हण देवि पुत्र......

(२) कारकेण निजभार्या। जिनशासन प्रभाविकाया हेमा दे श्राविकायाः पुण्यार्थं श्री सप्ततिशतं जिनानां कारितं......

(३) तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः।
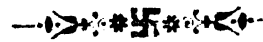
दलवाड़ा-मेवाड़। *

श्री पार्श्वनाथजी का बड़ा मंदिर।

मूलनायकजी पर।

[1961]

सं० १४७६ श्री पार्श्वनाथ बिंबं सा० सहणा......

* यह स्थान प्राचीन है। "देव कुलपाटक" नामकी पुस्तक में लेखों के साथ यहां का वर्णन है।

पुंडरिकजी के मूर्ति पर।

[1962]

संवत् १६०९ वर्षे आषाढ बहुल ४ शनौ देलवाड़ा वास्तव्य शवर गोत्रे ऊकेश ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० मानाकेन जा० हीरा रामा पुत्र रुपाया रांगा फया युतेन स्वश्रेयसे श्री पुंडरीक मूर्तिः कारापितं प्रतिष्ठितं संडेर गच्छे ज० श्री मानाजी केसजी प्र० ॥

आचार्यों के मूर्ति पर।

[1963]

. . . जिनरतन सूरिगुरु मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता . .

. .

[1964]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ दिने नवलक्ष शाखीय सा० रामदेव भार्यया श्री मेला देव्या श्री जिनवर्द्धन सूरि मूर्तिः कारिता प्र० श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1965]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ सा० रामदेव भार्या मेला देव्या श्री द्रोणाचार्य गुरुमूर्तिः कारिता प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

श्वेत पाषाण को कायोत्सर्ग मूर्तियों पर।

[1966] *

(१) ॥ ६० ॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख वदि ५ . . . . . यवरू प्रासाद गोष्ठिक प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० झांझा जा०

---

* यह लेख धोरीवाव नामक स्थान में मिट्टी से निकली हुइ विशाल मूर्ति के चरण चौकी पर है

(२) लाछि पुत्र दपा भार्या देवल दे पुत्र ७ व्यव . . . . . . कुंरपाल सिरिपति नर दे धीणा पंडित लषमसी आ·

(३) त्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ जिनयुगल कारापितः प्रतिष्ठितः कछोलीवाल गछे पूर्णिमा पक्षे द्वितीय शाखा·

(४) यां भट्टारक श्री भद्रेश्वर सूरि संताने तस्यान्वये भ० श्री रत्नप्रभ सूरि तत्पट्टे भट्टारक श्री सवाण·

(५) द सूरीणां शिष्य लषमसीहेन आत्मश्रेयोर्थं कारापितः प्रतिष्ठितः भ० श्री सर्वा· णंद सूरी·

(६) णामुपदेशेन ॥ मंगलाभ्युदयं ॥

[1967]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रमादित्य संवत् १५०० वर्षे वैशाष शुदि ३ श्रीमाल· ज्ञातौ मांथलपुरा गोत्रे सा०

(२) देहड़ संताने सा० काला तत्पुत्र सा० मेला केला मेला पुत्र सा० सोमा स० सा· यरकेन पुत्र हुंफण पुत्र

(३) तोला सोमा पुत्र महिपति डुंगर भाषर सायर पुत्र बाळा पाला हुंफण पुत्र वस्त· पाल त . . . . . .

(४) ल रत्नपाल कुमरपाल तोला पुत्र नरपाल नरपति प्रभृति पुत्र पौत्रादि सहितेण

पट्टों पर ।

[1968]

सं० १४९४ वर्षे फाल्गुन वदि ५ प्राग्वाट सा० देपाल पुत्र सा० सुहडसी भार्या सुहडा दे पुत्र पीछलिआ सा० करणा भार्या चनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा काला भ्रातृ सा० हीसाकेन भार्या लाखू पुत्र आमदत्तादि कुटुंबयुतेन श्री द्वासप्तति जिनपट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपागछनायक श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1969]

सं० १५०३ वर्षे आषा० शु० ७ प्राग्वाट सा० देपाल पु० सा० सुहडसी जा० सुहडा दे सुत पीठउलिआ सा० करणा जार्या वनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा ही रा होसा काला मा० धर्माकेन जा० धर्माणि सुन महसा सालिग महजा सोना साजणादि कुटुंबयुतेन एद जिनपट्टिका कारिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री तपागच्छाधिराज श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री जय चंद्र सूरिजिः ॥

[1970]

सं० १५०६ फा० शुदि ए श० सा० सोमा जा० रूडी सुत सा० समधरेण च्रातृ फाफा सीधर तिहुणा गोविंदादि कुटुंबयुतेन तीर्थ श्री शत्रुंजयगिरिनारावतार पट्टिका का० प्र० श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

भौंयर में।

मूलनायकजी पर।

[1971]

१४ए४ ऊकेश सा० वाछा राणी पुत्र वीसल खीमाई पुत्र धीरा पत्नी सा० राजा रत्ना दे पुत्री माल्हण देव का० आदि बिंबं प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

पट्ट पर।

[1972]

सं० १४७५ वै० शु० ३ ऊकेश वंश सा० वाछा जार्या राणा दे पुत्र सा० वीसल पत्न्या सा० रामदेव जार्या मेला दे पुत्रा सं० खीमाई नाम्न्या पुत्र सा० धीरा चयांपा हांसादि युतया श्री नन्दीश्वर पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः तपागच्छे श्री देवसुंदर सूरि शिष्य श्री सोम-सुंदर सूरिजिः स्थापितः तपा श्री युगादि देवप्रासादे ॥ सूत्रधार नरवद कृतः ॥

[1973]

सं० १५०३ वर्षे आषा० शु० ७ प्राग्वाट सा० आका ना० जसल दे चांपू पुत्र सा० देल्हा जूठा सोना षीमाद्यैः चतुर्विंशति जिन बिंबं पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुंदर सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥

देहरी में ।

मूलनायकजी पर ।

[1974]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं नानसिरि श्राविकया । प्र । श्री जिनसागर सूरिभिः । श्रीमाल ज्ञातीय नांभिया गोत्रे ।

पट्टों पर ।

[1975]

सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १४ बुधे श्री ऊकेश वंशे नवलक्षा शाषायां सा० राम नार्या नारिंग दे पुण्यार्थं श्री श्री सिद्धिशिलाकायां श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

[1976]

(१) ॥ संवत् १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ॥ ऊकेशवंशश्रृंगारो भुवन पाल इत्यनूत् । भुवनं पालयन् यः स्वुंनामनिन्ये (?) यथार्थतः ॥ १ ॥ तदन्वये ततो जात . . . तक . . . . . .

(२) स्यः पृथु प्रतापी ननु रोष तापी । जिनांघ्रिरक्तो गुरुपादलक्तो । गुणानुरागी हृदय विरागी ॥ ४ ॥ युगलकं ॥ तस्यांगना . . . ग कुरंगनेत्रा सीतेव . . . . . .

(३) धार सहितेन सा० सहणा सुश्रावकेण जिनमातृ पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं चतुर्विंशति पट्टक विंशति विहरमानादि . . . . . .

[1977]

(१) संवत् १४ए१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० रामदेव जार्या मेला
(२) दे पुत्र सहणपाल जार्या नारिंग देव्या श्री . . . . जिन मूर्त्ति बिंबानि प्र-
(३) तिष्ठितं श्री खरतर गच्छ श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

दरवाजों पर ।

[1978]

(१) संवत् १४७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवासरे . . . . . .
(२) . . . .

[1979]

(१) श्री ॥ सं० १४०३ नागपुरे ऊकेश वंशे सा० हीरा जा० धर्मिणि पुत्र्या सरस्वती
पत्तनवासि सा० हीरा सुत सा० संग्राम सिंह जार्यया सम्यक्त्वदेशविरत्यादि गुण
(२) युक्तया श्रा० देऊ नाम्न्या न्यायोपा(र्जि)तं निजवित्त व्ययेन तपापक्षे श्री आदिदे-
वप्रासादे श्रीपार्श्वनाथ देवकुलिका कारिता प्र० गच्छनायक श्रीसोमसुंदर सूरिजिः ।

[1980]

(१) सं० १४०४ वर्षे श्री अणहिल्लपुरवासि श्री श्रीमालज्ञाति सा० समरसी पुत्रेण सा०
सोमाकेन संप्रति अहमदावादपुरवासी सजार्या . . . . . .
(२) सुत मो० वाघादि कुटुंबयुतेन श्री तपापक्षे श्री आदिनाथ प्रासादे श्री अजित
देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपापक्षे श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

[1981]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शुक्रे नवलक्ष गोत्रे
(२) सा० रामदेव जार्या मेला दे श्राविकया निजपुण्यार्थं
(३) . . . . . . श्री आदिनाथ प्रासाद कारितं ॥ प्रतिष्ठितं

(४) श्री खरतर गछे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1982]

(१) ॥ संवत् १४७६ वर्षे कार्तिक सुदि ११ सोमे ॥ ऊकेश ज्ञातीय सा० ढाह्नड़ भार्या सुपुव दे पु० राना साना सखषाके(न) निज मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ प्रासादे श्री सुमतिनाथ देव प्रतिमा

(२) कारिता ॥ ऊकेश गछे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं । श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ छ ॥ श्री ॥ मल्लधारीयकैः ॥

[1983]

(१) सं० १४८८ फा० सु० ८ श्रीमाल ज्ञा० सा० . . . . . .

(२) देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता तपागछनायक श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनि सूरिभिः ॥ श्री अणहिलपुरपत्तन वास्तव्य

[1984]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधवारे ऊकेश वंशे श्री नवलखा गोत्रे श्री रामदेव भार्या श्राविका मेला दे पुत्र साधु श्री सहणपाल भार्यया नारिंग दे श्राविकया पुत्र सा० रणमल्ल सा० रणधीर रणभ्रम सा० कर्मसी पौत्रादि सहितया निज पुण्यार्थं जिनानां

(२) . . . .
श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरि तत्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टपूर्वाचल श्रीयुत श्री जिनसागर सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

नये मंदिर में ।

मूलनायकजी पर ।

[1985]

॥ सं० १४९२ वर्षे वैशाख सुदि २ श्री पार्श्वनाथ बिंबं ॥ सा० समुदय वछस्य ॥

कायोत्सर्ग मूर्तियों पर

[1986]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १४६४ वर्षे आषा० शु० १३ दिने गूर्जर ज्ञातीय न-
(२) णसाली लाषण सुत मं० जयतल सुत मं० सादा भार्या सूमल
(३) दे सुत मं० वरसिंह भ्रातृ मं० जेसाकेन भार्या शृंगार दे पुत्र
(४) हरिचंद्र प्रमुख सकल कुटुंबसहितेन स्वश्रेयसे प्रभु
(५) श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरिभिः ॥

[1987]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ गुरुवारे श्रीमाल ज्ञातीय मंत्रि . . . . णू प्रा सुत नंदिगेस । सुत पुत्र सा० आसा सुश्रावकेण श्री पार्श्वनाथ बिंब स्वपुण्यार्थे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[1988]

॥ ॐ ॥ सं० १३८१ वैशाष वदि ५ श्रीपत्तने श्री शांतिनाथ विधि चैत्ये श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिभिः श्री जिनप्रबोध सूरि मूर्तिः प्रतिष्ठिता ॥ कारिता च सा० कुंमरपाल रत्नैः सा० महणसिंह सा० देपाल सा० जगसिंह सा० मेहा सुश्रावकैः सपरिवारैः स्वश्रेयोर्थं ॥ छ ॥

[1989]

संवत् १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० सहणपालेण स्वपुण्यार्थे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरीणां मूर्तिः प्र० श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

ऋषभदेवजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1990]

सं० १५१० पौष वदि १० घांघ गोत्रे सा० सारंग जा० सुहागिणि सु० सा० काल्लू सा० चाहड़ नामाभ्यां पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणसुंदर सूरिभिः॥

[1991]

॥ संवत् १५१५ वर्षे माह वदि ए शुक्रे श्री संडेर गच्छे ऊ० काश्यप गोत्रे सा० षेता पु० षीमा जा० षीमसिरि पु० चुडा जा० जरमी पु० पूजा नयमा वीढा रंगा सहितेन श्री नेमि-नाथ बिं० कारितं प्रति० श्री ईश्वर सूरिभिः॥

[1992]

॥ सं० १५७२ वर्षे वैशाष सुदि पंचमी सोमे। उ० ज्ञा० काठड़ गोत्रे। दो० ऊदा जार्या ऊमा दे पु० दो० रूपा दो० देपा अमर नाथा। रंगा देवा जार्या दाडिम दे पु। पहिराज साल्हा रायमल्ल युतेन सुपुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

मूलनायकजी पर।

[1993]

ॐ॥ स्वस्ति सं० १४६ए वर्षे माघ.... ६ रवौ श्रीमाल वंशे नावर गोत्रे ठ० ऊदड़ संताने श्री पुत्र मंत्रि करम.... श्रेयोर्थं लघु भ्रात् ठ० देपालेन भ्रातृव्य ठ० जोजराज ठ० नयणसिंह जार्या माल्ह दे सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः देवकुलपाटके।

श्याम पाषाण की पादुका पर ।

[1994]

संवत् १४९१ वर्षे माघ वदि ५ दिने बुधे ऊकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्रीः रामदेव जार्या मला दे तत्पुत्र साधु श्री सहणपालेन जार्या नारिंग दे पुत्र रणमल्लादि सहितेन देवकुलपाटके पूर्वाचलगिरा श्री शत्रुञ्जयावतारे मोरनाग कुटिका सहिता प्रति० श्री खरतर गछे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

पट्ट पर ।

[1995]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवारे सा० आंबा पुत्र सा० वीराकेन स्वमातृ आंबा श्राविका स्वपुण्यार्थं ॥ श्री चतुर्विंशति जिन पट्टकः कारितः श्री खरतर गछे प्रतिष्ठितं श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[1996]

संवत् १४६९ वर्षे माघ शुदि ६ दिने ऊकेश वंशे सा० सोषा संताने सा० सुहडा पुत्रेण सा० नान्हाकेन पुत्र वीरमादि परिवारयुतेन श्री जिनराज सूरि मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री खरतर गछे श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ।

[1997]

सं० १४६९ वर्षे सा० रामदेव जार्यया मेला दे श्राविकया स्वभ्रातृस्नेहलया श्री जिनदेव सूरि शिष्याणां श्री मेरुनंदनोपाध्यायानां मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी की बसी ।

पंचतीर्थी पर ।

[1998]

॥ सं० १२०१ वर्षे आषाढ सुदि १० रवौ श्री देवाभिदित गच्छे श्री शील सूरि संताने आमण पुत्रेण कनुदेवेन भ्रातृ सुंजदेव श्रेयोर्थं आत्मश्रेयोर्थं च प्रतिमा कारिता ।

तपागच्छ का उपासरा ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1999]

सं० १२९३ । गोसा भ्रातृ जेजा भार्या हेमा ....श्रेयोर्थं प्रतिमा कारिता ॥

[2000]

सं० १४०४ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उपकेश वंशे नोसतिकि (?) शाखायां साकू वाल भा० माल्हण दे लाषाकेन भ्रातृ पुंजा भा० मेला दे .... पितृ श्रे० शांतिनाथ बिंब कारितं प्र० श्री जयप्रभ सुरिभिः ।

[2001]

ॐ सं० १४९४ वैशाष वदि ७ बुधे ...... बिंबं कारितं श्री ...... ।

[2002]

॥ ॐ सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ शुक्रे ऊ० गूगलिया गोत्रे सा० सूरा भा० सुहमा दे पु० धणपाल भा० लाछल दे ...... हा निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्रतिष्ठितं श्री शालिभद्र सुरिभिः ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[2003]

सं० १००२ आषाढ़ सुदि १० श्री ऋषभनाथ बिंबं का० हरषा लोत ...... ।

DEVALVARHA (MEWAR) INSCRIPTION
Dated, V. S. 1491 (A. D. 1434)

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[2004]

सं० १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे खरतर गच्छे नाग.... मुनिचंद्र शिष्य ज०यराज गणि पार्श्वनाथ बिंबं......।

[2005]

सं० १३९९ वर्षे माह सु० १३ श्री प्र...लू ना०...कुंथुनाथ......।

शिलालेख

[2006]

(१) ॥ ॥ श्रेयः श्रेणिविशुद्धसिद्धलहरीविस्तारहर्षप्रदः श्री मत्साधुमरालकेलिरणिभिः

(२) प्रस्तूयमानक्रमः । पुण्यागण्यवरेण्यकीर्तिकमलव्यालोललीलाधरः सोयं मानससत्सरो

(३) वरसमः पार्श्वप्रभुः पातु वः ॥ १ ॥ गंभीरध्वनिसुंदरः क्षितिधरश्रेणिभिरासेवितः सारस्तोत्रप-

(४) वित्रनिर्जरसरिद्धिष्णुसज्जीवनः । पंचज्ज्ञानवितानभासुरमणिप्रस्तारमुक्तालयः सोयं

(५) नीरधिव...भाति नियतं श्री धर्मचिंतामणिः ॥ २ ॥ रंगद्गांगतरंगनिर्मलयशः कर्पूर पूरोद्धुरा-

(६) मोदक्षोदसुवासितत्रिभुवनः कृत्तप्रमादोदयः । भास्वन्मेचककज्जलद्युतिभरः शेषाहि-

(७) राजांकितः श्री वामेयजिनेश्वरो विजयते श्री धर्मचिंतामणिः ॥ ३ ॥ इष्टार्थसंपादन-कल्पवृक्षः

(८) प्रत्यूहपांशुप्रशमे पयोदः । श्री धर्मचिंतामणिपार्श्वनाथः समग्रसंघस्य ददातु भद्रं ॥ ४ ॥ संवत्

(९) १४९१ वर्षे कार्तिक सुदि २ सोमे राणा श्री कुंजरकर्णविजयराज्ये उपकेश ज्ञातीय साह सह-

(१०) णा साह सारंगेन मांडवी ऊपरे लागू कीधु । सेलहथि साजणि कीधु अंके टंका चऊद १४ जको

(११) मांडवी लेस्यइ सु देस्यई । चिहु जणे बइसी ए रीति कीधी । श्री धर्मचिंतामणि पूजानिमित्ति । सा०

(१२) रणमल महं डूंगर से० हाला साह साडा साह चांप बइसी विहु रीति कीधी एह बोल

(१३) लोपवा को न लहइं । टंका ५ देउलवाडानी मांडवी ऊपरि टंका ४ देउलवाडाना मापा उप

(१४) रि । टंका २ देउलवाडाना मण हुंड वटा उपरि । टंका २ देउलवाडाना षारी वटा ऊपरी ।

(१५) टंकाउ १ देउलवाडाना पटसूत्रीय ऊपरी ॥ एवं कारई टंका १४ श्री धर्मचिंतामणि पूजा

(१६) निमित्ति सा० सारंगि समस्त संघि लागु कीधउ ॥ शुभं भवतु ॥ मंगलाभ्युदयं ॥ श्रीः ॥

(१७) ए ग्रासु जिको लोपइ तहेगर्हि राणा श्री हमीर राणा श्री षेता राणा श्री लाषा रा० मोकल

(१८) राणा श्रीकुंभकर्णनी आणछइ। श्रीसंघनी आण। श्रीजीराउला श्रीशत्रुंजयतणा सम ॥

देवी मूर्ति पर।

[2007] *

॥ सं० १४९६ वर्षे मार्ग शु० १० दिने मोढ ज्ञातीय सा० वछहरथ भार्या साजणि सुत मं० मानाकेन अंबिका मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री . . . . . . रिभिः ॥

---

* . महात्मा भोलालजी नाणावाल के यहां मूर्ति है ।

खंडहर उपासरा।

शिलालेख

[2008]

सूर्य   चंद्र

(१) परमात्मने नमः

(२) ॥ ॐ ॥ प्रणम्य श्री सूर्यदेवाय सर्वसुखंकर प्रभो। सर्वलब्धिनिधानस्य तं
(३) सत्वं प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥ मेदपाटे गिरो देसे गिरजागिरस्थानयो तां नगरो उ-
(४) त्तमा ज्ञेया देवको प्रमपट्टणौ २ तत्र राज्ञा श्रेयो ज्ञेयाः राघवो राज्य मा-
(५) नयोः षट्दर्शनसदामान्यः श्वेतांबरा अजिश्रियो ३ श्रीमदंचल ग-
(६) च्छस्था श्री उदयसागर सूरिणा। तस्य आज्ञा कारेण चारित्र रत्न-
(७) गुर प्रभौ ४ शिष्य लक्ष्मीरत्नस्य साधुमुद्रा सदा सुखी। राजधर्म स-
(८) नेहादि जिनमंदिर करापितं ५ कोटिवर्षचिरंजीवो बहुपुत्र-
(९) गजवाजिना अचलं मेरुकर्णोयं राज्यं पालति राघवः ६ जे
(१०) अन्य राजा स्वईश्वः लोपतो परदत्तयो नरकं ते नरा जाति ज-
(११) स्य धर्मस्य अवृथा ७ सं० १७९८ वर्षे माघ सुदि ५ तिथौ गुरू
(१२) श्री चतुराजी शिष्य कुशलरतन लक्ष्मीरतन उपासरो करा
(१३) यो श्री पुण्यार्थे। श्री राज श्री राघव देवजी वारके देलवाडा
(१४) नगरे श्रीसंघ समस्तां साध अर्थे पं लिखमीरतन चेला हेमरा-
(१५) ज ऊपासरो करायो वीजो को रहे जणीहे गाय
(१६) मार्यारो पाप है जती आंचल्या टाल रहेवा पावे नहीं

दरवाजे की छतरी पर का लेख ।

[2009]

श्री गणेश . . . रतन चेला हेम . . . कारापितं ॥ साह अषा साह नाराण साह ठाकुरसी साह हेमा साह हमीर साह लुना साह सिवा साह हर . . . साह फत्तेल साह मेघा साह जोपा साह विरधा कटाज्या चतुरा जीथा सगता . . . समसथ श्रावका . . . लषाणा श्री राघवदेवजी वारको मंदिर कारा . . . लक्ष्मीरतन सं० १८०५ माघ सुदि १३ शुक्रे प्रतिष्ठा करावो . . . लक्ष्मीरतन . . . . . . ॥

कलकत्ता ।

श्री आदिनाथजी का देरासर – कुमारसिंह हाल ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2010]

सं० १४६८ वर्षे मागसिर वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय संघ गोत्रल जार्या माल्हण दे तयोः सुतः महमाइयाकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी बिंबं कारापितं श्री जिनहंस गणि श्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः जम्रईज वास्तव्यः ।

[2011]

संवत् १५२७ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा जार्या जासू पुत्र सं० षीमा जार्या चमकू श्राविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थं श्री अंचल गछे श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन चंद्रप्रज स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥

TIRTHA ABU — Dilwara Temples.

आबू-रोड।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर—धर्मशाला।

पंचतीर्थी पर।

[2012]

सं० १५०९ वै० व० ११ शुक्रे श्री कोरंट गछे श्री नन्नाचार्य संताने। उवएस वंशे। शंखवालेचा गोत्रे श्रे० लषमसी जा० सांसल दे पु० रामा जा० राम दे पु० तेजा नाम्ना स्वमातापित्रोः श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री सांबदेव सूरिभिः।

चौवीशी पर।

[2013]

॥ सं० १५२८ वर्षे माघ सुदि १३ गुरौ श्री उदयसागरगुरूपदेशेन श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मेघा जा० माणिकदे सुत श्रे० नाईयाकेन जा० बाल्हा सु० गहिगा राघव गईया तथा द्वि० जा० नामल दे प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री संभवनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारिताः प्र० श्री बृहत्तपा गछे ज्ञानसागर सूरिभिः।

आबू-तीर्थ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—देलवाड़ा।

पाषाणकी कायोत्सर्ग मूर्ति पर।

[2014]

(१) संवत् १४०९ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्षे ५ पंचम्यां तिथौ गु-

(२) रुदिने श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने महं कउंरा

(३) भार्या महं कुंरदे पुत्र महं मदन नर पूर्णसिंह भा० पूर्णासि-

(४) रि सुत महं डुहा मं० धांधल मूल मं० जसपाल गेदा रुदा प्रभृति स-

(५) मस्त कुटुंब श्रेयसे श्री युगादि देव प्रसादे महं धांधुकेन श्री जिन-

(६) युगलद्वयं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नन्न सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[2015]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सुदि १० रवौ सं० रत्ना सं० पन्नाभ्यां श्रीशातिनाथ बिंबं का० ।

पंचतीर्थी पर ।

[2016]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे प्रा० व्य० लषमण भा० रूडी पु० भीलाकेन पित्रो आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रति० ब्रह्माणीय गच्छे भ० श्री उदयाणंद सूरिभिः ।

चौवीशी पर ।

[2017]

सं० १४७५ प्राग्वाट व्य० डूंगर भार्या उमदे पुत्र व्य० माल्हाकेन भा० माल्हणदे पुत्र कीभा भीनादि युतेन श्री सुपार्श्व चतुर्विंशतिका पट्टः कारितः प्रतिष्ठितस्तपा गच्छे श्री सोमसुंदर सूरिभिः ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर—अचलगढ़ ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[2018]

ॐ सं० १३०२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ९ शुक्रे . . . . ।
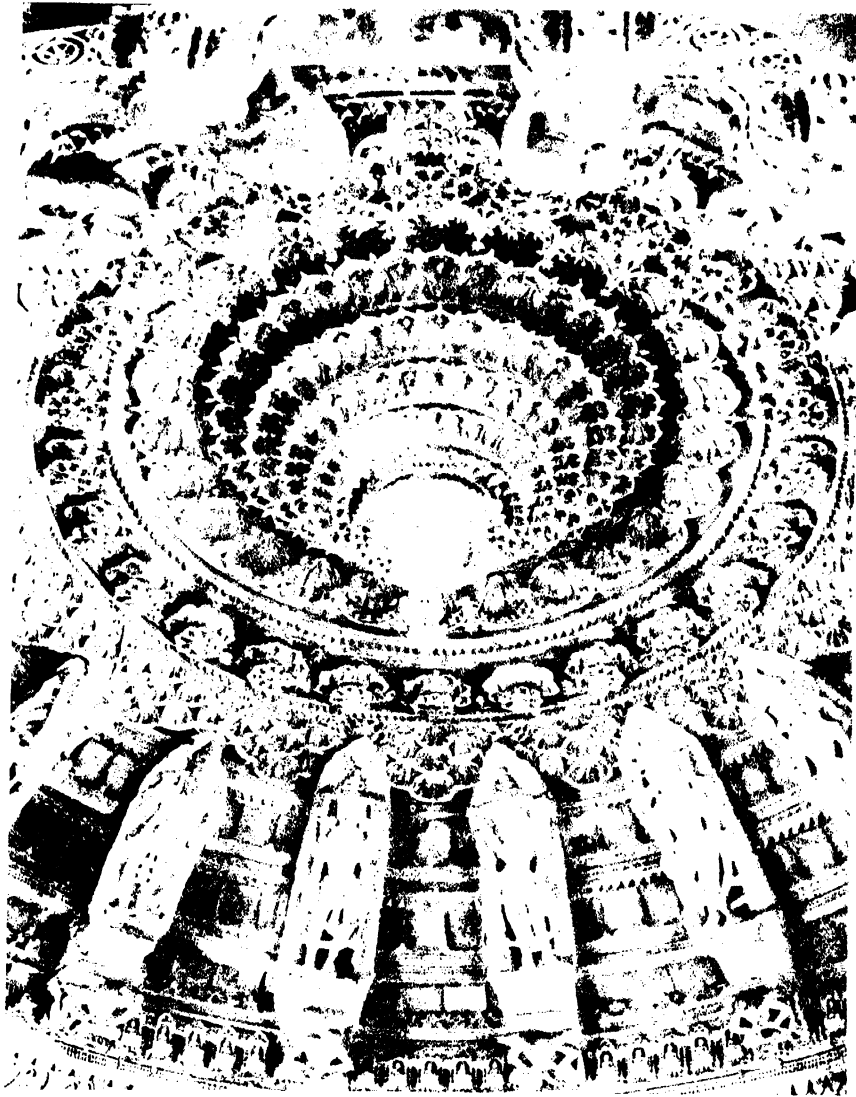
TIRTHA ABU.
Carving work on ceiling in Dilwara Temples.

[2019]

सा० धन्ना श्रावकेण श्री आदिनाथ बिंबं कारितं।

[2020]

पं० मांजू श्राविकया श्री सुमतिनाथ कारितं . . . . . ।

[2021]

श्री खरतर गच्छे श्री पार्श्वदेवद्वितीयजूमौ प्रार्श्वनाथ सा० माला जा० मांजू श्राविका कारितः।

देवी की मूर्ति पर।

[2022]

सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ शुक्रे श्री ऊकेश वंशे दरडा गोत्रे सा० आसा जा० सोखु पुत्रेण सं० मंडलिकेन जा० हीराई सु० साजण द्वि० जा० रोहिणि प्र० भ्रा० सा० पाल्हादि परिवार संयुतेन श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री अंबिका मूर्ति का० श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

श्री ऋषभदेव जी का मंदिर—अचलगढ़।

पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्ति पर।

[2023]

सं० १३०२ वर्षे . . . . अमरचंद्र सूरि जयदेव सूरिभिः।

पंचतीर्थी पर।

[2024]

सं० १५२० वर्षे आ० सु० २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सा . . . . . . जा० रूपिणि सुत सोमा दे जा० वीकमादि कुटुंबयुतेन श्री मुनिसुव्रतनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

धातु की मूर्तियों पर।

[2025]

सं० १५२५ फा० सु० ७ शनि रोहिण्यां श्री अर्बुदगिरौ देवड़ा श्री रावधर सायर डूंगरसिंह विजय राज्ये सा० ता जीमचैत्ये गूर्जर श्रीमाल राजमान्य मं० मंडन भार्या जोली पुत्र मं० शूद्र पु० मं० गदाभ्यां भार्या हासी पन्माई मं० गदा भा० आसू पुत्र श्रीरंग वाघादि कुटुंबयुताभ्यां १०८ मन प्रमाण सपरिकर प्रथमजिन बिंबं कारितं तपागच्छनायक श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि पट्ट प्रभाकर श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री सुधानंदन सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय श्री जिनसोमगणि प्रमुख। विज्ञानं सूत्रधार देवाकस्य श्री रस्तु। कृतं मेवाड़ ज्ञातीय सूत्रधार मिहीपा भा० नागल सुन सूत्रधार देवा भार्या करमी सुत सू० हला गदा हांपा नाला हाना कला: सहित व्यापायता:।

[2026]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्रे डूंगरपुर नगरे राउल श्री सोमदास वि० रा० तत्प्रधान प्रभावक पुरंदर सा० साजा प्रमुख श्री संघोपक्रमेन . . . .
श्री आदिनाथ बिंबं प्र० तपागच्छनायक श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि तत्पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय जिनहंसगणि प्रमुख सुदरादि शिष्यै परिवार परिवृतः

[2027]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे भद्रप्रासादे श्री सुपार्श्व बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागछ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिभिः भ० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्रीरस्तु श्री संघस्य सूत्रधार हरदास ॥
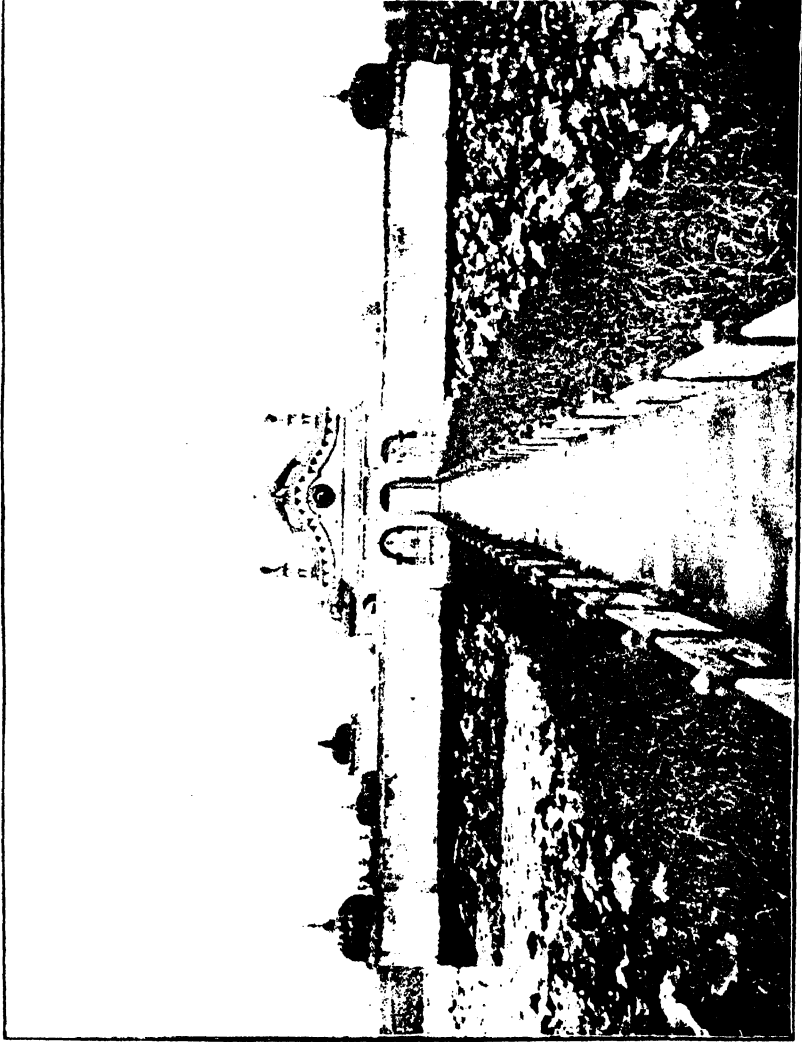
TIRTHA PAWAPURI JALAMANDIR.
(Front View)

[2028]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे जङ्-प्रासादे श्री आदिनाथ बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागछ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिभिः ज० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्री रस्तु श्री संघस्य । सूत्रधार हरदास ॥

श्री पावापुरी तीर्थ ।

जल मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2029]

सं(व)त् १२६० ज्येष्ठ सुदि २ रेनुमा(?) पु० चोराकेनात्मश्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री अजयदेव सूरिभिः

मूलवेदी के दाहिने तर्फ का लेख ।

[2030]

(१) सं० १९२९ मिः आसिन सुदि २

(२) श्री मंदिरजी के बीच के फेरी में व; नी

(३) चे के फेरी में पत्थर बैठाया नानकचं-

(४) द जीवनदास जैन श्वेताम्बरी के तर

(५) फ से साः कलकत्ता शुभं

साने के चरण पर ।

[2031]

सं० १९४३ डूगड़ धनपतसिंह कारापितं सर्व सूरि प्रतिष्ठित (श्री)संघस्य श्रेयसे जयतु ।

दादाजी के चरण पर ।

[2032]

१९५० साल मिति अघन वदि १२ सोमवार निहालचंद इंद्रचंद डुगड़ तस्य परिवार प्रतिष्ठा कारापितं मुर्शिदाबाद ॥ श्री जिन कु(श)ल सूरि महाराज का चरन ॥ शुभं जयतु ॥

समोसरन ।

मंदिर का शिलालेख ।

[2033]

(१) श्री शुभ संवत् १९५३ मिती कातिक वदी
(२) त्रयोदशी मंगलवार श्री महावीर स्वामी जी के समोस
(३) रनजी में मंदिर कराया श्री संघ ने श्वेताम्बरी आमनाये
(४) वः मनिजर गोविन्द चंद सचेती विहारवाले के
(४) हस्ते बना । इदं प्रतिष्ठितं गंगारीखी जति

महताव बिबि का मंदिर ।

शिलालेख ।

[2034]

(१) संवत् १९३२ का मिति माघ शुक्ल १० तिथौ
(२) चंद्रवारे श्री मन्महावीर स्वामी मंदिर श्री वंगदे-

(३) शे । मकसुदाबादाजीमगंज वासिनी डुधेड़िया
(४) गोत्रे श्री नेमिचंद्र तस्य जार्या महताब कुमारि-
(५) णा कारापितं च श्री हर्षचंदजी तत् पुत्र बुधसीह
(६) विसनचंद्रेण प्रतिष्ठा कारापिता । श्री वृहल्लौंपक
(७) गौर्ज्जराधिपति श्री अखयराज सूरि तत्पट्टालंकृ
(८) त् श्री अजयराज सूरिणा प्रतिष्ठितं श्री शुजं जूयात् ।
(९) ॥ श्लोकः ॥ जवारण्यगोपालकं त्रैशलेयं । जवांबोधि-
(१०) संस्तारणे यानतुल्यं ॥ मुक्तिस्त्रिनाथं मयायं जिनेंद्रं
११) प्रसंस्तौमि श्री वर्धमानं विजुं च ॥ १ ॥

गाव मंदिर ।

दक्षिण तर्फ के दिवार पर का लेख ।

[2035]

१) श्री गांव मंदिर जि मे दक्
(२) ण पश्चिम उत्तर दालान
(३) तथा चारो कोठे मे पत्थल
(४) जैन श्वेताम्बर जंडार के तर
(५) फ से मैनेजर गोविंदचंद सुचं
(६) ति विहारवालो ने वैठाया सुज
(७) सं० १९६४ आसिन बदि ५

सजा मंडप के दाहिने तर्फ के आले का लेख ।

[2036]

(१) श्रीमदविर जीनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे श्रा श्री जिन
(२) बींब स्थानापन करोती स्वेतांबर आमनाय धारक शा० रूपचंद

(३) रंगीलदास देवचंद सा पाटम वाला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई
(४) वालाये आगो खजार तथा सजा मंरूपमां जमती सहीत आरस कराव्यो
(५) संवत् १९६० लं० सेवक उत्तमचंद वालचंद मंत्री नगरवाला।

सजा मंडप के बांये तर्फ के आले का लेख।

[2037]

(१) श्रीमद विर जिनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जि
(२) न बींब स्थापन्नं शा० रूपचंद रंगीलदास सा पाटन वा
(३) ला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई स्वेतांबर आमना धारक वा
(४) ला अे कराव्या छे संवत् १९६०
(५) मीस्त्री जाईचंद जगजीवन सलाट पालीताणा वाला।

हैदराबाद-दक्षिण। *

श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर-बेगम बजार।

मूलनायक जी पर।

[2038]

सं० १५५७ वर्षे ॥ महा सुदि ५ सोमे श्री पार्श्वजिन बिंबं कारितं . . . . .।

पाषाण की मूर्ति पर।

[2039]

संवत् १५४० वैशाख सुदि ३ श्री संघे भट्टारक जी श्री जिन तपापति वाक जी प्रति०

---

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त हुवे थे।

श्री राजा जशसिंघ राज्ये . . . . . . ।

[2040]

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि १ श्री चंद्रप्रभु बिंबं कारापितं ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[2041]

संवत् १६६८ फागुण सुदि १३ साह मनोरथ सदापगामे प्र० . . . . . . ।

[2042]

संबत् १७०० वर्षे मार्ग० सुदि २ शुक्रे राजनगर बास्तव्य ओसवंस ज्ञा० सा० वर्द्धमान तत्पुत्र सा० रायसिंघ केन स्वश्रेयोर्थं श्री पद्मावती बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पं० श्री किर्ति-रत्नगणिभिः ॥

[2043]

सं० १७०७ व० फा० सु० ८ सोमे श्रीमाली ज्ञा० सा० कुंअरजा भा० रतनबाई नाम्न्या उ० श्री विवेकहर्षजी श्री शांतिनाथ बिं० का० प्र० श्री तपा० भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[2044]

सं० १५१२ माघ बदि . . . सोमे नागर ज्ञातीय श्रे० कर्मसी भा० फदू सुत जोगी नाम्ना भा० भटि सुत लङ्कयादि कुटुंबयुतेन श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० बृहत्तपा श्री रत्न-सिंह सूरिभि ॥

[2045]

सं० १५३० वर्षे वैशाख वदि १२ बुधे वडाउला गोत्रे ओस वंशे सा० पेटा भा० माल्ही सुत सा० धर्म्मा भा० मद्दू पुत्र नापा बाला हीरादि कुटुंबयुतेन आत्म श्रे० श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री यशचंद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[2046]

संवत् १५६२ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ऊकेश वंशे घोरवाड गोत्रे सा० वाचा भा० वाल्हिण दे पुत्र सा० रंगाकेन भा० रत्ना दे पुत्र सा० माल्हा षेता वेता प्रमुख परिवारयुतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर – कारवान साहुकारी ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[2047]

संवत् १३३२ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय भा० जयतेन निजमातामह ठ० सोढ भा० ठ० श्रियादेवी श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री पृथ्वीचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥

[2048]

संवत् १४५८ वर्षे फा० सुदि १ भौमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० धरणि सुत सिंघा श्रेयोर्थं तद् भ्रातृ श्रे० कान्हदेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छीय भट्टारक श्री देवसुंदर सूरिभिः ॥

[2049]

संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सामत भा० सामल दे सु० धर्माकेन भ्रातृ हीरा सिवा सहदे सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री अभिनंदन बिंबं का० प्र० मडाहड गच्छे श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥

[2050]

सं० १६७७ व० फा० सु० ८ सोमे ओ० ज्ञा० सा० शिव सा० भा० सुजारादि पुत्र सा० राजाकेन भा० रतनबाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा गच्छे विवेकहर्षगणिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—रेसीडेन्सी बजार।

पंचतीर्थियों पर।

[2051]

संवत् १४९४ मा० सु० ११ ओस वंशे काल्हणसीह लाइणि सुत कोचापाकेन श्री अंचलगच्छे श्री जयकीर्त्ति सूरिणामु० श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[2052]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उकेश ज्ञातौ श्रेष्ठी गोत्रे म० कमला म० सिवा भा० लखमा दे पु० साजण युतेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं श्री ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[2053]

संवत् १५३७ वर्षे महावदि १३ शुक्रवारे सूराणा गोत्रे सा० नाथू पुत्र थिरा भार्या मुहडादे पुत्र सा० धेना भार्या हिमा दे पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री धर्मघोष गच्छे प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री मानदेव सूरिभिः ॥

[2054]

सं० १५४१ माघ सुदि १२ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० झाटा भा० सूलेसिरि सु० जिणदासेन भा० लखी सुत हरदास सूरदासादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री ३ लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ मोर। षोयाणा वासी।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—चार कमान।

पंचतीर्थियों पर।

[2055]

सं० ११९० फा० सु० ४ श्रा० वाकूकया स्वश्रेयसे श्री महावीर प्रतिमा कारिता।

[2056]

सं० १४०१ व० मार्ग० सु० ५ बा० चतुर नाम्ना श्री संखेश्वरपार्श्व बिंबं का० प्र० तपा श्री विजयहर्ष सूरिभिः ॥

[2057]

सं० १६६७ वर्षे फागुण सुदि ८ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय सा० सूरज कुटुंबयुतेन श्री शांति० बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

[2058]

सं० १६९० व० फा० सु० ५ गुरौ दौलतीबाद भ० ज्ञा० सा० श्रीमंत भा० षमांबाई नाम श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे . . . . . . ।

[2059]

सं० १६९७ फा० सु० ५ वृ० उकेश बा० धीरा नाम्नी श्री शांति बिं० का० प्र० श्री तपा गच्छे विजयदेव सूरिभिः ॥

[2060]

सं० १७०१ (?) व० मा० र्ग० सु० द० ५ वा० बृ० प्रा० बा० कान्‍ह नाम्ना श्री पार्श्व नाथ बिं० का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

दादाजी के चरणों पर ।

[2061]

॥ संवत् १९६१ का वर्षे मिति माघ सुदि ५ गुरूवासरे श्री जं० युग प्रधान जगद् चूडामणि दादा साहिव १००८ श्री जिनदत्त सूरि गुरूराज चरणपादुका श्री चारकवांण का श्रीसंघेन कारापितं । पं० चारित्रसुखेन प्रतिष्ठापितम् श्रीसंघस्य कल्याण खेम कुशलम् समुपस्थिता ॥ हैदराबाद ॥

[2062]

॥ सं० १९६१ वर्षे मि । माघ सु । ५ दिने । जं । युग प्र० १००८ दादा साहेव श्री जिन-कुशल सूरि पादुका । च्यारकवांण ।

[2063]

श्री जिनकुशल सूरि चरणकमल पादुकेभ्यो नमः ॥ शुभ संवत् १९६४ वैशाख धवल १० गुरुवासरे प्रतिष्ठितम् ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

मद्रास । *

चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर — शूला वजार ।

मूल मंदिर का लेख ।

[2064]

(१) ॥ संवत् १९५४ रा शाके १८१७ मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथि दशम्यां रविवारे शूलाग्रामस्थः मालू गोत्रे सा० । कालू-

(२) राम रतनचंद खरतरगणोपासकेन कारापित जिनभवने चंद्रप्रभु बिंबं स्थापितं खर-तर गच्छे क्षेमकीर्ति शाखायां विद्धद्रामचंद्रगणि

(३) तच्छिष्य पं प्र । उदयचंद्रगणिः तच्चरणांतेवासी उपाध्याय नेमिचंद्रेण प्रतिष्ठितं जिनभवनं स्थापितं बिंबं च पं० । श्यामलाल साकम्

मूलनायक जी पर ।

[2065]

॥ संवत् १७६० वैशाष सुदि ६ . . . कारितं श्री संघेन . . . . . . ।

---

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से मिले थे ।

मूर्तियों पर।

[2066]

॥ सं०। १९२१ माह सुदि ७ गुरु। श्री चंद्रजिन बिंबं कारितं। श्री बृहत्खरतरगच्छीय भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रति . . . .।

[2067]

॥ सं० १९२१ माह ॥ सु०। ७। गु। श्री सुमतिजिन बिंबं कारितं। श्री बृहत्खरतरगच्छीय भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रति . . . .।

धातु की पंचतीर्थी पर।

[2068]

॥ सं० १५०५ वर्षे पोस सुदि १५ श्रा० विणवट गोत्र पा० रतना जा० मूदल दे पु। सहसा जा० सुहड़ दे पितृमातृ पु० श्री चंद्रप्रभो बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

ताम्रपट्ट पर।

[2069]

॥ संवत् १९७० रा शाके १८३५ रा ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयोदश्यायां चंद्रवासरे ॥ भट्टारक श्री जिनफत्तेंद्र सूरि प्रतिष्ठितं श्री मद्रास शूलामध्ये ॥

चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर—साहूकार पेठ।

शिलालेख।

[2070]

(१) ॐ (२) ॥ नमः श्री वीतरागाय ॥

(३) ॥ श्लोकः ॥ आसीत्सूरिपदप्रतिष्ठितरणैः श्री हेमसूरिप्रभुस्तत्पीठे प्रतिवादिवृन्द-

(४) जयदो विद्याकलानां निधिः ॥ श्री सूरीश्वरमूर्द्धवन्दितपदः श्री सिद्धसूरिगुरुर्ध-
(५) र्मोजोदयत्तारकत्यंतिनिपुणो वर्वर्त्ति सर्वोपरि ॥ १ ॥ प्रासादस्य कृतास्य तेन
(६) विदुषा माघस्य शुक्ले बुधौ त्र्योदश्यां श्रुतिसप्तनन्दकुमिते श्री विक्रमाब्देऽधुना ।
(७) सौजन्यातमृतसागरेण जगतां धर्म्मोपकाराय वै श्रीमज्जैनधुरंधरेण कृतिना नूनं
(८) प्रतिष्टानघाः ॥ २ ॥ श्री विक्रम संवत् १९७२ माघ शुक्ल १३ बुधवारके दि-
(९) न श्री मदरास पत्तन शाहूकार पेठमें श्री चन्द्रप्रभस्वामी बिम्ब प्रतिष्ठा श्री-
(१०) मज्जैनाचार्य बृहत्खरतरगच्छीय जं । यु । भट्टार्क श्री जिनसिद्ध सूरिजी ।
(११) महाराज के करकमलों से समस्त संघ सहित भैरुंबकसजी सुखलालजी ।
(१२) समदड़िया ने बड़े महोत्सव से कराई । हरषचंद रूपचंदजी ने बिम्ब स्थाप-
(१३) न किया बादरमलजी ने कलश चढ़ाया और हंसराजजी सागरमलजी
(१४) ने ध्वजा आरोपण करी यह मंगल कार्य श्री संघको सर्वदा श्रेयकारी हो ॥
(१५) ॥ हस्ताक्षराणि यति किशोरचन्द्रजी तच्छिष्य मनसाचन्द्रस्य ॥

श्री दादाजी के बंगले में ।

[2071]

ॐ नमः दत्तसूरिजी ॐ नमः कुशलसूरिजी

मिति माह सुदि ५ संवत् १९३६ का ।

जैन मंदिर—साहुकार पेठ ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2072]

संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदि ५ बुधौ श्रीमाल ज्ञातीय नान्दी गोत्रे सा० प्रल्हा पुत्र शा० प्रेताकेन पुत्र हरेराज सहित तत् पिता पुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[2073]

संवत् १५१७ वर्षे पौष वदि ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय महं वित्रा भा० जासी सुत सोभा भा० हीरू आत्मश्रेयोऽर्थं जीवितस्वामी श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे त्रितविया श्री धर्म्मसागर सूरिभिः। भीलुटग्रामे।

[2074]

संवत् १५१९ वर्षे माघ शुक्ल १३ पाटण पुर ऊकेश ज्ञातीय सा० पर्वत भा० जीविणी पुत्र शा० गेहाकेन भा० वारू पुत्र वस्ता जावड प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे पार्श्वबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

चौवीसी पर।

[2075]

संवत् १४८७ वर्षे माघ ... दि ... वाड्मा ज्ञातीय श्रे० खीमा भा० लहिकू सुत थाथा भा० हीसु पुत्र हापा गोपा जीरादि कुटुंबयुतेन श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशति पट्टकारितः प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज भ० श्री सोमसुंदर सूरिभिः॥ श्रीशुभं भवतु॥

[2076]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल प्राग्वाट ज्ञातीय सं अर्जुन भा० टबकु सुत सं० वस्ता भा० रामी सुत सं० चान्दा भा० जीविणि सुत लींबा आका प्रमुख कुटुंबयुतेन ७२ चतुर्विंशतिपट्टान् कारयितश्च श्रेयसे श्री पद्मप्रभः चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः। श्री तपा पट्टे श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री रत्नशेखर सूरि तत् पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥
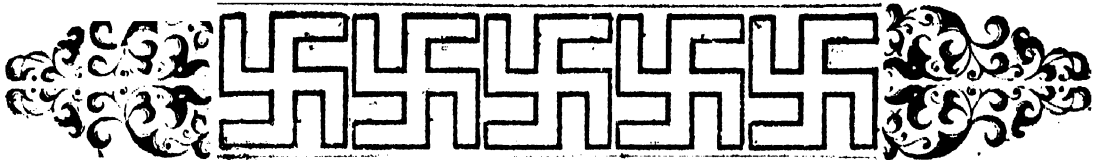
रायपुर-सी० पी० । *

जैन मंदिर-सदर बजार ।

शिलालेख ।

[2077]

(१) ॥ श्री मदिष्टदेवेभ्यो नमः ॥ श्रीमच्छ्रीवीरविक्रमादित्य राज्यात् नभवर्ण-
(२) निधिइंदुब्द (१९५०) शाके इंद्रिचंद्रसिद्धि नक्षत्रेश प्रमिते मासोत्तममासे द्वि-
(३) तीय आसाढ मासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ भार्गववासरे स्वाति नक्ष-
(४) त्रे साध्ययोगे बुधमार्गे एवं पंचांग शुद्धावत्र समये कर्कार्के गते रवौ शेषे-
(५) षु पूजनिरिक्षित वेलायां श्री मह्राजपुरवरे मालु गोत्रे साह तनसुखदा
(६) स(दास) तत्पुत्र साह आसकरणेनासौ श्री मच्चंद्रप्रभ जिनप्रभो प्रासा
(७) द कारितं स्वश्रेयोर्थं श्री बृहत्खरतर भट्टारक गछाधिपे भट्टारक श्री
(८) जिनचंद्र सूरीश्वर प्रतिष्ठितश्चेति पं० सिवलाल मुनिरुपदेशात् ।

ताम्रपत्र पर ।

[2078]

(१) श्री जिनायनमः ॥ श्रीमत् वीर सं० २४२१ विक्र-
(२) म सं० । १९५१ शाके १८१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मा-
(३) से आषाढ शुक्लपक्ष तृतिया तिथौ गुरूवारे पु-
(४) ष्यनक्षत्रे मिथुनार्कगते रवौ शेषे शुभ निरिक्षि-
(५) त वेलायां श्री रतं(राज)वरे मालू गोत्रे साह धन-
(६) रूपजी तत्पुत्र साह फूलचंदजी कस्या भार्या

---

* स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त ।

(७) हीरादेवी तया श्री अजिनंदनजिनप्रजो प्रासाद
(८) कारित स्वश्रेयं श्रीवृहत् खरतर गछे श्री जिनचंद सूरीश्वर
(९) जी आदेशात् श्री शिवलाख मुनि प्रतिष्ठितम् ॥ श्री शुजम् ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

उथमण - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पब्बासण के नीचे का लेख ।

[2079]

॥ सं० १२४३ वर्षे माह्रा सुदि १० बुधदिने नाणकीय गछे उथमण चैत्ये धणेसर जा० धारमती पु० देवधर जेसड आल्हा पाल्हादि कुटुंब संयुते मातृ निमित्तं जलवटु करापितं ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

रोहेड़ा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2080]

सं० १२९३ वर्षे फागण सुदि ८ कोरंट गछे . . . जीआ . . . धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिजिः ॥

[2081]

सं० १३४१ वर्षे नाणकिय गछे . . . . . . चतुर्विंशतिपट्ट कारितं प्रतिष्ठितं जट्टारक महेन्द्र सूरिजिः ॥

[2082]

सं० १४९१ फागण सुदि १२ गुरौ कोरंटवाल गच्छे उपकेश ज्ञातीय संखवालेचा गोत्रे नपसी पु० जाणाकेन श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं सांबदेव सूरिभिः ॥

[2083]

सं० १४९३ वर्षे माघ सुदि १३ उपकेश ज्ञातीय म० मांडण भा० सिरियांदे पु० काजा-केन भार्या भल्ली सहितेन आत्मश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री धनप्रभ सूरिभिः ॥

[2084]

संवत् १५१३ वर्षे फागुण वदि ११ नागेंद्र गच्छे उपकेश ज्ञातीय कोठारी . . . भा० लक्ष्मी पु० मेघा भा० हीरु पु० मेरा डुंगर तोल्हा युतेन श्री आत्मपुण्यार्थे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विनयप्रभ सूरिभिः ॥

[2085]

सं० १५१७ वर्षे वैशाष वदि ८ शुक्रे श्री श्रीमाल श्रेष्ठी भामा भा० साद्दी पु० गोल्हा भा० आसि पु० पहिराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे पुण्य-रत्न सूरीणां प्रतिष्ठितं वाराही ग्रामे ॥

[2086]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० कोहाकेन भार्या कामल दे पु० नाल्हा हीदा युतेन धर्मनाथ बिंबं कारितं कछोलीवाल गच्छे पूर्णिमापक्षे गुणसागर सूरिभिः ॥

[2087]

सं० १५७६ आसाढ सुदि ९ रवौ उपकेशज्ञातीय नाग गोत्रे साह भोजा भा० भावल दे पु० मांडण आल्हा जेसा सहितेन माडण भा० माणक दे पु० रंगा युतेन आत्मपुण्यार्थे संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं नाणावाल गच्छे भट्टारक श्री . . . . . ।

भारज - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2088]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल ज्ञातीय पितृ धरकण भा० धणा सुत कालु भा० कुंथि करमी सुत सहिता युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं बृह्मणिया गच्छे प्रतिष्ठितं श्री विमल सूरिभिः वटपद्र वास्तव्य ॥

गुडा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2089]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ उसवाल वृहद् सज्जने ठाकुर गोत्रे सा० पोमादे पु० जावड़ भावड़ गीदा सा० माणाकेन भा० माणिक दे पु० मेघराज हांसादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारापितं । नाणावाल गच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः सं . . . . . ॥

तिवरा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

काउसग्ग प्रतिमा पर ।

[2090]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० श्रे० ऊदा भादा भा० रुपल दे पु० . . . श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगच्छीय श्री देवभद्र सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंद्रेण ॥

पाडीव – सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2091]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाली ज्ञातीय राउल भा० वाला पु० देवा भा० ललियता सुत तेजा श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गच्छे अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥
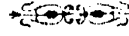
माडया – सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2092]

सं० १४७० वर्षे माघ सुदि २ गुरौ बाफणा गोत्रे साह लुंना सुत देपाल भा० मेला दे पु० जोगराज भा० जसमादे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्याभिधान प्र० देवगुप्त सूरिभि ॥

निवज – सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2093]

सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री भावडेड़ा गच्छे श्री कालिकाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय खांटेड़ गोत्रे साह लाला भा० . . . पु० सामंत भा० हांसल दे पु० भोपाल

उदा गोपाल भा० नतु दे पु० नाल्हा सीवा उदा भा० अमा दे पु० रतना समरथ कुटुंबेन सह स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री विजयसिंह सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं वीर सूरिभिः ॥

छुड़वाल-सिरोही।

जैन मंदिर।

पाषाण की प्रतिमा पर।

[2094]

सं० १६४४ वर्षे फागण वदि १३ बुधे हालीवाड़ा वास्तव्य श्री संघेन कारितं श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

डीसा।

श्री आदीश्वरजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[2095]

सं० १५२४ वर्षे का० व० २ शुक्रे श्री भावडार गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय म० धिरणल भा० ब्रह्मादेवि पु० मना भा० माल्हण दे पु० सिंघा मेघा मेहा साणा जुगा सहितेन जीवितस्वामी श्री पद्मप्रभु प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० कालिकाचार्य संताने श्री भावदेव सूरिभिः श्री वनरिया ग्रामे ॥

[2096]

सं० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ऊकेश ज्ञातीय गा० कनुज सो० करणा भा० अरघु पु० विसाल पितृव्य नयणा निमित्त श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० भिन्नमाल गच्छे श्री कर्म्मतिलक सूरिभिः ॥

[2097]

सं० १६६३ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० टाहापान जा० चोबु निमित्तं सुत लिंबा राणा जाजण सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गच्छे भ० जाजीग सूरिभिः स्थिराद्र वास्तव्यः ॥

श्री महावीर स्वामी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[2098]

सं० १३२० वर्षे फागण सुदि ४ शुक्रे ब्रह्माण गच्छे श्री जज्जक सूरि गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय पिण्डनालक वास्तव्य आचा सुत देवधर श्रेयोर्थे आसधर सुत जाल्हणेन पितृव्य श्रेयोर्थे श्री महावीर बिंबं कारितं प्र० श्री वयरसेणोपाध्याय शाणि ॥

[2099]

सं० १३४४ वर्षे जे० व० ४ शुक्रे ओसवाल ज्ञा० श्रे० वीरमस्य सुत बीजडेन निजमातु चपज देवि श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रं० मल्लधारि श्री रत्नदेव सूरिभिः ॥

[2100]

सं० १४९६ वर्षे चैत्र वदि १ शनौ उपकेश ज्ञा० बडालिया गोत्रे सा० जेता भा० जइती-श्री सुत भीमा भा० सनपतश्चात्म श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥

[2101]

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ भौमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सिंघा भा० मेघा दे पितृमातृ श्रेयसे सुत लषमणेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० ब्रह्माण गच्छे श्री वीर सूरिभिः ॥

[2102]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ श्री कोरंटकीय गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय मं० मलयसिंह भा० मालण देवि स० म० मदनेन पु० लुणा सहितेन भा० हेमा श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिभिः ॥

[2103]

सं० १५२० वर्षे वैशाप वदि ५ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सदा भा० सहजू पु० धीरा-केन भा० काली सहितेन पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री गुणसमुद्र सूरिभिः प्र० सर्व सूरिभिः ॥

[2104]

सं० १५२२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ पाल्हाउत गोत्रे सा० शिवाराज भा० कर्मणि तत्पुत्र मेघा भार्या युतेन पु० सालिग मातृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गच्छे श्री गुणसुंदर सूरिभिः ॥

[2105]

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुद ३ उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय बाफणा गोत्रे सा० . . . . वच्छ भा० जसमा दे पु० सोहडा दे पु० वस्ता आत्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[2106]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ वायडा ज्ञातीय व० साह नारिंग सुत व० राजा-केन भा० रई पु० रीड़ा मेघा रीड़ा भा० इंदु प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी आगम गच्छे श्री अमररत्न सूरिभिः गुरूपदेशेन कारितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्यः ॥

गुडली-मेवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2107]

सं० १५४२ वर्षे वैशाख वदि ४ उपकेश ज्ञातीय सा० करमा जा० सादु पुत्र पीदा जा० लखमा दे पु० गोदा उजल जा० वडी पु० जेसा मेघा केमा हरमा सहितेन जिदरू निमित्तं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गछे जट्टारक श्री धनप्रज सूरिजिः ॥

[2108]

सं० १५५७ वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ उपकेश ज्ञातीय मानींग जा० नंदि पु० देपाकेन पितृयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गछे हुमतिलक सूरि पट्टे श्री उदयाणंद सूरिजिः ॥

खारची-मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2109]

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ . . . . . . धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पंफेर गछे श्री शांति सूरिजिः हाविल ग्रामे ॥

खंडप - मारवाड ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[2110]

सं० १५२७ वर्षे वैशाख सुदि ३ ओसवाल ज्ञातीय साह हंसा पु० उधरण देदा वेला भा० वाहनु मोदरेचा गोत्रे साह लाधु भा० नामल दे पुत्रिका नानुं आत्मपुण्यार्थे श्री चंद्र प्रभु बिंबं कारितं श्री नाणकीय गच्छे धनेश्वर सूरिभिः ॥

[2111]

सं० १५२८ वर्षे . . . उपकेश ज्ञातीय गजेड़ गोत्रे पना भा० सुहवि दे पु० नरसिंग त्रिभणा सहितेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पल्लीवाल गच्छे श्री यशोदेव सूरि पट्टे श्रीश्री नन्न सूरिभिः ॥
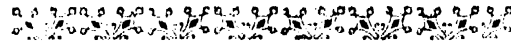
मांकलेश्वर - मारवाड ।

जैन मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1187]

सं० १५३० वर्षे फागुण सुदी १० श्री ज्ञानकीय गच्छे उ० उसभ गोत्रे सं० भांभा भा० पदमिनी पु० साहा पीथा स्था० प्रतिष्ठितं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० सिद्धसेन सूरि पट्टे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥

आचार्यों के गच्छ और संवत् की सूची।

अंचल गच्छ।
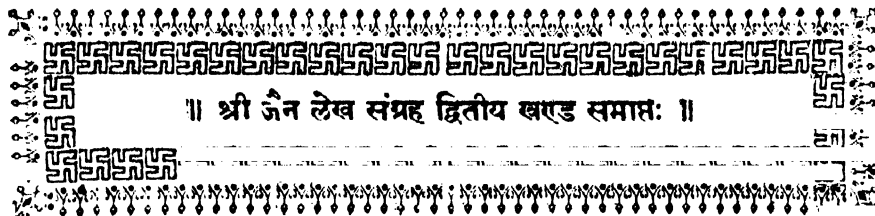
संवत्	नाम			लेखांक
१४६६	मेरुतुंग सूरि	...	...	१३५६
१४८३	जयकीर्ति सूरि	...	...	१०७१
१४९०	,, ,,	...	...	१२४२
१४९४	,, ,,	...	...	२०५१
१५०५	जयकेसरी सूरि	...	...	१५६६
१५०६	,, ,,	...	...	१४९३, १९११
१५१३	,, ,,	...	...	१४७३
१५१५	,, ,,	...	...	१५८७
१५२३	,, ,,	...	...	१०१६
१५२४	,, ,,	...		११२९, १२७३, १७७६
१५२७	,, ,,	...		१३१६, १६०९, २०११
१५२८	,, ,,	...	...	१६१९
१५२९	,, ,,	...	...	१९१३
१५३०	,, ,,			१२८४
१५४५	सिद्धान्तसागर सूरि		...	११६६
१५५४	,, ,,			१४१२, १५७३
१५५५	,, ,,	...	...	१७७२
१५७६	गुणनिधान सूरि	...	...	१४३९
१६२१	धर्ममूर्ति सूरि	...	...	१४५२
१६६५	मुनिशील गणि	...	...	१८८९
१६७१	कल्याणसागर सूरि			१४५६, १५२०, १५७८—१५८५
१६७६	,, ,,		...	१७८१
१६७८	,, ,,		...	१७८१
१७०२	,, ,,		...	१७४३
१६९७	उपाध्याय विनयसागर		...	१७८१
१६९७	सौभाग्यसागर		...	१७८१
१७९८	पं० लक्ष्मी रतन		...	२००८
१८०५	,, ,,	...	...	२००९
१७९८	पं० हेमराज	...	...	२००८
१८०५	,, ,,	...	...	२००९
१९२१	रत्नशेखर सूरि		...	१४८६

आगम गच्छ।

संवत्	नाम		लेखांक
१४८८	जयानंद सूरि	...	१७९८
१५०६	हेमरत्न सूरि	...	१००४
१५१७	,, ,,	...	१५०५
१५१९	,, ,,	...	१७२१
१५१७	आनन्दप्रभ सूरि	...	१७६९
१५२५	देवरत्न सूरि	...	१८००
१५३१	,, ,,	...	१७५९
१५३२	अमररत्न सूरि	...	१३२३
१५३६	,, ,,	...	२०९१

संवत्	नाम			लेखांक
१५४७	अमररत्न सूरि	...	...	२१०६
१५३६	सिंघदत्त सूरि	...	...	१७३७
१५६९	सोमरत्न सूरि	...	...	१२१६
१५७१	" "	...	...	१५७७

उपकेश गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३(२,५६	कक्क सूरि	...	...	१९२३
१३२५	" "	...	...	१०३८
१३८०	" "	...	...	१३५८
१३८५	" "	...	...	१०४३
१४५७	रामदेव सूरि	...	...	१४९०
१४६८	देवगुप्त सूरि	...	...	१०६२
१४७०	" "	...	...	२०९२
१४८४	" ,	...	...	१०७२
१४८६	" " (मलधारीयक)		...	१९८२
१४८२	सिद्ध सूरि	...	...	१०७०
१४९१	" "	...	...	१५४६
१४९३	सिद्ध सूरि	...	...	११८२
१४९५	सर्व सूरि	...	...	१६४१
१५०३	ककुदाचार्य (कक्क सूरि)		...	१९३४
१५०५	कक्क सूरि	...	...	११४८, १४७९
१५०६	" "	...	...	११४९
१५०७	" "	...	...	१०८३, १२५०
१५०८	" "	...	...	१३३२
१५०९	" "	...	...	१२५६
१५१२	" "			११५३, १२६१, १२६३, १३७३, १५०४
१५१७	" "	...	...	१८८३
१५२०	" "	...	...	११२८, १२७१
१५२१	" "	...	...	१३८९
१५२४	" "	...	...	१२७४, १४४३
१५२८	देवगुप्त सूरि	...	...	१५७१
१५३४	" "	...	...	२०५२
१५३५	" "	...	...	१२९२
१५३७	" "	...	...	२१०५
१५४४	" "	...	...	१६०३
१५४६	" "	...	...	१२९३
१५५८	" "	...	...	१६३४
१५५९	" "	...		११०१, ११८९
१५६६	सिद्ध सूरि	...	...	१३००
१५६७	" "	...	...	१६५९
१५७१	" "	...	...	१५७४
१५७२	" "	...	...	१५७६
१५७४	" "	...	...	१४५०
१५८८	" "	...	...	१४६४
१५९२	" "	...	...	१३०५
१५९६	" "	...	...	१३४७
१५२७(?)	सिद्ध सूरि	...	...	१३२२
१७८१	कर्पूरप्रियगणि		...	१०२४
१६४०	सिद्धसूरि (कमलागच्छ)		...	१४७८

कठोलीवाल गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४७१	संघतिलक सूरि	...	...	१९३०
१४९३	सर्वाणंद सूरि (पूर्णिमापक्ष)		...	१९६६
१४९३	लषमसीह (" ")		...	१९६६

संवत्	नाम	लेखांक
१५१८	गुणसागर सूरि (पूर्णिमापक्ष) ...	२०८६
१५३०	विद्यासागर सूरि	१३६१
१५३४	विजयप्रभ सूरि	१३८२

कोरंट गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२६३	कक्क सूरि	२०८०
१३१७	सर्वदेव सूरि	१९५०
१३४०	... सूरि	१७९२
१४०९	कक्क सूरि	२०१४
१४३७	सांवदेव सूरि	१०५७
१४८४	कक्क सूरि	२१०२
१४९१	सांवदेव सूरि	२०८२
१४९६	,, ,, ...	१३३०
१५०६	,, ,, ...	११८३
१५०८	,, ,, ...	१७३३
१५०९	,, ,, ...	२०१२
१५१७	श्री पाद...	१४०४
१५१८	सांवदेव सूरि	१७२६
१५३२	,, ,, ...	१३८०
१५५३	नन्न सूरि	१६९८
१५६७	नन्न सूरि	१६४२

खरतर गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
......	वर्द्धमान सूरि	११९०
१३८१	जिन कुशल सूरि	१९८८
१३८७	,, ,, ...	१३५०
१३९९	,, ,, ...	१५४५
१३९१	जिनपद्म सूरि	१९२६
१४८२	जिनभद्र सूरि	१५०३
१४९३	,, ,, ...	१२४४
१४९९	,, ,, ...	१९००
१५०३	,, ,, ...	१३२५
१५०७	,, ,, ...	११५१, १४००
१५०९	,, ,, ...	१२५५, १३३३
१५११	,, ,, ...	१५५०
१५१७	,, ,, ...	१०१०
१४९१	भव्यराज गणि	२००४
१५०९	जिनतिलक सूरि	१२५७
१५११	,, ,, ...	१८६०-६१
१५२८	,, ,, ...	११५८
१५१५	जिनचंद्र सूरि	२०२२
१५१६	,, ,, ...	१३३५
१५१९	,, ,, ...	१२७०
१५२६	,, ,, ...	१३७९
१५२९	,, ,, ...	१०९५
१५३१	,, ,, ...	१२०९
१५३२	,, ,, ...	१९४०
१५३३	,, ,, ...	१८८१
१५३४	,, ,, ...	१२८७, १२८९, १३१७
१५३६	,, ,, ...	१०५६, १३४१
१५१७	विवेकरत्न सूरि	१७५५
१५२५	कीर्तिरत्न सूरि	१८८५
१५२८	जिनप्रभ सूरि	११५८
१५५३	जिनसमुद्र सूरि	१६९२

संवत्	नाम	लेखांक
१५५५	जिनसमुद्र सूरि	१२२४
१५५६	जिनहंस सूरि	१२६८, १४६३
१५६२	,, ,,	२०४६
१६०६	जिनमाणिक्य सूरि	१३५१
१६२८	जिनभद्र सूरि	१४४८, १८४५
१६५३	जिनचंद्र सूरि	११६६
१६२७(?)	जिनसिंह सूरि	१३८८
१६६६	,, ,,	१७१५
,,	गुणरत्न गणि	,,
,,	रत्नविशाल गणि	,,
१६६८	जिनचंद्र सूरि	१४५७
१६६८	,, ,,	१५८५
१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१
१६६५	जिनराज सूरि	१६७०
१६८६	,, ,,	१६४७
१६६८	,, ,,	१६६७
१६८६	परानयन (?)	१६४७
१६६८	समयराज उपध्याय	१६६७
,,	अभयसुन्दर गणि (वाचनाचार्य)	,,
,,	कमललाभ उपाध्याय	,,
,,	लब्धकीर्त्ति गणि	,,
,,	पं० राजहंस गणि	,,
,,	पं० देवविजय गणि	,,
१६६०	जिनकीर्ति सूरि	११०७
,,	जिनसिंह सूरि	,,
१७२७	म० राम विनय गणि	१००६
१८४६	जिनचंद्र सूरि	१८०७
१८५२	लालचंद्र गणि	१२०५, १२१६
१८५४	जिनदेव सूरि	१८२८
१८६३	जिनहर्ष सूरि	१५२५
१८६४	,, ,,	१५२६–२८
१८७१	,, ,,	१६३८
१८७३	,, ,,	१०१६
१८७५	,, ,,	१८०१ ४२
१८७७	,, ,,	१०२७, १६४७–५६, १६६२–६६, १८३६–३८
१८८५	,, ,,	१८३६
१८८६	,, ,,	१८२१, १८२४
१९३८	,, ,,	१८५०
१८७७	उ० रत्नसुन्दर गणि	१०२७
१८७७	होरधर्म (पाठक)	१६४७–५६, १६६२–६६
१८९३	जिन महेन्द्र सूरि	१६७१–७२
१८९६	,, ,,	१६४३
१८९७	,, ,,	१८७०
१९०६	,, ,,	१६४५
१९१०	,, ,,	१५२६--३२, १६४६, १६६७–६८, १६७३, १८३०--३२
१९१३	,, ,,	१६८२
१९१४	,, ,,	१६२२
१८९३	जिन सौभाग्य सूरि	१०१७, १०२०--२१
१९०५	,, ,,	१३५२
१८९३	आनन्द वल्लभ गणि	१०१७
१९३६	,, ,,	१०२०--२१
१८९७	कुशलचंद्र गणि	१८७०
१९१८	जिन मुक्ति सूरि	१८६६–६८, १८७२

संवत्	नाम	लेखांक
१९२०	जिनहंस सूरि	१६९९, १७०१
१९२१	,, ,,	२०६६—६७
१९२५	,, ,,	१८१०
१९३२	,, ,,	१०१८
१९३४	,, ,,	१८११
१९२०	सदालाभ गणि	१७०१
१९३२	कनकनिधान मुनि	१०१८
१९३९	विवेककीर्ति गणि	१६५७
१९४२	हितवल्लभ मुनि	१८०८
१९५०	जिनचंद्र सूरि	२०७७
१९५१	,, ,,	२०७८
१९५९	,, ,,	१६३९—४०
१९५२	उ० नेमिचंद्र	२०६४
१९७०	जिन फत्तेन्द्र सूरि	२०६९
१९७२	जिन सिद्ध सूरि	२०७०
१९७९	हीराचंद यति	१००८

खरतर गच्छ।

जिनवर्द्धन सूरि शाखा।

संवत्	नाम	लेखांक
१४६९	जिनवर्द्धन सूरि	१९९६, १९९७
१४७३	,, ,,	१२३८, १९९५
१४७५	,, ,,	१९८७
१४६९	जिनचंद्र सूरि	११३९, १९९३
१४७६	,, ,,	१२०६
१४८६	,, ,,	१९६४—६५, १९८१
१४९१	जिनसागर सूरि	१०७५, १३६६, १९१८, १९३२, १९७७, १९८४, १९९४
१४९४	,, ,,	१९५८
१४९५	,, ,,	१२४५, १९७४, १९७५
१४९६	,, ,,	१९५७
१४९७	,, ,,	२०७२
१५०१	,, ,,	१२४८
१५०३	,, ,,	१८६५
१५०७	,, ,,	११५१
१५०९	,, ,,	१३७२, १७२५
१५१०	,, ,,	१२३२
१५०४	शुभशील गणि	१८४६, १८५४—५६
१५२३	जिनहर्ष सूरि	११५७
१५२८	,, ,,	१४३८
१५६७	जिनचंद्र सूरि	१४१५
१५७२	,, ,,	१८९६
१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१

रंगविजय शाखा।

संवत्	नाम	लेखांक
१६२३ (?)	जिनरंग सूरि	१००५
१८५६	जिनचंद्र सूरि	११७९, १२२७
१८७४	,, ,,	१८४८
१८७७	,, ,,	१००७, १२२६, १५९५
१८७९	,, ,,	१६७९—८०
१८८८	,, ,,	१५८६, १६२९, १६८३, १८२२, १८३४
१९०२	जिन नंदिवर्द्धन सूरि	१२२८
१९१७	,, ,,	१६३०
१९१३	जिन जयशेखर सूरि	१५३३, १६३७
१९२१	जिन कल्याण सूरि	१४२५

संवत्	नाम	लेखांक

चंद्र गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१०७२	सोलगल सूरि	३८६
१२३५	पूर्णभद्र सूरि	१६८८
१२५८	देवभद्र सूरि	१०३४
१२७२	हरिप्रभ सूरि	१७७७
१३००	यशोभद्र सूरि	१९७८
१३१५	„ „	१७७९

चाणांचाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५२९	वज्रेश्वर सूरि	११५९

चित्रवाल (चैत्र) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३०३	जिनदेव सूरि	१९४९
१३२१	आमदेव सूरि	१९२१
१३३४	पं० सोमचंद्र	२०९०
१३४०	अजितदेव सूरि	११३४
१३५२	गुणचंद्र सूरि	१०४१
१४९९	मुनितिलक सूरि	१९०१
१५०१	„ „	११४५
१४९९	गुणाकर सूरि	१९०१
१५१३	„ „	१२६४
१५१५	रामदेव सूरि	१०९०
१५२७	चारुचंद्र सूरि	१०९४
१५३१	नारचंद्र सूरि	१०६६
१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	११६३
१५३६	„ „	१४१०

ठहितेरा गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६१२	धर्म्ममूर्त्ति सूरि	११९४
„	भावसागर सूरि	„

जापडाण गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५३४	कमलचंद्र सूरि	१२८८

जीरापल्लीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४०६	रामचंद्र सूरि	१०४९
१५२७	उदयचंद्र सूरि	१५०६

तप गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४०१	विजयहर्ष सूरि	२०५६
१४२२	रत्नशेखर सूरि	१९२८
१४३९(?)	देवचंद्र सूरि	१७५२
१४५३	हेमहंस सूरि	१४८९
१४६६	„ „	१९१७
१४७५	„ „	१२४०
१४९०	„ „	१३२९
१४९६	„ „	१४८१
१४९८	„ „	१३६७
१५०१	„ „	१४८२
१५०४	„ „	११४७
१५१०	„ „	११५२
१५११	„ „	१४०१
१५१३	„ „	१०८९, १२६६, १३७४
१४५८	देव सुंदर सूरि	२०४८

संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	सोमसुंदर सूरि	१४२१
१४८४	,, ,,	१९८०
१४८५	,, ,,	१९७२, २०१७
१४८७	,, ,,	२००५
१४८८	,, ,,	१९८३
१४८९	,, ,,	१०२९, १०६७, १७३१
१४९१	,, ,,	१०७४, ११८१
१४९२	,, ,,	१०७६
१४९४	,, ,,	१९६८, १९७१
१४८८	मुनिसुंदर सूरि	१९८३.
१५००	,, ,,	१४६१
१५०१	,, ,,	११२६
१४८९	रत्नसिंह सूरि	११४०
१५१०	,, ,,	१०८६
१५११	,, ,,	१६९६
१५१२	,, ,,	२०४४
१५१३	,, ,,	१७००
१४९६	विजयतिलक सूरि	१६९१
१५०२	रत्नशेखर सूरि	११४६
१५०४	,, ,,	१२४९
१५०६	,, ,,	११२२, १९७०
१५०७	,, ,,	१६९५
१५०८	,, ,,	१०८४
१५०९	,, ,,	१०८५
१५१०	,, ,,	१५३९, १५४९
१५११	,, ,,	१४०२
१५१२	,, ,,	१२६०, १२६२, १७५४
१५१३	,, ,,	११८४, १४०३
१५१६	,, ,,	१८८०, १९१२
१५१७	,, ,,	१०३०, ११८५
१५३८	,, ,,	१९४१
१५०३	जिनरत्न सूरि	१७५३
१५३६	,, ,,	१७७०
१५४१	,, ,,	१९१४
१५०३	जयचंद्र सूरि	१९६९, १९७३
१५०५	,, ,,	१३७०
१५०८	उदयनंदि सूरि	१९३५
१५१०	रत्नसागर सूरि	१२५८
१५१७	कमलवज्र सूरि	१५८८
,,	लक्ष्मीसागर सूरि	१०९१
१५१८	,, ,,	१७५६
१५१९	,, ,,	१२६८, १८८३, २०९३
१५२०	,, ,,	२०२३
१५२१	,, ,,	१२७२, १३१४, २०७६
१५२२	,, ,,	१११७
१५२३	,, ,,	१०९२, १४३७, १६९३, १७५१
१५२४	,, ,,	१२०८, १५६०, १५६९
१५२५	,, ,,	१४८५, १५७०, १९३८
१५२७	,, ,,	१२७९
१५२९	,, ,,	१५७२, १९०२, २०२६
१५३०	,, ,,	११६०-६१, १२८२--८३
१५३४	,, ,,	११६४, १२९१, १३१९
१५३५	,, ,,	१५८९
१५३६	,, ,,	१४६५

संवत्	नाम	लेखांक
१६४१	हीरविजय सूरि	१४५९
१६४२	,, ,,	१००२
१६४४	,, ,,	१६६१, १७१२, २०९४
१६५१	,, ,,	१७६३
१६८५	,, ,,	१९४३
	,, ,,	१७४८
	,, ,,	१५००
१६३३	रविसागर गणि	१७८२
,,	शत्रशल्ल	,,
,,	विजयसेन सूरि	,,
१६४३	,, ,,	१३०८
१६५२	,, ,,	१७९६
१६५६	,, ,,	१७६४
१६६१	,, ,,	१७९४
१६६७	,, ,,	११०५
१६७०	,, ,,	१६२८, १७४१
१६५१	विजयदेव सूरि	१७८२
१६६७	,, ,,	२०५७
१६७४	,, ,,	१४६०
१६७७	,, ,,	१७१७
१६८५	,, ,,	१३९१, १९४३
१६८६	,, ,,	११०६
१६८७	,, ,,	११७३
१६९४	,, ,,	११०८
१६९७	,, ,,	२०५९
१६९९	,, ,,	१७९०
१७०१	,, ,,	२०६०
१७०५	,, ,,	१६१३
१७०७	,, ,,	२०४३
१६५२	सोमविजय गणि	१७९६
१६६७	,, ,,	११०५
१६५२	विमलहर्ष गणि	१७९६
,,	कल्याणविजय गणि	,,
,,	पद्मानंद गणि	,,
१६७७	विवेक हर्ष गणि	२०५०
,,	कल्याण कुशल	१७१७
,,	दया कुशल	,,
,,	भक्ति कुशल	,,
१६८२	म० मुनि सागर गणि	१६३५
१६८६	विजय सिंह सूरि	११०६
१६९३	,, ,,	१०२८
१६९९	,, ,,	१३१०-११, १७९०
१७०१	,, ,,	१५७५
१७०३	,, ,,	११९७
१६९३	मतिचंद्र गणि	१०२८
१६९४	उ० लावण्यविजय गणि	११०८
१६९९	,, ,,	१७९०
१७००	पं० कीर्त्तिरत्न गणि	२०४२
१७०६	विजयानंद सूरि	१०१४
,,	विजयराज सूरि	,,
१७१०	,, ,,	१६१४, १९१०
,,	विजयसेन सूरि	१९१०
१७१२	,, ,,	१७४४
१७१३	विजयप्रभ सूरि	१७९७

कृष्णर्षि गच्छ—(तपगच्छ शाखा)।

देवाऽनंदित गच्छ।

धर्म्मघोष गच्छ।

संवत् नाम लेखांक

नमदाल गच्छ ।

नागपुरीय गच्छ ।

नागेन्द्र गच्छ ।

संवत् नाम लेखांक

नाणकीय(ज्ञानकीय, नाणावाल) गच्छ ।

निर्वृति गच्छ ।

निवृत्त गच्छ ।

पंचासरीय गच्छ ।

पल्लीवाल गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४७६	यशोदेव सूरि	...	...	१८८२
१४८२	,, ,,	...	...	१६३१
१५१३	,, ,,	...	...	१८८७
१५२८	नन्न सूरि	...	...	२१११
१५३६	उद्योतन सूरि	...	१४६२	१५५५

पार्श्वचन्द्र गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१५७३	पार्श्वचन्द्र सूरि	...	...	१५६१

पिप्पल गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४६१	वीरप्रभ सूरि	...	...	१६७५
१५१६	शालिभद्र सूरि	...	...	११५५
१५१७	धर्म्मसागर सूरि	...	...	२०७३
१५३०	चंद्रप्रभ सूरि	...	...	१२२२
१५७०	तिलकप्रभ सूरि	...	...	१७२६
,,	गुणप्रभ सूरि	...	...	,,

पूर्णिमा(पक्ष) गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३८१	सोमतिलक सूरि	...	...	१६२४
,,	श्रीसूरि	...	...	,,
१४८५	सर्वानन्द सूरि	...	...	१२४१
१४८६	विद्याशेखर सूरि	...	...	१३६७
१५०१	गुणसमुद्र सूरि	...	...	१५६५
१५११	राजतिलक सूरि	...	...	१४८०
१५१७	,, ,,	...	...	१६३७
१५१६	,, ,,	...	...	१७५७
१५१७	पुण्यरत्न सूरि	...	...	२०८५
१५१६	,, ,,	...	...	१५६७
१५३२	,, ,,	...	...	११६८
१५२१	गुणतिलक सूरि	...	...	१७५८
१५३२	,, ,,	...	...	१७२८
१५२३	साधुसुंदर सूरि	...	...	११५६
१५२६	,, ,,	...	...	१२८१
१५३७	जयरत्न सूरि	...	...	१११६
१५४८	सौभाग्यरत्न सूरि	...	...	१७६०
१५५६	मनसिंह सूरि	...	...	१२१२

पूर्णिमा गच्छ ।

भीमपल्लीय शाखा ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४८२	जयचंद सूरि	...	...	१५६४
१५१५	,, ,,	...	...	१३७६
१५७६	मुनिचंद्र सूरि	...	...	१३०२

प्राया गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३७४	शीलभद्र सूरि	...	...	१०४२

बापदीय गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१२४२	जीवदेव सूरि	...	...	१६८६

बोकड़िया गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४५७	धर्म्मतिलक सूरि	...	...	१०६१
१४६६	,, ,,	...	...	१२४६
१५४६	मणिचंद्र सूरि	...	...	११६७
१५५६	,, ,,	...	...	१४१४
१५६२	,, ,,	...	...	११६६
१५८७	मलयहंस सूरि	...	...	१६१५

ब्रह्माण गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३२०	वयरसेण उपाध्याय	...	...	२०६८
,,	जभक सूरि	...	...	,,

संवत्	नाम	लेखांक
१३५५	विमल सूरि	१६२२
१३७५	विजयसेन सूरि	१४३४
१४३७	हेमतिलक सूरि	११२३
१४३६	बुद्धिसागर सूरि	११३७
१४६६	धीर सूरि	१३६४
१४८३	,, ,,	२१०१
१५१६	,, ,,	१५५१
१४७१	उदयाणंद सूरि	२०१६
१५००	विमल सूरि	१३६८
१५१८	,, ,,	१०११
१५१६	,, ,,	१२६६
१५२४	,, ,,	२०८८
१५११	मुनिचंद्र सूरि	१२२१
१५१३	उदयप्रभ सूरि	१०८६, १३७४
१५२४	,, ,,	१४६५
१५१३	हेमहंस सूरि	१३७४
१५५६	बुद्धिसागर सूरि	११८८
,,	उदयाणंद सूरि	२१०८
१६६३	जाजीग सूरि	२०६७

नाणवाल(नाणवाल,नाणदेहा) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०६	वीर सूरि	२०६३
१५२४	भावदेव सूरि	२०६५
१५३७	,, ,,	११६५
१५३६	,, ,,	१३४२

भिन्नमाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५६३	कर्म्मांतिक सूरि	२०६६

मध्यम शाखा ।

संवत्	नाम	लेखांक
--	देव सूरि	१६०५

मलधार(मल्लारुडिय,मल्लहड) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३५१	सोमतिलक सूरि	१०४६
१४८०	धम्मचंद्र सूरि	१०६८
१४८१	उदयप्रभ सूरि	१०६६, २०४४
१५२७	नयचंद्र सूरि	१२७६
१५४१	कमलचंद्र सूरि	१३६०
१५४५	,, ,,	१३६२
१५५७	गुणचंद्र सूरि	११३०
,,	उ० आणंदनंद सूरि	,,

मधुकर गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५१६	——	१७३६

मल्लधारि(मल्लवादि) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२३४	पूर्णचंद्र सूरि	१८७५
१३४४	रत्नदेव सूरि	२०६६
१४७६	विद्यासागर सूरि	२१००
१४७७	मुनिशेखर सूरि	११२५
१५१०	गुणासुंदर सूरि	१६६०
१५१२	,, ,,	१७७५
१५१५	,, ,,	११५४
१५२२	,, ,,	२१०४
१५२५	,, ,,	१२३०
१५२७	गुणशेखर सूरि	१३१८
१५३२	पुण्यनिधान सूरि	१२८५

संवत्	नाम			लेखांक
१५३४	गुणविमल सूरि	...	...	१३३८
१५५७	गुणवधान सूरि	...	...	११६८
१५६६	लक्ष्मीसागर सूरि	...	...	११३१
१५८१	,, ,,	...	...	१४८४
१६६६	कल्याणसागर सूरि	...	...	१८६६
,,	उदयसागर सूरि	...	...	,,

मोढ गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१२२७	जिनभद्राचार्य	...	...	१६६४

रुद्र गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१५७६	श्रीसूरि	...	...	१६२५

रांका गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३२०	महीचंद्र सूरि	...	...	१७८०

राज गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३३६	अमरप्रभ सूरि	...		१६५३-५४
१५०६	पद्माणंद सूरि	...	...	११७४
१५५२	पुण्यवर्द्धन सूरि	...	...	१५६१

रामसेनीय गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४५८	धर्मदेव सूरि	...	...	१२३६
१५०३	मलयचंद्र सूरि	...	...	१०८०
१५११	,, ,,	...	...	१०८७

रुद्रपल्लीय गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१२६०	अभयदेव सूरि	...	...	२०२६
१४२१	जिनराज सूरि	...	...	१०५२
१५१३	सोमसुंदर सूरि	...	...	१३१५
१५१७	,, ,,	...	...	१२६७

संवत	नाम			लेखांक
१५३८	देवसुंदर सूरि	...	...	१६२१

लौंपक गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१६३२	अजयराज सूरि	...	...	२०३४
१६५३	गंगारिखो यति	...	...	२०३३

वड गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१५७२	चंद्रप्रभ सूरि	...	...	१३८६

विजय गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१६२१	शांतिसागर सूरि	...	...	१५६६-६७
१६२४	,, ,,			१५११-१८, १५३५, १५४२-४३, १५५६, १५६८, १६००-०१, १६०८, १६१५, १६२३
१६३१	,, ,,	...		१८०६, १८२५, १८३३
१६३२	,, ,,	...	...	१८२३
१६३३	,, ,,	...		१७०२-०३
१६४३	,, ,,	...	...	१८२७

विद्याधर गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४११	विजयप्रभ सूरि	...	...	११९८
१४१३	विनयप्रभ सूरि	...	...	२०८४
१५१८	हेमप्रभ सूरि	...	...	१६२४
१५२०	,, ,,	...	...	१३१३

विवंदणीक गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१५१२	सिद्ध सूरि	...	...	१६५८
१५२४	कक्क सूरि	...	...	१७२३

वृद्गच्छ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३१६	हीरभद्र सूरि	...	...	१३२४
१३३४	— — —	...	...	१८०१

संवत्	नाम	लेखांक
१३८६	धर्मघोष सूरि	१३६३
१४६१	रामदेव सूरि	१४३६
१४९९	रत्नप्रभ सूरि ...	१२०७, १६७६
१५०३	मलयचंद्र सूरि	१०८०
१५१९	,, ,, ...	१०१२
१५०७	सागर सूरि	११५०
१५०८	महेन्द्र सूरि	१५३७
१५१३	कमलप्रभ सूरि	१२६५
,,	सागरचंद्र सूरि	१२७५
१५१८	मेरुप्रभ सूरि	१४०६
१५४२	,, ,, ...	१२११
१५३१	श्री सूरि	१२२३
१५३२	धनप्रभ सूरि	२१०७
१५५९	मुनिदेव सूरि	१२९७
,,	मनिचंद्र सूरि	१४१४
,,	वल्लभ सूरि	१८९५

व्यवसीह गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३४३	— —	१७०६

पं(सं)डेर(क) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१०३९	यशोभद्र सूरि	१९४८
१२१०	— —	१६८७
१३१७	ईश्वर सूरि	१९५१
१३२८	शात्य सूरि	१०३९
१३३८	सुमति सूरि	१७०८
१३४२	,, ,, ...	१८९२
१४२५	ईश्वर सूरि	१४८८
१४६९	सुमति सूरि	१३६५
१४६३	शालिभद्र सूरि	१९३३
१५२०	,, ,, ...	२००२
१४९४	शांति सूरि	११४१
१४९९	,, ,, ...	१८५९
१५०१	,, ,, ...	११४२
१५०६	,, ,, ...	१८९०
१५०८	,, ,, ...	१५४८
१५१८	,, ,, ...	१६३१
१५२७	,, ,, ...	१५५४
१५३३	,, ,, ...	१४०८
१५३७	,, ,, ...	२१०९
१५०५	— —	१०८१
१५१३	ईश्वर सूरि	१०२५
१५१५	,, ,, ...	१९९१
१५३०	यशश्चंद्र सूरि	२०४५
१५३-	— —	१९३९
१५३२	— —	१३३७
१५३६	सालि सूरि ...	१०९९, १२१०
१५४९	सुमति सूरि	१३८३
१५५६	शांति सूरि	१२९६
१५६३	,, ,, ...	११६०
१५७२	,, ,, ...	१९९२
१५९९	,, ,, ...	१३०६
१५८१	ईश्वर सूरि	१४२६
१६८९	भ० मानाजी केसजी	१९६२

साधु पूर्णिमा पक्ष(गच्छ) ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०४	पूर्णचंद्र सूरि	१७३२
१५२१	चंद्र सूरि	१३०८
१५३३	जयशेखर सूरि ...	१३८१, १४०९

सिद्धान्तिक गछ।

हर्षपुरीय गछ।

हुंबड़ गछ।

जिनमें गछों के नाम नहीं हैं।

संवत्	नाम			लेखांक
१५५३	धर्मवल्लभ सूरि	...	...	१७७४
१५६७	सर्वदेव सूरि	...	...	१६२७
१५७१	देवरत्न सूरि	...	...	११७१
१५७३	नंदिवर्द्धन सूरि	...	...	१३५६
१५८७	श्री सूरि	...	...	११७२
१५९७	जिनसाधु सूरि	...	...	११९३
१६०४	हर्षरत्न सूरि	...	...	१४६६
१६२२	विजय सूरि	...	...	१९०८
१६६६	रत्नविशाल गणि	...	...	१७१५
१६९३	मतिचंद्र गणि	...	...	१०२८
१७७७	उ० क्षेत्रराम गणि	...	...	१५५७
१७९८	विजयऋद्धि सूरि	...	...	१७४५
१८३१	विद्याविजय गणि	...	...	१२०१
,,	ऋद्धिविजय गणि	...	...	,,
१८५२	लालचंद्र गणि	...		११७८. १४४१
१८५५	लावण्य कमल गणि	...	...	१४१७

संवत्	नाम			लेखांक
१८५९	हेमगणि	...	...	१३४९
१९२०	अमृतचंद्र सूरि	...		१६०७. १६७४
,,	सागरचंद्र गणि	...	...	१८७१
१९३१	विजय सूरि	...	...	१४४९
१९४४	सं० रणधीरविजय	...	...	१४६८
१९६१	चारित्र सुख	...	...	२०६१

जिनमें सम्वत् नहीं है।

...	देव सूरि	...	...	१४१८
...	महप्प गणि	...	...	,,
...	जिनसागर सूरि	...	...	,,
...	उदयशील गणि	...	...	१९१८
...	आज्ञासागर गणि	...	...	,,
...	क्षेमसुंदर गणि	...	...	,,
...	मेरुप्रभ मुनि	...	...	,,

दिगम्बर संघ ।

संवत्	नाम			लेखांक
	काष्ठा संघ ।			
१३६०	तिहुण कीर्त्ति	...	...	११३५
,,	— —	...	...	१२२६
१४६७	जिनचंद्र	...	...	१४८३
१५०६	मलयकीर्त्ति	...	...	१२५२
१५४६	— —	...	...	१३४३
	काश्वी संघ ।			
१४६७	कीर्त्तिदेवा	...	...	१४२७
१५१०	विमलकीर्त्ति	...	...	१४२८
	नंदि संघ ।			
— —	क्षेमकीर्त्ति	...	...	१७८६
	मूल संघ ।			
१४४३	— —	...	...	१४२०
१४५७	पद्मनंदि	...	...	१००१
१४७२	,,	...	...	१०६३
१५३४	भ० ज्ञानभूषण	...	...	११२०
,,	भ० भूवनकीर्त्ति	...	...	,,
,,	रत्नकीर्त्ति	...	...	१४५८
१५४६	जिनचंद्र	...	...	१०१५
१५६२	,, ,,	...	...	१४४७
१५५२	— —	...	...	१४२६
१६१६	सुमतिकीर्त्ति	...	...	१६३६
१६५२	चंद्रकीर्त्ति	...	...	११३२
१६८६	पद्मनंदि	...	...	१०६५
	जिनमें संघ के नाम नहीं है ।			
१६०८	क्षेमकीर्त्ति	...	...	१४३०

श्रावकों की ज्ञाति–गोत्रादि की सूची।

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
वच्छाश	१९५४
वड	१४७०
वड़ाहड़ा	१२४०
वर्द्धमान	१३६६
वमा	१६७३
वायर्चाणा	१८४०
वासुत	१०८१
वाहना	१७१२
त्रिणवट (दिंवट)	१०६०, १८८३, २०६८
विद्याधर	१०१२
त्रि···क	१३७४
विमल	१०८९
वीरोलिया	१४६२
वेद (मुहता)	१४७८, १५१२, १५१४–१५, १५३४
वोहड़	१३६६
वौकरिया	११६९
शंखवाल (शंखवालेचा)	११६६–६७, १२९८, १५९२, १८८५, २०१२, २०८२
शीसोद्या	१२१०, १४१६
शुभ	१३३६
श्रेष्ठि	१२५६, १२७१, १२९३, १३६२, १३९०, २०५२
समदड़िया	२०७०
साउसुखा	१८१३–१४
साधु(खु)ला	१०७७, १०९८
साहलेचा	१६३१
साहु	१७२५
सिरहट	१०८२
सिंघाड़िया	१२११
सीनोरेचा	१२३१
सुचंती	११४८, ११८३, १३३२, १३७१, १४३५, १४६४, १५१८, १५२५, १५६६–६८, १६०१, १६४१–४२, २०३३, २०३५-३६
सुराणा	१०७६, १११३, ११७४, ११९१, १२३८, १३०३, १३२६, १३५६, १४२३, १४७४, १५६६, १६२०, १६६३, २०५३
सेठ	१६४७–४८, १६५०–५१, १६५३–५५
सेठिया	१३५५
सोनी	१४५४, १६२१, १७६६, १९०६
हट्टचायि	१२३७
हुंडोयुरा	१६०३

ओसवाल [साधुशाखा] ।

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
— — —	१२५५

ओसवाल [लघुशाखा] ।

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
— — —	१२४५

गोत्र ।

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
फुमण	१३०९
वुरा	„

खंडेलवाल ।

गोत्र ।

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
पहाड्या	१४५८

गुर्जर ।

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक
— — —	११३४, १३७६

ज्ञाति – गोत्र				लेखांक
	गोत्र ।			
भणशाली	...	...	...	१६८६
	गेपुत्रीवाल ।			
– – –	...	...	...	१८६२
	जसवाल ।			
– – –	...	...	...	१४४७
	दीसावाल ।			
– – –	...	...		१७०७, १७१६
	नागर ।			
– – –	...			१३८७, १६१४, १६४२, २०४४
	गोत्र ।			
अलिय ण	...	...	...	१३५६
	पल्लीवाल ।			
– – –	...	...		१७३८, १७६१–६२
	पापड़ीवाल ।			
– – –	...	...	...	१०१५
	प्राग्वाट [पोरवाड़] ।			
– – –	१०१४, १०२६, १०२८–३०, १०४७, १०५३–५४, १०६१, १०६६–६७, १०६६, १०७१, १०७६, १०८४–८५, १०६१–६२, १०६७, ११००–०४, ११२५–२६, ११३०, ११३६, ११४६, ११६० –६१, ११६४, ११७०, ११७२, ११८५, ११६३, ११६८, १२१३, १२४१, १२५८, १२६०, १२६८, १२७२–७३, १२७६, १२८३, १३०८, १३१४, १३१६, १३२२, १३२७, १३३१, १३५४, १३६१, १३७८, १३८१–८२, १३६१, १४०२–०३, १४११, १४३७, १४६५, १४७७, १४६६, १५४६, १५६१, १५६६–७०, १५७२, १६०२, १६४३, १६६५, १७१३–१४, १७२३, १७३०–३२, १७३५, १७५१ –५४, १७५६, १७६१, १७७६–८०, १७८८, १७६३, १७६५, १७६६, १८८०, १८८४, १८६१, १६०२, १६११, १६१६, १६२४, १६२७, १६३८, १६६६, १६६८–६६, १६७३, २०१६–१७, २०२४, २०४८ –४६, २०५१, २०५४, २०६०, २०७६, २०८६, २०६०			
	गोत्र ।			
अंबाई	...	...	...	१२१४
कोठा०	...	...	...	१२५७
कोडुकी	...	...	...	१३०८
नाग	...	...	...	१७४३
भंडारी	...	...	...	१११६
	प्राग्वाट [लघुशाखा] ।			
– – –	...	...	...	१६१४
	बघेरवाल ।			
– – –	...	...	...	१५६४
	वायड़ा [वायट] ।			
– – –	...	...		१२१६, १३२३, १५७७, १६२०, २०७५, २१०६
	जदेवरा ।			
– – –	...	...	...	१६३१

गोत्र	लेखांक	गोत्र	लेखांक
खंडेजरिया	१३६७	बम्रजातीय	१६११
खंदवाड़	११३२	विणन्नट	१०६०
छाहवा	१४८१	विगड़	१६३४
तहट	१३४०	वेलुयुतो	१८३३
दहदहड़ा	१०८०	बटगड़	१२५१
फाफटिया	१२४७	सापुठा	१२२०
माईलेवा	१५५५	सामलिया	१५३७
मुठिया	१२५७	हिंगड़	११५२

शुद्धि पत्र ।

पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१०५६	१४३६	१५३६	१५१	१६६५	१६७७	१८७७
"	१०५७	कारंट	कोरंट	२१३	१८३४	१८०८	१८८८
२०	११०३	नंदकल्याण	जयकल्याण	२२४	१८७१	१०२०	१६२०
३०	११६२	जिनचंद्र	जिनभद्र	२३५	१६२३	१३५६	१३७६
"	"	जिनभद्र	जिनचंद्र	२४३	१६६०	१४२५	१४६५
३६	११६५	द्वाराविजय	हीरविजय	२६५	२०३६	पावापुपी	पावापुरी
५४	१२८७	जिनचंद्र (१)	जिनभद्र	प्रतिष्ठा स्थान (उथमण)		२०७०	२०७१
६०	१३१७	"	"	"	(वारकबांण)	२०५२	२०६१
८२	१४१५	जिनराज	जिनहर्ष	"	(व्यारकबांण)	२०५३	२०६२
११६	१५१२	१८२४	१६२४	"	(दौलताबाद)	२०४८	२०५९